

हिन्दी-पर्यायवाची कोश

जिसमें विषयों के अनुसार समस्त व्यावहारिक शब्दों के पर्यायों का वर्गीकरण ४ खण्ड और ३७ वर्गों में बड़ी उत्तमता के साथ हुआ है।



लेखक

पंडित श्रीकृष्ण शुक्ल-विशारद
अध्यापक, सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल, बनारस।



प्रकाशक

भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी

विक्रमाब्द १९९२

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन है।

प्रकाशक—

कैलाशनाथ भार्गव

भार्गव पुस्तकालय, गाचवाट, बनारस ।

प्रथम संस्करण]

जून, सन् १९३५ ईस्वी०

[मूल्य २॥॥
सजिल्द]

मुद्रक—

मा० रा० काले

श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस, काशी ।



AUG 1974 **समर्पण**

भूत-भावन भगवान् शंकर ! आपकी ही प्रेरणा
से एक दिन इस ग्रन्थ का लिखना आरम्भ
हुआ था और आज भी आपकी ही
प्रेरणा से यह समाप्त होकर आपके
अभयप्रद श्रीचरणों में सादर
समर्पित होता है ।

लेखक

परिचय



जकल हिन्दी के कई छोटे-बड़े शब्द-कोश बन गये हैं जिनका संकलन अक्षर क्रम से होने के कारण ज्ञात शब्दों के अर्थ ढूँढ़ने में बहुत सुबीता रहता है। पर शब्द-कोश-संकलन की एक और पुरानी पद्धति हमारे यहाँ प्रचलित थी, जिसमें वस्तुओं के वर्गीकरण के अनुसार शब्द रखे जाते थे। वह पद्धति सर्वथा अनुपयोगी नहीं कही जा सकती। अक्षर-क्रम से संकलित आधुनिक ढंग के कोशों में हम ज्ञात शब्दों के अर्थ निकाल सकते हैं। पर यदि किसी को कोई वस्तु या पदार्थ ज्ञात है, पर उसके लिये ठीक शब्द उसके ध्यान से उतर गया है, तो उसका काम अक्षर क्रम वाले कोशों से नहीं निकल सकता। उसके लिये वस्तुओं के वर्ग-विधान वाले कोश ही काम दे सकते हैं। ऐसे कोशों से कविता या लेख लिखने का अभ्यास करने वाले भी लाभ उठा सकते हैं। किसी इन्द्रिय के वर्णन के लिये उन्हें बहुत से वृक्षों, पशुओं या नगर की वस्तुओं के लिये अनेक प्रकार के शब्द एकत्र मिल सकते हैं। यही बात किसी असंग के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। किसी शब्द के अनेक पर्यायवाचक शब्द भी चुनाव के लिये एक जगह मिल जायेंगे।

इस प्रकार के कोशों की उत्तमता वस्तुओं के वर्गीकरण में देखी जाती है। जितने ही अधिक और जितने ही ठीक वर्ग पदार्थों के किये जायँगे उतनी ही सुगमता शब्द हँदने वालों को होगी। हिन्दी में “अनेकार्थ नाममाला” ऐसे कुछ पद्यवद्ध पुराने कोश बने थे, पर पद्य-वद्ध होने के कारण उनके पर्याय शब्दों के अतिरिक्त कुछ फालतू शब्द भी छन्द के अनुरोध से रखे रहते हैं जिससे भ्रम की संभावना रहती है। वस्तु-वर्ग-विधान वाला ऐसा शब्द-कोश जिसमें केवल पर्याय रखे गये हों, मैं समझता हूँ यह पहला है। आयुर्वेद, ज्योतिष इत्यादि भिन्न-भिन्न विषयों के ग्रन्थों से भी शब्द लिये जाने के कारण शब्दों की संख्या इस कोश में अधिक है। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का यह प्रयत्न निस्सन्देह मूल्य है। उन्होंने बड़े परिश्रम से यह कोश प्रस्तुत किया है। आशा है जिन लोगों के लिये यह ग्रन्थ तैयार किया गया है वे इससे पूरा लाभ उठायेंगे और संकलनकर्त्ता को धन्यवाद देंगे।

दुर्गाकुण्ड, काशी
१८-५-३५

}

रामचन्द्र शुक्ल
प्रोफेसर हिन्दी-विभाग,
हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी ।

प्राक्थन



हिन्दी के अर्वाचीन साहित्य में बहुधा संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य देख पड़ता है, जिनके लिये प्रायः विद्यार्थी, लेखक और कवि हिन्दी और संस्कृत के शब्द-कोशों की सहायता लेते हैं। शब्द-कोशों में समानार्थवाचक शब्दों की संख्या परिमित होती है, जिससे विद्यार्थियों एवं कवियों में प्रचुर शब्द-भाण्डार की पूँजी नहीं हो पाती। फलस्वरूप वे उन्हीं इने-गिने शब्दों को लेकर साहित्य-क्षेत्र में अवतरित होते हैं और अपनी रचनाओं में प्रायः शब्द-दारिद्र्य का ही प्रदर्शन करते हैं। यदि उन्हें पर्यायवाची शब्दों की नितान्तावश्यकता जान भी पड़ी तो 'हिन्दी-शब्दसागर', 'मङ्गलकोश', 'शब्दार्थपारिजात' आदि हिन्दी के अर्थकोश अथवा संस्कृत के 'अमरकोश' की सहायता लेते हैं। जब इतने पर भी उनकी पिपासा पूर्ण नहीं होती, तो वे या तो संस्कृत के अन्यान्य कोशों की खोज करते हैं, अन्यथा इत्यलम् समझ कर चुप बैठते हैं।

इस प्रकार की कठिनाइयों हिन्दी-साहित्य के उच्च कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा मेरे सामने कई बार आईं। यथासाध्य मैं उनका तो समाधान करता गया, परन्तु मेरे मन में यह बात बराबर खटकती रही कि हिन्दी का कोई ऐसा पर्यायवाची कोश नहीं है जिस एक ही ग्रन्थ से हम सभी विषयों के शब्दों के यथेष्ट पर्याय प्राप्त कर सकें। बहुत कुछ खोज करने पर जो कुछ एक छोटे-मोटे पर्याय कोश मिले भी वे अपूर्ण और नितान्त अक्रम थे। उनसे अच्छी और बहुत अच्छी सहायता तो 'अमरकोश'

इस प्रकार के कोशों की उत्तमता वस्तुओं के वर्गीकरण में देखी जाती है। जितने ही अधिक और जितने ही ठीक वर्ग पदार्थों के किये जायँगे उतनी ही सुगमता शब्द ढूँढ़ने वालों को होगी। हिन्दी में “अनेकार्थ नाममाला” ऐसे कुछ पद्यबद्ध पुराने कोश बने थे, पर पद्यबद्ध होने के कारण उनके पर्याय शब्दों के अतिरिक्त कुछ फालतू शब्द भी छन्द के अनुरोध से रखे रहते हैं जिससे भ्रम की संभावना रहती है। वस्तु-वर्ग-विधान वाला ऐसा शब्द-कोश जिसमें केवल पर्याय रखे गये हों, मैं समझता हूँ यह पहला है। आयुर्वेद, ज्योतिष इत्यादि भिन्न-भिन्न विषयों के ग्रन्थों से भी शब्द लिये जाने के कारण शब्दों की संख्या इस कोश में अधिक है। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का यह प्रयत्न निस्सन्देह स्तुत्य है। उन्होंने बड़े परिश्रम से यह कोश प्रस्तुत किया है। आशा है जिन लोगों के लिये यह ग्रन्थ तैयार किया गया है वे इससे पूरा लाभ उठायेंगे और संकलनकर्त्ता को धन्यवाद देंगे।

दुर्गाकुण्ड, काशी

१८-५-३५

}

रामचन्द्र शुक्ल

प्रोफेसर हिन्दी-विभाग,

हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी ।

प्राक्थन



हिन्दी के अर्वाचीन साहित्य में बहुधा संस्कृत के तत्सम शब्दों का बाहुल्य देख पड़ता है, जिनके लिये प्रायः विद्यार्थी, लेखक और कवि हिन्दी और संस्कृत के शब्द-कोशों की सहायता लेते हैं। शब्द-कोशों में समानार्थवाचक शब्दों की संख्या परिमित होती है, जिससे विद्यार्थियों एवं कवियों

में प्रचुर शब्द-भाण्डार की पूँजी नहीं हो पाती। फलस्वरूप वे उन्हीं इने-गिने शब्दों को लेकर साहित्य-क्षेत्र में अवतरित होते हैं और अपनी रचनाओं में प्रायः शब्द-दारिद्र्य का ही प्रदर्शन करते हैं। यदि उन्हें पर्यायवाची शब्दों की नितान्तावश्यकता जान भी पड़ी तो 'हिन्दी-शब्दसागर', 'मङ्गलकोश', 'शब्दार्थपारिजात' आदि हिन्दी के अर्थकोश अथवा संस्कृत के 'अमरकोश' की सहायता लेते हैं। जब इतने पर भी उनकी पिपासा पूर्ण नहीं होती, तो वे या तो संस्कृत के अन्यान्य कोशों की खोज करते हैं, अन्यथा इत्यलम् समझ कर चुप बैठते हैं।

इस प्रकार की कठिनाइयाँ हिन्दी-साहित्य के उच्च कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा मेरे सामने कई बार आईं। यथासाध्य मैं उनका तो समाधान करता गया, परन्तु मेरे मन में यह बात बराबर खटकती रही कि हिन्दी का कोई ऐसा पर्यायवाची कोश नहीं है जिस एक ही ग्रन्थ से हम सभी विषयों के शब्दों के यथेष्ट पर्याय प्राप्त कर सकें। बहुत कुछ खोज करने पर जो कुछ एक छोटे-मोटे पर्याय कोश मिले भी वे अपूर्ण और नितान्त अक्रम थे। उनसे अच्छी और बहुत अच्छी सहायता तो 'अमरकोश' ,

नामक अत्यन्त व्यापक और प्रचलित संस्कृत कोश से ही मिल जाती है । हिन्दी-संसार के इस समुन्नत क्षेत्र में इस प्रकार का अभाव मेरे लिये असह्य हो गया । मैं दिन-रात इसी चिन्ता में व्यग्र था कि किस प्रकार हिन्दी के माथे से इस अभाव का कलङ्क मिटाया जाय । मैंने एक बार अपनी यह चिन्ता गुरुवर स्वर्गीय लाला भगवान दीनजी के समक्ष प्रकट की और उनसे प्रार्थना की कि वे इस अभाव को दूर करके हिन्दी के भण्डार की एक वृहत् पर्याय कोश से अभिवृद्धि करें । पहिले तो लालाजी ने मेरी प्रार्थना पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, परन्तु जब मैं इसी बात को लेकर उनके पीछे पड़ गया और कई बार अपनी आकांक्षा प्रकट की तब एक दिन आपने मुझसे झिझक कर कहा कि “मुझे तो समय नहीं है, तुम्हीं क्यों नहीं लिख डालते ?”

मेरे हृदय में इस विचार का बीजारोपण तो पहिले ही से हो चुका था, उसपर “गुरोराज्ञा गरीयसी” का सिञ्चन पाकर पूर्वारोपित बीज अंकुरित हो उठा । “आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है” इस सिद्धान्त के अनुसार मैं अपने कार्य के साधनों का जुगाड़ करने लगा और विश्वेश्वर की अनुकम्पा एवं गुरुवर के आशीर्वाद से विक्रमाब्द १९७८ की गुरुपूर्णिमा को मैंने इस कार्य का आरम्भ किया । प्रायः तीन महीने के परिश्रम से प्रथम खण्ड समाप्त करके मैंने गुरुवर लालाजी के सामने अपना सङ्कलन रखा, जिसे देखकर उन्हें आश्चर्य और अत्यधिक प्रसन्नता हुई । आपने मेरी पीठ ठोंकी और अपने अन्तःकरण की रत्नमञ्जूषा से निकाल कर शुभाशीर्वाद-रत्न का पुरस्कार दिया । मेरा उत्साह और साहस बढ़ा । मैंने सहायक ग्रन्थों का संग्रह करना आरम्भ किया । कुछ ही साधक ग्रन्थ जुट पाये थे कि अनेक सांसारिक झंझटों के कारण कई वर्षों तक यह कार्य स्थगित रहा । इसी बीच में मेरे प्रोत्साहक गुरुवर लालाजी का स्वर्गवास हो गया । परन्तु उनका दिया हुआ सत्साहस एवं आशीर्वाद-रत्न मेरे हृदय के एक कोने में सुरक्षित रहा, जिसके दिव्यालोक में

मैंने पुनः लिखना आरम्भ किया । कार्य की अधिकता एवं समय का अभाव होते हुए भी मैं अपने अनुष्ठान में लगा रहा और इधर प्रायः तीन वर्षों के अविरत परिश्रम से आषाढ़ कृष्ण एकादशी सं० १९९१ वि० को यह “हिन्दी-पर्यायवाची-कोश” समाप्त होकर सर्वान्तर्यामी भगवान शंकर के चरणारविन्द में समर्पित हुआ ।

विषयों के अनुसार इस ग्रन्थ का विभाजन चार खण्डों में किया गया है । प्रथम खण्ड में देवादि शब्दों के पर्याय दिये गये हैं, जिसमें देवता, देवतुल्य विशिष्ट व्यक्ति, तीर्थ, आकाश के ग्रहोपग्रह नक्षत्रादि, दिशाकालादि के नामों के पर्याय कुल छः वर्गों में विभाजित हैं, जिनमें मूल शब्दों की संख्या २६७ है । द्वितीय खण्ड में स्थल एवं जल के विभिन्न विभागों के साथ-ही-साथ उद्भिज, खनिज और जलजादि सम्बन्धी शब्दों के पर्यायों का वर्गीकरण १५ वर्गों में हुआ है, जिनमें कुल ५८६ मूल शब्दों के पर्याय हैं । तृतीय खण्ड में मानव जगत के शब्दों का विभाजन ११ वर्गों में किया गया है, जिनमें कुल ९९८ मूल शब्दों के पर्याय हैं, चतुर्थ खण्ड में मानवेतर जीवों (पशु-पक्षी-कीट-पतङ्गादि) एवं कुछ चुने हुए क्रियापदों के पर्याय दिये गये हैं, जिसमें कुल ५-वर्गों में विभाजित ४०० मूल शब्दों के पर्याय हैं । इस प्रकार यह सम्पूर्ण ग्रन्थ विषयानुसार ३७ वर्गों में विभाजित है, जिनमें कुल २२५१ मूल शब्दों के पर्याय हैं । ग्रन्थ का वर्गीकरण करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि हमारे व्यवहार में आनेवाले विषय एवं उनके अन्तर्गत उपयोगी शब्द यथासम्भव न छूटने पावें । फिर जहाँ इन्द्रादिक देवता भी शब्द-वारिधि का पार न पा सके वहाँ हमारी तुच्छ बुद्धि उसके अवगाहन में कहाँ तक समर्थ हो सकती है ?

वर्गों के अनुसार शब्द-संग्रह करने में मुझे विभिन्न विषयों के ग्रन्थों से सहायता लेनी पड़ी । हिन्दी-शब्द-कोशों में अर्थ-विचार से इने-गिने शब्द रखे जाते हैं, उनसे पर्याय का पूरा मतलब हल नहीं हो पाता ।

सुतरां संस्कृत कोशों की सहायता के बिना शब्द-भाण्डार सर्वथा अपूर्ण ही रहता है। अतः मैंने संस्कृत के अमरकोश, वैजयन्ती कोश, मेदिनी कोश, शब्दकल्पद्रुम से, एवं हिन्दी के शब्दसागर शब्दार्थपारिजात, नाममाला (नन्ददास) और विश्वकोश से शब्दों के पर्यायों का संग्रह किया। जब इतने ग्रन्थों से शब्द-संग्रह करने पर भी मुझे आयुर्वेद, ज्यौतिष सम्बन्धी शब्दों के यथेष्ट पर्याय नहीं मिल सके तब मैंने आयुर्वेद और ज्यौतिष के ग्रन्थों से शब्द संग्रह करना आरम्भ किया। इस प्रकार मैंने शालिग्राम निघण्टु, राजनिघण्टु, हरीतक्यादि निघण्टु, बृहन्निघण्टु रत्नाकर, भाव-प्रकाश, माधव-निदान आदि आयुर्वेद के ग्रन्थों एवं सूर्य-सिद्धान्त, ग्रह लाघव, मुहूर्त चिन्तामणि आदि ज्यौतिष ग्रन्थों से एतद्विषयक शब्दों का सङ्कलन किया।

यद्यपि यह ग्रन्थ केवल पर्याय के अभिप्राय से लिखा गया है, तथापि पाठकों की विशेष जानकारी के लिये मैंने यथास्थान उपयोगी पादटिप्पणियों का भी समावेश कर दिया है। इन टिप्पणियों में अनेक शास्त्रों एवं पुराणादिकों के मतानुसार कहीं तद्विषयक विस्तृत व्याख्या, कहीं परिभाषा, कहीं परिचय और कहीं वस्तुओं के आकार प्रकार, भेद, गुण दोषादि का विवेचन किया गया है। जैसे 'दुर्गा' का पर्याय देते हुए टिप्पणी में देवी के अन्तर्गत पञ्चदेवी, सप्तमाता, नवदुर्गा, नवकन्यका, नवशक्ति, दश महाविद्या और चौंसठ योगिनियों के नामों का उल्लेख कर दिया गया है। 'अग्नि' शब्द की टिप्पणी में वैद्यक मत से अग्नि के तीन प्रकार एवं कर्म-काण्डानुसार अग्नि के छ. भेदों का उल्लेख हुआ है। 'वायु' शब्द पर शरीरस्थ पञ्चवायु एवं उनचासो पवनों के नाम दिये गये हैं। सूर्य और चन्द्र की क्रमशः बारह और सोलह कलाओं के नाम दिये गये हैं। खनिज वर्ग में गन्धक, हरिताल, अभ्रक और शिलाजीत के भेद, उत्पत्ति, लक्षण और गुणों की व्याख्या पुराण और वैद्यक दोनों मतानुसार की गई है। इसी प्रकार संस्कार, विद्या, व्यसन और कलाओं के भेदों के नाम, नाट्यशास्त्र-

नुसार रूपकों और उपरूपकों के भेद, गायन-वादन कला के अनुसार स्वर-तालादि के भेदोपभेद वर्णित हैं। इस प्रकार पाद टिप्पणियों के समावेश से ग्रन्थ की उपयोगिता अधिक बढ़ गई है। मेरा विश्वास है कि ये पाद टिप्पणियाँ पाठकों को मनोरञ्जन के साथ ही साथ अपनी उपयोगिता से सन्तुष्ट करेंगी।

मुझे इस बातका अवश्य दुःख है कि शब्दों के जितने पर्याय मैंने दिये हैं, वे सबके सब अपने मूल शब्द के आन्तरिक भावों के चोतक नहीं हो सके। बहुत से ऐसे शब्द हैं जो वास्तविक पर्याय न होकर पर्यायाभास मात्र कहे जा सकते हैं। परन्तु उनके प्रयोगों की रूढ़ि पर्याय रूप से ही चली आ रही है, अतएव वे अब पर्याय ही में परिगणित हो रहे हैं। ऐसे शब्दों के सङ्कलन करने में मेरा विशेष दोष नहीं। हम संस्कृत कोशों में भी ऐसे दोष पर्याय रूप में पाते हैं। वास्तव में उन कोशकारों ने भी शब्दों के पर्याय देने में वस्तुओं के आकार-प्रकार, गुण-दोष, एवं व्यवहारादि के अनुसार पर्याय दिये हैं। अतः कहीं-कहीं तो शब्द वाच्यार्थ बोधक और कहीं लक्ष्यार्थ बोधक हो गये हैं। जैसे 'शंखाहुली' का पर्याय 'मेध्या' है। यह वास्तविक पर्याय नहीं, प्रत्युत यह नाम शंखाहुली में मेधा शक्ति बढ़ानेवाले गुण के अनुसार है। अतः यह शंखाहुली का वाचक नहीं लक्षक शब्द कहा जा सकता है। इसी प्रकार 'तरबूज' नामक फल का पर्याय उसके आकार-प्रकार के अनुसार माँस-फल, माँसल, सुवर्चुल दिया गया है एवं उसके स्वाद के अनुसार 'सुखाश' नाम पड़ा है।

ऐसे ही बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनके पर्याय किसी अन्य शब्द के पर्याय से मिलते हैं। यथा 'हलदी' शब्द के जितने पर्याय हैं उनसे 'रात्रि' का एवं 'रात्रि' के पर्याय से हलदी का परस्पर समान बोध होता है। इसी प्रकार 'भिलावाँ' और 'अग्नि' शब्द के पर्याय परस्पर एक दूसरे के अर्थ बोधक हैं। विज्ञान प्रसंगानुसार वास्तविक अर्थ लगा लेते हैं।

अनेकार्थ बोधक बहुत से ऐसे शब्द भी मिलते हैं, जो कई शब्दों के पर्याय हैं। जैसे 'हरि' शब्द सिंह, बन्दर, विष्णु भगवान और सुवर्ण का; 'शिव' शब्द सियार, शंकर भगवान और कल्याण का एवं 'पुष्कर' शब्द आकाश, जल और पोखर (तालाब) का बोधक होता है। अस्तु अनेक शब्दों के अनेक अर्थ होने पर भी प्रसंगानुसार उनसे एक ही अर्थ का बोध किया जाता है।

हमारी व्यावहारिक हिन्दी भाषा में पर्यायों का प्रयोग प्रायः नहीं होता, इसलिये हमें अर्थ में एक ही शब्द का प्रयोग जो परम्परा से चला आता है, करने का अभ्यास पड़ गया है। कहीं-कहीं एक अर्थ में एक से अधिक दो या तीन शब्द भी प्रयोग में आते हैं, बस इतना ही बहुत है। जैसे पानी के लिये पानी या जल इन्हीं दो शब्दों का प्रयोग हिन्दी भाषा भाषियों में प्रचलित है। अब इनके अतिरिक्त किसी अन्य पर्याय जैसे घन, रस, अमृत, वारि तोय, जीवन आदि का प्रयोग करें तो वह एक हँसोड़ मात्र होगा। हाँ, पद्य रचना में हम पर्यायों का स्वेच्छया प्रयोग करते हैं और वह परम्परित प्रथा होने के कारण कुछ बुरा भी नहीं जान पड़ता। किसी देश, प्रान्त वा समाज की बोलचाल की भाषा प्रायः सरल एवं परम्परित होती है किन्तु उसी देश वा समाज के साहित्य की भाषा बोलचाल की भाषा की अपेक्षा कुछ छिष्ट और अप्रचलित हो सकती है। कारण इसका केवल यही जान पड़ता है कि बोलचाल की भाषा पठित एवं अपठित समाज में समान रूप से व्यवहृत होती है, इसी लिये उसका एक सरल व्यापक और परम्परित रूप ही व्यवहार में आता है और साहित्य की भाषा पठित समाज के सामने आती है इसलिये उसका क्षेत्र बोलचाल की भाषा से अधिक व्यापक और रूप कहीं-कहीं छिष्ट भी होता है। इसमें ही हम एक अर्थ का बोध कराने वाले अनेक पर्यायों का प्रयोग करते हैं। हमें अपने भावों के व्यक्त करने में कभी-कभी शब्दों के लक्षक एवं व्यञ्जक रूपों का भी प्रयोग करना पड़ता है, और उस समय उनसे

वाच्यार्थ न निकाल कर लक्ष्यार्थ वा व्यङ्ग्यार्थ ही का बोध करना श्रेयस्कर होता है। जैसे 'तुम तो पूरे नारद हो', वह बड़ा कौआ है, वह तो सूख कर काँटा हो गया है, इनमें नारद का लक्ष्यार्थ झगड़ालू, कौआ का चेष्टावान और काँटा का अत्यन्त कृश ही होगा। यहाँ वाच्यार्थ कहनेवाले का भाव कदापि स्पष्ट नहीं हो सकता। इसी प्रकार जब हम दूब नामक घास का प्रयोग साधारणतः घास के अर्थ में करना चाहते हैं तब तो दूब वा दूर्वा भले ही कहलें, परन्तु जब उसका प्रयोग किसी मंगल सूचक अर्थ में किया चाहते हैं तब उसे मंगल्या, अमृता, गौरी, गुणा, विजया, शिवा, शिवेष्टा, शुभा, स्वच्छा, सुरवल्लभा, अनन्ता, महावरा आदि अनेक मंगल वाचक शब्दों से बोधित करते हैं। क्योंकि ये शब्द दूर्वा में मंगलात्मक गुणों का लक्ष्य कराते हैं, अतः ये दूब के लक्षक पर्याय हैं। इसी प्रकार शब्दों के विभिन्न पर्याय उनके गुण, दोष, बल, वीर्य, विपाक, आकार, प्रकार, आदि के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं में प्रयुक्त हो सकते हैं। अब इन पर्यायों का उचित उपयोग उनके प्रयोग करने वाले की योग्यता पर निर्भर है वह चाहें उसका उचित प्रयोग करें वा अनुचित, इसके लिये यश वा अपयश के भागी वे ही हो सकते हैं। पर्याय तो सभी ठीक हैं।

इस कोश में विभिन्न ग्रन्थों से ऐसे भी शब्द संकलित हुए हैं। जिनमें से अधिकांश हमारे व्यवहार और प्रयोग से दूर हो गये हैं। अतः उनके ठीक ठीक रूपकरण में मुझे सन्देह है। मैंने उन ग्रन्थों में,— जिनसे शब्द-संग्रह किया है, जैसा रूप देखा ज्यों का त्यों वैसा ही दिया है, यदि कहीं उनके रूप अशुद्ध रह गये हों तो विद्वज्जन सुधार कर मुझे उसकी सूचना देने का कष्ट करेंगे। मैं उनके इस उपकार का आभारी रहूँगा। इसके अतिरिक्त कुछ प्रूफ संशोधन में भी भूलें रह गई हैं, जिनके लिये ग्रन्थारम्भ से पूर्व "शुद्धि-पत्र" देकर उनका सुधार कर दिया गया है। पाठक कृपया उसके अनुसार संशोधन करके तब ग्रन्थावलोकन करें।

“हिन्दी-पर्यायवाची-कोश” लिखने में जिन २ ग्रन्थों से मैंने सहायता ली है, उनके नाम नीचे दिये जाते हैं—

संस्कृत-ग्रन्थ—

- | | |
|--------------------------|---------------------------|
| १. अमरकोश | १३. ग्रहलाघव |
| २. मेदिनीकोश | १४. मुहूर्त्त चिन्तामणि |
| ३. वैजयन्तीकोश | १५. अग्निपुराण |
| ४. जटाधर | १६. ब्रह्मवैवर्त्तपुराण |
| ५. शब्दकल्पद्रुम | १७. देवीपुराण |
| ६. माधवनिदान | १८. राजवल्लभ |
| ७. भावप्रकाश | १९. गारुडी |
| ८. शालिग्राम निघण्टु | २०. कामसूत्रम् (वात्सायन) |
| ९. हरीतक्यादि निघण्टु | २१. काव्य-प्रकाश |
| १०. राज निघण्टु | २२. संगीत दामोदर |
| ११. बृहत्निघण्टु रत्नाकर | २३. मनुस्मृति |
| १२. सूर्यसिद्धान्त | २४. चाणक्यनीति |
| | २५. शुक्रनीति |

हिन्दी-ग्रन्थ—

- | | |
|-------------------|----------------------|
| २६. रामचरितमानस | ३१. नाममाला |
| २७. काव्य-प्रभाकर | ३२. नाम-रामायण |
| २८. रूपक-रहस्य | ३३. शब्दार्थ पारिजात |
| २९. शब्द-सागर | ३४. मङ्गलकोश |
| ३०. विश्वकोश | ३५. पाक-प्रकाश |

जिन ग्रन्थों से मैंने इस कोश-रचना में सहायता ली है, उनके लेखकों एवं अपने प्रथम प्रोत्साहक गुरुवर स्वर्गीय लाला भगवान 'दीन' जी को अभिवादन पूर्वक धन्यवाद देता हूँ। साथही मैं आचार्य पण्डित रामचन्द्र शुक्ल (प्रोफेसर हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी) का अत्यन्त

उपकृत हूँ जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थ का 'परिचय' लिख कर इसकी पद्धति एवं उपयोगिता का समर्थन किया है। मैं उन विद्वानों का भी अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपनी शुभ सम्मति द्वारा ग्रन्थ की उपयोगिता प्रमाणित की है। अन्त में मैं अपने अभिन्न मित्र पं० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा 'रसिकेश' एम० ए० (प्रोफेसर, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी) को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जो सर्वदा हमारे सभी कार्यों में सत्परामर्श दाता रूप से सहायक रहते हैं। इस कोश की रचना में आपने ही प्रायः सभी सहायक ग्रन्थों का संग्रह करके मुझे कार्यक्षेत्र में प्रोत्साहित किया है।

मैंने इस कोश का संकलन अपनी बुद्धि के अनुसार यथा-साध्य बहुत कुछ खोज और परिश्रम से किया है। मेरा विश्वास है कि इस छोटे से कोश से हमारे व्यवहार के प्रायः सभी वर्ग के शब्दों के पर्याय मिल सकते हैं। साथही जो थोड़ी बहुत पाद टिप्पणियाँ दी गई हैं, उनसे भी मनोरंजन पूर्वक लाभ की सम्भावना है। मुझे पूर्ण आशा है कि यह "हिन्दी पर्यायवाची-कोश" कवि, लेखक, समालोचक, शिक्षक और विद्यार्थी वर्ग का एक विश्वस्त मित्र के समान सहायक, एवं सुयोग्य शिक्षक के समान शब्द-पथ-प्रदर्शक का काम देगा। यदि यह गुणग्राही पाठकों की दृष्टि में कुछ भी उपयोगी जँचा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। मैं सहृदय उदार विद्वज्जनों का अत्यन्त आभारी होऊँगा यदि वे इस कोश में किसी प्रकार की त्रुटि दिखाने की कृपा करेंगे, अथवा इसके संकलन का कोई इससे उत्तम सरल और अधिक उपयोगी मार्ग बताने का अनुग्रह करेंगे। मैं यथा सम्भव द्वितीय संस्करण में उनके सुधारने का प्रयत्न करूँगा।

ज्येष्ठ गङ्गादशहरा
विक्रमाब्द १९९२

}

विनम्र निवेदक,
श्रीकृष्ण शुक्ल

प्रसिद्ध विद्वानों की सम्मति



कविसम्राट् पण्डित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी ।

“हिन्दी-पर्यायवाची कोश की प्राप्ति सादर स्वीकार करता हूँ। ग्रन्थ उपयोगी और उपकारक है, परिश्रम से लिखा गया है। उसके प्रकाशन और संकलन के लिये आपको बधाई है। यह कवियों और विद्यार्थियों के लिये विशेष उपकारक है। आपका श्रम सार्थक है। ग्रन्थ पाकर मैं आल्हादित हुआ। आशा है हिन्दी संसार में इसका उचित आदर होगा।”



पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शर्मा एम्० ए०
प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी ।

“प्रस्तुत हिन्दी-पर्यायवाची कोश ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव सभी कर रहे थे, परन्तु पण्डित श्रीकृष्णशुक्ल ने जिस अध्यवसाय एवं लगन के साथ इस पुस्तक को तैयार किया है वही इस बात का प्रमाण है कि उनके हृदय में वाङ्मय की यह न्यूनता अत्यधिक खटकती रही। आठ-दस वर्षों के सतत प्रयास से जो यह ग्रन्थ तैयार किया गया है, वह अनेक प्रकार से प्रशंसनीय है। इसकी पाद टिप्पणियाँ लेखक के विशेष ज्ञान एवं परिश्रम की ही केवल परिचायक नहीं हैं, वरन् पढ़ने वालों के लिये विशेष उपयोगी हैं। वर्तमानकाल में यह पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। इसका लेखक सभी प्रकार से साधुवाद का पात्र है।”



हिन्दी साहित्य के महारथी श्रेष्ठ आचार्य
पण्डित महावीर प्रसाद जी द्विवेदी ।

संज्ञा

हिन्दी-पर्यायवाची कोश-
को महारथी की पुस्तक है।
हिन्दी में ऐसी एक ही पुस्तक
अपवाद मेरे देखने में न
आई थी। इस पुस्तक के उस
महावीर की प्रति कर दी
लेखक अपने प्रकाशक दोनों
बधाई के पात्र हैं।
मह-प्रदियेडी

मौलाना
१२-५-३५

हिन्दी के अनन्य भावुक कवि एवं सफल नाट्यकार बाबू जयशंकर 'प्रसाद' जी, काशी ।

“वर्गानुक्रम से संगृहीत शब्द कोश संस्कृत वाङ्मय में बहुत हैं । विषयानुकूल शब्दों का ज्ञान कराने में उनकी विशेष उपयोगिता है । पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल जी का पर्यायवाची कोश हिन्दी में उस शैली का प्रथम प्रयास है । इसमें उपयोगी टिप्पणियाँ भी दी गई हैं । इसे देख कर मुझे प्रसन्नता हुई । आशा है कि इसके आगामी संस्करण में कुछ छूटे हुए वर्ग और भी संगृहीत होंगे और अधिक टिप्पणियाँ बधाई जायँगी ।

अध्यापक श्री रामदासजी गौड़ एम्० ए० अवैतनिक सम्पादक “विज्ञान” काशी ।

“मैंने पं० श्रीकृष्ण शुक्ल का लिखा ‘हिन्दी-पर्यायवाची कोश’ देखा । इस ढंग का हिन्दी में यह पहला ही कोश है जिसमें इतने शब्दों का गद्य में संग्रह है । यह ‘अमरकोश’ की तरह वर्गानुक्रम से है । शुक्ल जी ने इससे बहुत ही परिश्रम किया है । यह आरंभिक काम है । औरों के लिये आपने मार्ग दिखा दिया है । लेखकों, कवियों और शिक्षकों के लिये तो यह एक अनमोल चीज है । हिन्दी साहित्य के भाण्डार की शुक्ल जी ने एक अमूल्य रत्न से वृद्धि की है । आपकी पादटिप्पणियाँ बड़े काम की हैं । इस सत्संग्रह के लिये आप सर्वथा बधाई के पात्र हैं ।”

पिंडित रामनारायण जी मिश्र बी० ए०, पी० ई० एस्०,
हेडमास्टर, सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल, काशी ।

“पं० श्रीकृष्ण शुक्ल का “हिन्दी पर्यायवाची कोश” देखकर मुझे आश्चर्य और प्रसन्नता हुई । आश्चर्य इस बात से कि अनेक शब्दों के रहते हुए भी वे इतने महत्व का काम कर सके । यह उनकी बरसों की तपस्या का फल है ।

प्रसन्नता इस बात से कि यह कोश हिन्दी की एक बड़ी आवश्यकता को पूरा करता है । इससे पहिले ऐसे शब्दों का कोई संग्रह मैंने हिन्दी में नहीं देखा था ।

मुझे आशा है कि यदि शुक्ल जी का उत्साह बढ़ाया जायगा तो वे इसके दूसरे संस्करण में यह भी बतला सकेंगे कि इन पर्यायवाची शब्दों के अर्थ में क्या भेद है । शुक्ल जी को मैं इस परिश्रम की सफलता के लिए बधाई देता हूँ ।



विशाल-भारत ।

अगस्त १९३५

हिन्दी पर्यायवाची कोश ।

लेखक—पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल, विशारद ।

हिन्दी में अभिधान ग्रन्थों की प्रचुरता नहीं है उनकी संख्या उँगलियों पर गिनी जा सकती है प्रायः सभी अभिधान ग्रन्थों में केवल शब्द और उनके अर्थ संग्रह किये जाते हैं । किसी-किसी शब्द के अर्थ में यदा कदा दो एक पर्यायवाची शब्द दे दिये जाते हैं । प्रस्तुत कोश की विशेषता यह है कि इसमें शब्दों के पर्यायवाची शब्द ले लीजिये, साधारण अभिधान ग्रन्थ में कौवा शब्द के आगे केवल इतना ही लिखा मिलेगा, एक प्रकार का बड़ा काला पक्षी काक । परन्तु प्रस्तुत पुस्तक में आपको कौवे के दो दर्जन से अधिक पर्यायवाची शब्द मिल जायेंगे । हमारे यहाँ पर्यायशब्दों की कमी नहीं, हाँ लोग उन्हें जानते कम हैं इसलिये उनका व्यवहार कम करते हैं—

पर्यायवाची कोश विद्यार्थियों, शिक्षकों, कवियों और लेखकों के बड़े काम की चीज है । पर्याय शब्दों के ज्ञान और व्यवहार से भाषा समृद्धिशाली होती है यह कहने की जरूरत नहीं । लेखक और प्रकाशक ने इस पुस्तक के द्वारा हिन्दी की एक कमी की पूर्ति की है जिसके लिये धन्यवाद के अधिकारी हैं ।

पृष्ठ संख्या ६४-२८८-४८ सजिल्द मूल्य २।।)

मासिक

विश्वमित्र ।

नवम्बर १९३३

हिन्दी पर्यायवाची कोश ।

लेखक—पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल 'विशारद'

संस्कृत में 'अमर कोष', 'मेदिनी कोष' आदि कोषग्रन्थ शब्दों के वर्गानुक्रम के अनुसार जिस रूप में हैं उसी रूप में इस कोष की हिन्दी भाषा में रचना की गयी है । इसमें शब्दों के पर्याय वर्गीकरण की पद्धति पर दिये गये हैं जिससे एक ही अर्थ के विभिन्न शब्दों का संग्रह एक ही स्थान पर मिल जाता है । जहाँ शब्दों का चुनाव करना होता है वहाँ निस्सन्देह इस प्रकार का कोष बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है । आयुर्वेद, ज्योतिष आदि शास्त्रों के व्यावहारिक शब्द भी इस कोष में संगृहीत हैं जिससे इसकी उपयोगिता और बढ़ गयी है । जहाँतक हम जानते हैं, हिन्दी में यह सर्वप्रथम ही प्रयास है और इसमें सन्देह नहीं कि इसके प्रणयन में इसके विद्वान् प्रणेता को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है । पुस्तक महत्त्वपूर्ण और बड़े काम की है । विद्यार्थी, कवि, लेखक आदि इससे अमित लाभ उठा सकते हैं ।

महामहोपाध्याय डाक्टर गङ्गानाथ झा एम० ए० डी० लिट्,
भूतपूर्व वाइस् चीन्सेलर् इलाहाबाद युनिवर्सिटी की

सम्मति—

जीवन पर्यन्त “अमरकोश” तथा राजेंद्र कृत “थिसरस् ऑव् इङ्लिश्
वर्ड्स् ऑन्ड् फ्रैन्जेज्” का व्यवहार करते हुए मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह
पुस्तक बड़े ही उपकार की होगी । हिन्दी के उन लेखकों को जो शुद्ध
शब्दों के प्रयोग में विशेष ध्यान देते हैं यह पुस्तक सर्वदा अपने
पास रखना चाहिये ।

४-८-३५ ।

गङ्गानाथ झा ।

विनोदसङ्कर व्यास ।

पर्यायवाची कोश देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई ।
इस तरह का कोई भी कोश अब तक हिन्दी में नहीं था ।
लेखकों और कवियों के लिए तो अत्यन्त उपयोगी है ।

दौलतपुर (रायबरेली)

महावीर प्रसाद द्विवेदी

४-८-३५

श्रीमान् !

पर्यायवाची-कोश की कापी मिली । कृतज्ञ हुआ । धन्यवाद ।
इस कोश ने एक बहुत बड़े अभाव का दूरीकरण कर दिया ।
पुस्तक बड़े महत्त्व की है । परमात्मा करे इसका खूब प्रचार हो ।

माधुरी ।

अप्रैल १९३६

हिन्दी-पर्यायवाची कोश ।

लेखक, पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल, विशारद ।

जब से “शब्दार्थ-पारिजात” और ‘हिन्दी-शब्द-सागर’ जैसे कोश लिखे गये, तब से हिन्दी-भाषा-भाषियों की अनेक असुविधाएँ दूर तो अवश्य हो गई; पर इनकी उपादेयता थी एकांगी ही। अक्षरानुक्रम की दृष्टि से तो अब तक अनेक प्रयास किये गये, पर किसी ने भी शब्दानुक्रम की ओर कोई महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं किया। पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का हिन्दी-पर्यायवाची कोश इस क्षेत्र में सर्वप्रथम और सफल प्रयास है। मान्यवर महावीरप्रसादजी द्विवेदी, कविवर अयोध्यासिंहजी हरिऔध तथा प्रख्यात नाट्यकार श्रीजयशंकरप्रसादजी जैसे महानुभावों ने इस पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। पुस्तक की उपादेयता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण यही है।

पुस्तक के लेखक श्रीकृष्णजी शुक्ल और प्रकाशक कैलासनाथजी भार्गव दोनों ही बधाई के पात्र हैं ।

बा० पुरुषोत्तमदास टंडन प्रयाग ।

आपका भेजा “हिन्दी पर्यायवाची कोश” आपके पत्र के साथ मिला । अपने मित्र पं० श्रीकृष्ण शुक्ल के इस परिश्रम को देखकर मैं प्रसन्न हुआ । ऐसे कोष की हिन्दी में बहुत आवश्यकता थी । वास्तव में वर्गों के विभाग के अनुसार इससे भी बड़े कोश की आवश्यकता है । पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल ने यह काम उठा लिया है इससे मुझे आशा है कि वह आगे परिश्रम कर अन्य बहुत शब्दों और वर्गों का समावेश कर सकेंगे । मेरी ओर से उनको बधाई ।

महामहोपाध्याय हरनारायणशास्त्री विद्यासागर, देहली ।

मैंने पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल का बनाया हुआ ‘हिन्दीपर्यायवाची कोष’ देखा । सस्कृत में इस प्रकार के कोष होते हुए भी हिन्दी में इस ढंग का कोष न होना मुझे बहुत दिन से खटकता था । मैं चाहता था कि कोई सुयोग्य विद्वान् इस विषय में परिश्रम करे । आनन्द की बात है कि शुक्लजी ने इस अभाव की पूर्ति कर दी । जहाँतक मैं समझता हूँ हिन्दी में इस प्रकार के कोष का निर्माण पहिला ही प्रयास है इससे विद्यार्थियों को और कविता करने वाले विद्वानों को भी बहुत कुछ सहायता मिलेगी । इसके फुटनोट ग्रन्थकर्त्ता के गम्भीर ज्ञान के परिचायक हैं और पाठकों के लिय विशेष उपयोगी होंगे ऐसी आशा है । इसके लिये ग्रन्थकर्त्ता और प्रकाशक दोनों ही धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं । इत्यलम् ।

सरस्वती ।

मार्च १९३५

हिन्दी-पर्यायवाची कोष ।

हिन्दी में यह कोष अपने विषय का पहला है, साथ ही उत्कृष्ट भी है । इसके रचयिता पण्डित श्रीकृष्ण शुक्ल विशारद ने इसकी रचना में काफी परिश्रम किया है और इसको उपयोगी बनाने में उन्होंने अपनी ओर स कुछ उठा नहीं रक्खा । इसकी रचना संस्कृत कोषों के आधार पर की गई है और सभी शब्दों के उपलब्ध पर्याय संकलित करने का खासा प्रयास किया गया है । प्राचीन कविता-पुस्तकों के अध्ययन में तथा संस्कृत-बहुल नई रचना करने में इस कोष से पूरी सहायता मिल सकती है । यह कोष विषय के अनुसार ३७ वर्गों में विभाजित है तथा इसमें २, २५१ शब्दों के पर्याय दिये गये हैं । हिन्दी-कोष होने के कारण हिन्दी-पर्याय संकलित करने में भी परिश्रम किया गया है, यहाँ तक कि कहीं-कहीं प्रान्तीय शब्द भी आ गये हैं । इसी प्रकार कहीं-कहीं हिन्दी का पर्याय गुलत भी दे दिया गया है, जैसे 'सभा-भवन' का पर्याय 'पञ्चायती जगह' लिखा गया है, जो पञ्चायत-स्थान होना चाहिए । कहीं-कहीं हिन्दी का पर्याय नहीं भी दिया गया है, जैसे कि 'बाजार' का 'पैठ', हालाँकि 'पैठ' शब्द हिन्दी में प्रयुक्त शब्द है । परन्तु ऐसी दो-चार त्रुटियों से इस ग्रन्थ के महत्त्व या उपयोगी होने में कोई अन्तर नहीं पड़ता । सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) है ।

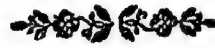
हिन्दी
पर्यायवाची
कोश

हिन्दी-पर्यायवाची कोश

को वर्ग-सूची

वर्ग-नाम	मूलशब्द	पृष्ठ	वर्ग-नाम	मूलशब्द	पृष्ठ
प्रथम खण्ड			चतुर्थ खण्ड		
१. स्वर्गादि वर्ग	७८	३	१. पशु वर्ग	३०	२४७
२. देवावतार वर्ग	३३	२२	२. सरीसृप वर्ग	२२	२५३
३. तीर्थादि वर्ग	१०	२६	३. पक्षी वर्ग	४३	२५५
४. दिशादि वर्ग	२३	२८	४. कीट-पतङ्गादि वर्ग	१८	२६०
५. आकाशादि वर्ग	७५	३१	५. क्रियादि वर्ग	२८७	२६३
६. कालादि वर्ग	४८	३८	—:ॐ:—		
द्वितीय खण्ड			पूर्ण संख्या—खण्ड ४, वर्ग ३७,		
१. स्थलादि वर्ग	८२	४५	मूलशब्द २२५१		
२. जलादि वर्ग	६५	५३			
३. खनिज वर्ग	६१	६२			
४. वनादि वर्ग	२९	७८			
५. धान्य वर्ग	२२	८१			
६. तिलादि वर्ग	८	८५			
७. शाक-भाजी वर्ग	३१	८७			
८. मूल-कन्द वर्ग	१३	९२			
९. फल वर्ग	५१	९४			
१०. पुष्प वर्ग	३०	१०३			
११. वृक्ष वर्ग	२४	१०९			
१२. वनौषधि वर्ग	१२२	११४			
१३. गन्धादि वर्ग	३१	१३६			
१४. मधु वर्ग	८	१४३			

वर्गानुक्रम शब्द-सूची



प्रथम खण्ड

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
१. स्वर्गादि वर्ग		इन्द्र का हाथी	॥
स्वर्ग	३	इन्द्र का वज्र	६
ईश्वर	॥	इन्द्र का विमान	॥
देवता	॥	वरुण	॥
[टि० देवयोनि । गणदेवता]		[टि० वरुण का परिचय]	
अष्टवसु । दश विश्वेदेव । गणदेवता]		कुबेर	॥
देवसभा	४	[टि० कुबेर का परिचय]	
असुर	॥	कुबेर का पर्वत	॥
किन्नर	॥	कुबेर का ऐश्वर्य	७
गन्धर्व	॥	[टि० अष्ट सिद्धियाँ और नव निधियाँ]	
[टि० गन्धर्वों के ११ गण]		कुबेर का खजाना	॥
अप्सरा	५	यम	॥
[टि० स्वर्ग की वेद्यायें]		[टि० चतुर्दश यम]	
इन्द्र	॥	राक्षस	॥
[टि० चतुर्दश इन्द्र आदि]		दानव	८
इन्द्राणी	॥	राक्षसी	॥
इन्द्रपुरी	॥	नरक	॥
इन्द्र का पुत्र	॥	[टि० नरक-भेद २५ प्रकार के]	

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
नरक भोगी	८	बड़वानल	१६
नरक जीव	११	वनकी अग्नि	११
नरक पीड़ा	११	पेट की अग्नि [टि० परिचय]	११
ब्रह्मा	९	अग्नि कण	११
[टि० ब्रह्मा का परिचय]		अग्नि ज्वाला	११
ब्रह्मा का वाहन	११	अग्नि सन्ताप	११
विष्णु	११	वायु [टि० शरीरस्थ पञ्चवायु]	
विष्णु का घोड़ा	१०	४९ पवन ।]	११
विष्णु का वाहन	११	आँधी	१८
महादेव	११	वायुवेग	११
[टि० परिचय, शिव की अष्टमूर्ति, एकादश रुद्र, शिव के नन्दी गण]		कामदेव ॥	११
सरस्वती [टि० परिचय]	१२	[टि० पंचबाण, काम का धनुष]	
लक्ष्मी [टि० परिचय]	११	काम की स्त्री]	११
पार्वती [टि० परिचय]	११	अश्विनीकुमार [टि० परिचय]	११
दुर्गा	१३	जप	१९
[टि० पंचदेवी, सप्तमाता, नवदुर्गा, नवशक्ति, दशमहाविद्या, ६४ योगिनी]		तप	११
गणेश	१४	पूजा	११
कार्तिकेय [टि० परिचय]	११	यज्ञ [टि०-पंच महायज्ञ]	११
भैरव	१५	दान	११
अग्नि	११	उपासना	११
[टि० वैद्यक और कर्मकाण्ड मत से अग्नि के भेद, ७ जिह्वाएँ ।]		व्रत	११
		सन्यास	११
		सन्यासी	२०
		तपस्वी	११
		ब्रह्मत्वभाव	११

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
विवेक	२०	गायत्री	२३
दर्शन	,,	हनुमान	२४
दर्शनयोग्य	,,	नारद	,,
धर्म [टि० धर्म के १० लक्षण]	,,	विश्वामित्र	,,
मुनि	,,	विश्वकर्मा	,,
ब्रह्मज्ञानी	,,	शृङ्गोच्छिषि	,,
मुक्ति	,,	अगस्त्य	,,
अमृत	२१	वशिष्ठ [टि० सप्तर्षि]	,,
स्वर्णाचल	,,	वाल्मीकि	,,
देववृक्ष	,,	व्यास	,,
देवनदी	,,	युधिष्ठिर [टि० पंच पाण्डव]	,,
कामधेनु	,,	अर्जुन	२५
वेद [टि० चार वेद और ४ वेदाङ्ग]	,,	कर्ण	,,
शास्त्र [टि० १८ शास्त्र]	,,	भीष्म पितामह	,,
२. देवावतार वर्ग		द्रौपदी	,,
रामचन्द्र [टि० परिचय]	२२	अभिमन्यु	,,
जानकी [टि० परिचय]	,,	दशरथ	,,
परशुराम [टि० परिचय]	,,	जनक	,,
कृष्ण	,,	लक्ष्मण	,,
राधा	२३	शत्रुघ्न	,,
यशोदा	,,	रावण	,,
बलराम	,,	मेघनाद	,,
अनिरुद्ध	,,	जामवन्त	,,
मृसिंह	,,	३. तीर्थादि वर्ग	
गौतमबुद्ध	,,	प्रयागराज	२६

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
अयोध्या [टि० सप्त मोक्षदा पुरी] २६		एकान्त	२९
मथुरा	"	ओट	"
काशी	"	दहिना	"
जगन्नाथपुरी [टि० चारों धाम]	"	बाँया	"
द्वारकापुरी	"	समीप	"
गंगा	"	दूर	३०
यमुना	२७	आदि	"
नर्मदा	"	मध्य	"
सरयू	"	अन्त	"

४. दिशादि वर्ग

५. आकाशादि वर्ग

दिशा	२८	आकाश	३१
दिक्पाल [टि० दशोदिग्पाल]	"	मेघ	"
पूर्व	"	मेघ पंक्ति	"
पश्चिम	"	मेघ गर्जन	"
उत्तर	"	विजुली	"
दक्षिण	"	इन्द्रधनुष	३२
दिगन्तर [टि० परिचय]	"	वृष्टि	"
दिग्गज [टि० अष्ट दिग्गज] २९	"	झोंसी	"
मण्डल	"	मृगतुण्डा	"
ऊपर	"	पाला	"
नीचे	"	सूर्य [टि० सूर्य की १२ कलाएँ]	"
आगे	"	सूर्य के पारिपार्श्वक	३३
सम्मुख	"	सूर्य का सारथी	"
विमुख	"	सूर्य-मण्डल	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सूर्य-किरण	३३	आर्द्रा	३६
सूर्य-प्रकाश	,,	पुनर्वसु	,,
सूर्य के घोड़े	,,	पुष्य	,,
चन्द्रमा [टि० चन्द्रमा की १६ कलाएँ]	,,	अश्लेषा	,,
चन्द्रमण्डल	३४	मघा	,,
चन्द्रिका (चाँदनी)	,,	पूर्वा फाल्गुनी	,,
द्वितीया का चन्द्रमा	,,	उत्तरा फाल्गुनी	,,
पूर्णमासी का चन्द्रमा	,,	हस्त	,,
चन्द्र-चित	,,	चित्रा	,,
चन्द्रमा की छी	,,	स्वाती	,,
मङ्गल	,,	विशाखा	,,
बुध	,,	अनुराधा	,,
बृहस्पति	३५	ज्येष्ठा	,,
शुक्र	,,	मूल	,,
शनि	,,	पूर्वाषाढ़	,,
राहु	,,	उत्तराषाढ़	,,
केतु	,,	अभिजित	,,
नक्षत्र [टि० २७ नक्षत्रों के नाम]	,,	श्रवण	,,
नक्षत्रों का समूह	,,	धनिष्ठा	,,
ध्रुव	३५	शतभिषा	३७
अश्विनी	,,	पूर्वाभाद्रपदा	,,
भरणी	,,	उत्तराभाद्रपदा	,,
कृत्तिका	,,	रेवती	,,
रोहिणी	३६	राशि [टि० १२ राशियाँ]	,,
मृगशिरा	,,	मेघ	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
वृष	३७	कृष्ण पक्ष	३९
मिथुन	"	शुक्ल पक्ष	"
कर्क	"	'मास	"
सिंह	"	वर्ष	"
'कन्या	"	'अमावास्या	"
तुला	"	पूर्णमासी	"
वृश्चिक	"	चैत्र	"
धनु	"	वैशाख	४०
मकर	"	ज्येष्ठ	"
कुम्भ	"	आषाढ़	"
मीन	"	श्रावण	"
६. कालादि वर्ग		भाद्रपद	"
समय	३८	आश्विन	"
पल	"	कार्तिक	"
दण्ड	"	मार्गशीर्ष	"
प्रहर [टि०८ प्रहरों का विवरण]	"	पौष	"
दिन	"	माघ	"
प्रातःकाल	"	फाल्गुन	"
मध्याह्न काल	३९	अधिकमास [टि० परिचय]	"
सायंकाल	"	वसन्त (ऋतु)	"
रात्रि	"	ग्रीष्म	४१
अँधेरी रात	"	वर्षा	"
उँजाली रात	"	शरत्	"
सप्ताह	"	शिशिर	"
पक्ष	"	हेमन्त	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सतयुग	४१	अनुपस्थित	४१
कलियुग	,,	गत	,,
प्रलयकाल	,,	आगामी	,,
अवशिष्ट	,,	नित्य	,,
उपस्थित	,,	पश्चात्	४२

द्वितीय खण्ड

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
१. स्थलादि वर्ग		सुन्दर मार्ग (सुगम मार्ग)	४७
पृथ्वी	४५	दुर्गम मार्ग	,,
संसार [टि० १४ लोक]	,,	संकीर्ण मार्ग	,,
मिट्टी	४६	चौराहा	,,
धूलि	,,	राज मार्ग	,,
उपजाऊ भूमि	,,	नगर	,,
बिना उपजाऊ भूमि	,,	टोला	,,
आर्यावर्त देश	,,	बाजार	,,
राष्ट्र	,,	तेल का बाजार	,,
ऊसर देश	,,	कपड़े का ,,	,,
खेत	,,	मछली का ,,	,,
म्लेच्छ देश	,,	सुनारों का ,,	,,
जल प्रचुर देश	,,	वर्तनों का ,,	४८
वालुका प्रचुर देश	,,	गाँव	,,
बल्मीक	,,	अड़ीरों का गाँव	,,
मार्ग	४७	भीलों का गाँव	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
चमारों का गाँव	४८	झोपड़ी	५०
घर	"	घुड़साल	"
घर की दीवाल	"	हाथीखाना	"
गृहद्वार	"	गोशाला	"
वगली-द्वार	"	औषधालय	"
देहली	"	पाठशाला	"
ओसारा	"	यज्ञशाला	"
आँगन	"	शस्त्रालय	५१
खंभा	४९	धर्मशाला	"
सीढ़ी	"	रणभूमि	"
अटारी	"	न्यायशाला	"
खिड़की	"	मद्यगृह	"
किवाड़	"	शिल्पशाला	"
छाजन	"	पौसरा	"
वैठक	"	श्मशान	"
शयन-गृह	"	कारागार	"
रसोई-गृह	"	जुआखाना	"
रति-गृह	"	नाट्यशाला	"
प्रसव-गृह	"	व्यायामशाला	"
राज-महल	"	पर्वत [टि० सप्त पर्वत]	"
कोट	५०	पर्वत-शिखर	५२
किला	"	पाताल	"
अन्तःपुर	"	गड्ढा	"
देव-मन्दिर	"	पत्थर	"
सभा-भवन	"	झरना	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कन्दरा	५२	जहाज	५६
२. जलादि वर्ग		नाव की डाँड़	"
जल ✓	५३	पतवार	"
जलाशय	"	पानी फेरने की कड़ाही (तसली)	"
समुद्र [टि० सप्त सिन्धु, चौदह रत्न]	"	केवट	"
समुद्र-मर्याद	५४	नाव की उतराई (भाड़ा)	"
समुद्र-फेन	"	नाव खींचने वाली रस्सी	"
तरङ्ग	"	बंसी	"
जल की गहराई	"	मछली पकड़ने का जाल	"
पानी का चक्र	"	मछली [टि० मछली की विशेष	"
जलविन्दु	"	जातियाँ]	५७
जलाशय का किनारा	"	केकड़ा	"
जलाशय के बीच का स्थल भाग	"	कछुआ	"
नदी	५५	मगर	"
तालाब	"	जोंक	"
बावली	"	मछली रखने का यात्र	"
नदी संगम	"	सीपी (साधारण सुतुही)	"
नदी का फेन	"	सीपी (मोती वाली)	"
कीच	"	शंख	५८
बोंध	"	घोंघा	"
कुओ	"	कौड़ी	"
चाल	"	मेढक	"
खार्ई	५६	कमल (सूर्य विकासी)	"
पुल	"	श्वेत कमल	"
नौका	"	रक्त कमल	५९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
नील कमल	५९	माणिक	६३
पीला कमल	५९	नीलम	५९
-कुमुद (चन्द्रविकासी)	५९	पोखराज	५९
कमल दल	५९	सूर्यकान्त मणि (आतशी शीशा)	५९
कमल-दण्ड	५९	चन्द्रकान्त मणि	६४
कमल की जड़	५९	स्फटिक मणि (बिलौरी)	५९
कमल-केशर	५९	फिरोजा	५९
कमल-रस	५९	कॉच	५९
कमल-धूलि	५९	(धातु-उपधातु)	
कमल बीज (कमल गट्टा)	६०	लोहा [टि० पौराणिक मतानुसार	
जलकुम्भी	५९	उत्पत्ति]	५९
सिंघाड़ा	५९	तौवा	५९
सेवार	५९	चाँदी	६५
मखाना	५९	पीतल	५९
केशर (कुंकुम)	५९	कॉसा	६६
चैत	६१	सोना [टि० पौराणिक परिचय]	५९
भूंगा	५९	जस्ता	६७
मोती	५९	रौंगा	५९
३. खनिज वर्ग		शीशा	५९
(रत्न-उपरत्नादि)		पारा [टि० पौराणिक परिचय]	५९
स्वान	६२	गन्धक [टि० गन्धक के ४ भेद]	६८
उर्दारा [टि० नवरत्नों के नाम]	५९	हरताल [टि० हरताल के २ प्रकार]	५९
पन्ना	५९	अभ्रक [टि० अभ्रक के ४ भेद]	६९
लहसुनियों (वैदूर्यमणि)	६३	मुरदासंग	५९
गोमेद	५९	रूपामाखी	५९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सोनामाखी	७०	जवाखार	७५
खपरिया	"	सज्जीखार	"
तूतिया	"	सुहागा	"
कोसीस [टि० दो प्रकार]	"	संधानोंन	७६
गेरू (साधारण)	७१	सोभरनोंन	"
स्वर्णगैरिक (गेरू)	"	समुद्रीनोंन	"
हिरौंजी	"	संचरनोंन	"
खाबिया (सेलखड़ी)	"	कालनोंन	"
मैनसिल	"	कँचियानोंन	"
सुरमा (स्रोतोंजन)		खारीनोंन	७७
[टि० सुरमा के ३ प्रकार]	"	नौसादर	"
सुरमा (सौवीराब्जन)	७२	शोरा	"
सुरमा (पुष्पाब्जन)	"	४. बनादि वर्ग	
हिंगुल (ईशुर)			
[टि० हिंगुल के ३ प्रकार]	"	वन	७८
सिन्दूर	"	महावन	"
शिलाजीत		उपवन	"
[टि० ४ प्रकार का शिलाजीत]	७३	पौधा	"
वच्छनाग विष	"	वृक्ष	"
[टि० दो प्रकार के विष]	"	लता-बौर	"
संखिया [टि० विष, उपविष]	७४	बीज	"
फिटकिरी	"	जड़	७९
चुम्बक	"	अंकुर	"
गोपीचन्दन	"	मंजरी	"
बोल (बोर) [टि० परिचय]	७५	कली	"

(१२)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
फूल	७९	उड़द (उर्द)	८२
फूल का गुच्छा	"	लोबिया	"
पुष्प-रस	"	मसूर	८३
पुष्प-रज	"	मूँग	"
पत्र	"	रहर	"
शाखा	"	मोठ (मोथी)	"
टहनी	"	साँवा	"
काँटा	"	कोदव (कोदो)	"
छाल	"	मक्का	"
वरोह	८०	बाजरा	८४
गोंद	"	ज्वार	"
फलयुक्त वृक्ष	"	केसारी	"
फलहीन वृक्ष	"	ककुनी	"
फूला हुआ वृक्ष	"	तीनी (तिन्नी)	"
कोटर	"	कूद	"
काठ	"	सावूदाना	"
जलाने की लकड़ी	"	६. तिलादि वर्ग	
थाला	"	तिल	८५
५. धान्य वर्ग		सरसों	"
अन्न	८१	राई	"
धान [टि० धान के भेद]	"	अलसी (तीन्नी)	"
जव	८२	वरें	८६
गेहूँ	"	रेंकी	"
चना	"	तेल	"
मटर	"	खली	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
७. शाक-भाजी वर्ग			
बधुआ	८७	ढेंवसा	९०
नोनियाँ	"	भिंडी	९१
मरसा	"	बैंगन (भौंटा)	"
चौराई	"	गवालिन	"
सोया	"	सेम	"
पालक	८८	सहिजन	"
पोय (पोई)	"	कचनार	"
मेथी	"	८. मूल-कन्द वर्ग	
पेठा	"	लहसुन	९२
कुम्हड़ा	"	प्याज	"
लौकी (कद्दू)	"	मूली	"
तितलौकी	८९	बड़ी मूली	"
ककड़ी	"	गाजर	"
खीरा	"	सलजम (गोलगाजर)	"
फूट-ककड़ी	"	सूरन	९३
खरबूजा	"	लालकन्द	"
तरबूज	"	शकरकन्द (सफेद)	"
तोरई	९०	अरबी (घुइयाँ)	"
नेनुओं	"	आलू	"
चिचिंडा	"	सुथनी	"
परवल	"	कसेरू	"
कुन्दुरु	"	९. फल वर्ग	
खेखसा	"	आम	९४
करेला	"	कलमी आम	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
आमड़ा	९४	अनजास	९९
अनार	"	मकोय	"
केला	९५	आँवला	"
नारियल	"	गूलर	"
खजूर (पिण्डखजूर)	"	शहदूत	१००
ताही-फल	९६	लिसोड़ा	"
सेव	"	जामुन (छोटो-जामुन)	"
नाशपाती	"	जामुन (बड़ी-जामुन)	"
अमरूद	"	बेल	"
नारंगी	"	पपीता	१०१
नीवू (कागजी)	"	[सूखा फल-मेवा आदि]	
नीवू (विजौरा)	"	छोहरा	"
नीवू (जम्भीरी वा कमला)	"	बादाम	"
इमली	९७	आलूबोखारा	"
कटहल	"	अखरोट	"
चड़हल	"	सुपारी	"
महुआ	"	चिरौजी	"
कैथा	"	पिस्ता	१०२
कमरख	९८	अजौर	"
हरफारेवड़ी	"	काजू	"
करौंदा	"	अंगूर	"
चैर	"	मुनक्का	"
खिरनी	"	किशमिश	"
फालसा	९९	मूंगफली	"
शरीफा	"	निर्मली	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
१०. पुष्प वर्ग		लटकन [टि० परिचय और उपयोग]	१०७
चमेली (पीली)	१०३	हारसिंगार	१०८
चमेली (सफेद)	"	ओढ़हुल	"
बेला	"	अगस्त्य	"
नेवारी	१०४	गुलदौन।	"
जूही (सफेद)	"	कनेर -	"
जूही (पीली)	"	११. वृक्ष वर्ग	
माधवी	"	वड़	१०९
मालती	"	पीपर	"
गुलाब [टि० गुलाब के भेद]	१०५	पाकर	"
चम्पा [टि० चम्पा की विशेषता]	"	सिरस	११०
मौलसिरी	१०६	शीशम	"
मुचुकुन्द	"	शाल	"
कुन्द	"	सलाई	"
कदम्ब	"	अर्जुन	"
केवड़ा-सफेद	"	विजयसार	१११
केवड़ा-पीली	"	खैर	"
कटसरैया-पीली	१०७	पपाड़िया खैर	"
कटसरैया-नीली	"	बबूल	"
कटसरैया-लाल	"	रीठा	"
कससरैया-सफेद	"	तमाल	"
गुलदुपहरिया	"	भोजपत्र	"
गुलतुरा	"	पलास	११२
गुलपरी	"	सेमल	"
मखमली	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
घव	११२	करञ्ज	११८
करील	"	केवाँच	"
सागौन	"	गुब्जा (घुमची)	"
समी	"	गुब्जा-सफेद	११९
रुद्राक्ष	११३	बीजवन्द	"
अशोक	"	सहदेई	"
नीम	"	कपास	"
		वाँस	"
		नर्कट	१२०
		मूँज	"
		कास	"
		कुशा	"
		विदारीकन्द	"
		मूसली	"
		सतावर	"
		असगन्ध	१२१
		जमालगोटा	"
		इन्द्रायन (इनाक-फल)	"
		(टि० परिचय)	"
		सनाय	"
		नील	१२२
		सरफोंका	"
		गोरखमुण्डी	"
		लटजीरा (ऑंगा)	"
		तालमखाना	"

१२. वनौषधि वर्ग

टैटी [टि० परिचय]	११४		
सोनापाड़ा	"		
भटकटैया	"		
गोखरू (वड़ा)	११५		
गोखरू (छोटा)	"		
जीवन्ती	"		
मदार (आक)	"		
सेहुइ	११६		
करियारी	"		
दूब	"		
तुलसी	"		
श्यामा-तुलसी	११७		
कनेर [टि० भेद]	"		
धतूरा	"		
अरुसा	"		
पित्तपापड़ा	११८		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
घोक्वार	१२२	सोंठ	१२५
रामबाँस	१२३	अदरक	"
गदहपूरना	"	मिर्च (काली)	१२६
भंगरैया	"	मिर्च (सफेद)	"
सन	"	पीपल	"
सोमलता	"	पिपरामूल	"
आकाश वौर	"	चीता	"
शंखाहुली	"	सौंफ	"
अंघाहुली	"	मेथी	"
लज्जावन्ती	"	अजवायन	१२७
ब्राह्मी	"	अजमोदा	"
गाजुवाँ	१२४	जीरा सफेद	"
कुकरौंदा	"	जीरा-स्याह	"
सुदर्शन	"	मगरैया	"
चाय	"	धनियॉ	"
माजूफल	"	कालीजीरी	१२८
तमाखू	"	होंग	"
इसरगोल	"	वच	"
सालम मिश्री	"	कुलोजन	"
लाल मिर्च (मिरचा)	"	चोपचीनी	"
मँहदी	"	अकरकरा	"
बिधारा	"	वावीरंग	"
हरें [टि० हरें के भेद]	१२५	वंशलोचन	"
वहेड़ा	"	ताखुर (तवाखीर)	१२९
औवल	"	समुदफेन	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
काकोली	१२९	भाँग	१३४
क्षीरकाकोली	"	गौँजा	"
मुलेठी	"	पोस्ता (अफीम का फल)	"
कबीला	"	अफीम [टि० चार प्रकार,	
अमलतास	"	परिचय]	"
कुटकी	१३०	खसखस (पोस्ते के दाने)	"
चिरायता	"	गुर्च (गिलोय)	१३५
इन्द्रजौ	"	पान	"
मैनफर	"	१३. गन्धादि वर्ग	
मालकँगुनी	"		
पुष्करमूल	१३१	कपूर [टि० १३ प्रकार]	१३६
केकड़ासिंगी	"	कस्तूरी	"
कायफर	"	चन्दन	"
मजीठ [टि० परिचय]	"	लाल चन्दन	१३७
लाही (लाह)	"	अगर	"
हलदी	१३२	देवदारु	"
आमाहलदी	"	तगर	"
दारुहलदी	"	गुगुल	"
रसवत	"	राल	"
वकुची	"	गन्धाविरोजा	"
चकवैड	१३३	लौंग	१३८
अतीस	"	जायफल [टि० परिचय]	"
लोध	"	जावित्री	"
पठानी लोध	"	इलायची-बड़ी	"
भिलावाँ [टि० परिचय, विशेषता]	"	इलायची-छोटी	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
शीतलचीनी	१३९	मोम	१४३
नागकेशर	"	काँजी	"
दालचीनी [टि० परिचय]	"	मदिरा (शराब)	"
तेजपात	"	ईख	१४४
बालछद्द	१४०	गुड	"
खस	"	खाँड़	"
गोरोचन [टि० परिचय]	"	चीनी	"
नख	"	१५. गौरस वर्ग	
नखी	"		
सुगन्धचाला	१४१	दूध	१४५
पद्मकाठ [टि० परिचय]	"	दही	"
नागरमोथा	"	मलाई	"
छरीला [टि० परिचय]	"	खोआ	"
कचूर	१४२	छेना-पानी	"
कपूर कचरी	"	छेना	"
पुदीना [टि० विशेषता]	"	मट्ठा	"
१४. मधु वर्ग		मक्खन	"
		घी	"
मधु (शहद) [टि० चार प्रकार]	१४३		

तृतीय खण्ड

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
१. मनुष्य वर्ग			
• शरीर	१४९	• मुँह [दि०-२ भेद]	१५१
अङ्ग	"	• जीभ	"
शिखा	"	• दाँत	"
सिरके बाल	"	• जबड़ा	"
चोटी	"	• तालु	"
सिर	"	• कंठ	"
ललाट	"	• गरदन	"
जटा	"	• कंधा	"
कान	१५०	• घंटी (घाटी)	"
कनपटी	"	• छाती	"
भौंह	"	• स्तन	"
चरौनी	"	• स्तन का अग्रभाग	"
• आँख	"	• कोंख	"
आँख की पुतली	"	• कमर	"
आँख का गोला	"	• कूल्हा (कमर की हड्डी)	१५२
आँख का कोना	"	• पेट	"
पलक	"	• नाभि	"
• गाल	"	• पीठ	"
• नाक	"	• पसली	"
• ओठ	"	• लिङ्ग (पुरुषेन्द्रिय)	"
उठ्ठी	"	• अण्डकोष	"
मूँछ-दाढ़ी	"	• योनि	"
	१५१	• नितम्ब	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
मलद्वार	१५२	रोमाञ्च	१५५
मलाशय	१५३	आँसू	१५
मूत्राशय	१५३	पसीना	१५
जोष	१५३	चमड़ा	१५
घुटना	१५३	लोहू	१५
पैर	१५३	मांस	१५
एड़ी	१५३	चरबी [टि० परिभाषा]	१५
पैर का तलवा	१५३	मज्जा [टि० परिभाषा]	१५
पैर की उँगुली	१५३	हड्डी	१५६
बाँह [टि० आजानुबाहु]	१५३	वीर्य [टि० सप्तधातु]	१५
केहुनी	१५३	रज [टि० रजोदर्शनकाल]	१५
हाथ	१५४	कलेजा	१५
हथेली	१५४	वात [टि० ५ प्रकार]	१५
हथेली के पीछे	१५४	पित्त [टि० ५ प्रकार]	१५
उँगुली	१५४	कफ [टि० ५ प्रकार]	१५
गावा	१५४	नस	१५
उँगुली के पोर	१५४	नाड़ी	१५
नाखून	१५४	लार (थूक)	१५७
इन्द्रिय [टि० ५ कर्मेन्द्रिय,		पिलही (तिल्ली)	१५
५ ज्ञानेन्द्रिय तथा		यकृत	१५
४ अन्तरिन्द्रिय]		अँतड़ी	१५
थप्पड़	१५४	फेफड़ा	१५
धूँसा	१५४	त्रिवली	१५
गोद	१५४	गर्भाशय	१५
रोम	१५४	गर्भ (गर्भस्थित पिण्ड)	१५

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
प्रसव	१५७	कुटनी	१६०
कान का मैल	"	बालक	"
आँख का कीचड़	"	बालिका (कन्या)	१६१
नाक का मैल	"	भुवा	"
विद्या (मल)	"	युवती	"
मूत्र	१५८	प्रौढ़	"
पुरुष [टि० ४ प्रकार]	"	प्रौढ़ा	"
स्त्री	"	शृद्ध	"
सुन्दरी स्त्री	"	मस्तिष्क	"
पतिव्रता स्त्री	१५९	शब्द	"
कुटुम्बवाली स्त्री	"	दृष्टि	"
सधवा स्त्री	"	गंध	"
विधवा स्त्री	"	भूख	"
रँडवा (जिसकी स्त्री मर गई हो)	"	प्यास	"
रजस्वला स्त्री	"	जँभाई	१६२
विगत रजा स्त्री	"	छोंक	"
स्वयंवरा स्त्री	"	हँसी [टि० ६ भेद]	"
पति-पुत्र-हीना स्त्री	"	रोना	"
सती स्त्री	१६०	हिचकी	"
प्यारी स्त्री	"	सुनना	"
विवाहिता स्त्री	"	स्वाद	"
गर्भवती स्त्री	"	निद्रा	"
प्रसूता स्त्री	"	ऊँघ	"
बन्ध्या स्त्री	"	आलिङ्गन	"
व्यभिचारिणी	"	सुम्बन	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
मैथुन	१६३	सजग	१६५
जीव	"	तैयार	"
आत्मा	"	तत्पर	"
मन	"	पुष्ट	"
बुद्धि	"	नष्ट	"
अहंकार	"	भाग्यमान	"
कवन्ध	"	उदार	"
मुर्दा	"	पूज्य	"
भाग्य	"	परीक्षक	"
अभाग्य	"	प्रसन्नचित्त	"
[विशेषण बोधक शब्द]	१६४	व्याकुलचित्त	"
प्रजा	"	उत्कण्ठित	"
धनी	"	सरलचित्त	"
दरिद्र	"	स्वामी (मालिक)	१६६
चतुर	"	स्वतन्त्र	"
मूर्ख	"	पेद्द (अपना पेट पालनेवाला)	"
मीठा	"	विनीत	"
खट्टा	"	चुगुलखोर	"
नमस्कीन	"	क्रूर	"
तीता	"	सज्जन	"
कडुभा	"	दुर्जन	"
कसैला	१६५	भयभीत	"
ठंडा	"	कामी	"
गरम	"	व्यभिचारी	१६७
रिक्त	"	अधम	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
उत्तम	१६७	कोमल	१६९।
भयकर	"	सौवल	"
त्यागी	"	गोरा	"
आलसी	"	सफेद	"
लम्बा	"	लाल	"
नाटा	"	पीला	"
मोटा	"	चितकवरा	"
पतला	१६८	हरा	"
आरोग्य	"	छोटा	"
रोगी	"	बड़ा	"
अन्धा	"	सूक्ष्म	"
काना	"	नया	१७०
बहिरा	"	पुराना	"
गूँगा	"	थोड़ा	"
कुबड़ा	"	बहुत	"
नाक-कटा	"	पूर्ण	"
बड़े कानवाला	"	आधा	"
कान-कटा	"	चौथाई	"
लम्बी भुजावाला	"	चिकना	"
छोटी भुजावाला	"	छ्वा	१७१
हाथ-कटा	"	टेढ़ा	"
लँगड़ा	"	पवित्र	"
सुन्दर	"	अपवित्र	"
कुरूप	१६९	अतिथि	"
कठोर	"	धूर्त	"
			"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
प्रिय	१७१	उचित	१७३
पुरवासी	"	अनुचित	"
ग्रामवासी	"	नंगा	"
चटोही	"	हिंजडा	"
थका	"	शत्रु	"
घृणित	१७२	मित्र	१७४
अद्भुत	"	सखी	"
शान्त	"	नेता	"
वीर	"	कुलीन	"
सीधा	"	२. सम्बन्धी वर्ग	
पागल	"		
मौनी	"	माता [टि० ७ प्रकार]	१७५
दानी	"	पिता [टि० ७ प्रकार]	"
सूम	"	पति [टि० ४ प्रकार]	"
दानपात्र	"	पत्नी	१७६
मुख्य	"	पुत्र	"
मतवाला	"	पुत्री	"
पराधीन	१७३	पौत्र (पुत्र का पुत्र)	"
दयावान	"	पौत्री (पुत्र की पुत्री)	"
अपकारी	"	नाती (पुत्री की पुत्री)	"
क्षमाशील	"	नतिनी (पुत्री की पुत्री)	"
क्षमारहित	"	भाई (सगा)	"
अधीन	"	भाई (ज्येष्ठ)	"
अगुआ	"	भाई (छोटा)	"
अशकुन	"	ब्राह्मिन	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
दादा (पिता के पिता)	१७७	देवर	१७८
दादी (पिता की माता)	"	ननद	१७९
चाचा	"	जेठ (स्त्री के पति का बड़ा भाई)	"
चाची	"	पति-पत्नी	"
बुआ	"	सौत	"
फुफेरा भाई	"	उपपति	"
मौसी	"	उपपति से उत्पन्न पुत्र	"
मौसेरा भाई	"	[टि० दो प्रकार]	"
मौसेरी बहिन	"	गोद बैठाया हुआ पुत्र	"
नाना	"	सन्तान	"
नानी	"	समान अवस्था के	"
मामा	१७८	३. जाति वर्ग	
मामी	"	जाति	१८०
भाब्जा	"	ब्राह्मण [टि० छः कर्म]	"
भाब्जी	"	ब्राह्मण-पत्नी [टि० अर्थभेद]	"
भतीजा	"	क्षत्री	१८१
भतीजी	"	क्षत्री-पत्नी	"
भोजाई	"	वैश्य	"
चान्धव	"	वैश्य-पत्नी	"
पतोहू	"	शूद्र	"
सास	"	शूद्र-पत्नी	"
साला	"	चाण्डाल [टि० भिन्न २ प्रकार]	"
साली	"	धोबी	१८२
बहनोई	"	धोबी की स्त्री	"
दामाद	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
चमार	१८२	दरजी	१८४
चमार की स्त्री	,,	चुड़िहारा	,,
भंगी	,,	माली	,,
धुनियाँ	,,	माली की स्त्री	,,
जुलाहा	,,	वहेलिया	,,
अंग्रेज	,,	केवट	,,
मुसलमान	,,	नट	,,
कोल-किरात [टि० उत्पाति]	,,	भाट	१८५
लोहार	१८३	कसाई	,,
वढ़ई	,,	राजगीर	,,
कहार	,,	कारीगर	,,
कहार की स्त्री	,,	चित्रकार	,,
नाई	,,	तमोली	,,
बारी	,,	हलवाई (रसोइया)	,,
ठठेरा	,,	किसान	,,
अहीर	,,	गवैया	,,
अहीर की स्त्री	,,	वजानेवाले	,,
गढ़ेरिया	,,	वंशी वजाने वाले	,,
कुम्हार	,,	मृदङ्ग	,,
कोइरी	,,	नाचने वाले पुरुष	१८६
कुरमी	,,	नाचने वाली स्त्री	,,
सोनार	१८४	वेश्या	,,
तेली	,,	वेश्याओं के गुरु	,,
कलवार	,,	महन्त	,,
छोपी	,,	पुरोहित (पण्डा)	,,

(२८)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पहरेदार	१८६	वैद्य [टि० ४ भेद]	१८९
दूत	"	विष-वैद्य	"
दास	"	महाजन	"
दासी	१८७	हाकिम	"
वाजीगर (जादूगर)	"	जासूस	"
चोर	"	चक्रवर्ती राजा	"
ठग	"	महाराजाधिराज	"
कैदी	"	राजा ।	"
जुआरी	"	पटरानी	"
कवि (पण्डित) ।	"	मंत्री	"
लेखक (मुहरिर्)	"	पारिषद (दरवारी)	१९०
ज्योतिषी	१८८	सेना [टि० चतुराग्निनी]	"
शास्त्री	"	सिपाही (योद्धा)	"
नौकर	"	सेनापति	"
न्यायाधीश	"	प्यादा (सैनिक)	"
धर्माध्यक्ष	"	रथी (सैनिक)	"
व्यास (कथावाचक)	"	घोड़सवार	"
यज्ञकर्ता	"	महावत	"
वेदान्ती	"	कोचवान (सारथी)	"
नैयायिक	"	ब्रह्मचारी	१९१
मीमांसज्ञ	"	गृहस्थ	"
वेदपाठी	"	वानप्रस्थी	"
शिक्षक ।	"	सन्यासी	"
अध्यापिका	"	भिक्षुक	"
शिष्य	"		"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
४. भावादि वर्ग		ज्ञान	१९४
		स्मृति	"
प्रेम	१९२	सहनशीलता	"
शोक	"	असहनशीलता	"
उत्साह	"	उत्कण्ठा	"
भय	"	न्योछावर	"
क्रोध	"	उत्सव	१९५
पृणा	"	दीनता	"
शान्ति	१९३	हर्ष (सुख)	"
भक्ति [टि० नवधा भक्ति]	"	लज्जा	"
त्याग	"	उग्रता	"
बलानि	"	व्याधि	"
चात्सल्य	"	भ्रम	"
शंका	"	आवेग	"
गद	"	अभाव	"
हेय	"	परिक्रमा	"
ध्रम	"	हृद	"
श्रद्धा	"	समाप्ति	१९६
मद	"	अकस्मात्	"
धौरज	"	अकाल	"
भालस्य	१९४	तारतम्य	"
दुःख (विषाद)	"	समूह	"
गिन्ता	"	उन्माद	"
मोह (अज्ञानता)	"	गाप (गाली)	"
स्वप्न	"	न्याय	"

(३०)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
जड़ता	१९६	मृत्यु -	१९९
चपलता	"	कल्याण	"
क्षण	१९७	आचार	"
धीरे	"	क्रूरता	"
अवकाश	"	पाप	"
शीघ्र	"	पुण्य	"
व्यतीत	"	अपराध	"
वितर्क	"	सत्य	"
निर्लज्जता	"	झूठ	"
मूर्छा	"	हाव (नाज़) [टि० १२ प्रकार] २००	"
मान (आदर)	"	यात्रा	"
मान (हठ)	"	दण्ड	"
अपमान	१९८	व्यवहार	"
मानता	"	कीर्ति [टि० परिभाषा]	"
स्वभाव	"	अपयश	"
काम (कामना)	"	अपकार	"
लोभ	"	उपकार	"
पातण्ड	"	मधुर वचन (अर्थ प्रयोग में)	"
प्रमाद	"	दुर्वचन	२०१
अभिप्राय (विचार)	"	नीति	"
उन्तोष	"	स्तुति	"
स्नेह	"	दृष्टा	"
उपवास	"	कपट	"
आशा	"	कलंक	"
साँपन (जीवनकाल)	१९९	अपथ (कस्म)	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कंजूसी	२०१	पवित्रता	२०५
जय (विजय)	,,	मधुर शब्द (शब्द प्रयोग में)	,,
हार (पराजय)	,,	अपभ्रंश	,,
आशावांछ	,,	पर्याय	,,
वचन	,,	विपर्यय	,,
जवानी	,,	ओंकार	,,
अधेष्ट	२०२	इतिहास	,,
सुटापा	,,	प्रबन्ध	,,
सुन्दरता	,,	आख्यान (कथा)	,,
रूपता	,,	आख्यायिका [टि० परिभाषा]	२०६
प्रार्थना	,,	पहेली	,,
उत्पात	,,	गल्प	,,
सूचना	,,	चाटुकारी	,,
हँसी-ठट्टा	,,	संगीत	,,
प्रलाप	,,	राग [टि० ६ भेद]	,,
नेस्तार [टि० १६ प्रकार]	,,	नाच [टि० ४ भेद]	,,
विद्या [टि० १८ प्रकार]	२०३	प्रतिध्वनि	,,
न्यसन [टि० १८ प्रकार]	,,	विदित	,,
बहाना	,,	नाटक [टि० १० प्रकार के रूपक	
रत्न [टि० ६४ प्रकार]	,,	और १८ प्रकार के उपरूपक]	२०७
नृगन्धि	२०४	सेवा	,,
दुर्गन्धि	२०५	विघ्न	,,
निश्चय	,,	व्यर्थ	,,
मिथ्यान्त	,,	प्रतिज्ञा	,,
मोक्ष	,,	संयोग	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
वियोग	२०७	लक्ष्य	२०९
प्रकार	"	शैली	२१०
शोभा	२०८	क्लिष्ट	"
श्रीहत	"	उजाला	"
संकेत	"	अन्धेरा	"
अतिरिक्त	"	बदला (अपकार के बदले अपकार),	"
समता	"	५. रोगादि वर्ग	
विषमता	"		
बलात्कार	"	रोग	२११
उपहार	"	ज्वर	"
विस्मय	"	दोष [टि० परिभाषा]	"
उद्धरण	"	दाह	"
प्यार	"	शीत	"
प्रतीक्षा	२०९	पीनस [टि० निदान]	"
प्रभाव	"	क्षय	२१२
प्रस्ताव	"	खाँसी	"
परिस्थिति	"	सूजन	"
अन्वेषण	"	बेवाई	"
फुण्डित :	"	सेहुँआ [टि० निदान]	"
व्याज	"	शीतला	"
घूस	"	दाद	"
विपरीत	"	खाज [टि० निदान, उपाय]	"
समर्थन	"	फोबा-फुन्सी	"
फुटकर	"	घाव	"
जन्मद	"	पीस	२१३

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कोढ़	२१३	उदावर्त	२१४
फौल-पाँव	"	आतृष्टि	"
सोजाक	"	गण्डमाला	"
बवासीर	"	अर्बुद	"
पथरी	"	शूकरोग	२१५
मृगी	"	अम्लपित्त	"
उपदंश (गर्मी)	"	विसर्प	"
अतिसार	"	मुखपाक	"
आँव [टि० आमवात]	"	गंज रोग	"
संप्रहर्णी	"	शिरपीडा	"
वमन	"	प्रदर	"
कब्ज	"	गुल्म	"
प्रमेह	"	योनिर्कंद	"
मन्दाग्नि	"	स्तनपाक	"
अजीर्ण	२१४	सूतिका रोग	"
हैजा	"	पूतना	"
कामला [टि० लक्षण]	"	पक्षाघात [टि० लक्षण, उपद्रव] २१६	
श्वास	"	६. भोजनादि वर्ग	
क्षीणता	"		
तृष्णा	"	उपकरण [टि० परिभाषा]	२१७
मूर्छा	"	भोजन [टि० विविधप्रकार]	"
मूत्रकृच्छ्र	"	दाल	२१८
आमवात	"	भात	"
हिस्टीरिया (अं०)	"	माँड़	"
आक्षेपक	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कढ़ी	२१८	इमली के पन्ना का बड़ा	२१९
रोटी	,,	दही बड़ा	,,
लिट्टी वा बाटी	,,	पापड़	,,
पूरी	,,	भरता	,,
कचौरी	,,	चिखना	,,
ढलुआ	,,	पराठा	२२०
मालपुआ	,,	बेढ़ई	,,
पोलाव	,,	पूरन-पूड़ी (मीठी पूड़ी)	,,
तरकारी	,,	सेवई	,,
खीर	,,	अनरसा	,,
मीठाभात	,,	गुक्षिया	,,
सिखरन	,,	खाजा	,,
चबैना	,,	चूरमा	,,
लावा	२१९	जलेबी	,,
चिवड़ा	,,	लड्डू	,,
चटनी	- ,,	मोतीचूर के लड्डू	,,
रायता	,,	मूँग के लड्डू	,,
अँचार	,,	फेनी	,,
मुरब्बा	,,	घेवर	,,
पन्ना	,,	गुलाबजामुन	,,
फुलौरी (पकौड़ी)	,,	शकरपाला	,,
बरी	,,	खिचड़ी	,,
मुँगौरी	,,	सत्तू	,,
घुघुरी	,,	हावुस	,,
बड़ा	,,	बघार	२२१

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कौर	२२१	ओखली	२२२
चटुआ	"	मूसल	"
तवा	"	चूल्हा	"
कड़ाही	"	चक्की	"
कलछी	"	दौरा-दौरी	"
काठ की कलछी	"	झाँपी	२२३
कटोरा-कटोरी	"	अँगेठी	"
करवा (लोटा)	"	लुआठ (जलती हुई लकड़ी)	"
गिलास	"	खपड़ी (चबैना भूनने की)	"
घड़ा (गगरी)	"	भट्ठी (भाड़)	"
घड़े का ढक्कन	"	उपला (कंड़ा)	"
मटका (कुंडा)	"	राख	"
थाली	२२२	जूठा भोजन	"
चकला	"	७. वस्त्राभरण वर्ग	
पथरी	"		
खिल	"	उबटन	२२४
वट्टा	"	तैलमर्दन	"
झरना	"	स्नान	"
कठवत	"	चन्दनादि लेपन	"
वरतन	"	महावर	"
तेल की कुप्पी	"	पुष्पमाला	"
चौकी	"	वस्त्र	"
पीड़ा	"	रेशमी वस्त्र	"
सूप	"	ऊनी-वस्त्र	२२५
चलनी	"	नया वस्त्र	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
छालटी	२२५	दर्पण	२२६
बोया-वस्त्र	"	पंखा	"
पुराना-वस्त्र	"	पीकदान	२२७
मोटा कपड़ा	"	दीपक	"
फटा कपड़ा	"	डब्बा	"
पगड़ी	"	आभूषण	"
दुपट्टा (चादर)	"	शृङ्गार [टि० १६ प्रकार के शृङ्गार]	"
जामा	"	मुकुट	"
धोती	"	शिरफूल	"
फतुही	"	बेंदी वा टीका	"
चोली	"	कर्णफूल	"
कमरबन्द	"	कुण्डल	"
लहङ्गा	"	कंठा	"
रजाई	"	मोती का हार	२२८
तोशक	२२६	नत्थ	"
तकिया	"	नाक की कील	"
चंदवा	"	बिजायठ	"
परदा	"	पेहुँची	"
ओहार	"	कड़ा वा कंकण	"
कुरसी (मचिया)	"	अँगूठी	"
पलँग	"	करधनी	"
छड़ी	"	घुँघुलू	"
जूता (खड़ाऊँ)	"	पायजेब	"
छाता	"	नूपुर	"
कंधी	"		"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
८. ब्रह्मचारी वर्ग		मुण्डन कर्म	२३०
पुस्तक	२२९	होम का ईधन	”
पत्रा	”	पवित्री	”
कलम	”	विवाह [टि० ८ प्रकार]	२३१
स्याही	”	वर (वर)	”
दावात	”	बरात (बारात)	”
पटिया	”	बराती	”
काल-तखता	”	९. राज वर्ग	
नकशा	”		
अध्ययन	”	राजधानी	२३२
अध्यापन	”	राज्य [टि० आठ अंग]	”
मनन करना	”	राज्य-व्यवस्था	”
हवन	२३०	राज्याभिषेक	”
शाकल्य	”	दुन्दुभी	”
आचमन	”	छत्र	”
प्रणाम	”	चैवर	”
भूमि पर सोने वाले	”	पूर्णकलश	”
ब्रह्मचारी का दण्ड	”	खेमा (पञ्चाव)	२३३
ब्रह्मचारी का पात्र	”	पहरा (गश्त)	”
मृगचर्म	”	कैद	”
नित्यकर्म	”	कोड़ा	”
संस्कार-श्रष्ट	”	देशनिकाला की सजा	”
जनेऊ	”	फाँसी की सजा	”
कौपीन (लँगोटी)	”	महसूल	”
आसन	”	राजगद्दी	”

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
हाथी	२३३	बछ्छी-बाज	२३५-
हाथिनी	"	लट्टबाज	"
मदवाले हाथी	"	धनुष	"
हाथी की सूँड़	"	धनुष की डोर	"
हाथी का सिक्कड़	"	बाण	"
हाथी का मद	"	तरकश	"
हाथी का अंकुश	"	तलवार	"
हाथी की बोली	२३४	ढाल	"
घोड़ा	"	गुप्ती	"
घोड़ी	"	छुरी	"
घोड़े के गर्दन के बाल	"	युद्ध	"
घोड़े का खुर	"	तोप	२३६-
घोड़े की बोली	"	बन्दूक	"
घोड़े की लगाम	"	भाला	"
घोड़े की चाबुक	"	वध	"
रथ (लड़ाई के लिए)	"	चिता	"
हवाई जहाज	"		"
जनाना-रथ	"	१०. व्यवसाय वर्ग	
गाड़ी	"	जीविका	२३७-
पालकी	"	ऋण	"
डोली	"	सूद	"
बरखतर	"	सूदखोर	"
टोप	२३५	खेती	"
गेंद ✓	"	खलियान	"
धनुर्धर	"	कुदार	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
हँसुआ	२३७	धन ।	२३९
हर	,,	जुआ	,,
हरिस	,,	वेतन	,,
हर का फाल	,,	सलाई	,,
वैल	,,	दियासलाई	,,
साँड़	,,	भाथी	,,
कोठार	२३८	कूँची (ब्रश)	,,
रस्सी	,,	घरिया (धातु गलाने की)	,,
मथानी	,,	कसौटी	,,
मूलधन	,,	रेती	,,
नफा	,,	वरमा (छेदने वाला)	,,
लेनदेन	,,	कतरनी	,,
धरोहर	,,	टाँकी	,,
बिक्री की वस्तु	,,	आरा	,,
बेंचना	,,	खूँटी	,,
तौल वा मान	,,	वहूँगी	२४०
तराजू	,,	सिकहर (छीका)	,,
तराजू का पलड़ा	,,	जाल	,,
तराजू की ढाँड़	,,	फन्दा	,,
वाट	,,	गुड़िया ✓	,,
नकद	,,	बौक (टैंगारी)	,,
उधार	,,	चौपड़	,,
सस्ता	,,	पासा	,,
महँगा	,,	अस्तूरा	,,
दुकान	२३९	जामिन	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
खन्ती	२४०	उतार	२४२
सूई	,,	बाजा [टि० ४ भेद]	,,
तागा	,,	वीणा	,,
सिकड़ी	,,	मृदङ्ग	,,
ताला	,,	ढोल	,,
ताली	,,	डमरू	,,
कुंडी	,,	तबला	२४३
११. स्वर-तालादि वर्ग		सारंगी	,,
स्वर [टि० ७ भेद]	२४१	बंशी	,,
ताल [टि० ५ भेद]	,,	नुरही	,,
मधुर-स्वर	२४२	मजीरा	,,
धीर-स्वर	,,	शहनाई	,,
उच्च स्वर	,,	झाँझ	,,
चढ़ाव	,,	डफला	,,

चतुर्थ-खण्ड

१. पशु वर्ग		गैड़ा [टि० परिचय]	२४८
पशु [टि० परिभाषा]	२४७	मालू	,,
सिंह ✓	,,	भैंसा	,,
बाघ	,,	ऊँट ✓	,,
व्याघ्र नख	,,	गदहा	२४९
चीता	२४८	सियार (गीदड़)	,,
सुअर	,,	हरिण [टि० मृग और हरिण के भेद],	,,
भेड़िया	,,	मृग-चर्म	२३०, २५०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
-चन्दर	२५०	साँप का शरीर	२५३
-गाय	"	साँप का फन	२५४
गाय का बछवा वा बछिया	"	साँप का केंचुल	"
गायों का समूह	"	साँप का दाँत	"
भेंड़ा	"	साँप का विष	"
बकरा	"	विष	"
साही	"	साँप पकड़ने वाला	"
साही के रोम (काँटे)	२५१	बिच्छू	"
बिलार	"	कान खजूरा	"
कुत्ता [टि० कुत्ते के ६ गुण]	"	बिल	"
-खरहा	"	गोह	"
चूहा	"	केचुआ	"
छछुन्दर	२५२	गिरगिट	"
-नेवला	"	छिपकिली	"
गिलहरी [टि० परिचय]	"		

२. सरीसृप वर्ग

शेषनाग	२५३
सर्पराज	"
-सर्प	"
गोनस-सर्प	"
अजगर-सर्प	"
डेढ़हा-सर्प	"
दोमुहों-साँप	"
-करैत-साँप	"

३. पक्षी वर्ग

पक्षी	२५५
मोर	"
मोर-शिखा	"
मोर-चन्द्रिका	"
पपीहा	"
हंस	"
बगुला	२५६
बत्तख	"
सारस	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कुररी	२५६	मुर्गा	२५८
चकवा	"	गौरैया	"
गरुड	"	चकोर	२५९
खजन	"	काका कौआ	"
कोयल	"	चोंच	"
आड़ी	"	अंडा	"
गिद्ध	"	घोंसला	"
चील	२५७	पंख	"
कौआ	"	चिड़ियों के बच्चे	"
डोम कौआ	"	४. कीट-पतङ्गादि वर्ग	
चमगादर	"	मक्खी	२६०
हारिल	"	मच्छर	"
सुग्गा वा तोता	"	भौरा	"
मना	"	मधुमक्खी [टि० ४ प्रकार]	"
तीतिर	"	बैँ [टि० विशेषता]	"
बटेर	"	झोंगुर	२६१
नीलकंठ	"	फर्तिगा	"
भुजंगा	"	टिड्ढा-टिड्ढी	"
कठफोरा	"	जुगुनू	"
चल्लू	२५८	मकड़ी	"
वाज	"	खटमल	"
लवा	"	चीलर	"
कबूतर	"	जूँ	"
रुआ [टि० विशेषता]	"	घुन	"
टिटिहरी	"		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
चींटी	२६२	उकताना	२६४
चींटा	,,	उकसना	२६५
लाल चींटा [टि० परिचय]	,,	उकेलना	,,
बीर बहूटो [टि० परिचय]	,,	उखड़ना	,,
५. क्रियादि वर्ग		उगना	,,
		उगलना	,,
अकुलाना	२६३	उगाहना	,,
अगोरना	,,	उधारना	,,
अघाना	,,	उचटना	,,
अँगेजना	,,	उचाड़ना	,,
अँचवना (आचमन करना)	,,	उछलना	,,
अटना	,,	उजड़ना	,,
अटकना	,,	उझिलना (उँडेलना)	,,
अटकाना	,,	उतरना	२६६
अठिलाना	,,	उतराना	,,
अपनाना	२६४	उतारना	,,
अराधना	,,	उथलना	,,
अलसाना	,,	उद्धारना (उद्धार करना)	,,
अवगाहना	,,	उपटना	,,
अवसानना	,,	उफनना	,,
अवराधना	,,	उवालना	,,
अलापना	,,	ऊँघना	,,
ऑकना	,,	ऐठना	,,
आना	,,	ओढ़ना	,,
उकटना	,,	ककोरना	,,

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कचरना	२६७	चलना	२६९
कतरना	"	चसना	"
करकना	"	चहकना	"
कहना	"	चहलना	"
काटना	"	चालना	"
कौचना	"	चिढ़ना	"
कोसना	"	चिताना	२७०
खाना (टि० खाने के ६ प्रकार]	"	चिल्लाना	"
खिसकना	"	चिलकना	"
खेलना	२६८	चुभना	"
गढ़ना	"	चुराना	"
गन्धाना	"	थूकना	"
गर्जना	"	छजना	"
गलना	"	छिड़कना	"
गिरना	"	छिपना	"
गूँथना	"	छूना	"
गूँधना	"	छेदना	२७१
घिनाना	"	जनना	"
घिरना	"	जमाना	"
घिसना	"	जागना	"
घुसना	२६९	जगाना	"
घोंटना	"	जलना	"
चपाना	"	जाना	"
चभोरना	"	जानना	"
चमकना	"	जुटाना	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
जोहना	२७१	तरसना	२७४
जकोरना	२७०	तरसाना	११
झखना	११	तरेरना	११
झगड़ना	११	त्यागना	११
झझकारना	११	दहलना	११
झटकना	११	देखना	११
झड़ना	११	देना	११
झल्लाना	११	दौड़ना	२७५
झाँसना	११	धड़कना	११
झाड़ना	११	धधकना	११
झुराना	२७३	धमकाना	११
झूमना	११	धिक्कारना	११
झोंकना	११	धोना	११
टकराना	११	नकारना	११
टघलना	११	नाघना	११
टिकना	११	निकालना	११
टेकना	११	निखारना	११
टेवना	११	निगलना	२७६
टोहना	११	निथारना	११
ठगना	११	निबाहना	११
ठठना	११	नियारना	११
ठिठुरना	२७४	निहुरना	११
ढगमगाना	११	निवारण करना	११
ढकेलना	११	निस्तारना	११
ढाँकना	११	पकना	११

(४६)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पकाना	२७६	बटोरना	२७८
पगना	"	बनाना	"
पगुराना	"	बरजना	२७९
पढ़ना	२७७	बरना	"
पढ़ाना	"	बहाना	"
पलना	"	बहाना करना	"
पलोटना	"	बहलाना	"
पहनना	"	बोटना	"
पहचानना	"	वासना	"
पाना	"	बिचकना	"
पालना	"	बिचलना	"
पिचकना	"	बिछुड़ना	"
पिछलना	"	बिदारना	"
पीना	"	बीधना	"
पुकारना	"	बिलसना	२८०
पैरना	"	बीतना	"
पोसना	"	बूकना	"
प्रकट होना	२७८	वेधना	"
फेंदना	"	वैठना	"
फरकना	"	बोलना	"
फूलना	"	भकुजाना	"
फेकना	"	भगाना	"
फैलना	"	भजना	"
फैलाना	"	भटकना	"
वकना	"	भड़काना	"
			२८१

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
भरमाना	२८१	मूढ़ना	२८३
भसाना	"	मूसना	"
भागना	"	रचना	"
भाना	"	रमना	"
भासना	"	रहना	"
भुनना (भूना)	"	रिखाना	"
भुलाना	"	रीझना	"
भूलना	"	रुठना	"
भेजना	"	रोकना	"
भेंटना	"	रोना	"
भोंकना	"	रोपना	"
मचलना	"	लखना	२८४
मटकाना	"	लजाना	"
मथना	२८२	लटपटाना	"
मनाना	"	लपेटना	"
मरना	"	ललचाना	"
मलना	"	लहना	"
मानना	"	लहकना	"
माजना	"	लहकाना	"
मारना	"	लहलहाना	"
मिटाना	"	लादना	"
मिलना	"	लिपटना	"
मीचना	"	लिपटाना	"
मुड़ना	"	लुटाना	"
मुरझाना	"	लुकना	२८५

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
लुटना	२८५	सिहरना	२८६
लेना	"	सौंचना	"
लेटना	"	सीना	"
लौटना	"	सुनना	"
संचना	"	सूधना	२८७
सँवारना	"	सेना	"
सकाना	"	सौपना	"
सकारना	"	हँकाना	"
सङना	"	हँसना	"
सधना	"	हकवकाना	"
समाना	"	हकलाना	"
समेटना	"	हटकना	"
सँभालना	२८६	हटना	"
सराहना	"	हटाना	"
सहमना	"	हराना	२८८
सहलाना	"	हड़पना	"
सहेजना	"	हारना	"
सालना	"	हिचकना	"
सिझाना	"	हिलोरना	"
सिधारना	"	हुलसना	"
सिमिटना	"	होना	"
सिराना	"		

[नोट—अकारादि कमकी सूची ग्रन्थके अन्तमें देखिये ।]



शुद्धि-पत्र

—१००—

[सूचना—कृपया इस “शुद्धिपत्र” के अनुसार पहिले संशोधन करके तब ग्रन्थावलोकन कीजिये ।]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१	अदि तिनन्दन	अदिति नन्दन
१२	१९	विष्णु-प्रिया	विष्णु-प्रिया
१५	१०	आशु शिक्षणि	आशु शुक्षणि
”	११	ससर्चि	ससार्चि
”	१२ — १३	ऊष । बुध	उषर्बुध
१६	१	बहिःशुष्मा	शुष्म
२०	५	माँझ	माँझ
२५	१२	जन्हाई	जुन्हाई
२९	३	साँझ	साँझ
४५	६	रत्नावती	रत्नवती
६३	२२	तापना	तापन
६५	४	कनीयस	कनीपस
७१	१८	कुटली	कुलटी
७४	१३	आदतकी	आदकी
”	१५	मृदाह्वया	मृदाह्वया
७६	१९	चौहर कोड़ा	चौहार कोड़ा
८८	६	अयोदिका	अपोदिका

शृङ्ख	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८८	१७	गुण योगफल	गुड योगफल
८९	१६	लघुचिर्भिटा	लघुचिर्भिटा
९०	३	मूलत्र	मूलत्र
९३	१७	लुलाय कन्द	लुलाय कन्द
९५	६	नरौषधि	नगरौषधि
"	१७	विश्वमित्र प्रिय	विश्वामित्र प्रिय
९६	२०	दन्त शट	दन्तशठ
९८	५	सुगूदर	सुदूर
१०१	१४	मदनाफ फल	मदनाभ फल
१०५	१०	कुसुमाधिय	कुसुमाधिप
"	१२	स्थिर गन्ध	स्थिर गन्ध
१०६	१	कण्ट	कण्ठ
"	५	मद्युमोद	मद्युमोद
"	८	लघुपुष्प	शुक्ल पुष्प
"	१०	अह पुष्पक	अट्टपुष्पक
१०८	५	जया कुसुम	जपाकुसुम
१२६	२१	गन्ध बीजा	गन्धबीजा
१३२	२०	रसगर्भ	रसगर्भ
१३७	१९	कलयस	कलयज
१४४	१०	मद्युतृण	मद्युतृण
१५७	१५	पातक	पोतक
१६०	२२	पुत्री	पुत्र
१६२	१०	स्वप्न	स्वप्न
१७१	३	सूखा	रूखा
१८०	५	अग्रजन्मा	अग्रजन्मा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	७	द्विजन्म	द्विजन्म
"	८	वामन	वामन
१८७	२०	सूजान	सुजान
१९२	१३	तपुषी	तपुषी
१९४	११	अज्ञानान्धकार	अज्ञानान्धकार
१९७	१२	मिरान	सिराना
२०५	५	प्रधान लक्ष्य	प्रधान लक्ष्य
२२५	१२	संख्याना	संख्यान
२३७	१	जावन	जीवन
२३९	१३	(धातु गलानेका घटिका)	(धातु गलाने की)
२४२, २४३	पृष्ठाङ्क	१४२, १४३	२४२, २४३
२५६	१९	कामान्ध	कामान्ध
२७७	१०	रक्षा लरना	रक्षा करना
२७९	२१	करना	अलग करना
२८४	१०	"चकमना"	"चमकना"

प्रथम खण्ड

१. स्वर्गादिवर्ग

✓स्वर्ग—स्वः । अव्यय । त्रिदिव । त्रिविष्टप ।
त्रिदशालय । द्यौ । सुरलोक । नाक । दिव । मन्दर । अवरोह ।
गौ । फलोदय । देवलोक । स्वर्लोक । ऊर्ध्वलोक । सुखाधार ।
सौरिक । शक्रभुवन । दिवान ।

✓ईश्वर—ईश । परमेश्वर । परमात्मा । ब्रह्म । परब्रह्म ।
सच्चिदानन्द । ॐ । शिव । शर्व । अलख । अगोचर । अज ।
अनादि । अनन्त । गुणातीत । निर्गुण । व्यापक । महेश्वर ।
सर्वेश्वर । शंकर । प्रभु । महाप्रभु । स्वामी । परमपिता । पति ।
साहब । साई ।

✓देवता*—अमर । निर्जर । देव । विबुध । सुर ।
सुपर्वा । सुमना । त्रिदिवेश । लेख । दिवौकस । आदितेय ।

* देवजातिके अन्तर्गत—

(१) देवयोनि—विद्याधर । अप्सरा । यक्ष । रक्ष । गन्धर्व । किन्नर ।
पिशाच । गुह्यक । सिद्ध । भूत ।

(२) गण देवता—द्वादश आदित्य—१. विवस्वान । २. अर्यमा ।
३. पूषा । ४. त्वष्टा । ५. सविता । ६. भग । ७. धाता । ८. विधाता ।
९. वरुण । १०. मित्र । ११. शक्र । १२. उरुकम ।

अदिति नन्दन । आदित्य । ऋभव । अस्वप्न । अमर्त्य । दानवारि ।
अमृतान्धा । बर्हिर्मुख । क्रतुमुक् । गीर्वाण । वृन्दारक । अग्निमुख ।
अमृतेश । भट्टारक । अग्निजिह्व ।

[नोट—कश्यप की स्त्री दिति से दैत्यों की और अदिति से देवताओं की उत्पत्ति हुई ।]

देवसभा—सुधर्मा । शुभा । देवसमाज । सुधर्मा ।

असुर—दनुज । दैत्य । दानव । दैतेय । इन्द्रारि ।
शक्रशिष्य । दितिसुत । सुरद्विष । पूर्वदेव । राक्षस । निश्चर ।
तमीचर । निशाचर । मनुजाद ।

किन्नर—तुरङ्गमुख । मयु । किंपुरुष । गीतमोदी ।
हरिण नर्तक ।

[नोट—देवताओं की एक जाति जिनका मुख घोड़े की तरह होता है ।]

गन्धर्व*—देवजन । सुरगायक । विद्याधर । गातु ।
दिव्य गायन ।

(३) अष्टवसु—१ धर । २ ध्रुव । ३ सोम । ४ विष्णु [सावित्र] ।
५ अनिल । ६ अनल । ७ प्रत्यूष । ८ प्रभास ।

(४) दश विश्वेदेव—१ क्रतु । २ दक्ष । ३ वसु । ४ सत्य ।
५ काम । ६ काल । ७ ध्वनि । ८ रोचक । ९ आद्रव । १० पुरूरवा ।
[बह्मनिपुराण—गणभेद नामाध्याय ।]

(५) गणदेवता—आभास्वर, अनल, साध्य, लुषित, महाराजिक
आदि गणदेवताओं के भी अनेक भेद हैं । ग्रन्थों में प्रायः इनके प्रयोग न
होने के कारण नाम नहीं दिये गये ।

* अग्निपुराण में गन्धर्वों के ११ गण माने गये हैं—अश्राज्य ।

अप्सरा*—स्वर्वेश्या । स्वर्गवेश्या । अरुणप्रिया ।
परी । हूर ।

इन्द्र†—मघवा । विडौजा । पाकशासन । शक्र । पुरन्दर ।
वज्री । वासव । वृषा । वृत्रहा । आखंडल । सहस्राक्ष । हरि ।
पुरुहूत । मेघवाहन । बलाराति । सुरपति । शचीपति । पाक-
रिपु । शुनासीर । जिष्णु । गोत्रभिद् । ऋभुक्षा । दिशिराज ।
देवराज । शतक्रतु । संक्रन्दन । वृद्धश्रवा । लेखर्षभ । दिवस्पति ।
वास्तोष्पति । शतमन्यु । सुत्रामा । जम्भभेदी । मरुत्वान् । तुषाराट् ।
दुश्च्यवन । महेन्द्र । कौशिक । पूतक्रतु ।

इन्द्राणी—शची । पुलोमजा । इन्द्रवधू । पूतक्रतायी ।
माहेन्द्री । जयवाहिनी । ऐन्द्री । शतावरी । पौलोमी ।

इन्द्रपुरी—अमरावती । देवपुरी । इन्द्रलोक । देवलोक ।

इन्द्र का पुत्र—पाकशासनि । जयन्त । ऐन्द्र । उपेन्द्र ।

इन्द्र का हाथी—अभ्रमातङ्ग । गजेन्द्र । ऐरावत ।

अंधारि, वंभारि । शूर्यवर्चा । कृधु । हस्त । सुहस्त । स्वन् । मूर्धन्वा ।
विश्वावसु । कृशासु । इनमें ये प्रधान गन्धर्व माने गये हैं—हाहा । हूह ।
हंस । चित्ररथ । विश्वावसु । गोमायु । तुंबुरु । नंदि । (—“जटाधर”)

* उर्वशी । रंभा । मेनका आदि स्वर्ग की वेश्याएँ हैं ।

† चतुर्दश इन्द्र—इन्द्र । विश्वभुक् । विपश्चित । विभु । प्रभु । शिखि ।
मनोजव । तजस्वी । बलिर्भाव्य । त्रिदिव । सुशान्ति । सुकीर्ति । ऋतधाता ।
दिवस्पति ।—देवीपुराण—कालव्यवस्थाध्याय ।

इन्द्र के घोड़े को “उच्चैःश्रवा”, सारथी को “मातलि”, महल को
“वैजयन्त”, और वन को “नन्दनवन” कहते हैं ।

ऐरावण । अभ्रमुवल्लभ । श्वेतहस्ती । चतुर्दन्त । मल्लनाग ।
सदादान । सुदामा । गजाग्रणी ।

इन्द्र का वज्र—कुलिश । वज्र । पवि । अशनि ।
भिदुर । गो । हादिनी । शतकोटि । स्वरू । भेदी ।

इन्द्र का विमान—व्योमयान । विमान ।

वरुण*—यादसाम्पति । प्रचेता । पाशी । अप्पति ।
जलेश । पाथपति । पाशधर । अपांपति । जम्बुक । मेघनाथ ।
जलेश्वर । परञ्जय । जीवनावास । नन्दपाल । दैत्यदेव । सुखाश ।
वारिलोम । राम । कुण्डली ।

कुबेर†—किन्नरेश । यक्षराज । धनद । धनाधिप ।
गुह्यकेश्वर । राजराज । धनेश । त्र्यम्बकसखा । पौलस्त्य ।
वैश्रवण । मनुष्यधर्मा । पुण्यजनेश । ऐलबिल । सख । यक्ष ।
नरवाहन । एकपिङ्ग । श्रीद । हर्यक्ष । अलकाधिप ।

कुबेर का पर्वत—कैलाश पर्वत । कुबेराद्रि । कुबेराचल ।

* वरुण पश्चिम दिशा के स्वामी हैं । अदिति के गर्भ से उत्पन्न कश्यप ऋषि के पुत्र हैं । जल के प्रधान अधिष्ठातृ देव हैं ।

† कुबेर को इन्द्र का भण्डारी और महादेव जी का मित्र मानते हैं । यह विश्रवस् ऋषि के पुत्र और रावण के साँतेले भाई हैं । यह उत्तर दिशा के स्वामी हैं । इनके एक आँख, तीन पैर और आठ दाँत हैं । यह सम्पूर्ण धन के स्वामी हैं । इनके पुत्र का नाम नलकूबर है । कुबेर की पुरी को “अलकापुरी”, उद्यान को चैत्ररथ” और विमान को ‘पुष्पक’ कहते हैं ।

कुबेर का ऐश्वर्य*—विभूति । भूति । ऐश्वर्य ।

कुबेर का खजाना—निधि । शेषधी । कोष । भण्डार ।
भाण्डार ।

यम†—वैवस्वत । मृत्युपति । सूर्यपुत्र । महिषध्वज ।
काल । नरदण्डधर । जीवनपति । अन्तक । कृतान्त । धर्मराज ।
कोपन्त । शमन । पितृपति । यमुनाभ्राता । समवर्ति । श्राद्धदेव ।
परेतराट् । धर्म । जीवितेश । यमराज । औदम्बर । दण्डाधर ।
कीनाश । दध्न । महिषवाहन । शीर्णपाद । भीमशासन । कङ्क ।
हरि । कर्मकर ।

राक्षस—कौणप । निशिचर । निशाचर । पुण्यजन ।
यातुधान । क्रव्याद । मनुजाद । अक्षप । आशर । निकषात्मज्ञ ।
रजनीचर । अदेव । कर्बूर । नैऋत । यातु । रक्ष । क्षपाट ।
सन्ध्याबल । कीलाप । नृचश । पलाश । पलाशी । भूत । नीलाम्बर ।
कल्माष । कटप्रू । अगिर । कीलालय । नरधिष्मण । असुर ।

[नोट—‘असुर’ शब्द के पर्याय ‘राक्षस’ के भी पर्याय हो सकते हैं]

* कुबेर के ऐश्वर्य के अन्तर्गत अष्टसिद्धियाँ और नवनिधियाँ हैं—

अष्टसिद्धि—१. अणिमा, २. मद्दिमा, ३. लघिमा, ४. गरिमा, ५. प्राप्ति,
६. प्राकाम्य, ७. ईशत्व और ८. वशित्व ।

नवनिधि—१. पद्म, २. महापद्म, ३. कच्छप, ४. नील, ५. मकर,
६. सुकुन्द, ७. शंख, ८. खर्व और ९. नन्द ।

† चतुर्दश यमों के नाम—१. यम, २. धर्मराज, ३. मृत्यु,
४. अन्तक, ५. वैवस्वत, ६. नील, ७. दध्न, ८. काल, ९. सर्वभूतक्षय,
११. परमेष्ठि, ११. वृकोदर, १२. औदुम्बर १३. चित्र, १४. चित्रगुप्त ।

४ दानव*—द्विमूर्द्धा । तापन । शम्बर । अरिष्ट । हयग्रीव ।
विभावसु । अयोमुख । शङ्कुशिरा । स्वर्भानु । कपिल । अरुण ।
पुलोमा । वृषपर्वी । एकचक्र । विरुपाक्ष । धूम्रकेश । विप्रचित्ति ।
दुर्जय ।

राक्षसी—कौणपी । निशिचरो । सिंहका । दानवी ।

५ नरका†—यमालय । यमलोक । यमपुर । निरय ।
नारक । दुर्गति । संघात । कालसूत्र । रौरव ।

नरक-भोगी—नारकी । पापी । पतित ।

नरक-जीव—प्रेत । अग्निमुख ।

नरक-पीड़ा—यातना । तीव्रवेदना । पीड़ा । बाधा ।
व्यथा । दुःख । कृच्छ्र । आमनस्य । प्रसूतिज । तेलहत । कारणा ।

* [१] कश्यप ऋषि के वीर्य से दक्षकन्या दनु के गर्भ से उत्पन्न
६१ दानवों में से प्रधान १८ दानवों के नाम ये ही हैं । ये नाम 'दानव'
शब्द के पर्याय रूप में प्रयुक्त होते हैं, इसी कारण पर्याय में भी लिखे
गये हैं । वास्तव में ये पर्याय नहीं, बल्कि 'दनु' के पुत्रों के नाम हैं ।

[२] 'असुर' 'राक्षस', और 'दानव'—इन सबके नाम पृथक् होते
हुये भी परस्पर एक दूसरे के पर्याय माने जाते हैं ।

† नरक के भेदः—पार्षवास, तामिस्र, अन्धतामिस्र, महारौरव, कुम्भी-
पाक, असिपत्रवन, शूकरमुख, अन्धकूप, कुम्भीभोजन, सैन्दंश, तैत्तिभूमि,
वैज्रकण्ठक, शैलमली, पूयोर्द, औणरोध, लैलाभक्ष, सौरमेयादन, अवीचिरय-
पान, क्षीरकर्दम, रक्षोगण, शैलप्रोत, दन्तशूक, अवनिरोधन, पर्व्यावर्तन,
सूचीमुख ।

—ब्रह्मा*—आत्मभू । स्वभू । सुरज्येष्ठ । स्वयंभू ।
चतुरानन । परमेष्ठो । पितामह । हिरण्यगर्भ । लोकेश । विधि ।
विधाता । धाता । स्रष्टा । अब्जयोनि । नाभिजन्म । कमलासन ।
अण्डज । पूर्वनिधन । कमलोद्भव । प्रजापति । प्रजाधिप ।
सृष्टिकर्ता । रजोमूर्ति । सदानन्द । सत्यक । वेधा । द्रुहिण ।
विरंचि । हंसवाहन । अज । विश्वसृज । कर्तार ।

ब्रह्मा का वाहन—हंस । मराल । मुक्ताभुक् । श्वेत
गरुत् । चक्राङ्ग । मानसौकस । कलकण्ठ । सितच्छद । सितपक्ष ।
सरकाक । पुरुदंशक । मानसालय ।

✓ विष्णु†—नारायण । कृष्ण । वैकुण्ठ । माधव ।
धरणीधर । जनार्दन । हरि । मुरमर्दन । मुकुन्द । विश्वरूप ।
जलशायी । श्रीवत्सलाञ्छन । विधु । कैटभजित । विश्वंभर ।
अधोक्षज । कंसाराति । बलिध्वंसी । वनमाली । पुरुषोत्तम ।
देवकीनन्दन । शौरी । श्रीपति । त्रिविक्रम । वासुदेव । मधुसूदन ।
मधुरिपु । चतुर्भुज । पद्मनाभ । चक्रपाणि । उपेन्द्र । गोविन्द ।
गरुडध्वज । पीताम्बर । अच्युत । शार्ङ्गी । हृषीकेश । केशव ।

* ब्रह्मा = सृष्टिकर्ता, रक्तवर्ण, चतुर्मुख, कमलासन, हंसवाहन, विष्णु
के नाभि से उत्पन्न और रजोगुण-की मूर्ति हैं। कहते हैं कि वेद सबसे पहले
ब्रह्माजी के ही मुखश्री से उच्चरित हुए ।

† त्रिदेव में से एक, सतोगुण के अधिष्ठातृदेव । विष्णु के उपासक को
वैष्णव कहते हैं। विष्णु के शंख को 'पाञ्चजन्य', चक्र को 'सुदर्शन', गदा को
'कौमोदकी', खड्ग को 'नन्दक', धनुष को 'शार्ङ्ग', छाती के चिन्ह को 'श्रीवत्स',
मणि को 'कौस्तुभ', सारथी को 'दारुक' तथा मंत्री को उद्धव कहते हैं ।

पुराणपुरुष । यज्ञपुरुष । नरकान्तक । दैत्यारि । दामोदर ।
सनातन । पुरुष पुरातन । मनुजाद निकन्दन । अनन्त । भगवान् ।
श्रीश । इन्द्रवरज । शेषशायी ।

नोट—(१) ये सब नाम श्रोकृष्ण जी के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।

(२) 'लक्ष्मी' शब्द के किसी पर्याय के साथ 'पति' शब्द वा उसका पर्याय जोड़ देने से विष्णु शब्द का बोधक होता है ।

विष्णु का घोड़ा—शैव्य । सुग्रीव । मेघपुष्प । बलाहक ।

विष्णु का वाहन—गरुड़ । गरुत्मान् । नागान्तक ।
ताक्ष्य । सुपर्ण । वैनतेय । विष्णुरथ । पन्नगाशन । खगेश्वर ।
खगपति । पक्षिराज । खगकेतु । खगेश । उरगारि । उरगाद ।
हरियान । शाल्मलिस्थ । अमृताहरण । तरङ्गी । (तरस्वी) ।
पक्षिसिंह । शाल्मली । महावीर ।

[नोट—ये विनता के गर्भ से उत्पन्न कश्यप ऋषि के पुत्र हैं]

महादेव*—शंभु । शंभू । ईश । पशुपति । शिव ।

* महादेव—(१) गौरी या पार्वती शब्द के किसी पर्यायवाची शब्द के साथ पति-वाचक शब्द जोड़ देने से 'महादेव' का बोधक हो जायगा ।

(२) ईश्वर शब्द के जितने पर्याय हैं, वे सब 'महादेव' के बोधक हैं ।

(३) महादेव त्रिदेव में से एक देव हैं । यह तमोगुण के अधिष्ठातृ देवता हैं । यह दिगम्बर वेषी (नग्न) हैं । इनका आसन व्याघ्रचर्म तथा ओढ़ना गजचर्म है । त्रिशूल इनका अस्त्र है । इनके ललाट पर कालरूप एक तीसरा नेत्र है जो किसीको नाश करनेके समय खुलता है ।

(४) शिव की अष्टमूर्ति मानी गई है—१. क्षितिमूर्ति=सर्व । २. जल-

शूलो । महेश्वर । ईश्वर । शर्व । ईशान । शंकर । चन्द्रशेखर ।
 भव । भूतेश । खण्डपरशु । गिरीश । हर । मृड । कृत्तिवास ।
 पिनाकी । प्रमथाधिप । उग्र । कपर्दी । श्रीकण्ठ । शितिकण्ठ ।
 कपालभृत् । वामदेव । विरूपाक्ष । त्रिलोचन । पञ्चानन ।
 कृशानुरेत । सर्वज्ञ । धूर्जटि । प्रभु । स्थाणु । उमापति ।
 त्र्यम्बक । भर्ग । त्रिपुरारि । रुद्र । गंगाधर । अन्धकरिपु ।
 नन्दीश्वर । भूतनाथ । नीलकण्ठ । अग्निकेतु । क्रतुध्वंसी ।
 भगवान् । स्मरहर । मदनारि । नटराज । अहिर्बुध्न्य । अष्टमूर्ति ।
 महानट । चन्द्रमौलि । गौरीपति । गिरिजापति । कापालिक ।
 कैलाशनाथ । भोलानाथ । रेरिहाण । भगाली । पांशुचन्दन ।
 दिगम्बर । अट्टहास । कालञ्जर । पुरद्विट् । वृषाकपि । महाकाल ।
 बराक । नन्दिवर्द्धन । हीर । वीर । खरु । भूरि । कटप्रू । भैरव ।
 ध्रुव । गुडाकेश । देवाधिदेव । कङ्कालमाली । सिद्धदेव ।

मूर्ति=भव । ३. अग्निमूर्ति=रुद्र । ४. वायुमूर्ति=उग्र । ५. आकाशमूर्ति=भोम । ६. यजमान मूर्ति=पशुपति । ७. चन्द्रमूर्ति=महादेव । ८. सूर्य-मूर्ति=ईशान ।

(५) एकादश रुद्र=१. अज । २. एकपात ३. अहिर्बुध्न्य । ४. अपरा-जित । ५. पिनाकी । ६. त्र्यम्बक । ७. महेश्वर । ८. वृषाकपि । ९. शम्भु । १०. हरण । ११. ईश्वर ।

(६) शिव के नन्दीगण=शृङ्गी, मृङ्गी, रिटि, तुण्डी, नन्दिक, नन्दिकेश्वर ।

(७) शिव की पुरी को 'कैलाश', जटाजूट को 'कपर्द', धनुष को 'पिनाक' वा 'अजगव', और परिषद को 'प्रमथ' कहते हैं । शिव के उपासकों को शैव कहते हैं ।

विश्वेश्वर । विश्वनाथ । चन्द्रापीड । काशीनाथ । अस्थिमाली ।
श्मशानेश्वर । हिण्डी । विषमाक्ष । खेचर । रसनायक । अर्द्ध-
नारीश । यमान्तक । ऊर्ध्वरेता । अर्घीश । कुलेश्वर । शिपिविष्ट ।
वृषाङ्क ।

सरस्वती*—ब्राह्मी । भारती । भाषा । वाचा । गो ।
गिरा । सुष्टु । वाणी । शारदा । इला । वीणापाणि । वागीश ।
महाश्वेता । विधात्री । ब्रह्माणी । श्री । वाक् । इरा । ईश्वरी ।
वर्णमातृका । सन्ध्येश्वरी । वाक्येश्वरी ।

✓ **लक्ष्मी†**—कमला । पद्मा । पद्मालया । पद्मासना ।
रमा । हरिप्रिया । श्री । इन्दिरा । लोकमाता । मा । क्षीरोदतनया ।
समुद्रजा । भार्गवी । क्षीरसागरकन्यका । विष्णुवल्लभा ।
जगन्माता । सम्पत्ति । सम्पदा । विभूति । भूति । लच्छि ।
माया । शोभा ।

पार्वती‡—उमा । कात्यायनी । गौरी । काली । हैमवती ।
ईश्वरी । शिवा । भवानी । रुद्राणी । शर्वाणी । सर्वमंगला ।
अपर्णा । दुर्गा । मृडानी । चण्डिका । अम्बिका । आर्या ।

* सरस्वती=ब्रह्मा की स्त्री (शक्ति), विद्या बुद्धि को देनेवाली हैं ।
संगीत एवं वादन कला की अधिष्ठाता देवी हैं । इनका वाहन हंस है ।

† लक्ष्मी=विष्णु-प्रिया । धन-वैभव-स्वरूप को देनेवाली हैं । सम्पूर्ण
दरिद्रता को दूर कर सुख-शान्ति-धन-धान्य-प्रदायिनी हैं । इनका वाहन
उल्लू (उल्लूक) है ।

‡ पार्वती=हिमाचल की कन्या, शिव की अर्द्धाङ्गिनी हैं । सौभाग्य दायिनी
हैं । इनका वाहन सिंह है ।

दाक्षायणी । गिरिजा । मेनकात्मजा । हिमाचलसुता । हिमगिरि-
सुता । शंकरप्रिया । दक्षसुता । सती । शैलसुता । शैलनन्दिनी ।
पतिव्रता । इला । शिवाद्धाङ्गिनी । अम्बा । माया । विश्वकारिणी ।
सिंहवाहिनी । मैनासुता । भवा ।

दुर्गा*—दुर्गाविनाशिनी । अनन्तशक्तिका । चण्डिका ।

* देवी के अन्तर्गतः—

(१) पञ्चदेवी—दुर्गा । लक्ष्मी । राधा । वाणी । शाकम्भरी ।

(२) सप्तमाता—१ ब्राह्मी । २ माहेश्वरी । ३ कौमारी । ४ वैष्णवी ।
५ वाराही । ६ इन्द्राणी । ७ चामुण्डा ।

(३) नवदुर्गा—१ शैलपुत्री । २ ब्रह्मचारिणी । ३ चन्द्रघण्टा ।
४ कूष्माण्डा । ५ स्कन्दमाता । ६ कात्यायनी । ७ कालरात्रि । ८ महागौरी ।
९ सिद्धिदात्री ।

(४) नव कन्यका—१ कुमारी । २ त्रिमूर्ति । ३ कल्याणी ।
४ रोहिणी । ५ कालिका । ६ शांभवी । ७ दुर्गा । ८ चण्डिका । ९ सुभद्रा ।

(५) नवशक्ति—१ वैष्णवी । २ ब्रह्माणी । ३ रौद्री । ४ माहेश्वरी ।
५ नारसिंही । ६ वाराही । ७ इन्द्राणी । ८ कार्तिकी । ९ सर्वमङ्गला ।

(६) दश महाविद्या—१ काली । २ तारा । ३ षोडशी । ४ भुवनेश्वरी ।
५ भैरवी । ६ छिन्नमस्ता । ७ धूमावती । ८ बगला । ९ मातङ्गी । १० कमला ।

(७) ६४ योगिनी—नारायणी । गौरी । शाकम्भरी । भीमा । रक्तदंतिका ।
पार्वती । दुर्गा । कात्यायनी । महादेवी । चन्द्रघण्टा । महाविद्या । महातपा । आमरी ।
सावित्री । ब्रह्मवादिनी । भद्रकाली । विशालाक्षी । रुद्राणी । कृष्णपिङ्गला ।
अग्निज्वाला । रौद्रमुखी । कालरात्रि । तपस्विनी । मेघस्वना । सहस्राक्षी ।
विष्णुमाया । जलोदरी । महोदरी । मुक्तकेशी । घोररूपा । महाबला । श्रुति ।
स्मृति । धृति । तुष्टि । पुष्टि । मेधा । विद्या । लक्ष्मी । सरस्वती । अपर्णा ।

चण्डमुण्डविनाशिनी । कालिका । शम्भवी । रक्तबीजविना-
शिनी (प्रभञ्जनी) । कुमारी । कल्याणी । कामाक्षी । त्रिमूर्ति ।
रोहिणी । सुभद्रा । महागौरी । चामुण्डा । वाराही । सिंहवाहिनी ।
वागीश्वरी । नारसिंही । भगवती । विन्ध्यवासिनी । पार्वती ।
उमा । माया । विश्वकारिणी । शक्ति । महाशक्ति । धूम्रमर्दिनी ।
सौभाग्यदायिनी । विधातृ । धात्री । कूष्माण्डा । स्कन्दमाता ।
अजा । ब्राह्मी ।

[टिप्पणी में दिये हुये जितने नाम हैं वे सब दुर्गा के पर्याय
हो सकते हैं]

गणेश—लम्बोदर । हेरम्ब । द्वैमातुर । एकदन्त ।
मूषकवाहन । गजवदन । गणपति । शिवसुत । विनायक । गजास्य ।
विघ्नराज । गजानन । वक्रतुण्ड । महाकाय । धूम्रकेतु । गणाध्यक्ष ।
भालचन्द्र । विघ्न नाशक । विकट । मोदकप्रिय । मोददाता ।
विद्यावारिधि । बुद्धिविधाता । जगवन्द्य । आदिपूज्य । भवानी-
नन्दन । परशुपाणि । आखुग । शूर्पकर्ण ।

कार्तिकेय*—महासेन । शरजन्मा । षडानन । पार्वती-
नन्दन । स्कन्द । सेनानी । गुह । अग्निभू । बाहुलेय । क्रौञ्च-

अम्बिका । योगिनी । डाकिनी । शाकिनी । हारिणी । हाकिनी । लाकिनी ।
त्रिदशेश्वरी । महाषष्ठी । सर्वमङ्गल । लज्जा । कौशिकी । ब्रह्माणी । ऐन्द्री ।
नारसिंही । वाराही । चामुण्डा । शिवदूती । विष्णुमाया । मातृका । कार्तिकी ।
विनायकी । कामाक्षी ।

* महादेव जी के पुत्र हैं । कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण
कार्तिकेय नाम पड़ा । इनके छः भेद हैं । यह देवताओं के सेनानायक हैं ।

दारण । शक्तिधर । शिखिवाहन । कुमार । श्रीविशाख । तारका-
जित । षाण्मातुर । अग्निकुमार । स्वामि कार्तिक ।

भैरव—भूतनाथ । श्वानवाहन । रुद्रमूर्ति । भयङ्कर ।
भीम । कराल । कालमूर्ति । विकराल । भयानक ।

[नोट—अष्ट भैरवों के नाम—१. महाभैरव, २. संहार
भैरव, ३. असिताङ्ग भैरव, ४. रुरु भैरव, ५. काल भैरव,
६. क्रोध भैरव, ७. ताम्रचूड़ भैरव, ८. चन्द्रचूड़ भैरव ।]

अग्नि*—वह्नि । बीतिहोत्र । धनञ्जय । कृपीटयोनि ।
ज्वलन । जातवेद । तनूनपात् । पावक । अनल । रोहिताश्व ।
वायुसख । आशुशिक्षणि । हिरण्यरेत । हुतभुक् । दहन । हव्य-
वाहन । सप्तर्चि । दमुन । शुक्र । चित्रभानु । विभावसु । शुचि ।
वैश्वानर । (अप० वैसन्दर) अपित्त । हुताशन । दव । ऊष ।
बुध । धूम्रकेतु । आग । तपन । निर्जर जीभ । दग्धद्रुम । वृक ।

शिव जी के वीर्य को अग्निदेव ने कबूतर का रूप धर कर पान कर लिया
था, इन्हीं से स्कन्द की उत्पत्ति हुई । इनका वाहन मोर हैं ।

* वैद्यक मत से अग्नि ३ प्रकार की मानी गई है, यथा—१. भौमाग्नि,
जो पदार्थों के जलने से उत्पन्न होती है । २. दिव्याग्नि, जो आकाश में
विजली से उत्पन्न होती है । ३. जठराग्नि, जो पित्त रूप से हृदय और
नाभि के बीच में रहती है । कर्मकाण्ड में अग्नि छ. प्रकार की मानी गई है,
यथा—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवस्रस्थ्य और
औपासनाग्नि । इनमें आरम्भ की तीन प्रधान हैं । ऋग्वेद का प्रादुर्भाव
अग्नि से ही माना जाता है । अग्नि की सात जिह्वाएँ मानी गई हैं—काली,
कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता ।

कुन्त । कुतप । शिखि । सप्तजिह्वा । पांचजन्य । वह्निशुष्मा । बर्हि ।

बड़वानल—(जल में लगने वाली आग), और्वि ।

बाड़व । बड़वाग्नि ।

वन की अग्नि—दव । दावा । दावानल । दावाग्नि ।
दवारी । वनहुताशन ।

पेट की अग्नि*—जठराग्नि । पाचकाग्नि ।

अग्निकण—स्फुल्लिग । अनल-कण । चिनगी । चिनगारी ।

अग्नि ज्वाला—ज्वाला । कील । शिखा । अग्निशिखा ।
वर्चिस । हेति । उल्का । भूति । भस्मनी । क्षार । लूक । लुकारी ।
अग्नि कुकुट । लपट । लवर । लौ ।

अग्नि सन्ताप—संज्वर । सन्ताप । दाह । भस्मीभूत ।
डाढ़ा । मुलस । जलन ।

वायु†—१. श्वसन । २. स्पर्शन । ३. मातरिश्वा । ४. सदा-
गति । ५. पृषदश्व । ६. गन्धवह । ८. अनिल । ९. आशुग ।

* जठराग्नि—हृदय और नाभि के बीच में उत्पन्न होने वाली अग्नि जो भोजन को पचाती और क्षुधा उत्पन्न करती है । कार्तिक शु० ८ से अग्रहण कृष्ण ८ के भीतर नवीन जठराग्नि की उत्पत्ति होती है ।

† शरीरस्थ वायु—पाँच प्रकार की होती है—

(१) प्राणवायु—मुख्य स्थान शिर है । छाती और कण्ठ तक विचरण करती है । बुद्धि, हृदय और चित्त को धारण करती है ।

(२) उदानवायु—मुख्य स्थान छाती है । नासिका, नाभि और गला विचरने के स्थान हैं । भोजन प्रवेश करना, छींक, डकार और जँभाई लाना इसके मुख्य कर्म हैं ।

१० समीर । ११. मारुत । १२. मरुत् । १३. जगत्प्राण ।
 १४. समीरण । १५. नभस्त्रान् । १६. वात । १७. पवन ।
 १८. पवमान । १९. प्रभञ्जन । २०. अजगत्प्राण । २१. खश्वास ।
 २२. बाह । २३. धूलिध्वज । २४. फलिप्रिय । २५. वाति ।
 २६. नभप्राण । २७. भोगिकान्त । २८. स्वकम्पन । २९. अक्षति ।
 ३०. कम्पलक्ष्मा । ३१. शसीनि । ३२. आवक । ३३. हरि ।
 ३४. वास । ३५. सुखाश । ३६. मृगवाहन । ३७. सार ।
 ३८. चञ्चल । ३९. विहग । ४०. प्रकम्पन । ४१. नभस्वर ।
 ४२. निश्वासक । ४३. स्तनूत । ४४. पृषतां पति । ४५. प्राण ।
 ४६. अपान । ४७. समान । ४८. व्यान । ४९. उदान ।

सूक । सरिमन । सरण्य । हवा । सर्वग । सरट । खग ।
 बयार ।

[नोट—ये ही “उनचास पवन” के नाम से भी प्रसिद्ध हैं । कहते हैं कि ये अदिति के पुत्र हैं । इनके कोई सन्तान नहीं हुई । इन्द्र ने इन्हे देव-पद दिया है । सृष्टिक वायु को झञ्झा कहते हैं ।]

(३) व्यानवायु—मुख्य स्थान हृदय है । यह सब शरीर में व्याप्त रहता है । अपक्षेपण, उत्क्षेपण, निमेष, उन्मेष आदि इसके कर्म हैं ।

(४) समानवायु—मुख्य स्थान नाभि है, विचरणस्थान कोष्ठ है । अन्न ग्रहण करना, पकाना, विवेचन करना और त्यागना इसके मुख्य कर्म हैं ।

(५) अपानवायु—मुख्य स्थान गुदा है, विचरणस्थान कटि, बस्ति, लिङ्ग और जोंघ है । मल, मूत्र, वीर्य, आर्तव और गर्भ आदि निकालना इसके मुख्य कर्म हैं ।

आँधी—आँधी । महावात । प्रकम्पन । अंधड़ । तूफान ।
बवण्डर (चक्राकार वायु) ।

वायुवेग—तरस् । रहस् । रय । स्पद । जव ।

कामदेव *—मदन । मन्मथ । मार । प्रद्युम्न । कन्दर्प ।
मीनकेतन । दर्पक । अनङ्ग । काम । पञ्चशर । शम्बरारि । मन-
सिज । कुसुमेषु । अनन्यज । पुष्पधन्वा । रतिपति । मकरध्वज ।
आत्मभू । मैत्र । अतनु । कुसुमसर । मन्थि । नवरंगी । मनोभव ।
मनजात । मकरकेतु । स्मर । हरि । विरहविदार । पुष्पचाप ।
कुसुमायुध । ब्रह्मासू । विश्वकेतु । कामद । कान्त । कान्तिमान् ।
कामग । कामचार । कामी । कामुक । कामवर्द्धन । राम । रम ।
रमण । रतिप्रिय । रममाण । नन्दक । नन्दन । नन्दी । रतिसखा ।
भ्रामक । भृङ्ग । मोहन । मोहक । मोह । मोहवर्द्धन । मातङ्ग ।
खेलक । विलास ।

अश्विनीकुमार†—स्ववैद्य । अश्विनीसुत । आश्विनेय ।

* (१) कामदेव के पंचवाण—१. सम्मोहन, २. उन्मादन, ३. शोषण,
४. तापन, ५. स्तम्भन । कामदेव का धनुष पाँच प्रकार के पुष्पों से बना है—
अरविन्द, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलकमल । इसे पुष्पधनु भी
कहते हैं ।

(२) कामदेव की स्त्री का नाम 'रति' है ।

† प्रभा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्रों को अश्विनीकुमार कहते
हैं । एक बार सूर्य के तेज को सहन करने में असमर्थ होकर प्रभा घोड़ी
बन कर भाग गई और तप करने लगी । तब सूर्य भी घोड़ा बन कर उसके
पास गये । इसी संयोग से अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति हुई ।

अश्विनि । नासत्य । दस्र । नासिक्य । गदागद । पुष्करस्रज ।

जप—भजन । स्मरण । नाम स्मरण । जपन । मन्त्रोच्चारण । मन्त्रस्मरण । मन्त्रोद्धरण ।

तप—व्रत । अनुष्ठान । तपस्या । योग । योगाभ्यास । योगसाधन । ध्यानोपासना ।

✓ पूजा—अर्चा । नमन । अर्हण । अपचिति । आराधन । पूजन । आराधना । आदर । सम्मान ।

✓ यज्ञ *—याग । मख । क्रतु । अध्वर । सव । सप्ततंतु । इष्टि । वितान । मन्यु । आहव । हव । हवन । सवन । अभिषय । होम । मह ।

✓ दान—त्याग । विहापित । उत्सर्जन । विसर्जन । अंहति । विश्राणन । वितरण । स्पर्शन । प्रतिपादन । प्रादेशन । निर्वपन । अपवर्जन । दाय । प्रदान । अतिसर्जन । विसर्ग । स्पर्श । क्षणन । प्रदेशन ।

✓ उपासना—शुश्रूषा । सेवा । परिचर्या । वरिवस्या ।

✓ व्रत—(देखो 'तप' शब्द)

✓ सन्यास—वैराग्य । वैराग्य । त्याग । चतुर्थाश्रम । निर्वाण । परिव्रजन ।

* पञ्च महायज्ञ—१. स्वाध्याय । २. अग्निहोत्र । ३. आतिथ्य । ४. पितृतर्पण और ५. बलिवैश्व ।

यज्ञ के चार ऋत्विज् होते हैं—होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा ।

✓ सन्यासी--त्यागी । वैरागी । दण्डी । निर्वाणपथी ।
चतुर्थाश्रमी । यती । परिव्राज । भिक्षु । कर्मन्दी । पाराशरी ।
मस्करी । भिक्षुक । न्यासी । स्वामी । गोस्वामी । जितेन्द्रिय ।
योगी ।

तपस्वी--तापस । तपी । पारिकांक्षी ।

ब्रह्मत्वभाव-ब्रह्मभूय । ब्रह्मत्व । ब्रह्मसायुज्य ।

विवेक--पृथगात्मता । ज्ञान । सद्विचार । सद्बुद्धि ।
प्रबोध ।

दर्शन--निर्वर्णन । निध्यान । आलोकन । ईक्षण ।
निभालन । देखाव ।

दर्शनयोग्य--दर्शनीय । द्रष्टव्य ।

धर्म *—पुण्य । श्रेय । सुकृत । वृष । आचार । स्वभाव ।

✓ मुनि—तपी । साधक । तापस । पारिकांक्षिन् । मुनि ।
ऋषि । व्रती । संयमी । साधु । योगी ।

✓ ब्रह्मज्ञानी—ज्ञाता । दार्शनिक । तत्त्वज्ञ । तत्त्वविद् ।
ब्रह्मज्ञ । ब्रह्मपरायण । ब्रह्मपर ।

✓ मुक्ति—कैवल्य । निश्रेणी । निर्वाण । मोक्ष । अक्षय ।
स्वर्ग । अपवर्ग । अमृत । अपुनर्भव । महासिद्धि ।

* धर्म के दस लक्षण—१. धृति, २. क्षमा, ३. दम, ४. अस्तेय,
(चोरी न करना) ५. शुचि, ६. इन्द्रियनिग्रह, ७. बुद्धि, ८. विद्या, ९. सत्य,
१०. अक्रोध (क्रोध न करना वा क्रोध को रोकना) ।

अमृत-पीयूष । अमृत । सुधा । सोम । मधु । अगदकार ।
सुरभोग । अमी । अमिय । शशिरस । (अप० इमिरित,
अमरित) ।

स्वर्णाचल--मेरु । सुमेरु । हेमाद्रि । रत्नसानु ।
सुरालय । हेमकूट ।

देववृक्ष--कल्पद्रुम । कल्पवृक्ष । मन्दार । पारिजातक ।
सन्तान । कल्पतरु । सुरद्रुम । हरिचन्दन ।

देवनदी--मन्दाकिनी । वियद्गङ्गा । स्वर्णदी । सुर-
दीर्घिका । देवसरि । स्वर्गापगा । देवगङ्गा । स्वर्गङ्गा ।

कामधेनु-सुरधेनु । कामधुक धेनु । सुरसुरभी । कामदुहा ।

वेद*--ब्रह्म । श्रुति । निगम । धर्ममूल । छन्द ।
आम्नाय । प्रवचन ।

शास्त्र†-आगम । विद्या । ग्रन्थ ।

* वेद चार हैं--ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वणवेद । इन्हीं
वेदों से चार उपवेद निकाले गये, यथा--धन्वन्तरि ने ऋग्वेद से
आयुर्वेद निकाला, विश्वामित्र ने यजुर्वेद से धनुर्वेद निकाला, भरत मुनि ने
सामवेद से गन्धर्ववेद निकाला और विश्वकर्मा ने अथर्वणवेद से
स्थापत्य निकाला ।

वेदाङ्ग छः हैं, यथा — शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष
और छन्द ।

† शास्त्र १८ हैं, यथा--४ वेद + ६ वेदाङ्ग तथा मीमांसा, न्याय,
धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद तथा अर्थशास्त्र ।

२. देवावतार वर्ग

रामचन्द्र *—राम । दशरथ । रघुवर । रघुपति ।
रघुराज । रघुनन्दन । रघुराय । सीतापति । खरारि । रावणारि ।
अवधेश ।

जानकी †—जानकी । वैदेही । सीता । भूतनया ।
भूमिजा । जनकनन्दिनी । जनकात्मजा । रामप्रिया ।

परशुराम ‡—रेणुकात्मज । परशुधर । राम । यामदग्नि ।
भार्गव ।

✓ **कृष्ण**—श्याम । साँवले । सँवलिया । नन्दनन्दन ।

* अयोध्या नरेश महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र थे । लव और कुश
इनके दो पुत्र हुए ।

† मिथिला के राजर्षि महाराज जनकजी की पुत्री थी । इनकी उत्पत्ति
पृथ्वी से हुई है ।

‡ महर्षि यमदग्निजी के पुत्र थे । इन्होंने सहस्रबाहु को मार कर
२१ वार हैहयवंशी क्षत्रियों का नाश किया था । इनकी माता का नाम
रेणुका था ।

जनार्दन । यदुनन्दन । देवकीनन्दन । कंसारि । मुरमर्दन ।
 मुरलीधर । वंशीधर । गिरिधर । द्वारिकाधीश । माधव । केशव ।
 हृषीकेश । मुकुन्द । मधुसूदन । गोपीनाथ । राधारमण । पुरुषोत्तम ।
 भगवान् । चक्रपाणि । यादवेश । योगीन्द्र । ब्रजभूषण । वासुदेव ।

[नोट—विष्णु के सभी नाम कृष्ण के पर्यायवाची हो सकते हैं।]

राधा—राधिका । वृषभानुजा । हरिप्रिया । वृषभानुनन्दिनी ।
 कीर्तिकिशोरी । ब्रजरानी ।

यशोदा—जसुमति । यशुदा । नन्दरानी ।

बलराम—बलदाऊ । दाऊ । बलदेव । हलदेव । हलधर ।
 रौहिणेय । बलभद्र । संकर्षण । नीलाम्बर । रेवतीरमण । मूशल-
 पाणिक । राम । कामपाल । हलायुध । अच्युताग्रज । प्रलम्बघ्न ।
 मुसली । हली । तालाङ्क । सीरपाणि । कालिन्दीभेदन । बल ।
 बलबीर । तालध्वजी ।

अनिरुद्ध—उषापति । ब्रह्मसू । ऋष्यकेतु ।

नृसिंह—नरहरि । नरसिंह । नारसिंह ।

गौतम बुद्ध—शाक्यसिंह । सर्वार्थ । गौतम । मायासुत ।
 अर्कबन्धु । शाक्यमुनि । शौद्धोदनि । सर्वज्ञ । सुगत । बुद्ध । धर्म-
 राज । तथागत । जिन । भगवत् । दशबल । मारजित् । लोक-
 जित् । समन्तभद्र । षडभिज्ञ । अद्वयवादी । विनायक । मुनीन्द्र ।
 श्रीघन । शास्ता । सिद्ध । महाबोधि । आर्य । दशार्ह । महामैत्र ।
 अर्हण ।

गायत्री—वेदमाता । सावित्री । ब्राह्मी । ब्रह्मबीज ।
 सरस्वती ।

हनुमान—पवनसुत । अञ्जनीकुमार । महावीर । महा-
बली । विक्रम । बज्राङ्गी (अप० बजरंगी) कपिकेशरी ।
कपीश । जितेन्द्रिय । वातात्मज । आञ्जनेय । रामदूत । वरिष्ठ ।
प्रभञ्जनजात । मारुति । अक्षहन्त ।

नारद—देवर्षि । ब्रह्मसू । ब्रह्मपुत्र ।

विश्वामित्र—कौशिक । गाधिसूनु । गाधेय । राजर्षि ।

विश्वकर्मा—शिल्पराट् । सुरशिल्पकी । पटुशिल्पेश ।

शृङ्गी ऋषि—शृङ्गी । मृगज । विभाण्डसुत । शान्ताधव ।
(यह राजा दशरथ के जामाता, शान्ता के पति थे)

अगस्त्य—घटज । घटोद्भव । घटसंभव । घटयोनि ।
कुम्भज । सिन्धुशासनि । मैत्रावरुण । विन्ध्यकूट । समुद्रचुलुक ।
पीताम्बि । और्वशेय ।

[नोट—अगस्त्य की स्त्री लोपामुद्रा हैं ।]

वशिष्ठ *—वैरश्चि । ब्रह्मसू । ब्रह्मर्षि ।

[नोट—वशिष्ठ की स्त्री अरुन्धती है]

वाल्मीकि—आदिकवि । वल्मीकोद्भव । प्राचेतस् ।
मैत्रावरुणि ।

व्यास—वेदव्यास । द्वैपायन । पाराशर्य । सत्यवतीसुत ।

युधिष्ठिर †—धर्मराज । अजातशत्रु । कौंतेय । कुरुराय ।

* सप्तर्षियों में से एक । सप्तर्षि—विश्वामित्र । यमदग्नि । भरद्वाज ।
गौतम । अत्रि । वशिष्ठ । कश्यप ।

† पञ्च पाण्डव—युधिष्ठिर । भीम । अर्जुन । नकुल । सहदेव ।

अर्जुन—जिष्णु । धनंजय । विजयरथ । फल्गुन । किरीटी ।
गुडाकेश । गांडीवधर । पार्थ । कपिध्वज । सव्यसाचि । शब्द-
भेदि । धनुर्धर । कौन्तेय । नर ।

कर्ण—राधेय । वसुषेण । अर्कनन्दन । सूर्यसुत । चाम्पेश ।
सूतपुत्र । अङ्गराट् ।

भीष्मपितामह—गंगापुत्र । गांगेय । पितामह ।
शान्तनुसुत ।

द्रौपदी—द्रुपदसुता । पाञ्चाली । कृष्णा । सैरिध्री ।
नित्ययौवना । याज्ञसेनी । वेदिजा ।

अभिमन्यु—सौभद्र । पार्थनन्दन । पाण्डुपौत्र ।
दशरथ—कौशलपति । अवधेश । रघुवंशमणि । दिगस्यन्दन ।
जनक—राजर्षि । विदेह । मिथिलेश । विवेकनिधि ।
तिर्हुत राज ।

लक्ष्मण—सौमित्र । अहीश । शेष । अनन्त । लखन ।
रामानुज । लछिमन ।

शत्रुघ्न—रिपुदमन । रिपुसूदन । शत्रुहन्ता । शत्रुहन ।
रावण—दशवदन । दैत्येन्द्र । दशकन्ध । लंकेश । निशि-
चरपति । दशकंठ । दशमाथ । दशग्रीव । यातुधानेश ।

मेघनाद—शक्रारि । इन्द्रजित ।

जामवन्त—ऋक्षराज । जांबुवान ।



३. तीर्थादिवर्ग

प्रयागराज—तीर्थराज । प्रयाग । तीर्थेश । तीर्थपति ।

अयोध्या *—अवध । अवधपुरी । विमला । आदिपुरी ।
आद्या । साकेत ।

मथुरा—मधुपुरी । मधुवती । मधुरा । मधुवन ।

काशी—आनन्दपुरी । आनन्दवन । आनन्दकानन ।
शिवपुरी । काशिका । वाराणसी । मोक्षदा पुरी । बनारस ।

जगन्नाथपुरी †—जगदीशपुरी । पुरी । जगन्नाथ ।

द्वारकापुरी—द्वारकाधीश । वेंकटेश । द्वारावती ।

गंगा—भागीरथी । जाह्नवी । जह्नु नन्दिनी । मन्दाकिनी ।
सुरसरि । देवापगा । ध्रुवनन्दा । भीष्मसू । त्रिपथगा । सुरध्वनि ।

* सप्त मोक्षदायक तीर्थ—अयोध्या । मथुरा । काशी । कांची (काञ्चीवरम्) ।
अवन्तिका (उज्जैन) । जगन्नाथपुरी । द्वारकापुरी ।

† जगन्नाथपुरी, द्वारकापुरी, बदरिकाश्रम और रामेश्वरम् ये चारों धाम
तीर्थयात्रा की दृष्टि से मुख्य माने जाते हैं ।

नदीश्वरी । हरमौलिविहारिणी । त्रिस्रोता । सुरापगा । अलक-
नन्दा । अध्वगा ।

[‘देव’ वाची शब्द के आगे कोई ‘नदी’ वाचक शब्द जोड़
देने से ‘गंगा’ का बोधक होगा]

✓ **यमुना**—सूर्यसुता । सूर्यतनया । कालिन्दी । शमन-
स्वसा । कृष्णा । अर्कजा । तरणिजा ।

[नोट—‘सूर्य’ के पर्याय के साथ ‘कन्या’ का पर्याय जोड़
देने से ‘यमुना’ का बोधक होगा ।]

नर्मदा—रेवा । नर्मदा । सोमोद्भवा । मेकलसुता ।

सरयू—सरजू । वाशिष्ठी । आनन्दाश्रुजा ।



४. दिशादिवर्ग

✓ दिशा—दिक् । ककुभ । दिशा । काष्ठा । आशा । हरित ।
ओर । तरफ ।

दिक्पाल *—दिगाधिप । दिशाधिप । दिगपति । दिगेश ।
दिशीश ।

✓ पूर्व—प्राची । पूरब । पुरुब ।

✓ पश्चिम—पच्छिम । प्रतीची । पच्छूं ।

✓ उत्तर—उदीची ।

✓ दक्षिण—अवाची । दक्खिन । दच्छिन ।

✓ दिगान्तर †—कोण । दिशाओं का मध्यवर्ती कोना ।
दिकोण ।

* दशो दिग्पाल—पूर्व = इन्द्र । पश्चिम = वरुण । उत्तर = कुबेर ।
दक्षिण = यम । ईशान = ईश । नैऋत्य = नैऋत । वायव्य = वायु ।
आग्नेय = अग्नि । ऊर्ध्व = ब्रह्मा । अध. = शेष ।

† दिगान्तर—ईशान (पू०+उ०), नैऋत्य (प०+द०) वायव्य,
वायुकोण (पू०+द०) आग्नेय, अग्निकोण (पू०+उ०) ।

दिग्गज *—दिशिकुञ्जर । दिक्स्तम्भ ।

मण्डल—चक्रवाल । चक्र । मण्डल ।

ऊपर—ऊर्ध्व । ऊँचा । उच्च । उपरि । तुङ्ग । उन्नत ।
उद्धित । प्रांशु । उदग्र । उत्तङ्ग । ऊँच ।

नीचे—निम्न । अधः । तले (तरे, तर) । तल ।

आगे—अग्रे । अग्र । पूर्व । प्रथम । पहले । अगाल (अगाड़) ।

सम्मुख—सन्मुख । सामे । सामुहे । सोझे । सौँहे ।
प्रत्यक्ष । समक्ष । साक्षात् ।

विमुख—परोक्ष । विलग । गुप्त । निगूढ़ । विगूढ़ ।
अन्तर्हित । अन्तर्धान । पिहित । प्रच्छन्न । निभृत । तिरोहित ।
सम्बरित । गोप्य । गहन । परे ।

एकान्त—अकेला । निर्जन । शान्त । इकन्त । एकाकी ।
शून्य । सूनसान । निराला ।

ओट—आड़ । परदा । छिपाव । दुराव ।

दाहिना—दक्षिण । दाहिन । दाएं ।

बायाँ—वाम (बाम) बाएं । बावाँ ।

समीप—पास । निकट । अनतिदूर । अदूर । अतिपार्श्व ।
अध्यास । नेरे । पार्श्व । आसन्न । उपकंठ । समर्याद । अन्तिक ।

* अष्टदिग्गज—ऐरावत (पू०) । पुण्डरीक (आ०) । वामन (द०) ।
कुमुद (नै०) । अञ्जन (प०) । पुष्पदन्त (बा०) । सार्वभौम (उ०) ।
सुप्रतीक (उ० पू०)

अभित । सनीड । तट । सन्निकट । ढिग । सन्निकृष्ट । अभ्यास ।
सविधि । अभ्यग्र । सदेश । अभ्यर्ण । सवेश ।

दूर—परे । विलग । पृथक । भिन्न । विगत । न्यारा । अरग ।

आदि—आरम्भ । प्रथम । प्रारम्भ । समारम्भ ।

मध्य—बीच । मॉझू । मधि ।

अन्त—अवसान । समाप्त । इति । पर । छोर । पूर्ण ।



५. आकाशादि वर्ग ।

ॐ आकाश—द्यौ । द्यौ । अभ्र । अब्भ । व्योम । पुष्कर ।
अम्बर । नभ । अन्तरिक्ष । अन्तरीक्ष । गगन । अनन्त । सुरवर्त्म ।
ख । वियत् । विष्णुपद । विहाय । नाक । अनङ्ग । मेघवेदम ।
संहाबिल । मरुद्वर्त्म । मेघवर्त्म । त्रिपिष्टप । शून्य ।

ॐ मेघ—अभ्र । मेघ । वारिवाह । धाराधर । जलमुच ।
मुदिर । धूम्रयोनि । तडित्वान् । घन । जलधर । स्तनयित्तु ।
जलदान । बलाहक । अम्बुभृत् । वारिद । जीमूत । बादर ।
बादल । बदल । नीरद । क्षरिद । वारिधर । पयोद । अम्बुद ।
पयोधर । सारंग । पुरजन । यज्ञपुत्र । जगजीवन । असुर ।

ॐ मेघपङ्क्ति—मेघमाला । मेघावली । घनमाला । काद-
म्बिनी । आसार ।

मेघगर्जन—रसित । स्तनित । गर्जित । गर्जन । घोष ।
घनरव ।

ॐ बिजुली—क्षण (छन) छटा । तडित् । दामिनी ।
चपला । चंचला । विद्युत् । कौंधा । घनबल्ली । सौदामिनी । सम्पा ।

विज्जु । सज्जू । चटुल । अशनि । शतहृदा । हादिनी । चोकी ।
क्षणप्रभा । ऐरावती । अकालकी ।

✓ **इन्द्रधनुष**—इन्द्रायुध । शक्रधनु । ऋजुरोहित ।

वृष्टि—सम्पात । आसार । वर्षा । वारिस ।

भींसी—फुहार । सीकर । जलकण । अम्बुकण ।

मृगतृष्णा—मरीचिका । मृगजल । भ्रमजल । मृग-
त्रास । मिथ्याजल ।

पाला—तुषार (तुसार, टुसार) । हिम । तुहिन । बरफ ।
अवश्याय । मिहिका । प्रालेय । नीहार । ओला । ओस ।

नक्षत्रादि के नाम

सूर्य *—दिवाकर । प्रभाकर । दिनकर । दिवसाधिप ।
भास्कर । हंस । मिहिर । तिमिरहर । विभाकर । विवस्वान् ।
भानु । विभावसु । पतंग । सविता । अम्बरमणि । रवि । खग ।
गभस्तिमान् । हिरण्यगर्भ । नक्षत्राधिपति । आदित्य । अंशुमाली ।
अर्क । मरीची । अवि । सूर । वीरोचन् । मार्तण्ड । पूषण् ।
तरणि । सुनूर् । कुतप् । अर्यम् । चित्रथ्य । चक्रबन्धु । कमल्-
बन्धु । खगपति । हरि । सप्ताश्व् । द्वादशात्मा । उष्णरश्मि ।
असुर । वितर्कन् । ग्रहपति । सहस्रांशु । पद्माक्ष । तेजोराशि ।

* सूर्य की १२ कलाओं के नाम—१. तपिनी, २. तापिनी, ३. धूम्रा,
४. मरीचि, ५. ज्वालिनी, ६. रुचि, ७. सुषुम्णा, ८. भोगदा, ९. विश्वा,
१०. बोधिनी, ११. धारिणी, १२. क्षमा ।

महातेज । तमिस्रहा । छायानाथ । कर्मसाक्षी । जगच्चक्षु ।
प्रद्योतन । खद्योते । सारंग ।

[नोट—‘दिन’ शब्द के किसी पर्यायवाची शब्द के साथ
‘स्वामी’ अर्थबोधक कोई शब्द जोड़ देने से ‘सूर्य’ का बोधक होगा।]

सूर्य के पारिपाश्वक—माठर । पिङ्गलोदण्ड । चण्डांश ।

सूर्य का सारथी—अरुण । सूर्यसुत । अनूरु । काश्यपी ।

गरुडाग्रज ।

सूर्यमण्डल—मण्डल । परिवेष । परिधि । उपसूर्यक ।

मण्डन ।

सूर्य-किरण—किरण । दीधित । उल्ल । मयूख । कर ।
रश्मि । घृणि । गभस्ति । अंशु । गो । वसु । ज्योति । मरीचि ।
रंस । छटा । कला । भर्ग । प्रद्योत । आलोक ।

सूर्य-प्रकाश—प्रभा । रुचि । द्युति । छवि । शोचि ।
रोचि । भा । भास । त्विष । दीप्ति । प्रकाश । आतप । घाम ।

सूर्य के घोड़े—सप्ताश्व । उच्चैः श्रवा । रविहय ।

चन्द्रमा *—चन्द्र । चन्द्रमा । सोम । सुधाधर । इन्दु ।

* किसी नक्षत्र, औषधी, रात्रि आदि के किसी पर्यायवाची शब्द के
साथ स्वामी अर्थबोधक कोई शब्द जोड़ देने से चन्द्रमा का बोधक होगा ।

चन्द्रमा की १६ कलायें—१. अमृता, २. मानदा, ३. पूषा,
४. पुष्टि, ५. तुष्टि, ६. रति, ७. धृति, ८. शशानी, ९. चन्द्रिका,
१०. कांति, ११. ज्योत्सा, १२. श्री, १३. प्रीति, १४. अंगदा, १५. पूर्णा,
१६. पूर्णामृता ।

सुधाकर । हिमांशु । शुभ्रांशु । शशि । शशधर । शशाङ्क । ग्लौ ।
मृगाङ्क । नक्षत्रेश । औषधीश । कुमुदबान्धव । निशापति ।
निशिनाथ । सुधांशु । विधु । कलानिधि । अब्ज । क्षपाकर ।
(छपाकर) । द्विजराज । जैवातृक । सुधानिधि । अमीकर ।
हिमरोम । सिन्धुसुत । अम्भोज । ऋक्षराज । भेश । मृगपति ।
कलङ्कधर । महताब । जलज । उडुप । मयङ्क । मन्थी । सुश्रव ।
तारापति । सारंग । राकापति । अमृतबन्धु । अमृतचुति ।
अमृतवपु ।

चन्द्रमण्डल—चन्द्रबिम्ब । भण्डल ।

चन्द्रिका—चौदनी । ज्योत्स्ना । जोन्ह । कौमुदी ।
हिमकर । अँजोरिया । चन्द्रमरीची । अमृततरंगिणी । अमृतद्रव ।

द्वितीया का चन्द्रमा—नवचन्द्र । वक्रचन्द्र । बालविधु ।
पूर्णमासी का चन्द्रमा—पूर्णचन्द्र । राकाशशि ।
राकेश ।

चन्द्र-चिन्ह—निर्वाद । अधम । प्रमाद । कलङ्क ।
अङ्क । लाञ्छन । लक्ष्म । मसि । लक्षण । मलिन । मली ।
मृगाङ्क । मृगचिन्ह ।

चन्द्रमा की स्त्री—रोहिणी । धातृ । अब्जयोनि ।
विधातृ ।

मङ्गल—अङ्गारक । कुज । भौम । भूमिसुत । लोहिताङ्ग ।
बुध—सौम्य । चन्द्रसुत । जारज । चन्द्रज । रौहिणेय ।
ज । विद् । विदिच ।

बृहस्पति—गुरु । सुरगुरु । आङ्गिरस । सुराचार्य ।
 गोष्पति । वाचस्पति । धिषण । जीव । चित्र शिखण्डिज । ईज्य ।
शुक्र—कवि । काव्य । दैत्यगुरु । उशना । भार्गव ।
 दैत्यराज । आदिदेव गुरु ।

शनैश्चर—शनि । मन्द । मन्दचाल । छायासुत । सौरि ।
 रविनन्दन । अर्कि । मन्दग्रह ।

राहु—विधुन्तुद । तम । स्वर्भानु । सैहिकेय । सिहिका-
 सुत । असुर ।

केतु—शीर्षग्रह । धूमकेतु । धूम्रकेतु । मत्स्यवाहन ।
 शिखि ।

नक्षत्र *—ऋक्ष । भ । तारा । उडु । तारिका । खग ।
 नखत । निशिचर । नभचर । तमचर । जन्हाई ।

नक्षत्रों का समूह—तरैया । उडुगण । नखतावली ।

ध्रुव—औत्तानपादि । निश्चल । अचलग्रह । स्थिरग्रह ।

अश्विनी—अश्वयुज् । अश्व । दास ।

भरणी—यम । अन्तक (कोई भी यम का पर्याय) ।

कृत्तिका—अग्नि । अनल (कोई भी अग्नि का पर्याय) ।

* २७ नक्षत्र—अश्विनी । भरणी । कृत्तिका । रोहिणी । मृगशिरा ।
 चार्द्रा । पुनर्वसु । पुष्य । अश्लेषा । मघा । पूर्वाफाल्गुनी । उत्तराफाल्गुनी ।
 हस्त । चित्रा । स्वाती । विशाखा । अनुराधा । ज्येष्ठा । मूल । पूर्वाषाढ़ ।
 उत्तराषाढ़ । श्रवण । धनिष्ठा । शतभिषा । पूर्वाभाद्रपदा । उत्तराभाद्रपदा ।
 रेवती । (नोट—ज्योतिष के अनुसार 'अभिजित' नामक एक और नक्षत्र
 उत्तराषाढ़ के बाद माना जाता है । इस प्रकार कुल २८ नक्षत्र होते हैं) ।

रोहिणी—विधातृ । धातृ । अञ्जयोनि ।

मृगशिरा—मृगसिर । अग्रहायणि । मृग । शशभृत । चन्द्र ।

आर्द्रा—रुद्र । शिव ।

पुनर्वसु—अदिति ।

पुष्य—सिध्य । तिष्य । इज्य । जीव । देवपुरोहित ।

अश्लेषा—सर्प । उरग । भुजग । व्याल । अहि । भुजङ्ग ।

मघा—पितृ । पितर ।

पूर्वाफाल्गुनी—भग । योनि ।

उत्तराफाल्गुनी—अर्यम ।

हस्त—अर्क । रवि । कर ।

चित्रा—त्वाष्ट्र । तक्ष ।

स्वाती—वायु । समीर । अनिल । मरुत् ।

विशाखा—राधा । द्विदैव । शक्रामि । द्वीश ।

अनुराधा—मित्र । मैत्र ।

ज्येष्ठा—इन्द्र । शक्र । शाक्र ।

मूल—निरिति । रक्ष । राक्षस ।

पूर्वाषाढ—क्षीर । जल ।

उत्तराषाढ—विश्व । वैश्व ।

अभिजित—विधि ।

श्रवण—कर्ण । गोविन्द । हरि ।

धनिष्ठा—श्रविष्ठा । वसु । वासव ।

शतभिषा—सप्ततारक । तोयप । जलप । वरुण ।
जलधि । अम्बुप ।

पूर्वाभाद्रपदा—प्रोष्ठपदा । अजचरण ।

उत्तराभाद्रपदा—प्रोष्ठपदा । अहिर्बुध्न ।

रेवती—पूषा । अन्त्य । पौष्ण । अन्त्यभ ।

राशि*—लग्न । मुहूर्त । भ ।

मेष—अज ।

वृष—वृषभ ।

मिथुन—युग्म ।

कर्क—कर्कट ।

सिंह—सृगेन्द्र ।

कन्या—कन्यका । सुता । कुमारी ।

तुला—तौलि । युक् । तुल ।

वृश्चिक—अलि ।

धनु—चाप । कोदण्ड ।

मकर—नक्र ।

कुम्भ—घट ।

मीन—मख । मत्स्य ।



* प्रसिद्ध राशियाँ १२ हैं—मेष । वृष । मिथुन । कर्क । सिंह ।
कन्या । तुला । वृश्चिक । धनु । मकर । कुम्भ । मीन ।

६. कालादिवर्ग

समय—बेला । अनिमेष । काल । बार । इष्ट । अदृष्ट ।
वशिष्ट । अनेह । वय । नमय । अवसर । प्रसङ्ग । दण्ड । मुहूर्त ।
घड़ी । बिरिया ।

पल—क्षण (छन) । लमहा । दमभर । (२४ सेकेण्ड
का एक पल होता है) ।

दण्ड—घटी । घटिका । दण्ड ।

(नोट—२४ मिनट का एक दण्ड होता है । एक दिनरात
में ६० दण्ड होते हैं) ।

प्रहर *—पहर । याम । (३ घण्टे का एक प्रहर होता है) ।

दिन—दिवस । वासर । घस्र । अह्न (अहन) ।

प्रातःकाल—प्रत्यूष । अहर्मुख । प्रत्युषसी । गोसर्ग ।
प्रातः । सबेरा । भोर । प्रभात । भिनुसार । बिहान । अरुणोदय ।
कल । दिनमुख । तड़का । सकाल ।

* प्रहर—एक दिन रात में ८ प्रहर होते हैं । यथा दिन में—१ पूर्वाह्न
वा प्रातः, २ मध्याह्न, ३ अपराह्न, ४ सायं । रात्रि में—१ प्रदोष का
रजनीमुख, २ निशीथ, ३ त्रियामा, ४ उषा, भोर वा ब्राह्ममुहूर्त ।

मध्याह्नकाल—दोपहर । दुपहरिया । मध्यदिवस ।

सायंकाल—रजनीमुख । सायं । दिनान्त । सन्ध्या । गोधूलि । प्रदोषकाल । साँझ । पितृप्रसू ।

रात्रि—निशा । शर्वरी । निशीथ । निशीथिनी । त्रियामा (रात्रिका ३ रा पहर) । क्षणदा । विभावरी । रजनी । यामिनी । क्षपा (छपा) । निशि । नक्त । रैन । रात । कादम्बरी । सीता । कोटर । दोषा । असुर ।

अंधेरी रात—तमी । तमिस्रा । तामसी । तमस्विनी । श्यामा ।

उजाली रात—ज्योत्स्नी । चन्द्रिकयान्विता । कौमुदी । हरिद्रा । विभावरी ।

सप्ताह—अठवारा । हफ्ता । (७ दिन का एक सप्ताह) ।

पक्ष—पख । पाख । पखवारा । (१५ दिन का १ पक्ष) ।

कृष्णपक्ष—अंधेरा पाख । असितपक्ष ।

शुक्लपक्ष—उज्जेरा पाख । सितपक्ष ।

मास—माह । महोना ।

वर्ष—अब्द । वत्सर । हायन । सरत । संवत् । सम ।

अमावस्या—सूर्येन्दुसङ्गम । कुहू (जब कि चन्द्रमा की कला नष्ट हो जाती है) । अमा । दर्श । अमावस । सिनीवाली (जब कि चन्द्रमा की कुछ कला अवशेष रहती है) ।

पूर्णिमासी—पौर्णमासी । राका । पर्व । पूनो । पुनवासी । पुनमासी ।

चैत्र—चैत । चैत्रिक । मधु ।

वैशाख—माघव । राघ । वैसाख ।

ज्येष्ठ—जेठ । शुक्र । तपन ।

आषाढ़—शुचि । असाढ़ । ह्राढ़ ।

श्रावण—नभा । श्रावणिक । सावन । नभ ।

भाद्रपद—प्रौष्ठपद । भाद्र । भादों । भादव । नभ ।

आश्विन—इष । अश्वयुज् । काँर । कुआर ।

कार्तिक—कार्तिकिक । बाहुल । कातिक । ऊर्ज ।

मार्गशीर्ष—मगसिर । अग्रहण । अग्रहन । मगशिर ।
मार्ग । आग्रहायणिक । सहस् ।

पौष—सहस्य । पूस ।

माघ—तपा । माह ।

फाल्गुन—फाल्गुन । फाल्गुनिक । तपस्य ।

अधिक मास *—मलमास । लौढ़ का महीना ।
पुरुषोत्तम मास । असंक्रान्त मास ।

वसन्त (ऋतु)—ऋतुराज । पुष्पसमय । कुसुमाकर ।
माघव । सुरभि । बहार । ऋतुपति । कुसुमकाल । मधु ।

* प्रति तीसरे वर्ष एक अधिक मास होता है, जो शुक्र पक्ष की प्रति-
पदा से लेकर अमावास्या पर्यन्त रहता है, और इसमें संक्रान्ति नहीं होती ।
यह चान्द्र और सौर वर्षों को एक करने के लिये चान्द्र वर्ष में जोड़ लिया
जाता है ।

—प्राणम—उष्मक । निदाघ । उष्म । उष्मागम । उष्णागम ।

त्तप । तपन । तपाक । गरमी ।

—वर्षा—प्रावृट् । पावस । बरसात ।

शरद—हिमर्तु । शरत् ।

शिशिर—शीत । सिसिर । जाड़ा ।

हेमन्त—हिमन्त ।

सतयुग—कृतयुग । पुण्ययुग । देवयुग । सत्ययुग ।

कलियुग—कलि । कलिकाल । कृष्णयुग । कल्कि ।

—प्रलयकाल—संवर्त । प्रलय । क्षय । कल्प । कल्पान्त ।

नाश ।

—अवशिष्ट—शेष । बचत । बाकी ।

उपस्थित—विद्यमान । प्रस्तुत । उद्यत । आयात ।

उपनित । तैयार । मौजूद । वर्तमान । प्रतिपन्न । हाजिर ।

अनुपस्थित—अप्रस्तुत । अनुद्यत । अभाव । शून्य ।

बिना । रहित । गैरहाजिर ।

गत—बीता हुआ । बिगत । व्यतीत । भूत । परोक्ष ।

ग्रहले । पीछे ।

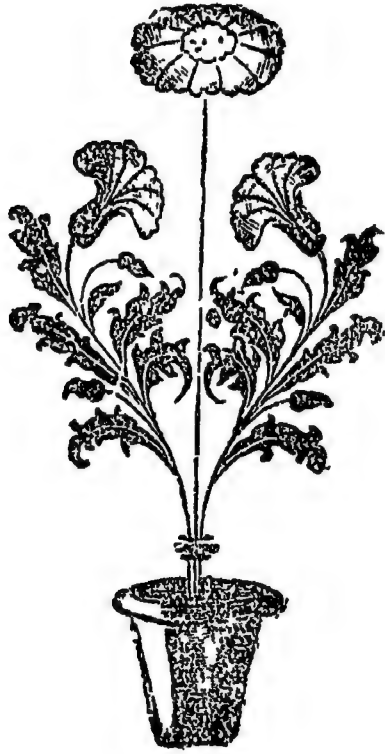
आगामी—आनेवाला । भविष्यत् । भविष्य ।

—नित्य—प्रतिदिन । सदा । सर्वदा । रोजरोज । हमेशा ।

निरन्तर । निरवधि । सतत । सन्तत । सनातन । शाश्वत ।

अनांतर । अनपायिनी । अनुदिन । अविरल । अविरत ।
अश्रान्त । ध्रुव ।

पश्चात्—पुनः । बहुरि । फिर । बाद । उपरान्त । अथ ।
तदन्तर । तदनन्तर । अनन्तर । अन्तर ।



द्वितीय खण्ड

१. स्थलादिवर्ग ।

ॐ पृथ्वी—भू । भूमि । अचला । अनन्ता । रसा । विश्व-
म्भरा । स्थिरा । धरा । धरित्री । धरणी । क्षौणी । ज्या । काश्यपी ।
सर्वसहा । वसुमती । वसुधा । उर्वी । वसुन्धरा । गोत्रा । कु ।
पृथिवी । क्ष्मा । अवनि । मेदिनी । महि । रत्नगर्भा । सागराम्भरा ।
अब्धिमेखला । भूतधात्री । रत्नावती । देहिनी । पारा । विपुला ।
धरणीधरा । धारणी । महाकान्ता । जगद्वहा । खण्डनी । गन्धवती ।
धात्री । गिरि कर्णिका । धारयत्री । सहा । अचलकीला । गौ ।
द्विरा । इडा । इडिका । इला । इलिका । उदधिवस्त्रा । इरा ।
आदिमा । इला । वरा । उर्वरा । आद्या । जगती । पृथु । श्यामा ।
क्रीडाकान्ता । खगवती । अदिति । वीजप्रसू । पृथ्वी । पटुमि ।
भुई । उर्मि । उरा । सारंग । असुर ।

ॐ संसार *—जगत । भुवन । लोक । विश्व । जगती ।
भव । जग । भूलोक । भुव । मृत्युलोक । मर्त्यलोक । विष्टप ।

* लोक चौदह हैं—भूलोक, भुवलोक, महलोक, जनलोक, सत्यलोक,
तपोलोक और स्वर्गलोक—ये सात ऊपर के लोक हैं । तल, अतल,
सुतल, वितल, तलातल, रसातल और पाताल । ये सात नीचे के लोक हैं ।

संस्तुति । ब्रह्माण्ड । जहान । दुनिया । दुनी । खलक ।

मिट्टी—मृत् । मृत्तिका । माटी । मट्टी । मृत्ता । प्रशस्ता ।

धूलि—धूर । गर्द । धूल । धूसर । रज । रेणु । पांशु
(पाँस) । पिजल । धूसरी । खेह । संचरा । वातकेतु । वातध्वज ।

उपजाऊभूमि—उर्वरा । उर्वरी । सस्याढ्या ।

बिनाउपजाऊभूमि—ऊषर । ऊसर । सस्यहीना ।
अनुर्वरा । बन्ध्याभूमि ।

आर्यावर्तदेश—भारतवर्ष । भरतखण्ड । भारत । आर्य-
भूमि । भारतभूमि । पुण्यभूमि । हिन्द । हिन्दुस्तान ।

(नोट—विशेषतः हिमालय और विंध्याचल की मध्यस्थ भूमि
को ही आर्यावर्त कहते हैं ।)

राष्ट्र—नीवृत । जनपद । सुदेश । उपवर्तन । विषय ।

ऊसरदेश—ऊषवती । ऊषरा । ऊषरस्थली । ऊषर ।
ऊषवान् । क्षारभूमि । मरुभूमि । मरुस्थल ।

श्वेत—क्षेत्र । वप्र । केदार । भूमि । निष्कुट । राजिका ।
वलज । पाटीर ।

म्लेच्छदेश—प्रत्यन्त । म्लेच्छवास । पतितभूमि ।
अनार्यभूमि ।

जलप्रचुरदेश—अनूपदेश । मालवदेश ।

बालुकायुतदेश—शर्करा । शर्करिल । शर्कर । शर्करावती ।

वल्मीक—बामलूर । नाकु ।

✓मार्ग—मग । राह । अयन । वर्त्म । पथि । अध्वा ।
 स्रुति । सरणि । पद्धति । पथ । पन्थ । पदवी । एकपदी । वर्तनि ।
 संचरण । पद्या । बाट ।

सुन्दर मार्ग—अतिपन्थ । सुपन्थ । सत्पथ । सन्मार्ग ।
 अतिध्वति । विशिष्टमार्ग । रम्यपथ ।

✓दुर्गम मार्ग—प्रान्तर । कान्तार । छिष्ट पथ । कण्टका-
 कीर्ण मार्ग । दुष्पथ । कुपथ । कुमार्ग । कुराह । कापथ । विपथ ।
 दुर्गम पथ ।

संकीर्ण मार्ग—रथ्या । विशिखा । वीथी । वीथिका ।
 लघुपथि । गली । प्रतोली । त्रोलिका । गैल । खोरि । कूचा ।

चौराहा—शतुष्पथ । शृङ्गाटक । चौमुहानी । चौरस्ता ।
 चौहट्टा । चौक ।

राजमार्ग—चंदापथ । राजपथ । संसरण ।

✓नगर—नगरी । पुर । पुरी । पत्तन । पुटभेदन । निगम ।
 शहर । कसबा ।

टोला—मुहल्ला । टोला । टोली । पुर । पुरवा । कूचा ।

✓बाजार—हाट । पण्य । पण्यवीथिका । राजपथ ।
 चतुष्पथ । शृङ्गाटक । विपणि । मण्डी ।

तेल का बाजार—तेलहट्टा । तेलियाना ।

कपड़े का बाजार—बजाजा । चैल-हट्टा ।

मछली का बाजार—मछरहट्टा । मछरटोला ।

सुनारों का बाजार—सर्पाफा ।

बर्तनों का बाज़ार—ठठेरी बाज़ार । ठठेरा ।

गाँव—ग्राम । गँवई । संवसथ । देहात ।

अहीरों का गाँव—घोष । आभोरपल्ली । अहिराना ।

भीलों का गाँव—पक्कण । शबरालय ।

चमारों का गाँव—चमरौटिया । चमरटोलिया ।

घर—गृह । आलय । आगार । ओक । आयतन । गेह ।
सदन । सन्न । सौध । वेस्म । वास । निकेत । निधान । निःशान्त ।
निवेश । शिविर । शाला । धाम । भवन । मन्दिर । मकान ।
आश्रपद (आस्पद) । धिश्रपद । वस्य । आवास । शरन ।
निलय । निवास । अयन । परिघ । वाक्य । शाला । आराम ।
हरम्य । स्थान ।

[नोट—कच्चे घर को 'बखरी' भी कहते हैं तथा पक्के और
बड़े घरों को महल, प्रासाद या हवेली कहते हैं ।]

घर की दीवार—दिवाल । भीत । भित्ति । भीती ।
कुडथम् ।

गृहद्वार—द्वार । पौर । दुआर । ड्योढ़ी । पहरा ।
दरवाज़ा । प्रतीहार । देहली । गृहावगृहणी । सिंहपौर ।

बगली द्वार—पार्श्वद्वार । पक्षद्वार । पक्षक । गुप्तद्वार ।

देहली—देहरी डेहरी । ड्योढ़ी ।

ओसारा—ओटा । अलिन्द । प्रघाण । प्रघण । प्रको-
ष्ठक । दालान ।

आँगन—आङ्गण । गृहाङ्गण । अजिर । चत्वर । बगर ।

ताँबा *—ताम्र । तामा । पवित्र । रक्तधातु । ब्रह्मवर्चस् ।
भासुर । सर्वलोह । तपनेष्ट । अम्बक । अरविन्द । रविलोह ।
रविप्रिय । रक्त । नैपालिक । द्व्यष्ट । उदुम्बर । म्लेच्छमुख ।
सुल्प । वरिष्ट । कनीयस । ताम्रक । शुल्ब । द्विष्ट । उदुम्बर ।
शुल । रविसंज्ञक । अर्क । मुनिपित्तल । सूर्याह । लोहितायस् ।
लोहिताप ।

[नोट—ताँबे के कीट को 'तूतिया' कहते हैं । यह औषधि
के काम में आता है ।]

चाँदी †—रजत । रौप्य । खजूर । रुक्म । जातरूप ।
शुभ्र । चन्द्रकान्ति । महाघन । वाष्कल । चन्द्रवपु । महावसु ।
कलधौत । लोहराजक । अकुप्य । सौध । विमल । चन्द्रलोहक ।
शुभ । वसुश्रेष्ठा । दुर्दान । रूपा । रूपक । दुर्वर्णक । रूप्य ।
श्वेत । रुचिर । रुधिर । श्वेतक । महाशुभ्र । तम्ररूपक । तार ।
चन्द्रभूति । सित । कलधूत । रंगवीज । चन्द्रहास । इन्दुलोहक ।
राजरंग । दुर्वर्ण । धौत । कुप्य ।

पीतल—पित्तल । आरकूट । कपिलोह । सुवर्णक । रिरि ।
रीरी । रीति । पीतलोह । सुलोहक । ब्राह्मी । राज्ञी । कपिला ।
ब्रह्मरीति । महेश्वरी । पतिकावेर । द्रव्यदारु । रीति । मिश्र ।
आर । राजरीती । क्षुद्रसुवर्ण । सिंहल । पिंगल । पीतनक । लोह ।

* कार्तिकेय के वीर्य से ताँबे की उत्पत्ति है ।

† त्रिपुरासुर वध के समय महादेव जी के वामनेत्र से जो अश्रुपात
हुआ, उससे चाँदी की उत्पत्ति हुई ।

लोहितक । पिंगल लोह । पीतक । पिंग । पाकडुंडी । राजपुत्री ।
ब्रह्माणी । हरिलोह । कांची पीतल । पीतधातु ।

[नोट—पीतल उपधातु है] यह ताँबा और जस्ते के योग से बनता है ।]

काँसा—कांस्य । विद्युत्प्रिय । कंस । ताम्राद्ध । घोष ।
बंगशुल्बजं । कंसास्थि । प्रकाश । घंटाशब्द । असुराह्वय । फूल ।
सौराष्ट्रकं । कांसीय । घोरपुष्प । वह्निलोहक । दीप्तलोहक ।
घोरलोह । दीप्तलोह । कांसक । कांस । ताम्रत्रपुज । दीप्ति ।
काँसी । कस्कुट । फूल ।

[नोट—काँसा उपधातु है । यह ताँबा और राँगा के योग से बनता है ।]

सोना *—स्वर्ण । सुवर्ण । सुवरन । सोन । हाटक ।
पुरट । कञ्चन । काञ्चन । कनक । हेम । हरि । हिरण्य । जातरूप ।
चामीकर । कार्त्यस्वर । शातकुंभ । तपनीय । महारजत ।
अर्जुन । कर्बुर । रुक्म । भर्म्म । अष्टापद । जाम्बूनद । कलधौत ।
गारुड । गौर । चन्द्र । कुन्दन । कान्ति । सुर । सानसि । अमृत ।
अग्निशिख । अग्निबीज । द्राविड । भूरिपिंजर । गांगेय । करहाटक ।
ऋक्थ । अकुप्य । पिञ्जान । आपिञ्जर । तेज । दीप्त । अग्निभ ।
मनोहर । अग्नि । भास्कर । शतखण्ड । उज्ज्वल । कल्याण ।
अभ्रक । मुख्यधातु । सारुक । चाम्पेय । भरु । अग्निबीज ।
भद्र । गैरिक । लोहवर । ऊर्ध्व । रेकन । कर्चूर । लोहोत्ताम ।

* सप्तर्षियों की अत्यन्त सुन्दरी पत्नियों को देखकर अग्निदेव का जो वीर्य पृथ्वी पर गिरा वह 'स्वर्ण' नाम से विख्यात हुआ ।

भूत्तम । दीप्तक । मङ्गल्य । सौमेरुक । भृङ्गार । जाम्बव ।
आग्नेय । निष्क । तपनीयक । चण्ड । अय । पेश । कृशान ।
लोह । भरुत । दत्र । चारुरत्न । पीतक । श्रीनिकेत । भूषणार्ह ।
सूर्य्यनामक ।

जस्ता—जसद । बंगसदृश । रीतिहेतु । श्वेतपटल ।
कंसास्थि । जस्त ।

राँगा—रंग । बंग । चक्रसंज्ञ । स्वर्णज । नाग जीवन ।
मृद्वंग । गुरुपत्र । तमर । नागज । कस्तीर । आलीमक । सिंहल ।
स्वषेत । नाग । त्रपु । त्रपुष । आप् । हिम । मधुर । कुरूष्य ।
पिच्चट । पूतिगंध । चिप्पट । राँग । कलई ।

शीशा—सीस । सुवर्णक । चीन । पिष्ट । सिन्दूर कारण ।
सीसक । सीसपत्रक । नाग । वप्र । योगेष्ट । वर्द्ध । गंडूपदभव ।
स्वर्णारि । यवनेष्ट । चीर । वध्र । पिच्चट । सुवर्णारि । त्रपु । बध्रक ।
महाबल । यामुनेष्टक । बहुमल । श्वेतरंजन । जड़ । भुजंगम ।
उरग । कुरंग । परिपिष्टक । मृदुकृष्णायस । पद्म । तारशुद्धिकर ।
शिरावृत्त । वयोरंग । चीनपिष्ट । चीनरंग । लेख्य । धातुमल ।
पार्वत ।

पारा *—पारद । रस । रसराज । रसधातु । रसेन्द्र ।
महारस । चपल । शिववीर्य । सूत । शिवाह्वय । महातेज ।

*पृथ्वी पर महादेवजी का वीर्य गिरा वही संसार में 'पारद' नाम से
विख्यात हुआ । यह परमौषधि है । निघण्टुरत्नाकर में लिखा है कि
“रसात् परतरं लिंगं न भूतं न भविष्यति” अर्थात् पारे के समान श्रेष्ठ गुण
वाला पदार्थ न हुआ है और न होगा ।

रसलेह । रसोत्तम । सूतराट् । जैत्र । शिवबीज । शिव । अमृत ।
लोकेश । दुर्द्धर । प्रभु रुद्रज । हरतेज । अचिन्तज । अवित्तज ।
खेचर । अमर । देहद । मृत्युनाशक । स्कन्द । स्कान्दांशक ।
देव । दिव्य रस । रसायन श्रेष्ठ । यशोद । सूतक । सिद्धधातु ।
रजस्वल । मूर्ति । पार । लोहेश । हेमनिधि । त्रिनेत्र ।
रोपण । स्वामी ।

✓ गन्धक *—गौरी बीज । बलि । गन्धपाषाण । गन्धिक ।
गन्धाश्म । पामात्र । सौगन्धिक । सुगन्धिक । पामारि । गंधी ।
शुल्वारि । गन्धमोदन । वर । पूतिगन्ध । गंध । दिव्यगन्ध ।
सगन्ध । रस गन्धक । कुष्ठारि । क्रूरगन्ध । कीटघ्न । शरभूमिज ।
बलरस । गन्धमोहन । अतिगंध । पामागंध ।

हरिताल †—ताल । पित्तल । पिञ्जर । मनोज्ञ । हरि-
तालक । छत्राङ्ग । काञ्चनरस । गोदन्त । नटमण्डन । निस्सगन्धि ।
पीतक । हरिताल । कम्बूर । पीतन । हरिबीज । सिद्धधातु । पिजल ।

* गन्धक चार प्रकार का होता है—यथा, सफेद, लाल, पीला
और नीला । सफेद गंधक व्रण आदि के काम में, लाल गंधक सुवर्ण
शुद्ध करने में, पीला पारदादि रसायन कर्म में तथा नीला गंधक सर्व श्रेष्ठ
और दुर्लभ है । यह सब प्रकार के रसायन कर्म में प्रयुक्त होता है ।

† हरिताल दो प्रकार का होता है । यथा—१. पत्र हरिताल वा
स्तवक वा तबकिया हरिताल । २. पिंड वा गोदन्त हरिताल ।

पुराणों के मतानुसार विष्णु के वीर्य से हरिताल, लक्ष्मी के रज से मै-
सिल, शिव के वीर्य से पारा और पार्वती के रज से गन्धक की उत्पत्ति
मानी गई है ।

लोमहृत । वंशपत्रक । वर्णक । नटमूषण । अल । पीत । गोरोच ।
चित्राङ्ग । पिंजरक । वैदल । तालक । कनकरस । काञ्चनक । बिडाल-
लक । चित्रगंध । पिङ्ग । पिङ्गसार । गौरी ललित ।

अभ्रक *—अबरक । तबक । गिरिजाबीज । निर्मल ।
अब्द । गिरिजामल । व्योम । घन । शुभ्र । बाहु पत्र । घनाह्वक ।
गिरिज । अमल । गौर्यामल । गरजध्वज । अभ्र । भृङ्ग ।
अम्बर । अन्तरिक्ष । ख । अनन्त । गगन । गौरीज । गौरीजेय ।
आभ । अबरख । भोडर । भोडल । मुरवल ।

[नोट—आकाश शब्द के जितने पर्याय हैं उनसे भी
अभ्रक का अर्थ निकलता है ।]

मुरदासंग—स्वर्णवर्णक । व्रणघ्न । नागसत्व । वोदार ।
मुरदाशिग । वोदारशृंग । बेदारशृंगज ।

[बेदार नामक शृंग पर मुरदासंग उत्पन्न होता है । यह
बहुत भारी और चमकीले पीले रंग का होता है, व्रण आदि के
काम में आता है]

रूपांशु—तारमाक्षिक । माक्षिकश्रेष्ठ । विमल ।

* अभ्रक चार प्रकार का होता है, यथा—पिनाक, दर्दुर, नाग
और वज्र । पिनाकाभ्रक खाने से महाकुष्ठ रोग, दर्दुर अभ्रक खाने से
मृत्यु, नाग अभ्रक खाने से भगन्दर रोग होता है, तथा वज्राभ्रक के
सेवन से सर्वरोग नाश, तरुणता, आयुष्य, बल, महावीर्य, और अत्यन्त
पराक्रमी पुत्र की प्राप्ति होती है । वैद्यक मत से वज्र नामक अभ्रक
सर्वोत्तम माना गया है ।

श्वेताक्ष । रूपामाक्षि । रौप्यमाक्षिक । रूपामाखी । 'तारामुखी ।
धातुमाक्षिक ।

[सफेद चमकदार को रूपामाखी और पीले चमकदार को
सोनामाखी कहते हैं ।]

सोना माखी—माक्षिक । धातुमाक्षिक । ताप । स्वर्णाह्वय ।
स्वर्णमाक्षिक । सुवर्णमाक्षिक । तापिच्छ । आपीत । ताप्यक ।
पीतमाक्षिक । आवर्त्त । क्षौद्रधातु । माक्षिकधातु । कदम्ब ।
चक्रनामा । तापिंज । स्वर्णवर्ण । हेमद्युति । मधुधातु । अजनामक ।

खपरिया—चक्षुष्य । अमृतोत्पन्न । खर्परी । दार्विका ।
खर्पर । रसक । खार्परिका । तुत्थ्य । खर्परी तुत्थ्य । खर्परी तुत्थक ।
यशदोपधातु । खापरिया । खापर ।

तूतिया—मूषातुत्थ । कांस्यनील । तुत्थक । शिखिकण्टक ।
तुत्थ । हरिताश्म । नीलांगज । मयूर ग्रीवक । ताम्रगर्भ । अमृतोद्भव ।
मयूर तुत्थ्य । भृतक । शिखिकण्ठ । नील । तुत्थांजन । वितुन्नक ।
शिखिग्रीव । मयूरक । हेमसार । मृतामिद । तामोपधातु । नीला
थोथा । थोथा ।

[ताम्बे के कीट से भी तूतिया निकलता है]

कौसीस *—कासीस । धातुकासीस । खाचर । शोधन ।
धातुशेखर । पांसुकासीस । केसर । हंसलोमस । शुभ्र ।

* कौसीस दो प्रकार की होती है—१. 'धातुकासीस' जो भस्म के
समान अम्ल मृत्तिका होती है, जो प्रायः सफेद या फिरोजी रंग की होती
है । २. 'पुष्पकासीस' जो पीली होती है ।

नेत्रौषध । पुष्पकासीस । वत्सक । मलीमस । ह्रस्व । विशद ।
नीलमृत्तिका । हीराकस ।

गेरू (साधारण)—गिरिमृत् । गैरिक । रक्तधातु ।
लोहितमृत्तिका । गिरिधातु । गवेधुक । धातु । गिरिमृद्भव ।
वनालक्त । गवेरुक । प्रत्यश्म । गिरिज । गैरेय । ताम्रधातु ।

स्वर्ण गैरिक (गेरू)—सुवर्ण गैरिक । स्वर्णधातु ।
सुरक्त । शिलाधातु । सन्ध्याभ्र । बभ्रुधातु । सुरक्तक ।

हिरौंजी—पाषाण गैरिक । कठिन । ताम्र वर्णक । हिरौंजी ।
पीत गैरिक । सोनगेरू ।

खड़िया (सेल खड़ी)—पाकशुक्ला । शिलाधातु । खटि ।
कठिनी । खड़ी । खटी । खटिनी । खटिका । धवल मृत्तिका ।
श्वेतधातु । पाण्डुमृत्तिका । सितधातु । पाण्डुमृत्त । कक्खटी ।
वर्णरेखा । वर्णलेखा । मृत्तिकानखा । अनीलाधातु । वर्णलेखिका ।
शुक्लधातु । धातुपल । कठिनिका । लेखनी । मकल । खरियामाटी ।
गौरखड़ी । चाखड़ी ।

मैनसिल—मनः शिला । गोला । मनोज्ञा । नागजिह्विका ।
मनोगुप्ता । रोगशिला । नैपाली । कुनटी । शिला । मनः सिल ।
कुटली । मनोह्वा । नेपालिका । मनसिल । कल्याणिका । नागमाता ।
रसनेत्रिका । दिव्यौषधि ।

सुरमा * (स्रोतोंजन)—नदीज । बाल्मीक । स्रोतज ।

*सुरमा तीन प्रकार का होता है । १. स्रोतोंजन, २. सौवीराञ्जन ।
और ३. पुष्पाञ्जन ।

जयामल । स्रोतोद्भव । स्रोतोभव । सौवीर । सौवीरसार ।
कपोतांज । यामुन । पीतसारि । वारिभव । कपोतसार । बाल्मीकशीर्ष ।

सुरमा (सौवीराञ्जन)—सौवीरक । पार्वतेय । मेत्रक ।
नीलांजन । कृष्ण । नादेय । स्रोतोज । दुष्प्रद । सुवीरज । चक्षुष्य ।
वारिसम्भव । कपोतक । सुरमा । अंजन । श्वेतसुरमा ।
कालासुरमा ।

सुरमा (पुष्पाञ्जन)—कौसुम्भ । रीतिक । कुसुमाञ्जन ।
रीतिपुष्प । पुष्पकेतु । पौष्पक । सदञ्जन । रीतिकुसुम । माक्षिक ।
चाक्षुष्य । कृमिरसाञ्जन । धातु माक्षिक ।

हिङ्गुल (ईगुर) *—हंसपाद । रसस्थान । हिङ्गुल ।
रक्तपारद । हिङ्गुलि । हिङ्गुलु । रक्त । मर्कटशीर्ष । दरद । रस ।
उरु । उन्द । कपिशिर्षक । वर्वर । सुरंग । सुनर । रञ्जन ।
म्लेच्छ । चित्राङ्ग । चूर्णपारद । चर्म्मरक । रंजक । रसोद्भव ।
रसगर्भ । मनोहर । चर्म्मर । नानाशृङ्गारवर्द्धन । सिंगरफ ।
सिंगरिफ । ईगुर । इंगुर । हींगलू । शुकतुण्डक ।

सिंदूर—सींदुर । सेंदुर । नागज । वीर । रक्त । शिव ।
सन्ध्यारुण । रक्तत्रालुका । रंगज । बंगज । शृङ्गारभूषण । अरुण ।

स्रोतोञ्जन देखने में नीला चमकदार, परन्तु घिसने में गेरू की भाँति लाल होता है ।

* हिङ्गुल तीन प्रकार का होता है । (१) चर्म्मर-सफेद रंग का ।
(२) शुकतुण्डक—पीले रंग का, तथा (३) हंसपाद—लाल रंग का होता है । यही शृङ्गार के काम में आता है ।

नाग रक्त । नाग सम्भव । रक्तचूर्ण । रक्तबालुक । रक्तशासन ।
भालदर्शन । नागरेणु । सीमन्तक । नागगर्भ । शोण । वीररज ।
गणेशभूषण । सन्ध्याराग । शृंगारक । सौभाग्य । मंगल्य ।
सीसज । सीसोपधातु । अरुण पराग । सौभाग्य चिन्ह । सोहाग ।

शिलाजीत *—शिलाजतु । अद्रिजतु । शैलनिर्यास
गैरेय । अश्मज । गिरिज । शैलधातुज । अर्ध्य । शिलाज । शैल ।
अगज । शैलेय । शीतपुष्पक । शिलाव्याधि । अश्मोत्थ ।
अश्मलाक्षा । अश्मजतुक । जत्वश्मक ।

बच्छनाग-विष †—काकोल । गरल । क्ष्वेड । विष ।

* उष्ण काल में सूर्य की किरणों से तप्त होकर पर्वत धातुओंके सार को गोंद की भाँति छोड़ते हैं, उसी सार को शिलाजतु वा शिलाजीत कहते हैं । यह धातुभेद से चार प्रकार का होता है । १. सौवर्ण, २. रजत, ३. ताम्र, और ४. आयस ।

‘सौवर्ण शिलाजीत’ सुवर्ण की खान का सार है, यह लाल रंग का होता है ।

‘रजत शिलाजीत’ चाँदी की खान का सार है, यह पाण्डु (पीले) रंग का होता है ।

‘ताम्र शिलाजीत’ ताँबे की खान का सार है, यह मोर की गर्दन के रंग का होता है ।

‘आयस शिलाजीत’ लोहे की खान का सार है, यह काले रंग का होता है । यही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । यह मत “भाव प्रकाश” का है ।

शुद्ध शिलाजीत की यही उत्तम पहचान है कि वह अग्नि में डालने से लिंगाकार खड़ा हो जाता है और उसमें से धुँआ नहीं निकलता ।

—(निघण्टु रत्नाकर)

† वैद्यक मत से विष दो प्रकार का होता है । एक स्थावर विष है,

दारु । अमृत । सौराष्ट्रिक । शौकुकेय । ब्रह्मपुत्र । प्रदीपन । नील ।
आहेय । गरुड । कालकूट । कसाकूल । हारिद्र । रक्तशृङ्गिक ।
गर । घोर । हालाहल । हलाहल । भुगर । शृङ्गी । जांगल । रस ।
तीक्ष्ण । रसायन । जंगुल । जांगुल । वत्सनाभ । प्राणहर । जहर ।
जीवनाघात । कृषल । जीवनान्तक । प्राणहर । बचनाग । माहुर ।

संखिया *—शतमल्ल । गौरीपाषाण । आखुपाषाण ।
लोहशंकरकारक । सोमलखार । मल्ल ।

फिटकिरी—स्फटी । स्फटिका । श्वेता । शुभ्रा । रंगदा ।
दृढरंगा । रंगदृढा । दृढा । रंगा । स्फटिकारि । स्फटिकारिका ।
रंगाङ्गा । सुरंगा । गतरंगा । फटकिरी ।

चुम्बक—चुम्बक पत्थर । कान्तपाषाण । अयस्कान्त ।
लौहकर्षक ।

गोपी चन्दन—आढतकी । सौराष्ट्री । तुवरी । पर्पटी ।
कालिका । सती । सुजाता । काक्षी । पार्वती । मसी ।
मृदाह्वाया । मृत् । मृत्स्ना । आसङ्ग । सुराष्ट्रजा । मृत्तालक ।

जो खान से उत्पन्न हो, अथवा किसी वृक्षादि के मूल-पत्र-फल-फूल छाल-
दूध-सार गोंद आदि से उत्पन्न हो, अथवा किसी धातु से उत्पन्न हो, वा
कन्द का हो । दूसरा जंगम विष है, जो साँप, कीट, नेवले, जोंक, मकड़ी,
बिच्छी, मछली, चूहा, कुत्ता, सिंह, व्याघ्र, तेंदुआ, भेड़िया, शृगाल, आदि
जन्तुओं के दाँत, मुँह, नख आदि में रहता है ।

*बच्छनाग और संखिया की गणना विष में है और सेहुड़ (थूहर),
मदार (आक), करियारी, घुँघची, कनेर, कुचिला, जमालगोटा, धतूरा
और अफीम ये नौ उपविष संज्ञक हैं ।

काली । मृत्तिका । कंसोद्भवा । सुरमृत्तिका । स्तुत्या । सौराष्ट्रा ।
सोरठ की मिट्टी ।

बोल (बोर) *—गन्धरस । पिंड । निर्लोह । बर्बररस ।
पौर । सुगन्ध । नालक । रसगन्ध । रस । सौरभ । बर्बर ।
रक्तापह । मुण्ड । सुरस । पिण्डक । विष । महागन्ध । विश्व ।
शुभगन्धक । विश्वगन्ध । व्रणारि । प्राण । गोप । गोस ।
पिण्डगोस । शश । गोसशश । गान्धार । मसिवर्द्धन । बोलज ।
गोपरस । गोपक । पिण्डल । गोल । बीजाबोल । हीराबोल ।

जवाखार—पाक्य । क्षार । यावशूक । यवक्षार ।
यवाग्रज । यवलास । यवशूक । सारक । रेचक । यवनालक ।
तिर्य्य । तीक्ष्णरस । यवनालज । यवज । यवशूकज । यवाह्न ।
यवापत्य ।

सज्जीखार—स्वर्जिकाक्षार । कपोत । स्वर्जिका । स्वर्जि ।
शूलघ्नि । सुखवर्चक । सौवर्चल । रुचक । सृज्जिकाक्षार ।
सर्जिका । क्षार । सज्जी । सुनर्चिक । स्रुग्नी । योगवाही । स्वर्जका ।
सुवर्चक । स्रुग्निका । सर्जि । सर्जिक्षार । सुखोर्जिक । सुवर्जिक ।
सुवर्चि । सुवर्चा ।

सुहागा—टङ्क । लोहद्रावी । सुभग । धातुवल्लभ ।
पाचनक । मालती तीरज । लोहश्लेषण । रसशोधन । द्रावक ।

* यह लाल रंग का कड़ुवा पदार्थ गोंद के प्रकार का होता है । प्रसूता
स्त्रियों को खिलाया जाता है । इसके खाने से गर्भाशय तथा योनि दोष दूर
हो जाते हैं ।

रसाधिक । रसन्न । वर्तुल । कनक क्षार । मलिन । टंकण । रङ्गद ।
स्वर्णपाचक । दङ्ग । धातुसन्धिकर । सौभाग्य । श्वेतटंकण ।
टंकणक्षार ।

सेंधा नोन—सैन्धव । सिन्धुद्रव । माणिमन्थ । नादेय ।
लवणोत्तम । सितशिव । सिन्धूज । सिन्धुपल । वशिर । सिन्दुदेशज ।
माणिवन्ध । सिन्धुमन्थज । सिन्धुलवण । सिन्धूभव । शिव ।
सिद्ध । शिवात्मज । पथ्य । शुद्ध । सेधा नमक ।

साँभर नोन—शाकम्भरीय । वसुक । रौमलवण ।
रौमक । गङ्गाख्य । गङ्गलवण । शुभ्र । पृथ्वीज । गङ्गदेशज ।
गङ्गोत्थ । महारम्भ । साम्भर । सम्बरोद्भव । सामर ।

समुद्री नोन—सामुद्रिक । त्रिकूट । वशिर । लवणाब्धिज ।
वासर । कडक । सागरज । शिव । सामुद्रज । समुद्रनोन । पाँगा ।

संचर नोन (कटीला नोन)—विड । विडलवण ।
धूर्त । कृतक । विडगंध । काललवण । द्राविडक । खण्ड । क्षार ।
आसुर । सुपाक्य । खण्डलवण । कृत्रिमक । द्राविडक । पाक्य ।
विट । विरिया सॉचर नोन । कटीला नोन ।

काला नोन—अक्ष । सौवर्चल । रुच्य । दुर्गन्ध । रुचक ।
शूलनाशन । कृष्णलवण । तिलक । हृद्यगन्ध । कोद्रविक । पाक्य ।
मेचक । चौहर कोड़ा । सोचर नोन ।

काँचिया नोन—त्रिकूट । पाक्याह्व । लवण । नील ।
काचसंभव । काचलवण । काचोद्भव । काचसौवर्चल । नीलक ।
पाकजका चेत्य । ह्यगन्ध । काललवण । कुरुविन्द । काचमल ।
कृत्रिम । नीलकाचोद्भव ।

खारी नौन—औषरक । सार्वगुण । सार्वसंसर्गलवण ।
ऊषरज । साम्भार । बहुलगुण । मिश्रक । ऊषरलवण । खारी ।
खारी नून ।

नौसादर—नरसार । क्षारश्रेष्ठ । अमृतक्षार । सादर ।
चूलिकालवण । वज्रक्षार । विदारन । वजरखार ।

शोरा—सूर्यक्षार । अर्कक्षार । ताक्षर्य । तीक्ष्णरस । सोरा ।
सुवर्चिका । सार्वसहा । औरिण । शिलाजतु । सूरखार । वाजी ।
सूर्याखार ।



४. वनादि वर्ग

✓ वन—अटवी । अरण्य । विपिन । कान्त । कान्तार ।
जंगल । कुपथ । दुर्गमपथ । काटिका । कक्ष्यक । कुन्दिलवार्क्ष ।
वनी । गहन । घन । कच्छ । दुर्गम ।

महावन—महारण्य । अरण्यानी । महाटवी । तृणाटवी ।

✓ उपवन—कृत्रिमवन । चित्रविपिन । आक्रीडा । उद्यान ।
बाग । बगीचा । बाटिका । निष्कुट । आराम । पुष्पोद्यान ।
पुष्पवाटिका । फुलवारी । कृतारण्य ।

प्रौधा—क्षुप । ह्रस्वशाखा । शिफ । लघुवृक्ष । पेड़ ।

✓ वृक्ष—विटप । पादप । अगम । द्रु । द्रुम । कुट । तरु ।
शाल । शाखी । महीरुह । अनोकह । पलाशी । सुखआल । पत्री ।
दली । छदी । फली । इकपद । बहिँ । मधु । अर्नुत । नग ।
भूरुह । अद्रि । अग । कुज । विनद । पटल । द्विप । बिरवा ।
पर्णी । अगच्छ । अंग्रिप । दरख्त । पेड़ ।

लताबौर—बल्ली । बल्लरी । वीरुध । व्रतति । लता ।
गुल्मिनी । उलप । प्रतान ।

✓ बीज—बीज । बीया । दाना । बीजा ।

जड़—मूल । शिफा । अंधि । पाल । जटा ।

अंकुर—अंकुआ । अँखुआ । नवोद्भिद । प्ररोह । गाम ।

अँगुसा । डाभ । कल्ला । कनखा । कोपल । आँख । प्रवाल ।

मंजरी—बाल । बाली । पुष्पिल ।

कली—मुकुलित पुष्प । कलिका । जालक । कोरक ।
मुकुल । कुहुमल । अस्फुटित पुष्प ।

फूल—पुष्प । पुहुप । सारंग । कुसुम । प्रसून । सुमन ।
सुम । समद । फलपिता । मञ्जरी । सुमनस् । सून । प्रसव ।
मणीचक ।

फूल का गुच्छा—गुच्छ । गुच्छा । गुच्छक । स्तवक ।
गुलुच्छ ।

पुष्प-रस—मकरन्द । मधु । पुष्पद्रव । पुष्पसार ।
पुष्पस्वेद । पुष्पज । पुष्पनिर्यासक । पुष्पाम्बुज ।

पुष्प-रज—रेणु । रज । पराग । धूलि ।

पत्र—पत्ता । पत्ती । पर्ण । दल । छद । छदन । पल्लव ।
किसलय । पात । विसल । वह्न । पलास । विटपाभरण । पान ।
पतत्र ।

शाखा—डाली । साखा । स्कन्ध । काण्ड ।

टहनी—वृन्त । प्रशाखा ।

काँटा—काँट । कंटक । पँखुरी ।

छाल—बल्कल । बकला । छिलका । छल्ली । त्वक् ।
त्वचा । ओलक । चोच । बल्क ।

बरोह—जटा । शिफा ।

गौंद—सार । मज्जा । लश । खपुर ।

फलयुक्त वृक्ष—सफल । फली । फलवान । फलिन ।
फलित वृक्ष । ६

फलहीन वृक्ष—अफल । वन्ध्य । अवकेशी ।

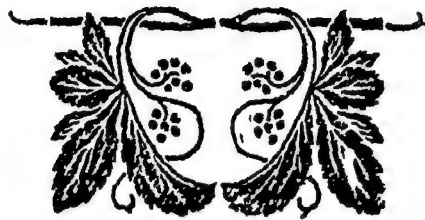
फूला हुआ वृक्ष—कुसुमित । पुष्पित । प्रकुल । उत्कुल ॥
संकुल । फुल्ल । व्याकोश । विकच । स्फुट ।

कोटर—निष्कुह । निष्कुट ।

काठ—दारु । काष्ठ । शंकु । स्थाणु ।

जलाने की लकड़ी—ईधन । इध । इध्म ।

थाला—आलवाल । थावल । थाल ॥



५. धान्य वर्ग

१ अन्न—धान्य । अनाज । नाज । दाना । गल्ला । अमृत । सस्य । लवेटिका । वीज्य । बीज । ब्रीहि । वरेणुक । ब्रीह्य । शाली । भोग्य । भोगार्ह । आद्य । जीवन धन । स्तम्बकारि । जीव साधन । स्तम्बकरि ।

धान (चावल) *—(देखो 'अन्न')

रक्तशालि । कलम । पाण्डुक । शकुनाहत । सुगन्धक । कर्दमक । दूषक । पुष्पाण्डक । पुण्डरीक । दीर्घशूक । साठी । काञ्चनक । तण्डुल । तन्दुल । अक्षत । चाँवल । चाउर ।

[नोट—ये नाम साठी चाँवल के हैं । 'शालिग्राम निघण्टु' के अनुसार साठी चाँवल १८ प्रकार के हैं, उनके नाम ये हैं—रक्तशाली । महाशाली । कलमा । शष्टिका ।

* धान की अधिक खेती बंगाल में होती है । वहाँ इसके तीन भेद हैं—आमन (अगहनी), आउस (भेंदई) और बोरो (जेठी) । महीन चाँवलों के भेद—बासमती, लटेरा, रामभोग, रानीकाजर, तुलसीबास, मोतीचूर, समुद्रफेन, कनकजीरा, स्यामजीरा । साधारण धान—बगरी, दुद्धी, साठी, सरमा, रामजवाइन ।

खंजरीटा । पसाही । जरिका । कपिञ्जला । सौन्धी । शूकला । बिलवासी । गरुड़ा । कचोरका । रुक्मवन्ती । कलमा (दूसरा) बिल्वजा । मागधी । पीता । ग्रान्त भेद से चाँवलों के अगणित प्रकार हैं । कुल के नाम देने से एक अलग ही ग्रन्थ बन जायगा] ।

जव (जौ)—यव । मेध्य । सितशूक । दिव्य । अक्षत । कंचुकि । धान्यराज । तीक्ष्णशूक । तुरगप्रिय । शक्तु । ह्येष्ट । पवित्रधान्य । शितशूक । हय प्रिय । यवक । श्वेतशुंग । प्रवेट । शीतशूक ।

गेहूँ—गोधूम । बहुदुग्ध । अरूप । मेच्छ भोजन । क्षीरी । निस्तुष । रसाल । सुमन । सुमना । अपूप । निस्तुषक्षीर । श्लेष्मल । गोहूँ ।

चना—चणक । हरिमन्थ । वाजिमन्थ । जीवन । चण । हरिमन्थक । हरिमन्थज । सुगंध । कृष्णचंचुक । बालभोज्य । वाजिभक्ष्य । कंचुकी । बालभैषज्य । सकलप्रिय । छोला । बूट ।

मटर—कलाय । केराव । मुण्डचणक । हरेणु । रेणुक । सतीलक । खण्डिक । त्रिपुट । अतिवर्तुल । शमन । नीलक । कंटी । सतील । सतीन । हरेणुक । सतीनक ।

उड़द (उर्द)—उरदी । माष । कुरु विन्द । धान्यवीर । वृषांकुर । मांसल । बलाढ्य । पित्र्य । पितृभोजन । बीजरत्न । बली ।

लोबिया—राजमाष । महामाष । चपल । चवल । वर्वट । मरुत्कर । द्विजसप्त । नीलमाष । नृपमाष । नृपोचित । सितमाष ।

दीर्घवीज । निष्पावी । सुकुमार । दीर्घशिम्बी । क्षुधाभिजनक ।
लोबिया । बोड़ा । चौरा ।

मसूर—मसूरिका । रागदालि । मङ्गल्य । पृथुवीजक ।
सूर । कल्याणवीज । गुरुवीज । मसूरक । मङ्गल्यक । मसुर ।
ब्रीहिकाञ्चन । गभोलिक । ताम्बूलराग । हालासक । मसुरा ।
मसूरी । मसूरि । मङ्गल्या । माङ्गल्या ।

मूँग—मुग्द । सूपश्रेष्ठ । वर्णाई । रसोत्तम । भुक्तिप्रद ।
हयानन्द । सुफल । बाजिभोजन ।

रहर—अरहर । अड़हर । आढ़की । तुवरी । वर्या ।
मृत्ताल । काक्षी । मृत्तालक । करवीरभुजा । वृत्तवीजा । सुराष्ट्रज ।
पीतपुष्पा । मृत्ता । तुवरिका । शणपुष्पिका ।

मोठ (मोथी)—मकुष्ठक । मकुष्ठ । वनमुग्द । अमृत ।
कुमीलक । अरण्यमुग्द । बल्लीमुग्द । मपष्ठ । राजमुग्द । वरक ।
मुकुष्ठक । तिगूढ़क । कुलीनक । खण्डी । मुग्दष्टक । मुग्दष्ट ।
मुकुष्ठ । मयूष्ठ । मयष्टक । मयष्ट । मद्यक । मयुष्टक । मयुष्ट ।
वनमूँगिया ।

सावाँ—श्यामाक । श्यामक । श्याम । त्रिवीज । समा ।
अविप्रिय । सुकुमार । राजधान्य । तृण वीजोत्तम ।

कोदव (कोदो)—कोद्रव । कोरदूष । कारेदूषक ।
कुद्रव । कोरदुष्क । कोद्वार । कोदाल । कुदाल । मदनाग्रक । कोद्रव ।

मक्का—मकाई । मकाय । महाकाय । कटिज । कांडज ।
शिखालु । संपुटांतस्थ । मुट्टा । जोन्हरी ।

बाजरा—बजरी । बर्जरी । बजड़ी । नाली । नालिका ।
नील सत्य । साजक । अग्रधान्य । बर्जरीका । नीलकणा ।

ज्वार—ललिता । क्रोष्टुपुच्छा । श्रो खंडी । सुगंधिका ।
कृष्णा । भाद्रपदी । मण्डा । जूर्णका । रक्तिका । यावनाल । श्वेता ।
कुब्जिका । जुआर । (छोटी जोन्हरी के नाम से भी प्रसिद्ध है)

केसारी—खेसारी । कसूर । कस्सा । त्रिपुट । संडिक ।

ककुनी—कंगु । प्रियंगू । प्रियंगु । कंगुका । पीत तंडुल ।
कंगू । कंगुनीका । कंगूनी । चीनक । कॉगनी । कैंगनी । काकुन ।

[तृणान्न]

तीनी (तिन्नी)—नीवार । तिली । अरण्य धान्य ।
तीली । मुनिधान्य । तृणोद्भव । तृणधान्य । अरण्यशाली ।
प्रसाधिका । देवधान ।

कूटू—फाफर । कुलू । काटू । तुम्बा । कालातुम्बा ।
कसपत । कोटू ।

साबूदाना—सागू । सागूदाना ।

[अंग्रेजी शब्द “सैगो” से बना है । यह ताड़ के समान
वृक्ष होता है ।]



६. तिलादि वर्ग

तिल—होमधान्य । पवित्र । पितृतर्पण । पापघ्न । जटिल ।
पूतधान्य । वनोद्भव । स्नेहफल । पूरफल । तैलफल ।

सरसों—सर्षप । कटुकस्नेह । भूतघ्न । रक्षिताफल ।
उग्रगंध । ग्रहघ्न । तन्तुभ । कदम्बक । सरिषप । कदम्बद ।
बिम्बट । कदम्ब । तन्तुक । कटुस्नेह । राजक्षवक ।

राई—राजक्षवक । कृष्ण । तीक्ष्णफला । राजिका । राज्ञी ।
कृष्ण सर्षपा । राजसर्षप । कृष्णिका । सूरी । मुष्टक । व्यष्टक ।
कटुक । क्षव । क्षुताभिजनन । क्षुधाभिजनन । लाई । राजी ।
तीक्ष्णगन्धा । क्षुज्जनिका । आसुरी । कृमिक । कटु । असुरी ।
काकोदुम्बरिका । रक्तिक । रक्तसर्षप । अतितीक्ष्णा । मधुरिक ।
क्षवक । क्षुतक । ज्वलन्ती । ज्वलत्प्रभा ।

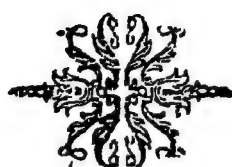
अलसी (तीसी)—अतिसी । अतीसी । पिच्छिला ।
देवी । उमा । मदगन्धा । मदोत्कटा । क्षुमा । हैमवती । सुनीला ।
नीलपुष्पिका । चणका । क्षौमी । रुद्रपत्नी । सुवर्चला । नीलपुष्पी ।
पार्वती । मसृणा । तैलोत्तमा । तीसी । मसीना ।

वरें—वरटा । वरटी । कुसुमबीज । कुसुम फल । वरट्टिका ।

रेंडी—अरण्ड । एरण्ड । व्याघ्रपुच्छ । चित्रक । इष्ट ।
त्रिपुटीफल । पंचाङ्गुल । शूलशत्रु । वातारि । दीर्घदन्तक । मंड ।
रुवूक । गंधर्वहस्तक । उरुवुक । चंचुक । वर्द्धमान । एरण्डक ।
अमंगल । तुच्छद्रु । व्रणहा । त्रिपुटी । व्याघ्रदल । वुक । अमंड ।
आमंड । व्यडम्बन । कान्त । तरुण । शुक्ल । दीर्घपत्रक ।
चित्रबीज । स्नेहप्रद । इष्ट ।

तैल—स्नेह । सनेह । अभ्यञ्जन । म्रक्षण । तेल ।

खली—खरी । पिंडी । तिलपिण्डो । पिण्डा । पिण्याक ।
पीना ।



७. शाक-भाजी वर्ग

बथुआ—बस्तूक । वास्तुक । क्षारपत्र । शाकराट् ।
पांशुपत्र । शाकश्रेष्ठ । शाकवीर । कंकेल । वास्तु । हिलमोचिका ।
बसुक । राजशाक । घनाघन ।

[नोट—लाल पत्ती के बथुआ के पर्याय—चिल्ली ।
चिल्लिका । तुनी । अम्रलोहिता । मृदुपत्री । क्षारदला । क्षारपत्रा ।
महदला ।

नोनियाँ—लोणा । लोणी । बृहल्लोणी । घोलिका ।
लोनी । कुलफा । पथरी । अश्मरी ।

[नोट—ये ही पर्याय 'कुलफा' के लिये भी प्रयुक्त हो
सकते हैं ।]

मरसा—मारिष । वाष्पक । मार्ष ।

चौराई—कंचट । पानीयतण्डुलीय । चौलाई । जलज ।

सोया—शतपुष्पादल । शतपुष्पिका । सितच्छत्रा ।
अतिच्छत्रा । मधुरा । मधुरिका । अवाक पुष्पी । कारवी । शताक्षी ।
शताह्वा । छत्रा । मिशी । मिसी । माधवी । घोषा । तालपर्णी ।
ताल्लपर्णी । शालेया । शीतशिवा । शालीना । वनजा । पुष्पिका ।
सुपुष्पी । सुरसा । बल्या ।

पालक—पालक । पालंक्या । मधुरा । क्षुरपत्रिका ।
सुपत्रा । स्निग्धपत्रा । ग्रामिणी । ग्राम्यवल्लभा । क्षुरिका ।
वास्तुकाकारा । पालकी ।

पोय (पोई)—उपोदकी । कलम्बी । पिच्छिला ।
पिच्छिलच्छदा । मोहिनी । मदशाक । विशाला । वलिपोदकी ।
उपोदिका । उपोती । वृश्चिक प्रिया । अयोदिका । पूतिका ।

मेथी—मेथिका । मेथिनी । दीपनी । बहुपत्रिका ।
वेधनी । गन्धबीजा । ज्योति । गन्धफला । वल्लरी । चन्द्रिका ।
मन्था । मिश्रपुष्पा । कैरवी । कुंचिका । बहुपर्णी । पीतबीजा ।
मुनीन्द्रिका ।

[नोट—ये ही शब्द मेथी के बीज के भी पर्याय हैं]

पेठा—कूष्माण्ड । पुष्पफल । पीतपुष्प । वृहत्फल । तिमिष ।
ग्राम्यकर्कटी । कुष्माण्डक । कर्कारू । शिखिवर्द्धक । कुम्हड़ा ।
कौहड़ा । कुष्माण्डी । सुफला । कुंचफला । नागपुष्पफला ।

[नोट—ये सफेद कुम्हड़े के नाम हैं]

कुम्हड़ा—कूष्माण्ड । पीत कूष्माण्ड । पीत पुष्पा ।
ग्राम्या । पीतफला । गुणयोगफला । लाल पेठा । भिलया कद्दू ।
काशीफल । सफुरिया कुमार ।

लौकी (कद्दू)—अलाबू । तुम्बी । तुम्ब । तुम्बक ।
तुम्बा । पिण्डफला । महाफला । आलाबू । एलाबू । लाबु । लौआ ।
लाबुका । कटुआ ।

[नोट—यह दो प्रकार का होता है, एक लम्बा और दूसरा
गोल]

तितलौकी—कटुतुम्बी । पिण्डफला । राजपुत्री ।
नृपात्मजा । फलिनी । तिक्ततुम्बी । तिक्का । कटुतिक्का ।
इक्ष्वाकु । कटुकालावु । कटुफला । दंतफला । तुम्बिका । तुम्बी ।
महाफला । क्षत्रियवरा । कटु तुम्बिका । कडुवी तोंवी ।

ककड़ी—कर्कटी । लोमशी । व्यालपत्रा । बृहत्फला ।
व्यालपत्री । लोमशा । तोयफला । स्थूला । हस्तिदन्त फला ।
छर्द्दापनिका । पीनसा । मूत्रला । मूत्रफला । त्रपुषा । त्रपुषी ।
हस्तपर्णी । लोमश काण्डा । बहुकन्दा । चिर्भटी । कर्कटाक्ष ।
शान्तनु । बालुंगी । इर्वारु । उर्वारु ।

खीरा—त्रपुष । कंटकीफल । सुधावास । सुशीतल ।
पीतपुष्पा । काण्डालु । कंटालु । त्रपुकर्कटी । बहुफला । कंटकिलता ।
कोषफला । तुंदिलफला । सुधावासा । क्षीरा । बालमखीरा ।

फूट-ककड़ी—मृगाक्षी । श्वेतपुष्पा । मृगेर्वारु । चित्रा ।
मृगादनी । चित्रवल्ली । बहुफला । कपिलाक्षी । मृगेक्षणा । पथ्या ।
विचित्रा । मृगचिर्भिटा । मरुजा । चिर्भिट । देवी । कुंभसी ।
कटकला । लघुचिर्भिटा । भकुर । कचरिया । सेंध । फूट ।
ककड़ी । गोरख ककड़ी ।

खरबूजा—दशांगुल । खर्वूज । फलराज । अमृताह ।
षडभुजा । मधुफला । षड्रेखा । वृत्तकर्कटी । तिक्ता । तिक्तफला ।
मधुपाका । वृत्तेर्वारु । षण्मुखा ।

तरबूज—कालिंग । कृष्णबीज । कालिंद । सुवर्तुल ।
मांसफल । चित्रफल । चित्रवल्लिका । चित्र । मधुरफल । वृत्तफल ।

घृणाफल । मांसल । अल्प प्रमाणक । सुखाश । राजतिनिष ।
लतापनस । नाटाम्र । सेट । शीर्णवृन्त । बृहद्रोल । सेट ।
गोडुम्ब । रक्तबीज । चेलान । मूलत्र ।

तोरई—कोशातकी । स्वादुफला । सुपुष्पा । कर्कोटको ।
पीतपुष्पा । धाराफला । दीर्घफला । सुकोषा । धामार्गव । जालिनी ।
कृतवेधना । राजकोशातकी । राजिमत्फला ।

नेनुआ—महाकोशातकी । हस्तिघोषा । महाफला । घोषक ।
धामार्गव । ऐभी । महत्पुष्पा । सपीतिका । हस्तिपर्ण । घीयातोरई ।

चिचिंड़ा—चिचिड । श्वेतराजी । सुदीर्घ । गृहकूलक ।
चिचुंड । वेश्यकूल । वृहत्फला । अहिफला । दीर्घफला । चचेड़ा ।
चीनकर्कटिका । चिचड़ा ।

परवल—पटोल । राजपटोल । स्वादुपटोल । स्वादु ।
स्वादिष्टा । जनवल्लभा । राजपूर्वा । सुशाकी । स्वादुपत्रफल ।
पर्वरा । परोरा । परवर ।

कुन्दुरु—बिम्बी । बिम्बा । बिम्बाफल । बिम्बक ।
बिम्बजा । रुचिरफला । तुंडिकेरी । तुंडी । झंडिकेशी । कर्मकरी ।
पीलुपर्णी । बिम्बिका । कन्दूरो । ओष्ठी । रक्तकला ।

खेखसा—कर्कोटकी । पीतपुष्पी । महाजाली । मनोज्ञा ।
मनस्विनी । अवन्ध्या । बोधनाजाली । ककोड़ा ।

करेला—कारवेली । वारिवेली । वृहद्वेली । चिरिपत्र ।
करका । कठिलका । सूक्ष्मवेली । तोपवेली । कण्डूर । कांडकटुक ।
पटु । सुकाण्ड । उग्रकाण्ड । सुषवी । करेली ।

ढेंडसा—डिडिश । रोमशफल । मुनिनिर्मित । ढेडश ।

भिंडी—भेंडा । भिंडातिका । भिंड । भिंडक । क्षेत्रसंभव ।
चतुष्पद । चतुपुण्ड्र । सुशाक । पिच्छिल । भिंडीतक । अस्त्रपत्रक ।
करपर्ण । वृत्तबीज । भिंडा ।

बैंगन (भाँटा)—वार्ताकी । कण्टवृन्ताकी । कंटालु ।
कंटपत्रिका । मांसलफला । निद्रालु । वृन्ताकी । महोटिका ।
चित्रफला । कंटकिनी । महती । कटफला । मिश्रवर्णफला ।
नीलफला । रक्तफला । नृपप्रियफला । सिंही । भंटाकी । वार्ता ।
दुष्प्रधर्षिणी । वातिकुण । शाकविल्व । राजकुष्माण्ड । वङ्गण ।
अङ्गण । बेर । नीलवृषा । भांटिका । वृत्तान्तक । नीलकंटका ।
भटा । बैंगन । भंटा ।

ग्वालिन—ग्वार की फली । गोरणी । दृढ़बीजा ।
बाकुची । निशान्ध्यघ्नी । सुशाका । वक्रशिम्बो । गुआलिनी ।
ग्वारिणी । गोरक्षफलिनी ।

सेम—अंगुलिफला । नखनिष्पाविका । निष्पावी । ग्राम्या ।
वृत्तनिष्पाविका । नखपुंजफला । अशना । कपिकच्छुफला ।

सर्हिजन—शोभांजन । शिग्रु । तीक्ष्णान्धक । सुपत्रक ।
मधुगुंजन । मोचक । बहुमूल । शुभांजन । कालीबक । उग्र ।
कोमल पत्रक । दंशमूल । उपदंश । क्षमादंश । कटुकन्द । आक्षीव ।
गंध । गंधक । सैजना ।

कचनार—कांचनार । कोविदार । कुदाल । कुदार ।
कुण्डली । कुली । आस्फोट । उदालक । चमरी । स्वल्पकेसर ।
कांचनाल । कर्बूदार । पाकारि । आश्मन्तक ।



८. मूल-कन्द वर्ग

लहसुन—रसोन । अरिष्ट । स्लेच्छकन्द । महौषध ।
शुक्रकन्द । महाकन्द । वातारि । दीर्घपत्रक । रसुन । गृंजन ।
रसोनक । कटुकन्द । राहूच्छिष्ट । राहूत्सृष्ट । भूतघ्न । उग्रगंध ।
यवनेष्ट । लहशुन । लहसन । काँदा ।

प्याज—राजपलाण्डु । यवनेष्ट । नृपाह्वय । राजप्रिय ।
महाकन्द । दीघपत्र । रोचक । नृपेष्ट । नृपकन्द । रक्तकन्द ।
राजेष्ट । पलाण्डु । पियाज ।

मूली—मूलक । हरिपर्ण । भूमिकाक्षार । नीलकंठ ।
महाकन्द । रुचिप्य । हस्तिदन्तक । राजालुक । करुकन्दक ।
हस्तिदन्त । मूलाह्व । दीर्घमूलक । दीर्घपत्रक । मृक्षार । कन्दमूल ।
सित । शंखमूल । रुचिर । दीर्घकन्दक । कुंजर । क्षारमूल ।
शिम्बीफल ।

वड़ी मूली—चाणक्यमूलक । वानेय । विष्णुगुप्तक ।
स्थूलमूल । महाकन्द । कौटिल्य । मरुसम्भव । शालामर्कट मिश्र ।
मूला । मूलक ।

गाजर—गर्जर । गृंजन । नारंगवर्ण । पिण्डमूल ।
पीतकन्द । सुमूलक । स्वादुमूल । सुपीत । नारंग । पीतमूलक ।
पिण्डीक । गजीड ।

सलजम (गोलगाजर)—शिखीमूल । यवनेष्ट । वर्तुल ।
ग्रन्थिमूल । शिखाकन्द । कंद । डिंडीरमोदक ।

सूरन—सूरण । कन्द । जिमीकन्द । ओल्ल । कन्दल ।
 अशोन्न । ओल । कंठाल । कंडुल । कंदी । सुकन्दी । स्थूलकन्दक ।
 दुर्नामारि । सुवृत्त । वातारि । अर्शारि । कन्दशूरण । तीव्रकण्ठ ।
 कदाह । कन्दवर्द्धन । बहुकन्द । रुच्यकंद । सूरणकन्द ।
 भूकन्द ।

[नोट—सूरन सभी कन्दों में श्रेष्ठ माना जाता है, बवासीर रोग का नाशक है ।]

लाल कन्द—रक्तकन्द । रक्तपिण्डालु । रक्तालु ।
 रक्तपिण्डक । लौहित । रक्तकन्द । लोहितालु ।

शकरकन्द (सफेद)—पिण्डीतक । पिण्डकन्द ।
 रोमशकन्दक । कन्दग्रन्थि । पिण्डालु । पिच्छल । स्वादुकन्दक ।
 काँदू । शकरकंदी । रतालू । कंदा ।

अरबी (घुइयाँ)—आलुकी । आलुक । गजकर्ण ।
 हस्तिकर्ण । महापत्रालुक । तीक्ष्णकन्द । दीर्घनाल । घुइयाँ । आलू ।
 गजकर्णालु ।

[ये ही शब्द 'बंडा' के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

आलू—शुभ्रालु । महिषकन्द । लुलायकन्द । शुक्लकन्द ।
 सर्पाख्य । वनवासी । विषकन्द । नीलकन्द ।

सुथनी—मध्वालुक । मध्वालू । रोमालुकी ।

कसेरू—कसेरू । गुंडकन्द । क्षुद्रमुस्ता । कसेरुका ।
 सूकरेष्ट । सुगन्धि । सुकन्द । कसेरुक । राजकसेरुक ।



९. फल वर्ग

आम—आम्र । रसाल । सहकार । अतिसौरभ । कामाङ्ग ।
मधुदूत । माकन्द । पिकवल्लभ । चूत । चूतक । अम्र । फलश्रेष्ठ ।
अमृतफल । अमृत । मृषालक । षड्पदातिथि । वसन्तद्रु ।
पिकप्रिय । स्त्रीप्रिय । अलिप्रिय । गन्धवन्धु । शरेष्ठ । पिकवन्धु ।
मदिरासख । केशवायुध । कोषी । कामशर । कामवल्लभ ।
मदाढ्य । मन्मथावास । सुमदन । प्रियम्बु । शुकप्रिय । मोदाख्य ।
कीरेष्ठ । भृंगाभीष्ट । नूत ।

कलमी आम—राजाम्र । राजफल । स्मराम्र । मधुर ।
कोकिलोत्सव । टंक । कोकिलानन्द । कामेष्ठ । नृपवल्लभ ।
आम्रात । कामाह्व । राजपुत्रक ।

आमड़ा—आम्रातक । पीतनक । कपिचूत । अम्लवाटक ।
वर्षपाकी । कपिचूड । तनुक्षीरी । कपिप्रिय । पीतन । कपीतन ।
मधुराम्लक । अम्रवाटिक । भृंगीफल । रसाढ्य । तनुक्षीर ।
अम्बरातक । अम्बरीष । आम्रात । अध्वगभोग्य । मर्कटाम्र ।
तुङ्गी । अमरा । आमला ।

अनार—दाडिम । दाडिमीसार । कुट्टिम । फलषाडव ।
करक । रक्तबीज । सुफल । दन्तबीजक । मधुबीज । कुचफल ।

शुकवल्लभ । मणिबीज । वल्कफल । वृत्तफल । पिण्डपुष्प ।
दाडिम्ब । पर्वरुट् । स्वाद्वम्ब । पिण्डीर । फलाशाडव । मुखवल्लभ ।
रक्तपुष्प । डालिम । शुकादन । फलसाडव । सुनील । नीलपत्र ।
नीलपत्रक । लोहितपुष्पक ।

केला—कदली । सुफला । रंभाफल । मोचा । रंभा ।
वारणवल्लभा । सुकुमारा । चर्मण्वती । तत्पत्री । नरौषधि ।
वारणबुसा । अंशुमत्फला । काष्ठीला । कदल । वारबुषा ।
वारणबुषा । सकृत्फला । गुच्छफला । हस्तिविषाणी । गुच्छदन्तिका ।
निःसारा । राजेष्टा । बालकप्रिया । ऊरुस्तम्भा । भानुफला ।
वनलक्ष्मी । कदलक । मोचक । रोचक । लोचक । वारवृषा ।
आयतच्छदा । तन्तुविग्रहा । अम्बुसारा ।

नारियल—नारिकेल । दृढफल । लाङ्गली । कूर्चशीर्षक ।
जुङ्ग । स्कन्धफल । तृणराज । सदाफल । नारिकेर । नाडिकेल ।
रसफल । सुतुङ्ग । कूर्चशेषर । दृढनीर । नीलतरु । मङ्गल्य ।
उच्चतरु । स्कन्धतरु । दाक्षिणात्य । दुरारुह । शिराफल ।
त्र्यम्बकफल । करकाम्भा । पयोधर । मुत्कुण । कौशिकफल ।
फलमुण्ड । जटाफल । मुण्डफल । विश्वमित्रप्रिय । नाडीकेल ।
नारिकेर । सुभङ्ग । फलकेशर । वरफल । महाफल । सदाफल ।
तोयगर्भ । त्र्यक्षफल । खोपरा ।

खजूर (पिण्डखजूर)—पिण्ड खजूरिका । पिण्डखजूरी ।
राजजम्बू । पिण्डी । फलमुद्गरिका । दीप्या । मधुरस्रवा ।
सपिण्डा । फलपुष्पा । स्वादुपिण्डा । हयभक्षा । दुष्प्रधर्षा । कषायी ।
हरिप्रिया । खजू । खरस्कन्धा । निःश्रेणी ।

ताड़ी-फल—मदाढ्य । दीर्घपादप । ध्वजद्रुम । आसवद्रुम ।
गुच्छपत्र । पत्री । तालफल । ताड़ी । पत्रला । फलपाकान्त ।
तृणद्रुम । तृणराज । ताल । लेख्यपत्र । भूमिपिशाच । दीर्घतरु ।
तन्तुगर्भ । मधुरस । चिरायु । शतपर्वा । द्रुमेश्वर । तरुराज ।

सेव—महाबदर । मुष्टिप्रमाण । बदर । सिचितिकाफल ।
सेवित । सेवि ।

नाशपाती—अमृतफल । रुचिफल । महाबदर । नास्पाती ।

अमरूढ—पेरुक । मांसल । पृथक् त्वच । मृदुफल ।
पीतफल । तुवर । मधुराम्लक । अमृतफल । सफरी-सफेद । वीह ।
सफरी-लाल । अमरूत ।

नारंगी—नारंग । नागरंग । त्वक्सुगन्ध । मुखप्रिय ।
नार्यंग । नागर । ऐरावत । नागरूक । चक्राधिवासी । किर्मिर ।
सुरंग । किर्मिर त्वक् । वक्रवास । योगरंग । वरिष्ठ । गन्धपत्र ।

नीबू (कागजी)—निम्बुक । अम्लजम्बीर । वहिबीज ।
वहीदीप्य । अम्लसार । दन्ताघात । शोधन । जन्तुमारी । निम्बूक ।
रोचन । मातुलुंग ।

नीबू (बिजौरा)—बीजपूर । मातुलुंग । फलपूरक ।
अम्लकेशर । बीजपूर्ण । सुकेशर । बीजक । सुफूर । बीजफलक ।
जन्तुघ्न । दन्तुरच्छद । पूरक । रोचनफल । रुचक ।

नीबू (जम्भीरी वा कमला)—जम्बीर । दन्तशट ।
जम्भ । जम्भीर । जम्भल । रोचनक । मुखशोधी । जाड्यारि ।
जन्तुजित । जम्भक । जम्भर । दन्तहर्षण । दन्तकर्षण । गम्भीर ।

शिवा । काननारि । तुंगा । कचरिपुफला । केशमथनी । ईशानी ।
तपनतनया । इष्टा । शुभकरी । हविर्गन्धा । मेध्या । दुरितदमनी ।
समुद्रा । वह्निगर्भा । समीर । सुरभि । पापशमनी । भद्रा । शङ्करी ।
सुपत्रा । सुखदा । शंकरा । शंकुफलिका । सुभद्रा । छोंकर ।
छीकर । सफेदकीकर ।

रुद्राक्ष—शिवाक्ष । शर्वाक्ष । भूतनाशन । पावन ।
शिवप्रिय । तृणमेरु । अमर । पुष्पचामर ।

अशोक—शोकनाशन । विचित्र । कर्णपूरक । कंकेली ।
हेमपुष्पक । पिण्डपुष्पक । अंगनाप्रिय । विशोक । बंजुलद्रुम ।
मधुपुष्प । अपशोक । केलिक । रक्तपल्लव । चित्र । कर्णपूर ।
सुभग । दोहली । ताम्रपल्लव । रोगितरु । वामांकपातन । नट ।
रामा । पल्लद्रु । कान्ताचरणदोहद । चक्रगुच्छ । शोकहर्त्ता ।
स्मराधिवास । दोषहारी । प्रपल्लव । वामांघ्रिघातक । अशोग ।

नीम—निम्ब । निम्बन । नियमन । नेता । पिचुमंद ।
अरिष्ट । सर्वतोभद्र । सुभद्र । पारिभद्रक । शुकप्रिय । शीर्षपर्णी ।
वरत्वच । छर्दन । हिगु । निर्यास । पीतसार । रविप्रिय । मालक ।
पिचुमंद । पक्कृत । पूकमालक । कीटक । विवन्ध । निम्बक ।
कैटय । छर्दिघ्न । कीरेष्ट । विशीर्णपर्ण । पीतसारक । शीत ।
राजभद्रक ।

[नोट—कई वृक्षों के नाम जो फलवाले हैं, नहीं दिये गये हैं । उनके जो नाम फलवर्ग में दिये गये हैं वे उनके वृक्ष के लिये भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]



१२. वनौषधि वर्ग

टैटी *—विकंकत । ग्रंथिल । स्वादकंटक । सुवावृक्ष ।
व्याघ्रपाद ।

सोनापादा—दुंदुक । दीर्घवृन्त । श्योनाक । शुक्नास ।
कटम्भर । मयूरजंघ । अरलुक । प्रियजीवी । कुटन्नंट । नट ।
मण्डूक पर्ण । पत्रोर्ण । कट्वाङ्ग । ऋक्ष । दीर्घवृन्त । शोनक ।
अरल । स्योनाक । विषनुत । अध्वान्तशात्रव । पूतिवृक्ष । भण्डूक ।
भण्डुक । भूतपुष्प । शोण । अरटु । दीर्घवृन्तक । ध्वान्तशात्रव ।
वटु । स्वर्णवल्कल । पृथुशिम्ब । शल्लक । शोषण । प्रियजीव ।
कुर्कट । कन्दर्प । पादवृक्ष । पारिपादप । कुनट । विरोचन ।
अमरेष्ट । जंघनेत्र । निःसार ।

भटकटैया—कंटकारी । कुलीक्षुद्रा । कासग्री । स्पृही ।
कंटकारिका । धावतिका । व्याग्री । दुःस्पर्शा । दुष्प्रधर्पिणी ।
कंटश्रेणी । निदिग्धिका । वृहती । प्रचोदनी । राष्ट्रिका । अनाक्रान्ता ।

* इसका पेड़ ब्रज में बहुत होता है । आगरा व मथुरा में इसके फल
के अँचार बनाते हैं । यह स्वाद में कुछ कपैला और कड़ुआ होता है ।

भण्टाकी । सिंही । कुली । धावनी । चित्रफला । लघुकटाई ।
कटेरी । रेंगनी ।

गोखुरू (बड़ा)—गोक्षुर । पलङ्कषा । इक्षुगंधा ।
श्वदंष्ट्र । स्वादुकण्टक । गोकण्टक । गोक्षुरक । वनशृंगाट ।
त्रिकंट । स्थलशृंगाट । त्रिपुट । कंटकफल । क्षुर । गोखुरि । त्रिक ।
त्रिकट । इक्षुर । भक्ष्यकंट । इक्षुगंधिका । क्षुरांग । भद्रकंट ।
व्यालदंष्ट्र ।

गोखुरू (छोटा)—क्षुद्रगोक्षुर । त्रिकंट । कंटी ।
षडंग । बहुकंटकक्षुर । वनशृंगाटक । चणदुम । स्थल शृंगाटक ।
स्वादुकंट । इक्षुगंध ।

जीवन्ती—जीवनी । जीवा । जीवदा । सुखंकरी ।
रक्तांगी । प्राणदा । भद्रा । मंगल्या । मृगराटिका । जीवनीया ।
स्रवा । मधुस्रवा । मंगल्यनामधेया । पयस्विनी । जीव्या ।
जीवदात्री । शाकश्रेष्ठा । जीवभद्रा । क्षुद्रजीवा । यशस्या । शृंगाटी ।
जीवपृष्ठा । कांजिका । शशशिम्बिका । सुपिङ्गला । पुत्रभद्रा ।
मधुश्वासा । जीववृषा । जीवपत्री । जीवपुष्पो । जीववर्द्धिनी ।
यशस्करी । डोडी ।

मदार (आक)—क्षीरदल । शुकफल । तूलफल ।
अर्क । अकौआ । सदासुम । प्रताप । क्षीरकाण्डक । विक्षीर ।
भास्कर । हरिदश्व । विवस्वान । अहर्मणि । अहर्बान्धव । अर्यमा ।
अहर्यपि । उष्णरश्मि । भानु । विकर्त्तन । गणरूप । मंदार ।
प्रभाकर । विभाकर । दिवाकर । सूनु । आस्फोट । वसुक ।
हिमराति । पुच्छी । क्षीरो । खजून्न । शीतपुष्पक ।
जम्भल । क्षीरपर्णी । विकोरण । सदापुष्प । सूर्याह्न । क्षीराङ्ग ।

सेहूँड़—थूहर । स्नुही । समन्तदुग्धा । नागद्रु । महावृक्ष ।
वहुदुग्धिका । सुधा । वज्रा । शीहुण्डा । दण्डवृक्षक । सिहुण्ड ।
स्नुपा । स्नुहा । वज्र । वज्रद्रु । वज्रकण्टक । गुड़ । गुड़ा । गुड़ी ।
गुला । बहुशाल । कृष्णसार । निखिशपत्रिका । नेत्रारि । शाखाकण्ठ ।
सिहतुण्ड । काण्डशाख । काण्डरोहक ।

करियारी—कलिकारी । लाङ्गलिकी । दीप्ता । गर्भधातिनी ।
अग्निजिह्वा । वह्निशिखा । वह्निवक्रा । लांगुली । हलिनी । विशल्या ।
गर्भपातिनी । अग्निमुखी । नक्ता । हली । इन्द्रपुष्पिका ।
विद्युज्वाला । व्रणहृत् । पुष्पसौरभा । स्वर्णपुष्पा । इन्दुपुष्पिका ।
शक्रपुष्पी । अनन्ता । गर्भनुत् । कलियारी । कलिहारी ।

दूब—दूर्वा । शष्प । शाद्वल । शतपर्वा । शीतकुम्भी ।
शीतला । वामिनी । शाम्भवी । श्यामा । शीता । शतपर्विका । धूर्त्ता ।
अमृता । शतग्रन्थि । अनुवल्लिका । शिवा । शिवेश्ठा । मंगल्या ।
जया । भूतहन्त्री । शतमूला । महौषधी । विजया । गौरी । शान्ता ।
रुहा । अनन्ता । भार्गवी । सहस्रवीर्या । शतवल्ली । गुणा । नन्दा ।
महावरा । हरसालिका । तिक्तपर्वा । दुर्मरा । हरिता । हरितालिका ।
हरिताली । कच्छरुहा । अमरी । अमरा । काण्डा । श्यामकाण्डा ।
गण्डदूर्वा । सूचिपत्रा । शकुलाक्षी । चित्रा । विद्या । शुभा ।
सुरवल्लभा । स्वच्छा । प्रचण्डा । कच्छान्तरुहा ।

तुलसी—वैष्णवी । वृन्दा । सुगन्धा । गन्धहारिणी । अमृता ।
पत्रपुष्पा । पवित्रा । सुरवल्लरी । सुभगा । तीव्रा । पावनी । सुरेज्या ।
विष्णुवल्लभा । सुरसा । कायस्था । सुरदुन्दुभी । सुरभि । बहुपत्री ।
मञ्जरी । हरिप्रया । विष्णुकान्ता । अपेतराक्षसी । श्यामा । गौरी ।

त्रिदशमंजरी । भूतघ्नी । भूतपत्रो । प्रेतराक्षसी । पर्णास । कठिजर ।
कुठेरक । पुण्या । माधवी । सुरवल्ली । सुवहा । ग्राम्या । सुलभा ।
विष्णुपत्नी । मालाश्रेष्ठा । लक्ष्मी । श्री । कृष्णवल्लभा ।

श्यामा तुलसी—कृष्णा । कृष्णतुलसी । कृष्णपर्णी ।
करालक ।

कनेर *—करवीर । श्वेतपुष्प । शतकुम्भ । अश्वमारक ।
प्रतिहास । शतप्रास । चण्डात । अश्वघ्न । हयघ्न । शीतकुम्भ ।
तुरङ्गारि । रंगारि । शातकुम्भ । प्रचण्ड । वीर । शतकुन्द । कुन्द ।
अश्वरोधक । शंकुद्र । श्वेतपुष्पक । नखराह्व । स्थल कुमुद ।
दिव्यपुष्प । गौरीपुष्प । सिद्धपुष्प ।

धतूरा—धत्तूर । धस्तूर । मदन । उन्मत्त । कितव ।
कनकाह्वय । देविका । महामोही । शिवप्रिय । खरदूषण । धूर्त ।
मातुल । पुरीमोह । धूर्तकृत । घण्टिक । शठ । मातुलक । श्याम ।
शिवशेखर । खर्जूघ्न । कहलापुष्प । खल । कण्टफल । मोहन ।
कलम । मत्त । शैव । तूरी । धुस्तुर । देवता । मदनक । कंटफल ।
हरवल्लभ । कनक । सविष । मोहन । मदकर । घंटापुष्प ।

[नोट—जितने नाम सुवर्ण के हैं वे सब धतूरे के लिये भी
प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

अरुसा—वासक । वासिका । वासा । सिहिका ।

* पुष्पभेद से कनेर पाँच प्रकार की होती है । सफेद, लाल, गुलाबी,
पीली और काली । कनेर एक प्रकार से उपविष की श्रेणी में है । इसको
खाने से घोड़े मर जाते हैं ।

रामरूपक । मातृसिंही । वैद्यमाता । वृष । कसनोत्पाटन । अंतरुष ।
सिंही । सिंहास्य । वाजिदन्तक । आमलक । वाशा । वाशिका ।
वाजी । वैद्यसिंही । सिंहपर्णी । रसादनी । सिंहमुखी । कण्ठीरवी ।
सितकर्णी । वाजिदन्ती । नासा । पंचमुखी । सिंहपत्री ।
मृगेन्द्राणी । आटरुष । सिंहानन । अडूसा । विसोंटा ।

पित्तपापड़ा—पर्पट । वरत्तिक । पर्पटक । पांशुपर्याय ।
कवचनामक । त्रियष्टि । तिक्त । चरक । वरक । अरक । रेणु ।
तृष्णारि । शीत । शीतप्रिय । पांशु । कलपाङ्ग । वर्मकण्टक ।
कृष्णाशाख । प्रगन्ध- । सुत्तिक । रक्तपुष्पक । पित्तारि । कटुपत्र ।
नक्र । शीतवल्लभ । दवनपापड़ा ।

करञ्ज—नक्तमाल । पूतिक । पूतिपत्र । पूतिकरंज । कैडर्य ।
कलिमार । पूतिपर्ण । बद्धफल । रोचन । करज । करंजक ।
उदकीर्य । चिरविल्व । प्रकीर्य । षड्ग्रन्थ । वृत्तपर्ण । गुच्छफल ।
स्निग्धपत्र । तपस्वी । विषारी । घृतपर्णक । षड्ग्रन्था । हस्तिवारुणी ।
अंगारवल्ली । शार्ङ्गष्ठा । काकत्री । करभाण्डिक ।

केवाँच—कपिकच्छु । आत्मगुप्ता । शुकशिम्बा । कपिप्रभा ।
शुकपिण्डी । स्वयंगुप्ता । कण्डूरा । शुकशिम्बिका । जड़ा ।
अध्यण्डा । प्रावृषायणी । ऋष्यप्रोप्ता । मर्कटी । सद्यः शोथा ।
प्रावृषा । अजहा । वानरी । गात्रभंगा । कच्छूमती । कच्छुरा ।
ऋषभ । जटा । व्याघ्रा । लांगली । कुण्डली । चण्डा । दुरभिग्रहा ।
अजडा । बदरी । गुरू । आर्षभी । काशीलोमा । व्यङ्गा ।
वृष्या । कौंछ ।

गुञ्जा (घुमची)—रक्तिका । गुञ्जिका । काकजंघा ।

शिखण्डिनी । कृष्णला । काकिनी । कक्षा । कनीचि । काकणन्तिका ।
काकचिची । शांगुष्ठा । काकादनी । अरुणा । ताम्रिका । शीतपाकी ।
उच्चटा । कृष्णचूडिका । रक्ता । काम्बोजी । भीलभूषणा । वन्या ।
श्यामलचूडा । वक्रशल्या । ध्वाक्षनखा । दुर्मोद्या । वायसादनी ।
चटकी । तुलावीजा । अंगारवल्लरी ।

गुञ्जा-सफेद—श्वेतगुञ्जा । श्वेतकाम्बोजी । भिरिण्टिका ।
चक्रशल्या । चूडाला । चोटली । चिरमिटी । सफेद घुमची ।

बीजबन्द—बला । वाट्यपुष्पी । समांशा । ओदनिका ।
भद्रा । मोटापाटी । वाटिका । प्रहासा । खिरैटी । बरियारा ।

सहदेई—महाबला । पीतपुष्पी । सहदेवी । वर्षपुष्पा ।
देवसहा । गन्धवल्ली । महागन्धा । मृगा । मृगरसा । वर्षपुष्पी ।
वाट्या । वाट्यायनो । सहदेवा । वृहद्रला । मङ्गलार्थ प्रसादनी ।

कपास—कार्पासी । तुण्डकेरी । समुद्रान्ता । वदरा । पटद ।
वादरा । सूत्रपुष्पा । वदरी । कार्पासिका । कर्पाससारिणी ।
कर्पासी । चव्या । तुला । गुड । मरुद्गवा । पिचु । वादर ।
पटलुन । छादन ।

बाँस—वंश । त्वक्सार । कर्मार । त्वचिसार । तृणध्वज ।
शतपवा । यवफल । वेणु । मस्कर । तेजन । किलाटी । पुष्पघाती ।
वृहत्तृण । किष्कुपर्वा । वन्य । सुपर्वा । तृणकेतुक । कंटालु ।
कंटकी । महाबल । दृढग्रन्थी । दृढपत्र । धनुर्दुम । धानुष्य ।
दृढकाण्ड । कीचक । कुक्षिरन्ध्र । षट्पदालय । कमठ । मृत्युबीज ।
वादनीय । फलान्तक । पर्वयोनि । दुरारुह ।

नर्कट—महानल । वन्य । देवनाल । नलोत्तम । स्थूलनाल ।
स्थूलदण्ड । सुरनाल । सुरद्रुम । नल । धमन । विभीषण ।
लालवंश । नट । नटी । नर्त्तक । नरसाल । नरसल ।

मूँज—भद्रमुञ्ज । मुञ्ज । शर । वाण । तेजन । मुञ्जात ।
स्थूलदर्भ । सुमेखल । मौंजी । तृणाख्य । ब्रह्मण्य । तेजनाह्वय ।
वातीरक । मुँजनक । शीरी । दुर्मूल । दृढतृण । बहुप्रज । रंजन ।
शक्रभंग । रामसर । मूँज ।

कास—काश । सुकाण्ड । कासेक्षु । नादेय । नीरज ।
काकेक्षु । वायसेक्षु । इक्षुरस । शिरि । इक्षुगन्धा । काशी ।
काशा । अमरपुष्पक । इक्षारी । शारद । दर्भपत्र । काण्ड ।
कच्छलकारक । काँस ।

कुशा—कुश । दर्भ । वह्नि । सूच्यग्र । यज्ञभूषण । कुरव ।
पवित्र । याज्ञिक । हस्वगर्भ । कुतुप ।

विदारीकन्द—विदारी । क्षीरविदारी । इक्षुगन्धा ।
इक्षुवल्ली । क्षीरवल्ली । पयस्विनी । महाश्वेता । ऋक्षगन्धिका ।
ऋष्यगन्धा । क्षीरकन्द । क्षीरलता । पयःकन्दा । विलैयाकन्द ।
विलारीकन्द । दूधविदारी ।

सूसली—सुसली । खलनी । तालमूली । तालिक ।
अशोत्रि । ताली । सुवहा । तालपत्रिका । गोधापदी । हेमपुष्पी ।
भूताली । दीर्घकन्दिका । महावृष्या ।

[सुसली दो प्रकार की होती है, सफेद और स्याह ।]

सतावर—शतमूली । महाशीता । भीरुपत्री । शतावरी ।
बहुसुता । भीरु । इन्दीवरी । ऋष्यप्रोक्ता । नारायणी । अहेरु ।

अभोरु । महापुरुष दन्ता । रंगिणी । कांचनकारिणी । मदभंजिनी ।
शतपत्रिका । स्वादुरसा । लघुपर्णिका । विश्वस्ता । वैष्णवी ।
काष्णी । दुर्मना । तैलबल्ली । अर्धकण्टका । सुपत्रिका । महौषधि ।
फणिजिह्वा । जटा । मूला । सुवीर्या । महती ।

असगन्ध—अश्वगन्धा । कटुका । अश्वारोहक । हया ।
चाराहकर्णी । तुरगी । बल्या । बाजीकरी । काम्बुका । अश्वारोहा ।
बलजा । बाजिनी । पलाशपर्णी । वातघ्नो । काला । श्यामला ।
गन्धपत्री । पुण्या । वाराहकर्णी । वरगात्रकरी ।

जमालगोटा—जयपाल । सारक । तिन्तिडी फल ।
दन्तीबीज । मलद्रावी । रेचक । बीजरेचक । कुम्भिनी बीज ।
घंटाबीज । शोधनी बीज । चक्रदन्ती बीज ।

इन्द्रायन (इनारूफल) *—इन्द्रवारुणिका । चित्रा ।
विशाला । गजचिर्भिटा । मृगेर्वारु । क्षुद्रसहा । चित्रफला ।
ऐन्द्री । गवाक्षी । भरा । पिटंकोकी । मृगादनी । इन्द्रा । अरुणा ।
गवादनी । इन्द्रचिर्भिटो । सूर्या । विषघ्नी । गणकर्णिका । माता ।
सुकर्णिका । सुफला । तारका । वृषभाक्षी । पीतपुष्पा । इन्द्रवल्लरी ।
हेमपुष्पी । विषलता । अमृता । कपिलाक्षी ।

सनाय—कल्याणी । हेमपत्री । रेचनी । स्वर्णपत्रिका ।
मलहारिणी ।

* इन्द्रायन की बेल अधिकतर खारी भूमि में होती है । फल सूक्ष्म,
कटिदार लालरंग का होता है और इसका फूल पीले रंग का होता है । दूसरे
प्रकार का इन्द्रायन पीले फल वाला भी होता है, जो रेतीली भूमि में
उत्पन्न होता है ।

नील—नीली । नीलिनी । नीला । मेघवर्णा । कुत्सला ।
दूली । क्लीतकिका । काला । नीलपुष्पिका । मधुपर्णिका । रंजनी ।
श्रीफली । तुत्था । तूणी । दोला । अङ्गोका । काली । श्यामा ।
शोधिनी । भद्रा । भारवाही । मोचा । कृष्णा । व्यञ्जनकेशी ।
चारटिका । गन्धपुष्पा । रंगपत्री । स्थिररंगा । वृन्तिका । विजया ।
स्थिररागा ।

सरफोंका—कण्ठपुंखा । कंठालु । शरपुंखा ।

गोरखमुंडी—महाश्रावणिका । भूकदम्बिका । लोचनी ।
कदम्बपुष्पिका । अव्यथा । तपस्विनी । मुण्डी । महामुण्डी ।
विकचा । क्रोडचूडा । पलंकषा । स्थविरा । लोतनी । अलम्बुषा ।
वृद्धा । छिन्नग्रन्थिका । बोड़ा । मुड़ली ।

लटजीरा (ओंगा)—अपामार्ग । शैखरिक । धामार्गव ।
मयूरक । प्रत्यक्पर्णी । किणी । स्थलमंजरी । मर्कटी । दुरभिग्रह ।
वासिर । कंटी । अघाट । क्षुरक । पाण्डुकण्ठक । कुब्ज ।
चिरचिटा ।

तालमखाना—कोकिलाक्ष । काकेक्षु । इक्षुर । क्षुरक ।
क्षुर । भिक्षु । काण्डेक्षु । इक्षुबालिका । शृङ्खला । शूरक ।
पिच्छला । त्रिक्षुर । शुक्लपुष्प । कुलाहक । कैलया ।

घीकार—सहा । धृतकुमारी । अफला । सुरमा । मृदु ।
स्थलेरुहा । अजरा । अमरा । वीरा । तरुणी । रामा । कपिला ।
अदला । मण्डला । माता । रसायनी । कण्टकीनी । घीगुवार ।
ग्वारपाठ । कुवारपाठा । घीकुआर ।

रामबाँस—क्षुद्रकेतकी । तृणकेतकी । रज्जुदात्री ।
मध्यदण्डा । काककेतकी । रामवान ।

गदहपूरना—पुनर्नवा । नीला । श्यामा । नील पुनर्नवा ।
नीलिनी । विष खपरा । साँठ । नीली साँठ ।

भँगरैया—भृंगराज । नीलभृंगराज । नीलपुष्प । पावन ।
सुनीलक । कुकुर भँगरा । केशराज । भँगरा । भँगरा । महाभृंग ।

सन—शण । निशादन । पटसन । मुनमुनियो । सनई ।

सोमलता—सोमवल्ली । सोमक्षीरी । द्विजप्रिया । सोमा ।
चन्द्रवल्लरी । महागुल्मा । गुल्मवल्ली । यज्ञवल्ली । सोमक्षोरा ।
यज्ञाङ्गा ।

आकाश बौर—अमर बेल । अकास बौर । दुःस्पर्शा ।
आकाश बेल ।

शंखाहुली—शंखपुष्पो । मेध्या । सुपुष्पी । पीतपुष्पी ।
चण्डा । कौड़ियाली । वनमालिनी । विष्णुकान्ता ।

अंधाहुली—अर्कपुष्पी । पयस्या । सूर्यवल्ली । क्षीरिणी ।
वक्रशल्या । दुराधर्षा । शीता । शीतला । सितपर्णी । दधियार ।

लज्जावन्ती—छुईमुई । लजाधुर । लाजवन्ती । लज्जालु ।
समङ्गा । रक्तपादी । ताम्रा । खदिरका । कन्दिरी । स्पृक्ता ।
संकेचिनी । लज्जा । स्पर्शलज्जा । स्वगुप्ता । वशिनी । महौषधि ।

ब्राह्मी—वयस्था । मत्स्याक्षी । सुरसा । ब्रह्मचारिणी ।
सोमवल्लरी । सरस्वती । सोम्या । सुरश्रेष्ठा । सुवर्चला । वैधात्री ।

कपोतवेगा । दिव्यतेजा । महौषधि । मण्डूकमाता । मेध्या ।
वीरा । भारती । वरा । परमेष्ठिनी । दिव्या । शारदा ।

गाजुबाँ—गोजिह्वा । गोभी । कुरसा । दार्विपत्रिका ।
-दर्वी । अधःपुष्पी । खरपत्री । गोजिया ।

कुकुरौदा—कुकुन्दर । ताम्रचूड़ । सूक्ष्मपत्र । कुक्कुरद्रु ।
सुदर्शन—सुदर्शना । सोमवल्ली । चक्राङ्गी । मधुपर्णिका ।
चक्राह्वा । दध्यानी । वृषकर्णी ।

चाय—चाह । चाहा । चविका । चा ।

माजूफल—मायाफल । माइफल । माइका । छिद्राफल ।
-मायि । माजूफर ।

तमाखू—सुरती । क्षारपत्रा । कृमिघ्नी । धूम्रपत्रिका ।

इसरगोल—ईषदगोल । श्लक्ष्णजीर । स्निग्धजीर ।
ईसबगोल ।

सालम मिश्री—अमृता । जीवनी । जीवा । सुधीमूली ।
वीरकन्दा । प्राणदा ।

लालामिर्च (मिरचा)—कटुवीरा । तीक्ष्णा । अजडा ।
-कुमरिच । रक्तमरिच ।

मेहदी—रंजका । रंजिनो । नखरंजिनी । सुगन्धपुष्पा ।
-रागांगी । यवनेष्टा । मेदिका । रागगर्भा । कोकदन्ता ।

विधारा—वृद्धदारु । जोर्णदारु । जीर्णा । फंजी । अजरा ।
-सुपुष्पिका । सूक्ष्मपत्रा ।

हरै *—हरा । हरै । हरीतकी । अभया । पथ्या । पूतना ।
कायस्था । अमृता । हैमवती । अव्यथा । चेतकी । श्रेयसी ।
विजया । शिवा । वयस्था । जीवन्ती । रोहिणी । भिषग्वरा ।
प्राणदा । सुधा । बल्या । पाचनी । प्रथमा । शाका । हरडा ।
शक्रसृष्टा ।

बहेड़ा—विभीतकी । कलिद्रुम । कल्पवृक्ष । संवर्त । अक्ष ।
विभीत । कर्षफल । बहेडुक । कासघ्न । तिलपुष्पक ।

आँवला—(देखो फल वर्ग)

सोंठ—शुण्ठी । महौषधी । विश्वा । शुष्कार्द । भेषज ।
नागर । विश्वौषध । कटूत्कटक ।

अदरक—आर्द्रक । शृङ्गवेर । कटुभद्र । कटूत्कट । वर ।
कन्दर । सैकतेष्ठ । अपाकृष्णक । राहुच्छन्न । शार्ङ्ग । मच्छाक ।
आर्दिका । आदी ।

* जाति भेद से हरै सात प्रकार की होती है। विजया, रोहिणी, पूतना,
अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी । हरड की प्रशंसा में तो यहाँ तक
लिखा है कि—

“हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी ।

कदाचित् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीतकी ॥”

—(राजवल्लभ)

अर्थात् हरै मनुष्यमात्र को माता के समान सुख देनेवाली है । कदाचित्
माता कुपित भी हो जाय, परन्तु उदर-स्थित हरीतकी कभी भी मनुष्य
का अहित नहीं करती ।

मिर्च (काली)—मरिच । पवित्र । ज्याम । वेणुज ।
यवनप्रिय । वल्लोज । धर्मपत्तन । कोल । ऊषण । शिरोवृत्त । मृष्ट ।

मिर्च (मफेद)—सित मिरच । शीतोत्थ । सितवल्लोज ।
वालक । बहुल । धवल । चन्द्रके ।

पीपल—पिप्पली । मागधी । कृष्णा । चपला । चंचला ।
कणा । उपकुल्या । वैदेही । तिक्त तण्डुला । उष्ण । शौण्डी ।
कोला । कटी । कटुबीजा । सूक्ष्म तण्डुला । पीपर । कोरंगी ।

पिपरामूल—पिप्पलीमूल । ग्रन्थिक । चटकाशिर ।
कणामूल । कोलमूल । चटिका । कटुमूल । पत्राख्य । मागध ।

चीना—चित्रक । अन्तलनामा । पाठी । व्याल । ऊषण ।
कृष्णवर्त्मा । जातवेदा । वह्नि । विभाकर । विभावसु । बृहद्भानु ।
वैश्वानर । शिखावान । सप्तार्चि । हिमाराति । हिरण्यरेता ।
अग्नि । शार्दूल । चित्र । माली । हवि । शम्बर । द्वीपी । शूर ।
कुट । पाची । दारुण । अतितीव्र । मार्जार ।

[नोट—अग्नि के जितने नाम हैं, वे सब चीता के भी
पर्याय हो सकते हैं]

सौंफ—शतपुष्पा । मधुरिका । माधुरी । तापसप्रिया ।
गन्धाधिका । घोषवती । सुगन्धा । छत्रा । शालेय । सितच्छत्रा ।
अतिच्छत्रा । मिसी । घोषा । पोतिका । अवाक्पुष्पी । कारवी ।
मिश्रेया । वनपुष्पा ।

मेथी—मेथिका । मेथिनी । दीपनी । वेधनी । गन्धवीना ।
ज्योति । गन्धफला । बह्वरी । चन्द्रिका । मन्था । मिश्रपुष्पा ।
कैरवी । कुञ्चिका । बहुपर्णी । पीतबीजा । मुनीन्द्रिका ।

अजवायन—यवानी । दीप्यक । दीप्य । भूतिक ।
अजमान । यवानिका । यवाग्रज । उग्रगन्धा । यवाह्वा । ब्रह्मदर्भा ।
यवसाह्व । दीपनी । वातारि । यमानिका । उग्रा । अजमोदिका ।
अजमोदा ।

अजमोद—अजमोदा । खराश्वा । मयूर । दीप्यक । मोदा ।
ब्रह्मकुशा । कारवी । लोचमस्तक । वस्तमोदा । मर्कटो ।
मोदिनी । ब्रह्मकोशी । विशल्या ।

जीरा-सफेद—शुक्लाजाजी । जाजी । जीरक । कणा ।
दीर्घक । कणजीरक । अजाजी । श्वेतजीरक । कणाह्वा । जीरा ।
मितदीप्य । सितजीरक ।

जीरा-स्याह—कृष्णजाजी । जरणा । सुगन्धा । पटु ।
कालजीरक । वर्षाकाली । हृद्या । उद्गार । शोधिनी । भेदिनी ।
रुच्या । नीला । नीलकणा । काश्मीरजीरका । कालमेषी ।
कृष्णजीरक ।

मगरैला—कालाजाजी । स्थूलजीरक । पृथिवी । पृथुका ।
कुञ्जिका । कुञ्ची । दिव्या । काला । स्थूलकणा । जीर्णा ।
तरुणी । सुषवी । पतिंवरा । भेषज । कृष्णा । शाली । कालिका ।
वृहज्जीरक । कलौजी । मगरइल ।

धनियाँ—धान्यक । धन्याक । धन्य । धनिक । छत्रा ।
कुस्तुम्बुरी । वितुन्नक । शाकयोग्य । सूक्ष्मपत्र । जनप्रिय ।
कुनटी । धाना । वेधक । धान्यबीज । अल्लका । हृद्यगन्धा ।
वेशष । निःसार ।

कालीजीरी—वृहन्याली । क्षुद्रपत्र । अरण्यजीर । कण ।

हींग—हिङ्गु । शूलद्विट् । रमठ । जतुक । जतु । दीप्त ।
सहस्रवेधि । जन्तुघ्न । सूपाङ्ग । सूपधूपन । हिङ्गुक । रामठ ।
पिण्याक । वाह्ली । गृहिणो । मधुरा । केसर । शूलहत । भूतारि ।
रक्षोघ्न । जरण । भेदन ।

बच्च—बालवच । उग्रगन्धा । गोलोमी । शतपर्बिका ।
मंगल्या । जटिला । तीक्ष्णा । गालिनी । लोमशा । विजया ।
उग्रा । वच्या । कांगा । भद्रा । इक्षुपर्णी । स्मारणी । बोधनीया ।
भूतनाशिनी । जलजा । मेध्या । शुक्रा । भोगवती । कर्षिणी ।
वचा ।

कुलींजन—कुलञ्ज । गन्धमूल । तीक्ष्णमूल । कुलंजन ।

चोपचीनी—चोवचीनी । द्वीपान्तरवचा । अमृतोपहिता ।

अकरकरा—आकारकरम । आकल्कक । अकल्लक ।

आकरकरा ।

बाभीरंग—वायविडंग । भस्मक । मोघा । विडंग ।
कैराल । केवल । बेल्ल । तण्डुल । विडंगा । क्रिमिकंटक ।
रसायन । पावक । गर्दभ । चित्रा । वातारि । गहरा । कापाली ।
वरा । वृषणासना । चित्रवीजा । भाभीरंग ।

वंशलोचन—तुगाक्षीरी । शुभा । वांशी । त्वक्क्षीरी ।
वंशलोचना । क्षीरा । वंशजा । तुगा । शुभ्रा । वैणवी । कर्मरो ।
श्वेता । कर्पूररोचना । तुंगा । पिङ्गा । वंशशर्करा । वंसरोचना ।
रोचनिका ।

तीखुर (तवाखीर)—तवक्षीर । पयःक्षीर । यवज । गवयोद्भव । गोधूमज । पिष्टिका । तण्डुलोद्भव । तालसम्भूत । तालक्षीर ।

समुद्रफेन—फेन । डिण्डिर । अब्धिकफ । अर्णवज । सिन्धकफ । जलहास । फेनक । श्वेतधामा । वार्द्धिफेन । सुफेन । पयोधिज । सामुद्र । शुष्काशुल्क । विंध्यह्न । दधिफेन । सारमल ।

काकोली—शीतपाकी । पयस्या । क्षीरा । मेदुरा । वायसोलिका । वीरा । धीरा । शुक्ला । स्वादुमांसी । वयस्था । जीवन्ती । मधुरा । पयस्विनी । कायस्थिका ।

क्षीरकाकोली—पयस्या । महावीरा । पयस्विनी । अष्टमी । क्षीरशुक्ला । सुकोली । क्षीरविषाणिका । जीववल्ली । जीवशुक्ला । क्षीरवल्ली । क्षीरमधुरा ।

मुलेठी—मधुयष्टी । यष्टी । यष्ट्याह्वा । यष्ट्याह्विका । मधुक । यष्टिका । यष्टीक । ह्रीतक । यष्टि । मधुस्रवा । ह्रीतन । मधुम । मधुवली । मधूली । मधुरसा । अतिरसा । मधुरनाम । शोषापहा । सौम्या । स्थलयष्टी । मुलहटी । मुलैठिका । जलयष्टी ।

कबीला—कम्पिल । काम्पिल । कम्पिलक । कर्कश । चन्द्र । रक्ताङ्ग । रोचना । रेचनी । पिकाक्ष । लघुपुत्रक । रेची । रञ्जक । लोहिताङ्ग । रक्तफल । बहुपुष्प ।

अमलतास—आरग्वध । राजवृक्ष । व्याधिघात । चक्रपरिव्याध । सम्यक् । चतुरंगुल । शम्याक । आरेवत । प्रमेह । कृतमाल । सुवर्णक । मन्थान । रोचन । दीर्घफल । स्वर्णपुष्प ।

हिमपुष्प । कण्डूघ्न । महाकर्णिकार । ज्वरान्तक । अरुज । स्वर्णाङ्ग ।
कुष्ठसूदन । कर्णाभरणक । आरोग्यशिम्बी । आमहा । शोफालिका ।
नक्तमाल । घनबहेड़ा ।

कुटकी—तिक्ता । अरिष्टा । चक्राङ्गी । कटु । कटुका ।
शकुलादनी । कटुरोहिणी । जननी । मस्यपित्ता । शतपर्वा ।
द्विजाङ्गी । कृष्णा । कृष्णमेदा । महौषधि । अञ्जनी । कटवरा ।
केदारकटुका ।

चिरायता—भूनिम्ब । किरात । रामसेनक । किरातक ।
अनार्यतिक्त । चिरात्तिक्त । तिक्तक । चिराटिका । कैरात । हैम ।

इन्द्रजौ—यव । कलिंग । भद्रयव । कालिंगक । वत्सक ।
शक्रबीज । कुटज । भद्रज । इन्द्रयव ।

[नोट—कुटज के बीज को इन्द्रजव कहते हैं । यह दो प्रकार का होता है । एक सफेद रंग का जो मीठा होता है और दूसरा काला जो कड़ुआ होता है ।]

मैनफर—मदनफल । छर्द्दन । पिण्डीनट । करहाट । कण्ठ ।
मरुबक । शल्यक । विषपुष्पक । पिचुक । शल्य । रामच्छर्द्दनक ।
धाराफल । तगर । राठ । घण्टाल । करहर । मैनफल । मयनफल ।

मालकङ्गुनी—ज्योतिष्मती । महाज्योतिष्मती । तीक्ष्णा ।
क्रङ्गुनी । तेजोवती । बहुरसा । कनकप्रभा । सुवर्णनकुली । लवणा ।
सुरलता । अमिफला । अम्रिगर्भा । शैलसुता । सुतैला । सुवेगा ।
वायसी । तीव्रा । काकाण्डी । गोलता । पोता । यशस्विनी ।
मेध्या । मेधावती । धीरा । उमीजिनी ।

१४. मधु वर्ग

मधु (शहद)*—माक्षिक । मधु । क्षौद्र । भृङ्गवात ।
कुसुमासव । सारघ । पित्र्य । माध्वीक । वरटीवात । मकरंदरस ।
मध । सहत । शहद ।

मोम—मधूच्छिष्ट । मयन । मधुशेष । सिक्थक । मादन ।
मध्वाधार । मदनक । मधूषित । शिक्थ । काच । विघस ।
उच्छिष्ट । क्षौद्रेय । पीतराग । स्निग्ध । द्रावक । मक्षिकाश्रय ।
मधूत्थित ।

काँजी—काजिक । कुण्डल । धान्यमूलक । कुल्माष ।
कुल्माभियुत । आरनालक । सौवीर । आवन्तिसोम । वीर । कुंजल ।
अभियुत । कांचिक । तुषाम्बु । संधान । गृहाम्बु । महारस ।
शुक्तचुक्र ।

मदिरा (शराब)—मद्य । प्रसवा । हाल । हलिप्रिया ।
अमृता । वीरा । माधवी । सुरा । परिश्रुत । वारुणी । इरा ।

* पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा और मक्षिका नाम की मक्खियों से क्रमशः
चार प्रकार का शहद निकलता है । यथा—पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र
तथा माक्षिक ।

कादम्बरी । मत्ता । प्रमत्ता । सीता । सन्धान । आसव । गुडारिष्ट ।
मध्वारिष्ट । मदिष्टा । हारहूर । कल्प । परिप्लुता । महानन्दा ।
मधुलिका । मदनी । मधूल । कल्या । अद्विजा । शुण्डा । मैरेय ।
बुद्धिहा । सिंदुर रसना । दारु । सिन्धुसुता । हेय । कश्यप । अपूता ।
मार्द्विक ।

[नोट—खजूर की मदिरा को खजूरी, ताड़ की मदिरा को ताड़ी कहते हैं । औषधियों के कढ़े से बनी हुई मदिरा को अरिष्ट कहते हैं, जिसका प्रयोग औषधि रूप से होता है ।]

ईख—इक्षु । दीर्घच्छद । भूरिरस । गुडमूल । असितपत्र ।
मधुतृण । मधुयष्टि । विपुलरस । गुडदारु । कोशकार । रसाल ।
इक्षुर । असिपत्रक । पयोधर । कर्कोटक । वंश । कान्तार ।
सुकुमारक । अधिपत्र । वृष्य । मृत्युपुष्प । गन्ना । पौंड़ा । ऊख ।

गुड़—इक्षुसार । मधुर । रसपाकज । शिशुप्रिय । सितादि ।
रसज । अरुण । खण्डज । द्रवज । सिद्ध । अमृत सारज ।
मोदक । इक्षुरसकाथ । गण्डोल । मधुवीजक । स्वादुखण्ड ।
गुल । स्वादु ।

खाँड़—खण्ड । रसोद्भवा । शुक्ला । सुपिष्टा । पाण्डुरा ।
पंशुलका । शक्कर ।

चीनी—शर्करा । शुक्ला । मीनाण्डी । सिता । बालुकात्मजा ।
अहिच्छत्रा । सिकता । शुभ्रा । शुद्धा । सितोपला । शुक्लोपला ।
शार्क । श्वेता । मत्पण्डिका । गुडोद्भवा ।

[नोट—येही नाम मिश्री, कन्द आदि के भी हैं ।]



१५. गोरस वर्ग

✓दूध—दुग्ध । क्षीर । पय । स्तन्य । पीयूष । ऊधस्य ।
अमृत । दोहज । अवदोह । दोहापनय ।

✓दही—दधि । पयस्य । मङ्गल्य । विरल । दधिद्रप्स ।
घनेतर । क्षीरज ।

मलाई—क्षीरफेन । क्षीरसन्तानिका । साढ़ी । बालाई ।

खोआ—खोया । मावा । किलाट ।

छेना-पानी—मोरट । (फाड़े हुए दूध का पानी)

छेना—तक्रपिण्ड ।

मट्ठा—तक्र । दण्डाहत । घोल । गोरसज । कटुर । द्रव ।
अमृ । कंकर । मथित । मलिन । भग्नसंधिक । गोरस । कालशेय ।
विलोडित । छाछ । उदश्चित । माठा ।

✓मक्खन—म्रक्षण । नवनी । नवनीत । सरज । सार । नोनी ।
मन्थज । दधिसार । कलम्बुट । क्षीरसार । क्षीरसत्व । नवोद्धृत ।
माखन । लवनी । नैनू ।

✓घी—घृत । आज्य । हवि । सर्पि । पुरोडास । आज ।
नवनीतक । पवित्र । वह्निभोग्य । तैजस । अभिघारक । तोयद ।
पीथ । अमृत । होम्य । आयु । जीवन ।





तृतीय खण्ड

१. मनुष्य वर्ग

शरीर—कलेवर । गात्र । वपु । संहनन । वर्ष्म । विग्रह ।
काय । देह । मूर्ति । तनु । तनू । क्षेत्र । पुर । घन । अङ्ग ।
पिण्ड । भूतात्मा । स्वर्गलोकेश । स्कन्ध । पञ्जर । कुल । बल ।
आत्मा । प्राणागार । वपुष ।

✓ अङ्ग—अवयव । प्रतीक । अपघन । गात्र । गात ।

शिखा—चूड़ा । केशपाशी । जूटिका । जुटिका । चुरकी ।
केशी । शिखण्डिका । चोटी । चुटैया । चुण्डी (चुन्दी) ।

✓ सिर के बाल—कुन्तल । केश । बाल । शिरोरुह । कच ।
चिकुर । अलक । शिरसिज । मूर्द्धज । अस्त्र । वृजिन । श्याम ।

[खियों के सिर के बाल—केशपाश । केशसमूह । जूरा ।
जूटा (झोटा) । घुँघराले बाल—कैट्यमलक । कुन्तल । कुञ्चित केश ।]

✓ चोटी—धम्मिल । वेणी । कवरी । प्रवेणी ।

—सिर—शिर । शीश । शीर्ष । मूर्द्धा । मस्तक । माथ ।
कपाल । खोपड़ी । उत्तमाङ्ग । मुण्ड । मुण्डिका । मूँड़ ।

ललाट—लिलार । माथा । अलिक । बेंदी । भाल । गोधि ।
भाग्यमणि । मस्तक ।

जटा—कपर्दक । बद्धकच । जूड़ा । जटाजूट । शटा ।
जटी । जूट । जुटक । शट । कौटीर । जूटक । हस्त ।

[जटाधर, जटाटङ्क = शिव । जटाज्वाला = आग की लपट ।
जटाधारी = ऋषि-मुनि ।]

कान—कर्ण । श्रवण । श्रुति । श्रोत्र । शब्दग्रह । श्रव ।

कनपटी—मलपट । कच्चा । गण्ड । गण्डस्थल ।

भौंह—ध्रू । तन्द्री । भृकुटी । भव ।

बरौनी—पक्ष्म । अक्षिलोम । नेत्रच्छदरोम । गरुत् । पक्षः ।
नेत्रकिञ्जल्क । बरुनी ।

आँख—लोचन । नयन । नेत्र । अक्षि । ईक्षण । दृश् ।
दृष्टि । दृक् (दृग) । अम्बक । विलोचन । रक्षिणी । चख । चक्षु ।

आँख की पुतली—तारकाक्ष्ण । तारा । सितारा । पुत्तली ।
कनीनिका । गोलक । तारिका ।

आँख का गोला—बिड़ाल । कोया । नेत्रपिण्ड । गोलक ।

आँख का कोना—अपाङ्ग । कोण । नेत्रंत । कनखी ।
दृष्टिकोण ।

पलक—नेत्रच्छद । पपनी । निमेष । पल । निमीलन ।

गाल—कपोल । गण्ड ।

नाक—घ्राण । गन्धवहा । घोणा । नासा । नासिका । नस ॥

ओठ—होठ । ओष्ठ । सूक्ष्मिणी । अधर । रदनच्छद ।

ठुड्डी—चिबुक । हनु । ठोढ़ी । दाढ़ी ।

मूँछ-दाढ़ी—श्मश्रु । मुच्छ । मौँछ ।

मुँह *—आनन । मुख । आस्य । लपन । वदन । वक्र । तुण्ड ।

जीभ—जिह्वा । रसना । रसज्ञा । गिरा । वाणी । वाचा ।

दाँत—दन्त । रद । दशन । रदन । द्विज ।

जबड़ा—दंष्ट्रा । डाढ़ । जभा । चौहड़ । चौभड़ ।

तालु—तालू । काकुद । तारू ।

कंठ—गल । गला ।

गरदन—ग्रीवा । शिरोधि । कंधर । कंध ।

[नोट—गरदन की हड्डियों को 'हँसली' कहते हैं]

कंधा—स्कंध । कंध । अंश । भुजमूल । भुजसंधि ।

घंटी (घाँटी)—कृकाटिका । घाड़ । घाटा । घाँटी ।

घेघा । गटई ।

छाती—वक्षस्थल । वक्ष । क्रोड़ । उर । वत्स । हृदय ।

स्तन—कुच । उरोज । पयोधर । वक्षोज । थन । उरज ।

वक्षोरुह ।

स्तन का अग्रभाग—चूचुक । चूची ।

काँख—कक्ष । बगल । कँखौरी । बाहुमूल ।

कमर—कटि । कट । श्रोणि । श्रोणिफलक । ककुद्घाती ।

* मुख के मुख्यतः दो भाग हैं । एक तो 'मुखमण्डल' जिसमें नाक, ओठ, गाल, आँख, ललाट और मुख सम्मिलित हैं । दूसरा 'मुख-गह्वर' जिसमें दाँत, जबड़े, ओठ, जीभ, तालु, कण्ठ और गला सम्मिलित हैं ।

श्रोणिफल । श्रोणी । करभ । काञ्चीपद । कलत्र । कटीर । कटी ।
कटिपार्श्व । पार्श्व । लंक । मध्यांग ।

कुल्हा (कमर की हड्डी)—स्फिच । कटिग्रोथ ।
कुल्हा । कुल्हड़ ।

पेट—उदर । जठर । कुक्षी । कोंख । तुन्द (तोद) ।
पिचण्ड । थौंद । कुछ्रछ । गर्भ ।

नाभि—तुन्दकूपी । उदरावर्त । पेडू । बोड़ी । बोड़री ।
ढूढ़ी (ढोढ़ी) ।

पीठ—पृष्ठ ।

पँसली—पार्श्व । पँजरी । पञ्जरी । पञ्जर ।

लिङ्ग (पुरुषेन्द्रिय)—शिश्र । शेफ । मेढू । मेहन ।
लांगु । ध्वज । रागलता । व्यङ्ग । कामाङ्कुश । साधन ।
स्वरस्तम्भ । उपस्थ । मदनाङ्कुश । कन्दर्प मुषल ।

अण्डकोष—अण्ड । मुष्क । वृषण । (फोता) ।

योनि—भग । वराङ्ग । उपस्थ । काममन्दिर । रतिगृह ।
जन्मवर्त्म । अधर । अवाच्यदेश । प्रकृति । अपथ । स्मरकूप ।
अप्रदेश । प्रकृति । पुष्पी । संसारमार्गक । गुह्य । स्मरागार ।
रस्यङ्ग । रतिकुहर । कलत्र । अघ । कन्दर्पसन्धि । गर्भद्वार ।
गर्भमुख । गर्भस्थाया । कन्दर्प सम्बाध । स्त्रीचिह्न ।

नितम्ब—श्रोणी । चूतड़ । चूत ।

मलद्वार—गुद । गुदा । विष्टा निर्गमद्वार । अपान । पायु ।
गुह्य । गुदवर्त्म ।

मलाशय—कोष्ठ । मलकोष्ठ । कोठा ।

मूत्राशय—वस्ति । पेडू ।

[यह नाभि के नीचे होती है ।]

जाँघ—जघन । जानु । सक्थि । ऊरु । जंघा । स्तम्भ ।
शरीरस्तम्भ ।

घुटना—जानु । गुल्फ । पादपृष्ठ (पदपीठ) । पादग्रन्थि ।
घुटिका । घुटिक । घुण्टक । घुण्ट ।

पैर—चरण । पाद । पद । अंग्घ्रि । टाँग । टँगरी ।

एड़ी—पार्श्व । एड़ ।

पैर का तलवा—पदतल । तरवा ।

पैर की उँगुली—पादाङ्गुली । पदपल्लव । प्रपद । पदाग्र ।

बाँह *—भुज । भुजा । बाहु । मंज । प्रवेष्ट । दो । दोष ।
बाह । बाहा [वैदिक पर्याय—आयती । च्यवना । अप्लवाना ।
अनीशू । विनंगुस । गभस्ति । कवस्त । भूरिज । क्षिपस्ती ।
शकरी । भरित्रे ।]

केहुनी—टिहुनी । कूर्पर । कफोणी ।

[केहुनी के ऊपर मुश्क को 'प्रगण्ड' और केहुनी के नीचे
भाग को 'प्रकोष्ठ' कहते हैं ।]

* जो भुजाएँ घुटने के नीचे तक लटकती हों, वे 'आजानुबाहु' कही जाती हैं । उसका लक्षण 'गारुडी' अध्याय ६६ में इस प्रकार दिया है—
“निर्मासौ चैव भग्नाल्पौ, श्लिष्टौ च विपुलौ भुजौ । आजानुलम्बिनौ बाहु-
वृत्तौ पीनौ नृपेश्वरे ।”

✓ हाथ—कर । हस्त । पाणि । पंचशाख । शय ।

हथेली—करतल । हस्ततल ।

हथेली के पीछे—करप्रष्टि । हस्तप्रष्टि । कर पृष्ठ ।

उँगुली—अँगुरी । करपल्लव । कररुहन । अँगुलीय ।
करशाखा । करज । अँगुली ।

[क्रम से पाँचों अँगुलियों के नाम—१. अंगुष्ठ (अँगूठा),
२. तर्जनी, ३. मध्यमा, ४. अनामिका, ५. कनिष्ठा ।]

गावा—अँगुलिसन्धि । गाई ।

अँगुली के पोर—पोरा । पर्व ।

नाखून—नँह । नख (नष) । पुनर्भव । करोरुह । नखर ।

इन्द्रिय *—गो । इन्द्री । हृषीक । गुणकरन । कृषि ।

विषयी । अक्ष । करण । ग्रहण ।

थप्पड़—चपत । चपेट । थपेड़ा । झापड़ । ग्रहस्त ।
प्रतल । चाँटा ।

घूँसा—मुष्टिक । मुष्टिका । मुक्का (मूका) ।

गोद—क्रोड़ । अंक । अँकवार । गोदी । अङ्कम ।

रोम—लोम । तनूरुह । रोआँ ।

* पाँच कर्मेन्द्रियाँ—हाथ, पैर, मुँह, उपस्थ (लिङ्ग वा योनि),
और गुदा । पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ—आँख, जिह्वा, नासिका, कान आर-
त्वचा (स्पर्श) । चार प्रकार की अन्तरिन्द्रियाँ—मन, बुद्धि, अहङ्कार,
और चित्त ।

रोमाश्च (खड़े रोयें)—पुलक । त्वक्पुष्प । त्वगाङ्कुर ।
रोमोद्भेद ।

✓ **आँसू**—नेत्राम्बु । वाष्प । अश्र । अश्रु । अस्त्र । अस्तु ।
चक्षुजल । रोदन । लोच ।

✓ **पसीना**—स्वेद । स्वेदन । उष्मा । ताप । प्रस्वेद ।

✓ **चमड़ा**—चाम । चर्म । त्वक् । त्वचा । स्तृग्धरा ।

✓ **लोहू**—रक्त । रुधिर । शोण । शोणित । कोणप । असृक ।
क्षतजात । लोहित ।

✓ **माँस**—पल्ल । आमिष । मास । पिशित । तरस । क्रव्य ।
पल । अस्त्रज । जाङ्गल । कीर ।

चरबी *—वसा । वपा । मेद । मेदा ।

मज्जा †—अस्थिसार । शुक्रकर । अस्थिस्नेह । अस्थिज ।
अस्थिसम्भव । तेज । बीज । जीवन । देहसार ।

* जो मास अपनी अग्नि से पकता है उसी से 'मेदा' की उत्पत्ति होती है । मनुष्य के पेट और हड्डियों में चरबी अधिक होती है । जिसका पेट बड़ा होता है उसमें अधिक चरबी समझनी चाहिये । भावप्रकाश में लिखा है कि—

“मेदोहि सर्वभूतानामुदरेष्वस्थिषु स्थितम् ।

अतएवोदरे वृद्धिः प्राये मेदस्त्वनो भवेत्” ॥

† हड्डी से उत्पन्न चरबी को मज्जा कहते हैं । भावप्रकाश में इसकी व्याख्या इस प्रकार है—

“अस्थि यत् स्वामिना पक्वं तस्य सारो द्रवो घनः ।

यः स्वेदवत् पृथग्भूतः स मज्जे त्यभिधीयते ॥”

हड्डी की अग्नि से पके हुए सारभूत स्निग्ध पदार्थ को मज्जा कहते हैं ।

हड्डी—अस्थि । हाड । कीकस । कुल्य । मेदज ।

वीर्य *—रेत । शुक्र । तेज । बीज । इन्द्रिय । जीवन । सार ।

रज †—पुष्प । आर्तव । ऋतु स्त्राव । कुसुम । स्त्री धर्म ।
मासिक धर्म ।

कलेजा—अग्रमांस । बुक्का ।

वात ‡—(देखो पृष्ठ १६ में 'वायु' शब्द)

पित्त +—अग्नि । तेज । मायु ।

कफ ×—श्लेष्मा । (ब्रलगम) ।

नस—स्नायु । स्नसा । वस्त्रसा । मधुर ।

नाड़ी—धमनी । शिरा ।

* सप्तधातु—रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र (वीर्य)—
ये सातों मिलकर सप्तधातु कहे जाते हैं ।

† स्त्रियों को प्रायः बारह वर्ष की अवस्था में रज आरम्भ होता है और
प्रतिमास स्त्राव होता रहता है । गर्भावस्था में यह स्त्राव वन्द हो जाता है ।
प्रायः ५०-६० वर्ष की अवस्था में इसका पूर्ण क्षय हो जाता है ।

‡ वात—प्राण, उदान, समान, अपान और व्यान—ये पाँच प्रकार के
शरीरस्थ वायु हैं ।

+ पित्त—पाचक, रंजक, साधक, आलोचक और भ्राजक—ये पाँच
प्रकार के पित्त हैं ।

× कफ—क्लेदन, अवलम्बन, रसन, स्नेहन और श्लेष्मण—ये पाँच
प्रकार के कफ हैं ।

[नोट—वात, पित्त और कफ, इन तीनों की त्रिदोष संज्ञा है ।]

लार (थूक)—लाला । खखार । सृणिका । स्यन्दिनी ।
कफ । श्लेष्मा । थूक ।

पिलही (तिल्ली)—प्लीहा । पीला । पिलई (पलही
वा पलई) । गुल्म । प्लिहा । तिल्ली । तापतिह्री । बरबट ।

[नोट—वाम कुक्षि में स्थित मांसखण्ड को प्लीहा कहते हैं ।]

यकृत—कालखण्ड । कालखञ्ज । कालेय । करण्डा ।
महात्मायु । कालक (जिगर) ।

[नोट—दक्षिण कुक्षि में स्थित मांसखण्ड को यकृत
कहते हैं ।]

अँतड़ी—आँत । अंतड़ी । अन्त्र । पुरीत । आँती ।

फेफड़ा—फुफ्फुस । तिलक । क्लोम । धुकधुकी । हृदय ।

त्रिबली—पेटी (पेट के तीन बल) । रोमराजो ।

गर्भाशय—गर्भ । जठर । उदर । ब्रजादानी । पेट ।

गर्भ (गर्भस्थित पिण्ड)—भ्रूण । गर्भपिण्ड ।

पातक । अर्भक । अर्भ ।

प्रसव—जनन । प्रसूत ।

कान का मैल—कर्णमल । पिञ्जूषा । खूँट ।

आँख का कीचड़ (मैल)—दूषिका ।

नाक का मैल—नासामल । सिङ्गाण । नकटी ।

विष्टा (मल)—मल । मैल (मैला) । पुरीष । विष्ट ।
गूथवर्चस्क । गुह । म्हाड़ा । पाखाना । बीट ।

[नोट—गौ के मल को गोबर, भेड़-बकरी आदि के मल को लेंडी वा मेंगनी और घोड़ा आदि के मल को लीद कहते हैं ।]

मूत्र—मूत । प्रस्राव । उच्चार । (पेशाब) ।

पुरुष *—मर्द । पुमान् । नर । ना । पञ्जजन । जन । अर्थाश्रय । अर्थवान् । मानव । मर्त्य । मानुष । मनुष्य । मनु । मदन-सायकाङ्क । मन्मथ-सायक-लक्ष्य । अधिकारी । कर्मार्ह । पूरुप । धव ।

स्त्री—योषिता । अबला । योषा । नारी । सीमन्तिनी । वधू । प्रतीपदर्शिनी । वामा । वनिता । महिला । तिय । तिया । कलत्र । मेहरी । दारा ।

सुन्दरी स्त्री—सुन्दरी । अङ्गना । भीरु । वामलोचना । कामिनी । प्रमदा । मानिनी । कान्ता । ललना । नितम्बिनी । रमणी । रामा । भामिनी । वरारोहा । उत्तमा । मत्तकाशिनी ।

* कामशास्त्रानुसार पुरुषों के चार भेद—शशक, मृग, वृषभ और अश्व तथा स्त्रियों के भी चार भेद—पद्मिनी, चित्रिनी, हस्तिनी और शंखिनी माने गये हैं ।

अवस्था भेद से पुरुष ६ प्रकार के माने गये हैं यथा—पाँच वर्ष तक कुमार, तदुपरान्त १० वर्ष तक पौगंड, पश्चात् १५ वर्ष तक किशोर, इससे ऊपर ३० वर्ष तक युवा, ३० वर्ष से ५० तक प्रौढ़, तत्पश्चात् वृद्ध कहा जाता है । इसी प्रकार स्त्रियों के भी भेद ६ प्रकार के हैं—जन्म से ५ वर्ष तक कुमारी, १२ वर्ष तक कन्या, १५ वर्ष तक मुग्धा वा किशोरी, २५ वर्ष तक युवती वा मध्या, ४० वर्ष तक प्रौढ़ा, तत्पश्चात् वृद्धा कही जाती हैं ।

तन्वी । पुरन्ध्री । वरवर्णिनी । तनु । तन्वङ्गी (कृशाङ्गी) ।
 कुरङ्गनयना । भाविनी । विलासिनी । सुनेत्रा । अश्विभ्रु ।
 ललिता । वासिता । नताङ्गी । त्रिनता । -

पतिव्रता स्त्री—साध्वी । सुचरित्रा । सती । मनश्चिनी ।
 शुचिचिन्ता । पतिभक्ता । पतिपरायणा ।

कुटुम्ब वाली स्त्री—कुटुम्बिनी । पुरन्ध्री ।

सधवा स्त्री—जीवत्पतिका । पतिवत्नी । सभर्तृका ।
 सनाथा । सौभाग्यवती । सोहागिन । सोहगिल । विद्यमानपतिका ।
 सावित्री ।

विधवा स्त्री—विश्वस्ता । अधवा । जालिका । रण्डा ।
 रौंड । यतिनी । यती । अनाथा । पतिहीना ।

रँडुआ (जिसकी स्त्री मर गई हो)—विधुर ।
 विकल । अपत्नीक ।

—रजस्वला स्त्री—(१. प्रथम रजोदर्शन होने पर)—मध्यमा ।
 दृष्टरजा । (२. साधारणतः रजस्वला)—पुष्पवती । स्त्रीधर्मिणी ।
 रजोयुक्ता । अवी । आत्रेयी । मलिनी । ऋतुमती । उदक्या ।
 दुरि । पुष्पहासा । विफली । अवीरा । पुष्पिता । निष्फली । म्लाना ।
 पांशुला । सार्त्तवा । एक वस्त्रा ।

विगतरजा स्त्री—निष्कला । विगतार्त्तवा । शुद्धा ।
 गतार्त्तवा ।

स्वयंवरा स्त्री—वर्या । वरइच्छुका । पतिवरा ।

पति-पुत्र हीना स्त्री—निष्पतिसुता । अवीरा ।

सती स्त्री—दुर्गा । देवी । सावित्री । साध्वी । पतिव्रता ।
 प्यारी स्त्री—प्रिया । प्रेयसी । प्रणयिनी । प्राणदायिनी ।
 ज्येष्ठा । दयिता । वल्लभा । इष्टा । प्राणवल्लभा । रामा । रमणी ।
 वरा । श्यामा । चारुवर्द्धना ।

विवाहिता स्त्री—पाणिप्रहीता । पत्नी । सहधर्मिणी ।
 भार्या । व्याही । विवाहिता ।

गर्भवती स्त्री—गर्भिणी । गुर्विणी । अन्तर्वर्ती । ससत्वा ।
 आपन्नसत्वा । दोहदवती । गुर्वी । उदरिणी । दोपत्ता ।

प्रसूता स्त्री—जातापत्या । प्रजाता । प्रसूतिका । जननी ।
 (जन्मा) ।

वन्ध्या स्त्री—अफला । बाँझ । विफला । निष्फला ।
 अवकेशी । वृषली । अपत्या । अप्रज ।

व्यभिचारिणी—कुलटा । भ्रष्टा । स्वैरिणी । नष्टा ।
 दुष्टा । असती । ईत्वरी । खला । पुंश्चली । बंधकी । धर्षिणी ।
 पाशुला । कलहिनी । कुभार्या । छिनाल । रंडी । (खानगी) ।
 कामुका । कामातुरा । वृषस्यन्ती ।

कुटनी—कुटनी । शम्भली । दूती । सम्भली । माधवी ।
 रङ्गमाता । अर्जुनी । कुम्भदासी । गणेरुका ।

बालक—शिशु । अर्भक । पोतक । शैशवान्न । बटुक ।
 बटु । मुष्टिन्धय । किशोरक । शाव । शावक । डिम्भक । डिम्भ ।
 अर्भ । पाक । हितक । गर्भ । माणव । अज्ञ । अबोध । किशोर ।
 लङ्का । बेटा । पुत्री ।

— बालिका (कन्या)—कन्या । कुमारी । किशोरी ।
कन्यका । गौरी । रोहिणी । नमिका । लड़की । बेटी । पुत्री ।

युवा—जवान । युवक । पट्टा । तरुण । यून ।

युवती—तरुणी । बाला ।

प्रौढ़—पोढ़ । अधेड़ । प्रगल्भ ।

प्रौढ़ा—प्रगल्भा ।

वृद्ध—बूढ़ । बूढ़ा । बुढ़ा । स्थविर । जर । जरठ ।

मस्तिष्क—गोर्द । गोद । मस्तुलङ्गक । (भेजा । दिमाग ।
मगज) ।

शब्द—स्वर । ध्वनि । निनाद । निनद । ध्वनि । ध्वान ।
रव । स्वन । स्वान । निर्घोष । निर्हाद । नाद । निस्वान । निस्वन ।
आरव । आराव । संराव । विराव । संरव । मुखर । घोष । कथन ।

[नोट—शब्द दो प्रकार के होते हैं, १. ध्वन्यात्मक—पशु-
पक्षी, मृदङ्गादि वाद्यों के शब्द, २. वर्णात्मक—जो वर्णों में
लिखे जा सकते हैं ।]

दृष्टि—आलोकन । अवलोकन । निरीक्षण । दर्शन । ताक ।
चितवन । कटाक्ष ।

गंध—महक । घ्राण । बू । बास ।

भूख—क्षुत् । क्षुधा । बुभुक्षा । अशनाया । जिघत्सा ।
भोजनेच्छा ।

प्यास—पिपासा । तृषा । तृष्णा । पानेच्छा । उदन्या ।
तर्ष । उपलासिका ।

✓ जँभाई—जृम्भा । जृम्भ । जमुहाई ।

✓ छौंक—क्षुत् । क्षव ।

✓ हँसी * —हास्य । हास । हस । हसन् । घर्घर । स्मित ।
हासिका ।

✓ रोना—रुदन । रोदन । क्रन्दन । विलाप । विलखना ।
रोआई ।

✓ हिचकी—हिक्का । हुचकी । हेंकटी ।

सुनना—श्रवण । श्रुति ।

स्वाद—आस्वादन । रस । सवाद । (जायका) ।

✓ निद्रा—नींद । शयन । सुषोपति । स्वाप । सुप्त । स्वप्न ।
संवेश । सुषुप्ति । सुप्ति । स्वपन ।

ऊँघ—तन्द्रा । उँघाई । उपनिद्रा । आलस्य । अलसाई ।

आलिङ्गन—लिपटना । गले लगना । हिये लगना ।
अँकवार भरना । दबोचना । परिष्वंग । परिरंभन । संश्लेष ।
अङ्गपालि । श्लिषा । उपगूहन ।

चुम्बन—चूमा । चुम्मा । मुखसंयोग । अधरामृतपान ।
(बोसा) ।

* हँसी के ६ भेद—स्मित = मुसकुराना । हसित = दाँत दिखलाते हुए हँसना । विहसित = कुछ बोलते हुए हँसना । उपहसित = नाक फुला कर हँसना । अपहसित = सिर हिलते तथा आँसू निकलते हुए उद्धत हास । अतिहसित = शरीर कंपाते, ठठाकर ताली देकर अट्टहास हँसना ।

मथुन—प्रसंग । स्त्रीप्रसंग । सहवास । रति । क्रीडा ।
सुरत । निधुवन । केलि । विलास । संभोग । भोगविलास ।
भोग । व्यवाय । ग्राम्यधर्म । ग्राम्यकर्म ।

जीव—प्राण । असु । जान ।

आत्मा—ब्रह्म । ब्रह्मरूप । दिव्य स्वरूप । सूक्ष्म देह ।
सूक्ष्म शरीर । ब्रह्मांश ।

✓मन—चित्त । चेत । हृदय । स्वान्त । हृत् । मानस ।
अङ्ग । अनङ्गक ।

✓बुद्धि—मनीषा । धिषणा । धी । प्रज्ञा । शेमुषी । मति ।
प्रेक्षा । उपलब्धि । चित् । सम्वित् । प्रतिपत् । ज्ञप्ति । चेतना ।
मन । मनन । प्रतिपत्ति । मेधा । धारणा । ज्ञान । बोध । पण्डा ।
प्रतिभा । संख्या । आत्मजा । विज्ञान ।

अहंकार—गर्व । अभिमान । मद । दर्प । स्मय । मान ।
अपलेप । चित्त समुन्नति । हम् ।

कवन्ध—अशिर । अमुण्ड । रुण्ड ।

मुर्दा—मृत । मृतक । शव । कुणप । क्षितिवर्द्धन ।

भाग्य—भाग । भागधेय । दैव । नियति । दिष्ट । विधि ।
सुदिन ।

अभाग्य—दुर्दैव । कुदिन । दुर्भाग्य । अदिष्ट ।
विधिवाम । कुसमय ।

(विशेषण बोधक शब्द)

✓ प्रजा—अधीन । आश्रित । सन्तान । (रैयत) । जन । शासित ।

✓ धनी—धनवान् । धनिक । ऐश्वर्यशाली । ऐश्वर्यवान् । धनाढ्य । लक्ष्मीसम्पन्न । प्रभु । महाजन । लक्ष्मीपति ।

✓ दरिद्र—रङ्क । दीन । निर्धन । कंगाल । निस्व । बेबस । दुखिया । अकिञ्चन । भिखारो । भिक्षुक । खिन्न । बपुरा । दुर्गत । ररा । (गरीब) ।

✓ चतुर—कोविद । प्रवीण । विज्ञ । अभिज्ञ । कुशल । कृती । पंडित । दक्ष । पटु । योग्य । शिक्षित । विदुष । निपुण । निष्णात । नागर । आगर । विशारद । विदग्ध । सयाना । (होशियार) ।

✓ मूर्ख—गँवार । मूढ़ । अपढ़ । अज्ञानी । निर्बुद्धि । अबूझ । अवोध । अनजान (अजान) । असमझ । यथाजात । मुग्ध । जड़ । मूक (चुप्पा) । अज्ञ । अनभिज्ञ । अशिक्षित । अवुध । अयोग्य ।

मीठा—मिष्ट । मधुर । मृदु । स्वादु । प्रिय-स्वादु ।

खट्टा—अम्ल । चुक । खटरुस ।

नमकीन—चरपरा । सलोना ।

तीता—तिक्त । तीत । तीक्ष्ण । [यथा-लाल मिर्च आदि]

कडुआ—कटु । कटुक । [यथा-नीम, चिरायता आदि]

कसैला—कषाय । [यथा-हरा, आँवला आदि

ठंडा—शीतल । शीत । सीर । शान्त ।

गरम—उष्ण । तप्त । तपित । ज्वलन ।

रिक्त—खाली । खोखा । छूछा । खुक्खा । रीता ।

सजग—चैतन्य । सावधान । (होशियार) । सचेत ।

चघड़ ।

तैयार—प्रस्तुत । उपस्थित ।

तत्पर—सन्नद्ध । कटिबद्ध । मुस्तैद ।

पुष्ट—दृढ़ । कठिन । पोढ़ ।

नष्ट—भ्रष्ट । समाप्त । ध्वस्त । मृत । अपचित ।

भाग्यमान—सुकृती । पुण्यवान् । धन्य । भाग्यशाली ।

उदार—महाशय । महेच्छ । हृदयालु । सहृदय ।

पूज्य—मान्य । गण्य । गण्यमान्य । प्रतीक्ष्य । पूजनीय ।

आदरणीय । श्रद्धेय ।

परीक्षक—जॉचक । अन्वेषक । कारंणिक ।

प्रसन्नचित्त—हर्षमाण । विकुर्वाण । प्रमन । हृष्टमानस ।

व्याकुलचित्त—विमन । दुर्मन । अन्तर्मन । व्यग्र ।

उत्कण्ठित—उन्मन । उत्क । अभिलषित । इच्छित ।

अभीच्छित । वाञ्छित । प्रलुब्ध । प्रेच्छित ।

सरलचित्त—इक्षिण । सरल । उदार । सीधा । साधु ।

सज्जन ।

✓स्वामी (मालिक)—अधिपति । नायक । अधीश्वर ।
पति । ईशिता । अधिभू । नेता । प्रभु । परिवृद्ध । अधिप । आर्य ।
अवमति । ईश । पालक । मालिक ।

✓स्वतन्त्र—अपावृत । स्वैरी । अनियन्त्रित । निरवग्रह ।
निरयन्त्रिण । यथाकामी । निरर्गल । निरङ्कुश । स्वरुचि ।

पेटू (अपना पेट पालनेवाला)—आत्मम्भरि ।
कुक्षिभरि । स्वोदरपूरक । भुक्खड्ड ।

विनीत—निभृत । प्रश्रित । नम्र । विनयी । विनयावनत ।

✓चुगुलखोर—कर्णेजप । सूचक । पिशुन ।

✓क्रूर—कर्कश । कठिन । निर्दय । निर्मोही । निठुर । घोर ।
भयंकर । नृशंस । घातुक । पाप । निष्ठुर । क्रूर । टिरी ।

✓सज्जन—श्रेष्ठ । संत । साधु । भद्र । शिष्ट । सभ्य ।
उदार । महाशय । उपकारी । परोपकारी । आर्य । कुलीन ।
महाकुल । पुङ्गव ।

✓दुर्जन—दुष्ट । खल । पिशुन । असज्जन । कंटक । पोच ।
कपटी । पामर । नीच । बर्बर । असाधु । अपकारी । असभ्य ।
अशिष्ट । अनुदार । असन्त । अभद्र । पतित ।

✓भयभीत—त्रसित । कादर । कायर । डरपोक । शंकित ।
सशंक । क्षुब्ध । मोहित । असाहसी । अधीर । भीलुक । भीरुक ।
दीन ।

कामी—कामातुर । कामार्त्त । मस्त । मदोन्मत्त । कामुक ।
स्त्रेण । मेहरा ।

व्यभिचारी—कामी । विषयी । लम्पट । कुकर्मि । नष्ट ।
कुमार्गी । कुपथगामी । कुत्सित । पतित । अधम । लुच्चा ।
स्त्रैण । परस्त्रीगामी । छिनरा ।

अधम—पतित । नीच । नष्ट । भ्रष्ट । हेय । निकृष्ट ।
पोच ।

['पतित' और 'दुर्जन' के पर्याय प्रायः समान अर्थवाची होते हैं ।]

✓ **उत्तम**—श्रेष्ठ । उत्कृष्ट । पवित्र । श्रेयस्कर । ललित ।
रुचिर । चारु । कान्त । शोभायुक्त । शोभित । मनोरम । मञ्जु ।
मंजुल । सुष्ठि (सुठि) । सुभग । सुदेश । सुष्ठु । सुहावन ।
सुधर । सुहाई । ललाम । नीक । सुन्दर । रुचिकर । सरस ।
कल । वर । प्रकृष्ट । लुबीला । कलित । प्रमुख । प्रधान । मुख्य ।
वर्य्य । प्राड्य । प्रवर्ह । भद्र । रूर ।

✓ **भयंकर**—उग्र । दारुण । भीषण । भीष्म । घोर । भीम ।
भयानक । प्रतिभय । रौद्र । तीव्र । कराल । विकराल । भैरव ।
भयक । दारुण ।

त्यागी—विरक्त । वैरागी । निस्पृह । विरागी । अतीत ।
निलोप ।

आलसी—मंद । बुद । अलस । अनुष्ण । शीतक ।
सालस । परिमृज ।

लम्बा—लम्ब । प्रलम्ब । दीर्घ । सुदीर्घ । दीर्घकाय ।

नाटा—ठिगना । हस्व । [अत्यन्त नाटे को 'बौना' या
'वामन' कहते हैं]

मोटा—तुंदिल । पीन । पीवर । स्थूल । अंसल । मांसल ।
पृथुलाङ्ग ।

पतला—कृश । कृशांग । दुर्बल । क्षीणकाय । निर्बल ।
हीनाङ्ग । तनु । तन्वंग ।

आरोग्य—स्वस्थ । रोगहीन । पुष्ट । दृढ़ । (तन्दुरुस्त) ।

✓रोगी—रुजी । व्याधिग्रस्त । रुग्ण । क्षीण । सामय ।
आतुर । विकृत । ग्लान । म्लान । मन्द । अभ्यान्त । अभ्यमित ।
व्याधित ।

अन्धा—अन्ध । नेत्रहीन । अनेत्री । अदृक् । सूर ।

काना—काण । एकाक्ष ।

बहिरा—बधिर । अश्रुत । एढ़ । कल्ल । श्रवणापटु ।
उच्चैःश्रव ।

गूँगा—मूक । वाक्यरहित । अवाक् । चुप्पा ।

कुबड़ा—कुब्ज । कुबरा । गडुल ।

नाक-कटा—नकटा । अनासिकी । बिगत नासिकी ।

बड़े कानवाला—दीर्घकर्ण । वृहत्कर्ण । लम्बकर्ण ।

कानकटा—बूचा । खण्डकर्ण । लघुकर्ण ।

लम्बी भुजावाला—दीर्घबाहु । आजानुभुज ।

छोटी भुजावाला—दूँठा । डूँठा । कुकर ।

हाथ-कटा—ल्लो । हथकट्टा । शोण ।

लँगड़ा—पंगु । पंगुल । अपंग । खंज । खोरा ।

सुन्दर—(देखो पृष्ठ १६७ 'उत्तम' शब्द)

कुरूप—दर । कुत्सितरूप । बदसूरत । कदाकार । भदेस ।
कुडौल ।

कठोर—दृढ़ । पुष्ट । जठर । कठिन । कड़ा ।

कोमल—सरल । सुकुमार । मृदु । मृदुल । मुलायम ।
नरम ।

साँवला—श्याम । नील । कृष्णवर्णी । श्यामल । काला ।
असित । मेचकवर्णी ।

गोरा—गौर । धवल । गौराङ्ग ।

सफेद—उज्ज्वल । सित । श्वेत । शुभ्र । शुक्ल । पांडुर ।
अर्जुन । धवल । अवदात ।

लाल—रक्त । अरुण । आरक्त । लोहित (रोहित) ।
शोन । रुधिराभ ।

पीला—पीत । कपिस । पिङ्ग । पिगल । कपिल । गौर ।
पिसंग । सुपीत । हरिद्राभ ।

चित कबरा—कर्बुर । चित्रक । कद्रू । कर्मर । कल्माषक ।

हरा—हरित । पालास । कपि । हरे ।

छोटा—लघु । सूक्ष्म । ह्रस्व । अल्प । स्वल्प । क्षुद्र ।
न्यून । हीन । तुच्छ । ओछा । ऊन ।

बड़ा—दीर्घ । विशाल । बृहत् । विराट । महा । गुरु ।
गरु । ज्येष्ठ (जेठ) । श्रेष्ठ । बड़र (बड़) । महत् । वृद्ध ।

सूक्ष्म—तनु । अणु । त्रुटि । लवलेश । कण । क्षुल्लक ।
कृश । अनाक । स्तोक । श्लक्ष्ण । अल्प । रंचक ।

नया—नवल । नूतन । प्रत्यग्र । अभिनव । नव । नव्य ।
नवीन ।

पुराना—पुरातन । प्राचीन । पुराण । चिरन्तन । दिनी ।
चिरकालिक ।

थोड़ा—किंचित् । लेश । कण । रंच । रचिक । थोर ।
थोरिक । कछु । कछुक । क्षुद्र । लघु । अणु । अल्प । परिमित ।
मित । मर्यादित । दभ्र ।

[नोट—‘छोटा’ शब्द के सभी पर्याय ‘थोड़ा’ अर्थ के
बोधक होंगे ।]

बहुत—अपार । अधिक । ढेर । भूरि । अति । अत्यन्त ।
अपरिमित । निस्सीम । असीम । अमर्यादित । बेहद । अतिशय ।
भृश । अत्यर्थ । उद्गाढ़ । तीव्र । नितान्त । गाढ़ । प्रगाढ़ ।
हृद । अतीव । विशेष । प्रभूत । प्रचुर । बहुल । विपुल । अनेक ।
निबिड़ । घन । निपट । नाना । अदभ्र । अमित । प्रचण्ड । भूय ।
भूयिष्ठ । प्राज्य । अकुण्ठ । असंख्य । अगणित ।

पूर्ण—अशेष । अखण्ड । कृत्स्न । अन्नक । सर्व । पूरा ।
निश्शेष । अखिल । निखिल । समस्त । सकल । कुल । समग्र ।
सम्पूर्ण । सारा (सारी) । सब । सान्त । निष्पन्न ।

आधा—अर्द्ध । अर्धांश । अर्द्धा । (निष्फ) ।

चौथाई—पाद । चतुर्थांश । चौथ । (चहारम) ।

चिकना—चिकण । स्निग्ध । पिच्छिल । सस्नेह । स्नेह ।
सनेह ।

सूखा—रूक्ष । खुरखुरा । खदरा । खसखसा । खुरदुरा ।

टेढा—कुटिल । खर्व । वक्र । अराल । कुञ्चित । भग्न ।
उर्मिमत् । नत । बेह्लित । जिह्वा । अविद्ध ।

पवित्र—मेध्य । पूत । निर्मल । अमल । शुद्ध । शुचि ।
प्रयत् । पावन । पुण्य । विमल । विशुद्ध ।

अपवित्र—अशुद्ध । मलिन । मलीन । कचर । दूषित ।
अशुद्ध । अशुचि । अशौच । अपावन । पाप । मली ।

आतिथि—पाहुन । मेहमान । अभ्यागत । गृहागत ।

धूर्त—दम्भी । कितव । व्याजी । छली । छद्मी । जिह्वा ।
प्रिय—इष्ट । अभीष्ट । इच्छित । वाञ्छित । ईप्सित ।
प्यारा । अभिलषित । अनुकूल । अपेक्षित । आप्तुमिष्ट ।

पुरवासी—नागरिक । नगरवासी । शहरी । पौर । प्रज ।
प्रजन ।

ग्रामवासी—ग्रामीण । गवॉर । गवईहा । देहाती ।
ग्राम्य । ग्रामेयक । ग्रामस्थ ।

बटोही—पथी । पंथी । यात्री । पथिक । पाथ । अध्वग ।
अध्वनीन । अध्वन्य । मार्गी । राही । पान्थ । गन्तु । पथक ।
यात्रिक । पाथिल ।

थका—हारा । शिथिल । श्रमित । श्रान्त । श्रमी । प्रयासी ।

घृणित—घिनहा (स्त्री० घिनही) । घिनावन् । घिन ।
 -वीभत्स । जुगुप्सित । विकृत ।
अद्भुत—विचित्र । चित्र । विस्मित । अजीब ।
शान्त—समथ । सुचित्त । समत्व । शमित । श्रान्त ।
 -जितेन्द्रिय । शमान्वित । उपशमित । दान्त ।
वीर—शूर । विक्रान्त । गण्डीर । तरस्वी ।
सधा—सज्जन । सुहृत् । अवक्र । शुद्ध । प्रगुण । ऋजु ।
 -सरल चित्त । साधु । सौम्य । शान्त ।
पागल—विक्षिप्त । मतिभ्रष्ट । बौराह । बावला ।
मौनी—अवक्ता । अभाषी । चुप्पा । अनबोलता ।
 -तूष्णीम्भूत । मौनव्रती । मौनयुक्त । नीरव । तूष्णीक ।
दानी—दाता । उदार । दानशील । वदान्य । महान् ।
 महाशय । दयालु । देनेवाला । दानकर्त्ता । दातार । वदन्य ।
 बहुप्रद । दानशौण्ड । दानसागर । दारु । मुचिर । दानीय ।
सूम—कृपण । कंजूस । नीच । क्षुद्र । अनुदार । ठस ।
 -कदर्य । अदाता । किम्पच । मन्द । कीकट । मितम्पच ।
दानपात्र—दातव्य । दानार्ह । देनेयोग्य ।
मुख्य—प्रमुख । प्रधान । प्रवर । उत्तम । वरेण्य । प्रग्य ।
 अग्र । अग्र्य । अग्रिय । सुतज्ञ । प्राग्य । प्रवर्ह । प्रवेक ।
 -अनवरार्थ्य । श्रेयान् । श्रेष्ठ ।
मतवाला—मदी । मत्त । उन्मत्त । क्षीव । उत्कट ।
 -शौंड ।

पराधीन—अधीन । परतन्त्र । अधीन । नाथवान् ।
परवश ।

दयावान्—दयालु । कृपालु । कारुणिक । सूरत ।

अपकारी—अनुदार । कृतघ्न । दुर्वृत्त । कुकर्मी । पीडक ।
अनिष्टसाधक ।

क्षमाशील—सहिष्णु । तितिक्षु । क्षमित । क्षम । सहन ।
क्षमावान् । क्षमी । शान्तियुक्त । क्षमिता । शक्त । सह । प्रभूष्णु ।

क्षमा-रहित—अक्षम । असमर्थ । क्षमाशून्य । अशक्त ।

अधीन—निम्न (निधिन वा निरधिन) । आयत्त । गृह्यक ।
अस्वच्छन्द । अधीन । परतन्त्र । परवश ।

अगुप्ता—अग्रसर । पुरस्तर । प्रष्ट । पुरोगम । पुरोगा ।
अग्रगामी ।

अशकुन—अपशकुन । असगुन । दुःशकुन । अशुभ ।
अमंगल ।

उचित—युक्त । ग्राह्य । श्रेयस्कर । योग्य । परिमित ।

अनुचित—अयुक्त । अग्राह्य । अयोग्य । अपरिमित ।

नंगा—नग्न । वस्त्रहीन । दिगम्बर । अनावृत्त ।

हिंजड़ा—नपुंसक । क्लीब । नामर्द । शंढ । वर्षवर ।

शत्रु—विपक्षी । दुर्हृद् । रिपु । वैरी । आरात् । द्वेषी ।
परिपन्थी । शात्रव । द्विषण । सपत्न । कृतघात । अहित ।
प्रतिपक्षी । अपक्ष । अमित्र । (दुश्मन) ।

मित्र—सखा । सुहृत् । सहचर । संगी । संघाती । संघी ।
-साथी । भेली । हित । हितू । हितैषी । सपक्ष ।

सखी—सहेली । संगिनी । गुड्याँ । सजनी । आली ।
-अली । सैरंध्री । सहचरी । वयस्था । हितू ।

नेता—संचालक । अगुआ । अग्रसर । मुखिया ।

कुलीन—महाकुल । कुलश्रेष्ठ । आर्य्य । सभ्य । भद्र ।
-सज्जन । साधु । कुल्य । अभिजात । कौलेयक । जात्य । कौलेय ।
-कुलज । साधुज । सुकुल । सत्कुलज । सद्गंज । उत्तम ।



२. सम्बन्धी वर्ग

✍ **माता ***—अम्बा । अम्बिका । अम्बालिका । सवित्री ।
जनी । जनित्री । जनयित्री । प्रसू । जननी । अक्का । अम्मा ।
माय । माई । मा । मातु ।

✍ **पिता †**—तात । जनक । वप्पा । जनयिता । जन्मद ।
गुरु । जन्य । जनिता । वीजी । वप्प । सविता । बाप । बापू ।
(बाबू) । बप्पा ।

✍ **पति ‡**—अधिपति । स्वामी । ईश्वर । ईश । ईशिता ।

* सात प्रकार की मातायें—१. जन्मदात्री माता, २. गुरु की स्त्री,
३. ब्राह्मणी, ४. राजपत्नी, ५. गौ, ६. दूध पिलानेवाली वा सेवा करनेवाली
धाय, तथा ७. मातृभूमि ।

† सात प्रकार के पिता—“कन्यादाताऽदाता च, ज्ञानदाताऽभयप्रदः ।

जन्मदो मन्त्रदो ज्येष्ठ भ्राता च पितरः स्मृताः॥”

(ब्रह्मवैवर्त पुराण श्रीकृष्णजन्मखण्ड, अध्याय ३५)

१. स्वसुर, २. अन्न देनेवाला (पालनकर्त्ता), ३. ज्ञान देनेवाला, -गुरु,
४. अभय देनेवाला, ५. जन्म देनेवाला, ६. मन्त्रदीक्षा देनेवाला, ७ वडाभाई ।

‡ साहित्यशास्त्रानुसार पति चार प्रकार के माने गये हैं—१. अनुकूल,
२. दक्षिण, ३ धृष्ट और ४. शठ ।

अधिभू । नायक । नेता । प्रभु । परिवृद्ध । अधिप । धव ।
नेतार । भरता । भर्त्ता । भरतार (भतार) । इन्द्र । आर्य । विभु ।
इन । (खसम) ।

✓ पत्नी—पाणिगृहीता । पाणिगृहीती । द्वितीया । भार्या ।
सहधर्मिणी । सहभार्या । जाया । दारा । सहर्मिणी । दार ।
धर्मचारिणी । गृहिणी । सहचरी । गृह । क्षेत्र । बधू । बहू । जनी ।
परिग्रह । ऊढ़ा । कलत्र । मेहर । दयिता । प्राणप्रिया । वल्लभा ।
परिणीता । भूयिष्ठ । ग्रेहिणी । कुलवंती । कुलत्री । त्रिया । तिय ।
तिया । वामाङ्गी । वामा । आङ्गणा ।

✓ पुत्र—आत्मज । तनय । सूनु । सुत । तनुज । तनूज ।
अपत्य । दायाद । कुलाधारक । नन्दन । आत्मजन्मा । दारक ।
स्वज । नन्द । बेटा । पूत । ज ।

✓ पुत्री—कन्या । कन्यका । आत्मजा । दुहिता । तनुजा ।
सुता । अपत्या । पुत्रका । पुत्रिका । स्वजा । जा । तनया ।
तनजा । नन्दिनी ।

✓ पौत्र (पुत्र का पुत्र)—नप्ता । नाती । पोता । पोतड़ा ।
पुत्रात्मज ।

✓ पौत्री (पुत्र की पुत्री)—नप्ती । नातिनी । नातिन ।
पोती । पोतड़ी । पुत्रात्मजा ।

✓ नाती (पुत्री का पुत्र)—दौहित्र । कुतप । नात ।
(नवासा) ।

✓ नातिनी (पुत्री की पुत्री)—दौहित्रा । नातिन ।
(नवासी) ।

✍ भाई (सगा)—सहोदर । सोदर । समानोदर । सगर्भ । सहज । भ्राता ।

✍ भाई (ज्येष्ठ)—पूर्वज । अग्रज । अग्रिय । वर्य ।

✍ भाई (छोटा)—अनुज । कनिष्ठ । लघुभ्राता । यवीन । जघन्यज । जविष्ठ । अवर्य ।

✍ बहिन—भगिनी । स्वसा । सहोदरा । सहोदरी । बहनेली । (छोटी बहिन को—अनुजा । बड़ी बहिन को—जेष्ठो, जेठी वा अग्रजा कहते हैं) ।

✓ दादा (पिता के पिता)—पितामह । आर्यक । आज्ञा । बाबा ।

✓ दादी (पिता की माता)—पितामही । आजी । पिताम्ह

✓ चाचा—काका । ताऊ । कका । चचा । पितृव्य ।

✓ चाची—काकी । चची । ताई ।

बुआ—पितृष्वसा । फूआ । फूफी ।

फुफेरा भाई—पितृष्वसेय । पितृष्वस्रीय ।

फुफेरी बहिन—पितृष्वसेयी । पितृष्वस्रीयी ।

मौसी—मातृष्वसा । मासी । मातृभगिनी ।

मौसेरा भाई—मातृष्वसेय । मातृष्वस्रीय ।

मौसेरी बहिन—मातृष्वसेयी । मातृष्वस्रीयी ।

नाना—मातामह । मातृमह । मातृपिता । नन्ना ।

नानी—मातामही । मातृमही । मातृमाता । आई । मातृ-महपत्नी ।

मामा—मातुल । मामू ।
 मामी—मातुलानी । माई । मातुला । मातुलपत्नी ।
 भाञ्जा—भगिन्य । भैने । भगिना । भगिनेय । स्वस्रीय ।
 बहनौता । भगिनिज ।

भाञ्जी—भगिन्या । भैने । स्वस्रिया । भगिनिजा ।
 भतीजा—भ्रातृक । भ्रातृज । भ्रातृसुत । भतीज । भ्रातृव्य
 भतीजी—भ्रातृजा ।
 भौजाई—भ्रातृजाया । भ्रातृजाया । भ्रातृभार्या । भाभी ।
 भौजी । सहजग्रह । भ्रातृग्रेहिनी । प्रजावती ।

बान्धव—स्वजन । कुटुम्ब । ज्ञाति । गोत्रज । बन्धु ।
 परिवार । सगोत्र । गोती । स्व । सकुल्य । समानोदक । अंशक ।
 गंध । दायाद ।

पतोहू (बहू)—पुत्रवधू । श्रुषा । वधू । बहू । बहुरिया ।

सास—श्वश्रू । [पति वा पत्नी की माता]

सात्ता—श्वशुर्य । श्याला । श्यालक । [पत्नी का भाई]

साली—श्याली । [पत्नी की बहिन] ।

बहनोई—ग्रामहासक । भगिनीपति । बहनेऊ ।

[प्राकृत में—बहिणीवइ]

दामाद—जामाता । दमाद । जामाई । जमाई (जँवाई व
 जँवाय) । दुहितृपति ।

देवर—देवृ । पतिभ्राता ।

ननद—नन्द । ननदो । ननान्दा । नन्दिनी । नन्दा ।
पतिस्वसा । ननान्दारि ।

जेठ (स्त्री के पति का बड़ा भाई)—जेठउत ।
ज्येष्ठ । जेठउर । भसुर ।

पति-पत्नी—दम्पति । जायापती । भार्या-पती ।

सौत—सपत्नी । समानपतिका । सबत । सौतिन ।

उपपति—जार । यार ।

उपपति से उत्पन्न पुत्र *—जारज । कुण्ड । गोलक ।
दोगला । संकर ।

गोद बैठाया हुआ पुत्र—दत्तक पुत्र । पोष्य पुत्र ।
औरस । पोसपूत । (मुतवन्ना) ।

सन्तान—सन्तति । गोत्रजनन । अपत्य । लड़केवाले ।
बालबच्चे । (औलाद) । प्रजा । तोक । प्रसूति ।

समान अवस्था के—समवयस्क । स्निग्ध । सवय ।
समौरिया ।



* पति के जीते हुये उपपति से उत्पन्न पुत्र को 'कुण्ड', तथा पति के मर जाने पर उपपति से उत्पन्न पुत्र को 'गोलक' कहते हैं ।

३. जाति वर्ग

जाति—कुल । आस्पद । परिवार । कुटुम्ब । खानदान ।
बिरादरी । गोत्रिय । वंश । श्रेणी । वर्ग । पंक्ति ।

[नोट—जाति का 'जात' और पङ्क्ति का 'पाँत' तथा गोत्रिय का 'गोती' अपभ्रंश रूप हैं । अतः ये भी जाति के पर्याय हैं ।]

ब्राह्मण*—द्विज । विप्र । कुलश्रेष्ठ । अग्रजन्मा । भूसुर ।
द्विजाति । भूदेव । कुदेव । बाढ़व । सूत्रकण्ठ । ज्येष्ठवर्ण । मैत्र ।
अग्रजातक । द्विजन्मा । वल्कज । वेदवास । नय । गुरु । ब्रह्मा ।
षट्कर्मा । द्विजोत्तम । शर्म । वामन । पंडित । महाराज ।

[नोट—पृथ्वी शब्द के पर्याय के साथ 'देव' शब्द जोड़ देने से भी ब्राह्मण का बोधक होगा ।]

ब्राह्मण-पत्नी †—ब्राह्मणी । बाभनी । पंडिताइन ।
महाराजिन ।

* ब्राह्मणों के छ कर्म—अध्ययन, यजन (यज्ञ करना) और दान—धर्म के विचार से, तथा अध्यापन, याजन (यज्ञ कराना) और दान लेना—व्यवसाय के विचार से हैं ।

† पंडिताइन का अर्थ है पंडित की स्त्री; किन्तु पंडिता का अर्थ है जो स्त्री स्वयं विदुषी हो, वह चाहे पंडित की स्त्री हो वा न हो ।

✓**क्षत्री**—क्षत्रिय । मूर्द्धाभिषिक्त । राजन्य । बाहुज । विराट ।
क्षत्र । द्विजलिङ्गी । राजा । नाभि । नृप । मूर्द्धक । पार्थिव ।
सार्वभौम । वर्म । विराज । बाहुज ।

क्षत्री-पत्नी—वीरस्तुषा । वीरमाता । वीरपत्नी । वीरा ।
राजपत्नी । रानी । महाराणी । क्षत्रिया । क्षत्रियाणी । क्षत्रियी ।
क्षत्राणी । क्षत्रिय-पत्नी ।

[नोट—पंजाब में क्षत्री जाति को 'खत्री' तथा क्षत्राणी को 'खतरानी' कहते हैं ।]

वैश्य—वणिक । बनिया । बनजकार । विस । ऊरठ्य ।
ऊरुज । अर्य । भूमिस्पृक् । द्विज । विट् । भूमिजीवी । व्यवहर्ता ।
वार्त्तिक । पणिक । साहु । मोदी । गुप्त । श्रेष्ठ (सेठ) । श्रेष्ठी (सेठी) ।

वैश्य-पत्नी—बनियाइन । सहुआइन । मोदिन (मोदियाइन) ।
वैश्या । अर्याणी । अर्या । अर्यी ।

शूद्र—अवरवर्ण । वृषल । जघन्यज । पादज । दास ।
अन्त्यज । अन्त्यजन्मा । जघन्य । अन्त्यवर्ण । पञ्ज । चतुर्थ ।
उपासक । सेवक । सूद । नीच ।

शूद्र-पत्नी—शूद्रा । सूदिन । अन्त्यजा । उपासिका ।
सेविका । दासी ।

चाण्डाल *—अन्त्यज । अस्पृश्य । श्वपच । जनंगम ।
पुक्स । दिवाकीर्ति । मातंग । प्लव । अछूत ।

* चाण्डाल जाति के अन्तर्गत—कोल, किरात, शबर, भील, केवट,
पासी, सुसहर, भंगी, डोम, चमार, घोवी, भर, दुसाध, व्याध, नट, वेणुक,
(बाँस फाटने वाले) आदि । इन्हें अस्पृश्य वा अन्त्यज भी कहते हैं ।

✓ धोबी—रजक । निर्णेजक । शौचेय । कर्मकीलक ।
धावक । बरेठा ।

धोबी की स्त्री—रजकी । रजकपत्नी । धोबिन ।
निर्णेजकी । शौचेयी । बरेठन । वरेठिन ।

✓ चमार—चर्मकार । चर्मकारक । चर्मक । त्वचक ।
चर्म्मर । चर्म्मरु । कुरट । पादुकाकार ।

✓ चमार की स्त्री—चमारी । चमारिन । चमाइन ।
चर्मकारिणी ।

✓ भंगी—मेहतर । चूहड़ा । धरकार ।

✓ धुनियाँ—धुनका । बेहना ।

✓ जुलाहा—तन्तुवाय । तन्तुक । कुविन्द । कोरी ।

✓ अंग्रेज—फिरंगी । गौराङ्ग । गोरा । आङ्गलदेशी ।
आङ्गलीय ।

✓ मुसलमान—यवन । मुच्छ । तुर्क (तुरुक) । इस्लामी ।
मुहम्मदी ।

कोलकिरात *—कोलि । शबर । भील । किरात । व्याध ।

✓ [किरातकी स्त्री को-किराती, किरातिनी, किरातिन कहते हैं ।]

* ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार लेट नामक पुरुष और तीवर नाम की कन्या से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति है जो छोटा नागपुर से मिरजापुर के जङ्गलों तक फैली हुई पाई जाती है । यह जंगली जाति बहुत प्राचीन काल से है । भील, शबर, किरात आदि इसी के भेद से जान पड़ते हैं ।

✓लोहार—लोहकार । लोहकारक । व्योकार । अयस्कार ।
कर्मकार । कर्मर ।

✓बढ़ई—काष्ठकार । तक्षी । वर्धकी । स्यन्दनकार । तरुभेदी ।
सूत । सूत्रकार ।

✓कहार—स्कंधभार । गोंड । महरा । पनहारा । पनभरा ॥

✓कहार की स्त्री—पनहारी । पनमरी । गोड़िन । महरी ॥
कहारी । कहारिन ।

✓नाई—दिवाकीर्ति । मुंडी । क्षौरी । अन्तवसायी । क्षुरी ।
नापित । क्षौरकार । नाऊ । छत्री । वात्सीसुत । नखकुट्ट । ग्रामणी ॥
चन्द्रिल । मुण्ड । भाण्डपुट । न्यायी । नाऊ ठाकुर ।

✓बारी—पत्राली । पत्राजीवी ।

✓ठठेरा—शौल्बिक । ताम्रकुट्ट । ताम्राजीवी । तमेरा ।
कंसकुट्ट ।

✓अहरि—आभीर । गोप । ग्वाल । गोसंख्य । गोपाल ॥
गोदुह । ब्रलव । यादव ।

✓अहीर की स्त्री—आभीर पत्नी । अहिरिन । गोपी ।
गोपस्त्री । आभीरी । महाशूरी ।

✓गड़ेरिया—अजपोषी । अजी । जावाल । अजाजीवी ।

✓कुम्हार—कुंभकार । घटक । घटजनन । कुलाल ।

✓कोइरी—काछी ।

[नोट—कोयर + ई = सागपात बेचने वाली जाति ।]

✓कुरमी—कुनबी । कूर्मवंशी । कूर्मीय ।

✓ सोनार—स्वर्णकार । रुक्मकार । कलाद । नाडिंधम ।
पश्यतोहर ।

✓ तेली—धूसर । तैलकार । चाक्रिक ।

✓ कलवार—कलाल । कलार । शुण्डी । शौण्डिक ।

✓ छीपी—रंगरेज । छोपा । रंगक । रंगी । रंगकर ।
रंगाजीवी । (कपड़ा छापने वाले)

✓ दरजी—सूचिक । सौचिक । सौचि । तुन्नवाय । छिपी ।
सूत्रभिद ।

✓ चुड़िहाग—लाक्षक । आलक्तक । लखेरा । मनिहारा ।
(छो० मनिहारिन) ।

[नोट—ये ही पर्याय लाह से बने हुये आलता, महावर,
रंग आदि बनाने वालों के लिये लग सकते हैं ।]

✓ माली—मालाकार । मालाकर । मालिक । पुष्पाजीवी ।
बनार्चक । पुष्पलाव । पुष्पलावक ।

माली की स्त्री—मालिन । मालिनी । पुष्पलावो । मालिकी ।

✓ बहेलिया—व्याध । मृगवधाजीव । मृगयू । लुब्धक ।
द्रोहाट । मृगजीवन । बलपांशुन । शिकारी । आखेटी । अहेरी ।
चिड़ीमार । मृगहा । जन्तुहा । वागुरिक । जीवान्तक । जालिक ।
शाकुनिक ।

✓ केवट—[देखो पृष्ठ ५६ जलादि वर्ग ।]

✓ नट—नर्तक । रङ्गावतारक । रङ्गजीव । भरतपुत्रक ।
शैलूष । जायाजीव । शैलालिन । कृशाश्वी ।

✓ **भीट**—बन्दी । मागध । मगध । स्तुतिपाठक । बन्दीजन ।
लम । बैतालिक । बैताल । भट्ट । पशबन्ध । प्रातर्गेय । सूत ।
भधुक । चारण ।

✓ **कसाई**—मांसक । हिंसक । वैतंसिक । कौटिक । मांसिक ।
कौटिकिक । मांसविक्रेता ।

✓ **राजगिर**—वास्तुकार । गृहकार । गृहकृत । राज ।

✓ **कारीगर**—शिल्पी । शिल्पकार । कारु । शिल्पकी ।

✓ **चित्रकार**—चित्रकर । रंगी । चित्रक । (मुसौव्वर) ।

✓ **तमोली**—ताम्बूली । बरई । ताम्बूलिक ।

✓ **हलवाई (रसोइया)**—सूपक । सूपकार । बल्लव ।
आरालिक । आन्धसिक । सूद । गुण । पाचक । पाकुक ।
भक्ष्यङ्कार । पाककर्त्ता । औदनिक । (बाबरची) । रसोइया । स्वार ।

[नोट—ये नाम सब प्रकार की रसोई बनाने वालों के हैं ।]

✓✓ **किसान**—कृषक । हालक । क्षेत्री । कर्षक । कृषिक ।
खेतिहर । कृषीबल । कृषिजीवी ।

✓ **गवैया**—गायक । गाता । गाथक । गायन । कथक ।

✓ **बजानेवाले**—बादक । उपवाद्य । महावाद्यकी । वार्तवह ।
वेणुपिक । वंशस्फोट ।

✓ **बंशी बजानेवाले**—वैणविक । वेणुध्व ।

✓ **मृदंग बजानेवाले**—मार्दंगिक । मौर्जिक । मृदंगिया ।
भखावजी । तबलची । ढोलकी ।

नाचनेवाले पुरुष—नर्तक । नट । पोटगल । चारण ।
केलक । तालरेचनक ।

नाचनेवाली स्त्री—नर्तकी । नटी । चारणी । लस्या ।
लसिका ।

वेश्या—वारस्त्री । गणिका । पतुरिया । रंडी । (कस्बी) ।
वारवधू । कंचनी । वाराङ्गना । रामजनी । सामान्या । (तवायफ) ।
रूपाजीवा । क्षुद्रा । शालभञ्जिका । झर्झरा । शूला । वारविलासिनी ।
भण्डहासिनी । लज्जिका । वसुन्धरा । कुम्भा । कामरेखा । बर्वटी ।
पण्याङ्गना । पणाङ्गना । भुजिष्या । भोग्या । सर्ववल्लभा । पुरवामा ।
मङ्गलामुखी ।

वेश्याओं के गुरु—पीठमर्द । रामजना । (उस्तादजी) ।
कथक ।

महन्त—मठाधीश । पीठाधीश । अध्यक्ष । कुलपति ।

पुरोहित (पण्डा)—पुरोधा । पोधा । पौरोहित ।
पण्डा । सख्यावान । प्रोहित ।

पहरेदार—ड्योढ़ीदार । प्रहरी । पौर । प्रतीहार ।
द्वारपाल । दौवारिक । स्थितदर्शक । वेत्रक । वेत्रधार । द्वारस्थ ।

दूत—संदेशहर । धावन । धापक । चर । चार । प्रणिधि ।
चटुक । अपिसर्पक । संदेशिया ।

दास—सेवक । भृत्य । किकर । चेटक । गोप्यक । प्रैष्य ।
नियोज्य । भुजिष्य । परिचारक । प्रेष्य । प्रेष । प्रैष । परिकर्मा ।

परिचर । सहाय । उपस्थाता । अभिसर । अनुग । अनुचर ।
अनुगामी । वृषल ।

—दासी—परिचारिका । किंकरी । अनुचरी । अनुगामिनी ।
सहाया । भृत्या । चारि । वृषली । विधिकरनी । बाँदी ।

—बाजीगर (जादूगर)—ऐन्द्रजालिक । प्रतीहारक ।
इन्द्रजालकारक । मायाकारक । कौसुतिक । मायावी । व्यंसक ।
मायी । मायिक ।

—चोर—चौर । तस्कर । दस्यु । साहसिक । एकागारिक ।
मोषक । मलिम्लुच । पाटच्चर । रात्रिचर । परास्कंदी । गूढनर ।
प्रतिरोधी । स्तेन । स्तैन्य । प्रच्छन्नजन । कुम्भिल । खनक ।
शङ्कितवर्ण । खानिक । तृपु । तक्का । रिम्बा । रिक्का । विहाया ।
तायु । वनर्गु । वृक । अद्यशंस ।

✓ ठग—छली । धूर्त । धोखेबाज । वंचक । प्रतारक ।
चाइयों । गिरहकट ।

—कैदी—प्रतिग्रह । प्रग्रह । उपग्रह । बन्दी ।

—जुआरी—सभिक । समीक । द्यूतकार । अक्षधूर्त ।
द्यूतक्रीडक । धूर्त । अक्षदेवी । कितव । द्यूतकृत । ज्वारी ।

—कवि (पण्डित)—पण्डित । कोविद । सुधी । कवीश ।
कवीन्द्र । कविराज । छान्दस । कृति । श्रोत्रिय । धीमान् । प्राज्ञ ।
मनोषी । विदग्ध । ज्ञ । ज्ञानी । सूजान । सूरि । विचक्षण । सत् ।
आचार्य । दूरदर्शी ।

—लेखक (मुहर्रिर)—अक्षरचण । लिपिकर । अक्षरचंचु ।

✓ ज्योतिषी—कार्तान्तिक । मौहूर्तिक । सांवत्सर । दैवज्ञ ।
गणक । मौहूर्त । विज्ञ ।

✓ शास्त्री—शास्त्रज्ञ । तान्त्रिक । तत्त्वज्ञ । ज्ञात । सिद्धान्त ।

✓ नौकर—सेवक । दास । टहलुआ । अनुजीवी । अर्थी ।
चाकर ।

✓ न्यायाधीश—अक्षदर्शक । प्राड्विवाक । न्यायक ।
(मुन्सिफ) । धर्मराज ।

धर्माध्यक्ष—अक्षपाठक ।

✓ व्यास—कथावाचक । सूत । पौराणिक ।

यज्ञकर्त्ता—याज्ञिक । याजक ।

वेदान्ती—ब्रह्मवादी । तत्त्ववादी ।

नैयायिक—तार्किक । अक्षपाद ।

मीमांसज्ञ—जैमिनीय ।

वेदपाठी—श्रोत्रिय । छान्दस । वैदिक । श्रोत्री ।
वेदाध्यायी ।

✓ शिक्षक—पाठक । उपाध्याय । अध्यापक । उपदेशक ।
गुरु । आदेशक । आदेश । उपदेश । तत्त्वबोधक ।

✓ अध्यापिका—उपाध्याया । उपाध्यायी । गुरुआनी ।
आचार्य ।

✓ शिष्य—शैक्ष । छात्र । दीक्षित । विद्यार्थी ।

५ वैद्य *—रोगहारी । अगदङ्कार । भिषक् । चिकित्सक ।
आर्युवदी ।

विष-वैद्य—गारुड़िक । विषघ्न । विषमारक । जाङ्गलिक ।

महाजन—श्रेष्ठि । धनी । सभ्य । प्रमुख । साधु ।

हाकिम—अधिकारी । शासक । शास्ता । शासनकर्त्ता ।
देशक । शासिता ।

जासूस—चर । गुप्तचर । स्पश । चार । प्रणिधि ।
अपसर्प । गूढपुरुष । यथार्हवर्ण ।

चक्रवर्त्ती राजा—सार्वभौम । सम्राट् । जगदीश्वर ।

(‘सम्राट्’ का स्त्रीलिङ्ग ‘सम्राज्ञी’ है)

महाराजाधिराज—अधिराज । अधीश्वर । राजराजेश्वर ।

राजा—राज । नृप । भूप । पार्थिव । महीपति ।
नृपेश । नरपति । नरपाल । राजेश्वर । मण्डलेश्वर । नरेश ।
भुआल । भूपति । अवनीपति । अवनीश । क्षितिपाल । प्रजापति ।
पार्थ । नाभि । दण्डधर । भूभुक् । स्कन्ध । राट् । क्षमाभृत् ।

पटरानी—राज्ञी । महारानी । रानी । महिषी ।
अर्धासनी । राजपत्नी ।

* ‘वैद्य’ नाम की एक जाति जो बङ्गाल में अधिक है, अपने को
‘अम्बष्ठ’ का वंशज मानती है । चार प्रकार के वैद्य माने गये हैं, यथा—
१. रोगचिकित्सक, २. विषचिकित्सक, ३. शल्यचिकित्सक (सर्जन),
४ कृत्याहार ।

॥ मंत्री—सचिव । अमात्य । धीसचिव । धीसख । दीवान ।
सामवायिक । वजीर ।

पारिषद (दरबारी)—सभासद । सभ्य । सभास्तार ।
सामाजिक । परिषद्वल । पर्षद्वल । पार्षद । परिसभ्य । साधु ।

॥ सेना*—चमू । ध्वजिनी । वाहिनी । पृतना । अनीकिनी ।
चरुथिनी । बल । सैन्य । चक्र । अनीक । वाहना । पूतना ।
गुल्मिनी । वरचक्षु ।

॥ सिपाही (योद्धा)—सैनिक । भट । योद्धा । समवेत ।
योध । योद्धार । प्रहरी ।

॥ सेनापति—सेनानी । वाहिनीपति । सेनाध्यक्ष । सेनप ।
चमूपति । चमूप ।

॥ ग्यादा (सैनिक)—पद्ग । पदाति । पत्ती । पद्ग ।
पदिक । पादात ।

॥ रथी (सैनिक)—स्यन्दनारोह । रथारूढ़ । रथारोही ।

॥ घोड़सवार—अश्वारोही । तुरगारूढ़ । सवार । सादी ।
अश्ववेह । अश्ववार । तुरगी ।

॥ महावत—फीलवान । हाथीवान । गजारोह । हस्तिपक ।
निषादी । पद्मीक । आधोरण । इभपालक । गजाजीव ।

* सेना चार प्रकार की होती है १. पैदल, २. घोड़सवार, ३. हाथी-
सवार, ४. रथी । चारों प्रकार की संयुक्त सेना का नाम “चतुरङ्गिनी”
सेना है ।

कोचवान (सारथी)—नियन्ता । प्राजिता । सूत ।
दक्षिणस्थ । सारथी ।

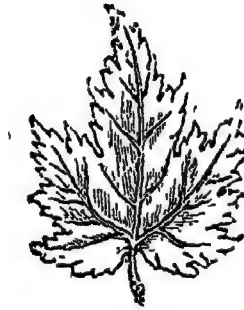
ब्रह्मचारी—व्रती । संयमी । यमी । बटु । वर्णी ।
प्रथमाश्रमी ।

गृहस्थ—गृही । कुटुम्बी । ज्येष्ठाश्रमी । गृहमेधी । स्नातक ।
गृहपति । सत्री । गृहयाय । गृहाधिप । गृहायनिक ।

वानप्रस्थी—वैषानस ।

सन्यासी—(देखो स्वर्गादिवर्ग पृष्ठ २०।)

भिक्षुक—भिक्षाजीवी । भिखमंगा । मंगन । याचक ।
अर्थी । वनीयक । याचनक । मार्गण । भिक्षोपजीवी ।



४. भावादि वर्ग

प्रेम—रति । अनुराग । प्रीति । प्रियता । स्नेह । हार्द ।
राग । प्यार । लगन । रमण । आसक्ति ।

[नोट—शृंगार रस का स्थायी भाव]

शोक—मन्यु । शुच् । शोचन । खेद ।

[नोट—करुण रस का स्थायी भाव]

उत्साह—उद्यम । अध्यवसाय । सूत्र । उबाल । जोश ।
उमंग । उछाह । साहस ।

[नोट—वीर रस का स्थायी भाव]

भय—दर । त्रास । भीति । भी । साध्वस । प्रतिभय ।
आतङ्क । आशङ्का । डर । भिया । भयानक । भयङ्कर ।

[नोट—भयानक रस का स्थायी भाव]

क्रोध—कोप । अमर्ष । रोष । रिस । प्रतिघ । भीम ।
हेल । हर । हृणि । त्यज । भाम । एह । ह्वर । तपुषी । जूणि ।
मन्यु । व्यथि ।

[नोट—रौद्र रस का स्थायी भाव]

घृणा—घिन । (नफरत) ।

[नोट—वीभत्स रस का स्थायी भाव]

~~प्रशान्ति~~ शान्ति—शम । स्थिरता । प्रशम । उपशम । शमथ ।
प्रशान्ति । तृष्णाक्षय । निर्वेद ।

[नोट—शान्त रस का स्थायी भाव]

भक्ति *—भजनासक्ति । अनुराग । प्रेम । भजनरति ।

[नोट—‘रति’ के सभी पर्याय ‘भक्ति’ के अर्थबोधक हो सकते हैं, क्योंकि सेवक-सेव्य भावों में जो रति होती है, वही ‘उत्तम रति’ भक्ति कहलाती है ।]

त्याग—वैराग । निस्पृहा । अस्पृहा । निर्वेद । वर्जन ।

ग्लानि—क्षय । हर्षक्षय । नाश । शेष । मूर्च्छन । म्लानि ।

वात्सल्य—सौहार्द । स्नेह । हृदयद्राव ।

शंका—सन्देह । अनिर्णय । संशय । शक । त्रास । डर ।

डाह—राग । जलन । कुढ़न । ईर्ष्या । असूया । मात्सर्य ।

द्वेष—शत्रुता । वैर । विरोध । विद्वेष । खार । द्वेषण ।

श्रम—परिश्रम । मेहनत । उद्योग ।

श्रद्धा—आदर । प्रेम । सम्मान (गुरुजनों के प्रति प्रेम भाव) ।

मद—नशा । विकार । गर्व । अहङ्कार । मादकता ।

धीरज—धैर्य । ढाढ़स । धीरता । सन्तोष । मनस्थिरता ।
तोष । अचञ्चलचित्तता ।

* नवधा भक्ति—१. श्रवण, २. कीर्तन, ३. स्मरण, ४. पादसेवा,
५. अर्चन, ६. वन्दन, ७. दास्य, ८. सख्य, ९. आत्मनिवेदन ।

✓ **आलस्य**—मन्दता । मान्द्य । अलसता । तन्द्रा । आलस ।
कौसीद्य । अलस । कार्यप्रद्वेष । शीतक । अनुष्ण ।

✓ **दुःख (विषाद)**—विषाद । अवसाद । जड़ता । साद ।
मूर्खता । पीडा । विषण्णता । क्लेश । बाधा । व्यथा । कृच्छ्र ।
कष्ट । संकट । शूल । शोक । ग्लानि । दरद । करक । क्षोभ ।
खंभार । शाल । यातना । अमंगल । असमंजस । आर्त्त । पीर ।

✓ **चिन्ता**—चिन्तना । चिन्तन । आव्यान । चिन्तिया ।
आध्या । स्मृति । शोच (सोच) । (फिक्र) । विसूर । उद्वेग । ध्यान ।
भावना । उत्कण्ठा । विषाद । कातरता । भय । त्रास । अनमन ।

✓ **मोह (अज्ञानता)**—अज्ञानता । मूर्खता । समत्व ।
समता । माया । मूढ़ता । आज्ञानान्धकार ।

✓ **स्वप्न**—निद्रा । शयन । नीद । सपन ।

✓ **ज्ञान**—बोध । विबोध । अबोध । चेतनता । प्रकाश ।

✓ **स्मृति**—स्मरण । चिन्तन । सुधि (सुध) । चेत । याद ।
ध्यान । विचार ।

सहनशीलता—सहिष्णुता । क्षमा । अक्रोध ।

असहनशीलता—अमर्ष । अमर्षण । असहिष्णुता ।
क्रोध । रिस ।

उत्कण्ठा—लालसा । चाव । उत्सुकता । औत्सुक्य ।
चाह । आकुलेच्छा । अत्यन्त इच्छा । प्रबलेच्छा । तीव्राभिलाषा ।

न्योछावर—बलिहार । उत्सर्ग । त्याग । दान । समाप्ति ।
प्रदान । समर्पण । अर्पण ।

✓ **उत्सव**—उच्छाह । मंगलकार्य । धूमधाम । (जलसा) ।
त्योहार । पर्व । समैया । आनन्द । बिहार । बधाव ।

दीनता—दैन्य । कार्पण्य । दारिद्र्य । अधीनता । दुःख ।
सिधाई ।

✓ **हर्ष** (सुख)—आनन्द । प्रसन्नता । सुख । सौख्य ।
मोद । प्रमोद । संमद । प्रीति । प्रमद । आमोद । शर्म ।

✓ **लज्जा**—व्रीडा । संकोच । शर्म । मन्दाक्ष । मन्दास्य ।
लज्या । व्रीड । हीस्व । व्रीडन । लाज । (हया) । मर्यादा ।

• **उग्रता**—उग्रत्व । चण्डता । प्रचण्डता । (तपाक) ।
(तेजो) ।

• **व्याधि**—रोग । रुज । उपद्रव । पीडा । सन्ताप ।
नाप । व्यथा ।

✓ **भ्रम**—धूर्णन । भ्रान्ति । चक्रावर्त्त । धूर्णि । भ्रमि ।
धोखा । चक्रर । फेर । भूल ।

• **आवेग**—त्वरा । शीघ्रता । आतुरता । चपलता । वेग ।
जल्दी । लाघव । लघुता । अचिरता । पटुता । स्फूर्ति । तेजी ।

✓ **अभाव**—कमी । न्यूनता । क्षीणता । हीनता । खुटाव ।
अनुपस्थिति ।

✓ **परिक्रमा**—प्रदक्षिणा । परिक्रमण । परिभ्रमण । फेरी ।
फेरा । घुमरी । चक्रर ।

✓ **हृद्**—पराकाष्ठा । चरम । सोमा । इति । सोमान्त ।
अन्त । छोर । अशेष । समाप्ति ।

समाप्ति—सिद्धि । सम्पूर्णता । अन्त । निष्पत्ति ।
(खत्म) । पूरा । पूर्णता । समापन । पूर्ति ।

अकस्मात्—अनायोस । सहसा । अचानक । एकाएक ।
एकबएक । हठात् । सद्यः । सपदि । तत्क्षण । अतर्कित ।

अकाल—असमय । अप्रशस्त काल । अशुद्ध काल । दुकाल ।
महर्घ । महँगी । मन्दी ।

तारतम्य—न्यूनाधिक । कमबेश । थोड़ाबहुत । घटबढ़ ।
समूह—वृन्द । निकर । ढेर । झारि । जूट । कुल ।
स्तोम । थोक । ग्राम । बरूथ । पटल । निकाय । संचय । हार ।
समाहार । समुच्चय । कलाप । कदंब । यूह । यूथ । पुञ्ज । चय ।
राशि । गण । ओघ । संघ । समवाय । व्रज । समुदाय । संदोह ।
चक्र । टोली । परिकर । पूग । प्रसर । प्रचय । सानु । मंडली ।
गोष्ठी । व्यूह । दल । जाल । कषाल । निबह ।

उन्माद—पागलपन । मतिभ्रंश । उन्मत्ता । विक्षिप्ति ।
लहर । चित्तविभ्रम । चित्तविप्लव । सनक । भ्रुक । जक ।

शाप (गाली)—गाली । अभिशाप । अकृपा । कोप ।
आक्रोश । अभिसम्पात । अवग्रह । अश्लील वचन ।

न्याय—निर्णय । विवेक । (इन्साफ) ।

जड़ता—जाड्य । अपाटव । अपटुत्व । स्तैमिति । स्तब्धता ।
शून्यता । स्थिरता । शीतलत्व । मूर्खता । अज्ञानता । अचेतनता ।
मूढ़ता ।

चपलता—चंचलता । शीघ्रता । त्वरित । विकलता ।
अशांति । तरलता । तारल्य । चाञ्चल्य ।

क्षण—समय । घड़ी । मुहूर्त । बेला । विरियाँ । छिन ।
 छन । काल । दण्ड । अवसर । प्रसङ्ग । निमेष । पल । अदिष्ट ।
 धीरे—सहज । धीमे । मन्दगति । हरुए । आहिस्ते । शनैः ।
 अवकाश—समय । मौका । छुट्टी । फुरसत ।

शीघ्र—त्वरित । लघु । क्षिप्र । द्रुत । चपल । तूर्ण । अर ।
 सत्वर । आशु । अविलम्ब । वेग । वेगि । जल्द । सपदि । सहसा ।
 अविरत । हरद । सद्य । अचिर । तरसा । जव । अविराम ।
 झटित । हाल । उत्ताल । स्पद । तुरन्त । हौले । पटु । फौरन् ।
 स्फूर्ति । (फुर्ती) । तेज । आतुर । झटपट । तत्क्षण ।

व्यतीत—गत । विगत । अवसान । अतिवाहन । निष्पत्ति ।
 निष्पन्न । क्षेपण । यापन । बिताना । समाप्त । समापन । अन्त ।
 सम्स्वरण । सिद्ध । इति । मिरान । ठंडा पड़ना । (खतम) ।

वितर्क—तर्क । अनुमान । विकल्प । विचार । अनुभव ।
 बोध । अटकल ।

निर्लज्जता—अमर्यादा । (बेशर्मी) । (बेहयाई) ।
 निस्संकोच ।

मूर्छा—सम्मोहन । मोहन । अचेतन । (बेहोशी) । मोह ।
 कश्मल । मूर्च्छन ।

मान (आदर)—आदर । गौरव । प्रतिष्ठा । सम्मान ।
 (इज्जत) । मर्यादा । यश । कीर्ति । प्रतिपत्ति । प्रागल्भ्य ।

मान (हठ)—हठ । रोष । रूठना । कोहाना । कोह ।
 कोप । जिद । मचलाई । अड़ । टेक । ऐंठ । श्रान । वात । आर ।
 शान ।

✓ **अपमान**—अनादर । अप्रतिष्ठा । अपयश (बेइज्जती) ।
गौरवहीनता । अमान । अवज्ञा । परीहार । परिहार । पराभव ।
तिरस्कार । अवहेला । अवहेलन । अमर्यादा । धिक्कार । क्षेप ।
अतिपात ।

✓ **मानना**—मनौती । मन्नत । प्रण । प्रतिज्ञा ।

स्वभाव—प्रकृति । निसर्ग । स्वरूप । भाव । सर्ग ।
संसिद्धि ।

✓ **काम** (**कामना**)—वासना । कामना । चाह । वृषा ।
वृष्णा । प्यास । मनोर्थ । मनोऽभिलाष । आकांक्षा । अभिलाषा ।

✓ **लोभ**—लालच । वृषा । वृष्णा । लिप्सा । स्पृहा । कांक्षा ।
आकांक्षा । गर्द्धः ।

✓ **पाखण्ड**—कपट । छल । छद्म । दम्भ । धूर्तता । जाल ।

✓ **प्रमाद**—असावधानी । अनवधानता । भ्रम । भूल ।
अव्यवस्थितचित्तता । (लापरवाही) । (बेखबरी) । (बेफिक्री) ।

✓ **अभिप्राय** (**विचार**)—अभिलाषा । इच्छा । कांक्षा ।
विचार । आकांक्षा । आशय । तात्पर्य । स्पृहा । कामना । सम्मति ।

✓ **सन्तोष**—तृप्ति । तोष । हृष्टि । आनन्द ।

✓ **स्नेह**—राग । अनुराग । प्रेम । प्रीति । सौहार्द । हार्द ।

✓ **उपवास**—औपवस्त । लंघन । अनाहार । निराहार ।
अनशन । भोजनाभाव । व्रत ।

✓ **आज्ञा**—आदेश । निदेश । अनुमति । शासन । शिष्टि ।
अववाद । निर्देश ।

जीवन (जीवनकाल)—अवस्था । आयु । वयःक्रम ।
जीवनकाल ।

मृत्यु—मरण । पञ्चत्व । निधन । अत्यय । विनाश ।
नाश । प्रलय । मृति (मौत) । दिष्टान्त । कालधर्म । अन्त ।
देहान्त । देहावसान । शरीरान्त । निपात ।

कल्याण—कुशल । मंगल । हेम । सुख । आनन्द । श्वः ।
श्रेयस् । शिव । भद्र । शुभ । भावुक । भविक । भव्य । शस्त । शं ।

आचार—चरित्र । चारित्र । व्यवहार । वृत्त । शील ।

कूरता—कर्कशता । निर्दयता । काठिन्य (कठिनता) ।
निर्मोह । निर्ममता । निष्ठुरता । पाप । भयंकरता ।

पाप—अघ । अपवाद । अपकर्म । अपकृति । अपधर्म ।
अधर्म । विधर्म । कुधर्म । कुकर्म । दुर्दृष्ट । पङ्क । किल्बिष । कल्मष ।
मल । कलुष । वृजिन । एन । अह । दुरित । दुष्कृत । पातक ।
तूस्त । कण्व । शल्य । पापक ।

पुण्य—धर्म । शुभादृष्ट । श्रेय । सुकृत । वृष । पावन ।
सुगन्धि । शोभन । सत्कर्म ।

अपराध—भाग । मन्तु । अकार्य । दुष्कर्म ।

[नोट—‘पाप’ के सभी पर्याय ‘अपराध’ के पर्याय हो सकते हैं ।]

सत्य—सच । तथ्य । यथार्थ । शपथ । ऋत । सम्यक् ।
अवितथ । भूत । तथोक्त । तद्वत् ।

भूठ—असत्य । मृषा । मिथ्या । वितथ । अनृत । अतथ्य ।

१ हाव * (नाज़)—आह्वान । शृंगार भाव । नखरा ।
(नखड़ा) । चोंचला । पुकार । बुलाहट ।

२ यात्रा—भ्रमण । परिभ्रमण । ब्रज्या । प्रब्रज्या । पर्यटन ।
प्रस्थान । गमन । गम । प्रस्थिति । यान । प्राणन ।

३ दण्ड—साहस । दम । (सज़ा) । दमन ।

४ व्यवहार—वर्त्ताव । सल्लूक । साम्न । साम । सात्वमथ ।

५ कीर्त्ति†—सुख्याति । समज्ञा । समाज्ञा । समाख्या ।
समज्या । अभिख्या । श्लोक । वर्ण । कीर्त्तना । यश । गुणावलि ।

६ अपयश—अपकीर्त्ति । अकीर्त्ति । अयश । अपवाद । निन्दा ।

[नोट—‘निन्दा’ वाचक सभी शब्द ‘अपयश’ के पर्याय है ।]

७ अपकार—द्रोह । अनुपकार । असद्व्यवहार । अत्याचार ।
बुराई । खुदाई । अपकर्म । दुष्क्रिया । मन्दकर्म । द्वेष । अपकृति ।

८ उपकार—भलाई । नेकी । हितसाधन । उद्धार । उपकृति ।

९ मधुर-वचन (अर्थ प्रयोग में)—प्रियवचन । सूनृत ।

मञ्जुभाषण । शांत्व । समंजस । संगत । हृदयंगम ।

* संयोग समय में त्रियों की स्वाभाविक अङ्गादि चेष्टाओं को ‘हाव’ कहते हैं । काव्यशास्त्र में हाव १२ प्रकार के माने गये हैं । यथा—
१ लीला, २ हेला, ३ ललित, ४ विभ्रम, ५. विह्वत, ६. विलास,
७. विच्छित्ति, ८ विव्वोक, ९. किलकिञ्चित, १०. मोट्टाइत, ११. कुट्टमित ।
१२ बोधक ।

† दानादि से जो ख्याति होती है उसे ‘कीर्त्ति’ तथा शौर्यादि से जो
ख्याति होती है उसे ‘यश’ कहते हैं । यथा—“दानादिप्रभवा कीर्त्तिः
शौर्यादि प्रभवं यशः ।”
—इति माधवी ।

१ दुर्वचन—अश्लील । ग्राम्य । परुष । निष्ठुर । कठोर ।
तद्ध । कर्कशवचन ।

२ नीति—न्याय । व्यवहार । उचित । यथार्थ । नय ।

स्तुति—प्रशंसा । नुति । स्तोत्र । प्रस्तुति । स्तव । शस्त ।
ईलित । पणायित । वर्णित ।

४ कृपा—अनुग्रह । अनुकम्पा । मया । दया । अनुक्रोश ।
अनुकंपना ।

१ कपट—छद्म । छल । दम्भ । पाखण्ड । शाठ्य ।
कैतव । व्याज ।

२ कलंक—दोष । दाग । लाञ्छन । अपवाद । पंक । मसि ।
किञ्जल्क । निर्वाद । लक्ष्म । मलीन । मली ।

१ शपथ (कसम)—सौगन्ध । सौह । कसम । आन ।
अभिषङ्ग । सत्य । शाप । शप । शापन । प्रत्यय ।

१ किंजूसी—कृपिणता । कृपणता । कार्पण्य । दैन्य । दीनता ।
दरिद्रता । कादरता । अनुदारता । क्षुद्राशयता ।

१ जय- (विजय)—विजय । जीत । उन्नति । वृद्धि । विभव ।

१ हार (पराजय)—पराजय । अजय । पराभव । भङ्ग ।
अवनति ।

१ आशीर्वाद—आशी । अशीर्वचन । शुभवचन ।

१ बचपन—बालपन । कौमार । शैशव । बालकत्व । शिशुत्व ।

१ ज्वानी—यौवन । युवावस्था । तारुण्य । तरुणता । ज्वानी ।

अधेङ्—प्रौढत्व । प्रौढावस्था । पक्की उम्र ।

वृद्धापा—जरा । जीर्णावस्था । वृद्धावस्था । वृद्धत्व ।
जरत्व । वृद्ध । जरठपन । जरठत्व । जीर्ण ।

सुन्दरता—सौन्दर्य । सुरूपता । रूपता । लावण्य ।
(खूबसूरती) ।

[नोट—‘शोभा’ शब्द के पर्याय भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।]

कुरूपता—कदर्य । अरूपता । अपरूपता ।

प्रार्थना—विनती । विनय । नम्रता । दीनता । आर्तवचन ।
अभ्यर्थना । (खुशामद) ।

उत्पात—उपद्रव । अशुभ । अमंगल । विघ्न । बखेड़ा ।
झगड़ा । टंटों । ऊधम ।

सूचना—समाचार । निवेदन । कथन । आवेदन । सूचन ।

हँसीठट्टा—परिहास । परीहास । क्रीड़ा । देवना । वर्करा ।
विजल्पन । (मजाक) । दिल्ली ।

प्रलाप—जक । वक-वक । मिथ्यालाप । अनर्थभाषण ।
जल्प । दुर्वाद ।

संस्कार *—संशोधन । शुद्धि । प्रतियत्न । शोधन ।
शुद्धता । परिशोधन ।

* हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार द्विजातियों के कुल १६ संस्कार माने गये हैं । यथा—१. गर्भाधान । २. पुंसवन । ३. सीमन्त । ४. जातकर्म । ५. नामकरण । ६. निष्क्रमण । ७. अन्नप्राशन । ८. चूड़ाकरण (मुण्डन) । ९. कर्णवेध । १०. उपनयन । ११. वेदारम्भ । १२. समावर्तन । १३. विवाह । १४. गृहस्थाश्रम । १५. वानप्रस्थाश्रम । १६. सन्यासाश्रम ।

✧ विद्या *—ज्ञान । तत्त्वबोध । बोध । शिक्षा । शास्त्र ।
यथार्थज्ञान ।

व्यसन †—टेव । लत । बान । आसक्ति । अभ्यास ।
खोटी आदत ।

✓बहाना—व्याज । मिष (मिस) । छल । कपट ।

कला ‡—कारीगरी । शिल्पनैपुण्य । शिल्पकर्म ।

* विद्या १८ प्रकार की मानी गई है । यथा—१. शिक्षा । २. कल्प ।
३. व्याकरण । ४. निरुक्त । ५. ज्योतिष । ६. छन्द । ७. ऋग्वेद ।
८. यजुर्वेद । ९. सामवेद । १०. अथर्वणवेद । ११. मीमांसा । १२. न्याय ।
१३. धर्मशास्त्र । १४. पुराण । १५. आयुर्वेद । १६. धनुर्वेद ।
१७. गान्धर्व वेद । १८. अर्थशास्त्र ।

† व्यसन १८ प्रकार के होते हैं । यथा—१. मृगया, २. जुआ खेलना,
३. दिन में सोना, ४. दूसरे का दोष कहना, ५. स्त्रियों में आसक्ति,
६. नशेबाजी, ७. बाजा बजाना, ८. नाचना, ९. गाना और १०. व्यर्थ
घूमना । ये दस कामज व्यसन हैं । तथा ११. चुगलीखाना, १२. दुस्साहस,
१३. द्रोह, १४. ईर्ष्या, १५. असूया (द्वेष), १६. दूसरे की वस्तु
हरण १७. कटुभाषण और १८. अत्यन्त ताड़ना देना । ये आठ
क्रोधज व्यसन हैं ।

‡ कला के ६४ भेद हैं । यथा—१. गायन (गीत) । २. वाद्य
(बजाना) । ३. नृत्य (नाचना) । ४. चित्रकारी । ५. तिलक काढ़ना ।
६. तण्डुल कुसुमावली (चावलों से पुष्पादि काढ़ना) । ७. पुष्पातरण
(पुष्प का शृङ्गार रचना) । ८. अङ्गराग (शृङ्गार) । ९. मणिभूमिका कर्म
(सोने के लिये स्थान रचना) । १०. शयन रचना । ११. उदक वाद्य
(जलतरंग आदि बाजे) । १२. उदकाघात (पिचकारी छोड़ना) ।

॥ सुगन्धि—सौरभ । सुगन्ध । परिमल । आमोद ।
सद्गन्ध । खुशबू ।

१३. चित्र योग (प्रकृति में रासायनिक परिवर्तन) । १४. माल्य ग्रन्थन ।
१५. शेखरक (बाल गूँथना), आपीड (चोटी गूँथना) । १६. नेपथ्य-
प्रयोग । १७. कर्णपत्रभङ्ग । १८. गन्धयुक्ति । १९. अलङ्कारयोग
(आभूषणादि धारणविधि) । २०. ऐन्द्रजाल (जादूगरी) । २१. कौचु-
मार योग (स्वरूप रचना) । २२. हस्तलाघव (शीघ्र काम करना) २३.
सूपकर्म (रसोइयादारी) । २४. पानकादि भोजन (रस, गर्वत, आसव
आदि बनाना) । २५. सूचीकर्म (सिलाई का काम) । २६. सूत्रक्रिया
(कसीदा काढ़ना) । २७. वीणा-डमरू वाद्य । २८. प्रहेलिका । २९.
प्रतिमाला (अन्त्याक्षरी) । ३०. कूटक-योग (कूट शब्दों का प्रयोग) ।
३१. पुस्तक-वाचन (स्वर सहित पुस्तक पढ़ना) । ३२. नाट्यकला ।
३३. समस्यापूर्ति । ३४. पट्टिकावान विकल्प (मेज-कुरसी-पलंग आदि
बोना) । ३५. तक्ष कर्म । (मरम्मत करना) । ३६. तक्षण (बढ़ई का
काम) । ३७. वास्तुकर्म (गृह-निर्माण-कला) । ३८. धातुपरीक्षा (सोना,
चाँदी आदि परखना) । ३९. धातुवाद (विविध धातुओं का मिश्रण) ।
४०. मणिरागज्ञान (रत्नादि का ज्ञान) । ४१. वृक्षायुर्वेद योग (वाग्वानी) ।
४२. सजीव द्यूत (तीतर, बटेर, मुर्ग, मेढ़ा आदि लड़ाना) । ४३. शुक्र-
सारिका प्रलापन (चिड़ीबाजी) । ४४. उत्पादन (तैलमर्दन आदि) ।
४५. अक्षर मुष्टिकाकथन (संक्षेप में बातचीत करना) । ४६. न्लेच्छित
विकल्प (साङ्केतिक अर्थ समझना) । ४७. देश भाषा विज्ञान । ४८. पुष्प-
शकटिका । ४९. निमित्त ज्ञान (शुभाशुभ ज्ञान) । ५०. यन्त्रमंत्रिका ।
५१. धारणमंत्रिका । ५२. सम्पाद्य । ५३. मानसी । ५४. काव्यक्रिया ।
५५. अभिधान कोष । ५६. छन्दोज्ञान । ५७. क्रियाकल्प । ५८. छलित (ठगी) ।

दुर्गन्धि—दुर्गन्ध । दुष्टगन्ध । पूतिगन्ध । पूतिगंधि । पूति ।
निश्चय—निर्णय । निर्णयन । निचय । ठीक । तय ।
पक्का । सिद्ध ।

सिद्धान्त—राद्धान्त । दृढसम्मति । पक्की राय । दृढमत ।
स्थिरमत । प्रधान लक्ष्य । (उसूल) ।

स्वीकार—अङ्गीकार । (मंजूर) । ग्राह्य । मान्य ।

प्रवित्रता—शुचित्व । शुचिता । शौच । शुद्धता । पूतत्व ।
स्वच्छता । अदूषण । निर्दोषत्व । निर्दोषिता । निर्मलता ।

मधुर शब्द (शब्दप्रयोग में)—मृदुवचन । सुभाषण ।
मञ्जुभाषा । सुवाणी । सुवचन ।

अपभ्रंश—भ्रष्ट । ग्राम्य । प्राकृत । ठेठ ।

पर्याय—आवृत्त । आनुपूर्वी । अनुक्रम । परिपाटी ।
प्रकार । एकार्थ । एकार्थबोधक (वाचक) । समानार्थक ।

विपर्याय—व्यतिक्रम । विपर्यास । व्यत्यास । व्यत्यय ।
विपर्याय । उलटफेर । विपरीत । अयन । प्रतिकूल ।

ओंकार—प्रणव । बीजमन्त्र । वेदमाता । आद्या ।

इतिहास—इतिवृत्त । प्राचीनकथा । पुरावृत्त । पूर्ववृत्तान्त ।
पुराण ।

प्रबन्ध—निबन्ध । लेख । रचना ।

आख्यान (कथा)—कथा । कहानी । किस्सा । वृत्तान्त ।
वर्णन । बयान ।

५९ वल्लभोपन । ६०.० द्यूतकीड़ा । ६१ आकर्ष क्रीड़ा (चौपड़
पासे) । ६२. बालक्रीडनक । ६३. वैनयिकी (नम्रता) । ६४.
वैजयिकी वा व्यायामकी (लड़ाई, कुश्ती, कसरत आदि) ।

आख्यायिका *—उपन्यास । प्रसिद्ध कथा ।

पहेली—प्रहेलिका । प्रवह्लिका । प्रवह्ली । प्रहेली । प्रश्नदूती ।

गल्प—उपकथा । गप्प । छोटी कहानी ।

चाटुकारी—चापलूसी । लल्लोपत्तो । अनुनय । स्तुति ।

(खुशामद) ।

संगीत—गान । गाना । गायन । गेय । कीर्त्तन ।

राग †—ध्वनि । लय ।

नाच ‡—नृत्य । लास्य । नर्त्तन । तांडव । नृति । नटन ।

नृत । लास । लास्यक ।

प्रतिध्वनि—प्रतिशब्द । झाँई । प्रतिनाद । प्रतिश्रुत ।
प्रतिध्वान ।

विदित—अवगत । व्यक्त । प्रतिपन्न । प्रकट (प्रगट) ।

(जाहिर) । ज्ञात ।

* वह कथा जो पुराणादि के आधार पर रची गई हो । जिस आख्यान में पात्र भी अपने मुँह से अपना कुछ २ वर्णन करता है, उसे “आख्यायिका” कहते हैं ।

† किसी ध्वनि में बैठाये हुये स्वर जिनके उच्चारण से गान होता है, ‘राग’ कहलाता है । भरत के मत से राग ६ प्रकार के हैं । यथा—
१. भैरव, २. कौशिक, ३. हिन्दोल, ४. दीपक, ५. श्री, ६. मेघ ।

‡ पुरुष के उद्धत नाच को ‘ताण्डव और स्त्रियों के नाच को ‘लास्य’ कहते हैं । भाव बतलाते हुये नाच को ‘नृत’ तथा ताल-स्वरके आधार पर नाचने को नृत्य कहते हैं ।

—“सङ्गीत दामोदर”

√ नाटक *—रूपक । प्रहसन । नाच-गाना । नृत्यसंगीतादि ।
 दृश्य-काव्य । प्रदर्शन । नाट्यकलाप्रदर्शन ।
 । √ सेवा—परिचर्या । चर्या । शुश्रूषा । टहल । (खिदमत) ।
 चाकरी । नौकरी ।

। विघ्न—व्याघात । अन्तराय । प्रत्यूह । विघात ।

। व्यर्थ—वेकाम । निष्प्रयोजनीय । निरर्थक । निष्फल ।
 चादि । मोघ । वृथा । अकाम । निष्काम । अकारथ । असार ।

। प्रतिज्ञा—पण । प्रण । संविद । पैज । वचन । प्रतिज्ञात ।
 नियम । आश्रव । संश्रव । प्रतिश्रय । नेम । करार । कौल ।

। संयोग—मेल । मिलाप । साथ । संग ।

। वियोग—विछोह । विरह । विप्रलम्भ । विप्रयोग । जुदाई ।

। प्रकार—भेद । सादृश्य । किस्म ।

* नाटक—किसी रङ्गमञ्च पर पात्र और पात्रियों द्वारा दृश्यकाव्यानुसार किया जाने वाला अभिनय नाटक वा रूपक कहलाता है । यह १० प्रकार का होता है । १. नाटक, २. प्रकरण, ३. भाण, ४. व्यायोग, ५. समवकार, ६. डिम, ७. इहामृग, ८. अंक, ९. वीथी १०. प्रहसन ।

इसी प्रकार उपरूपक के १८ भेद होते हैं—१. नाटिका, २. त्रोटक, ३. गोष्ठी, ४. सट्टक, ५. नाट्यरासक, ६. प्रस्थानक, ७. उल्लाप्य, ८. काव्य, ९. रासक, १०. प्रेखण, ११. संलापक, १२. श्रीगदित, १३. शिल्पक, १४. विलासिका, १५. दुर्मल्लिका, १६. प्रकरणिका, १७. हल्लीश, और १८. भाणिका ।

रूपक और उपरूप के ये भेद भी 'नाटक' के पर्याय हो सकते हैं ।

शोभा—दीप्ति । कान्ति । छवि । द्युति । द्युती । छवि ।
अभिल्या । शुभा । भा । श्री । भासा । सुषमा । छाया । विभा ।
भाति । कमा । रमा । आभा । रुचि । रोचिष । प्रभा । त्विष ।
छटा । सुन्दरता । चमक । दमक ।

श्रीहत—कान्तिहीन । प्रभाहीन । अप्रभ ।

संकेत—प्रज्ञप्ति । परिभाषा । शैली । आकार । उदाहरण ।

[नोट—गुप्तस्थान को भी संकेत कहते हैं जिसका पर्याय
“सहेद, अँगोट, एकान्त, निर्जन” है ।]

अतिरिक्त—समधिक । अधिक । सिवाय । अलावा ।

समता—साम्य । समत्वभाव । एकता (ऐक्य, एकत्व) ।
समैक्य । बराबरी । जोड़तोड़ ।

विषमता—असाम्य । अनैक्य । अनेकता । बेमेल ।
बेजोड़ । वैषम्य । छिट-फुट ।

बलात्कार—हठात्कार । हठ । बलप्रयोग । प्रसभ ।

[नोट—आजकल ‘बलात्कार’ शब्द का प्रयोग किसी स्त्री
के सतीत्व को जबरदस्ती भ्रष्ट करने के अर्थ में किया जाता है ।]

उपहार—पुरस्कार । भेंट । उपायन । उपदौकन । प्राभृत ।
प्रदेशन । उपग्राह्य । उपदा ।

विस्मय—आश्चर्य । अचरज । विचित्रता । संभ्रम ।

उल्लंघन—विरोध । अवमानना । अतिक्रमण । व्यत्ययन ।
व्यतिक्रमण ।

ध्यार—मनुहार । दुलार । स्नेह । प्रीति । प्रेम ।

✓प्रतीक्षा—आसरा । (इन्तज्जारी) । राह देखना । अपेक्षा ।
बाट जोहना ।

✓प्रभाव—प्रताप । रोबदाब । तेज । असर । शक्ति ।

✓प्रस्ताव—निवेदन । प्रसङ्ग निवेदन । अवसर । प्रसङ्ग ।
स्तुति । कथन । प्रकरण । वृत्तान्त निवेदन । कथानुष्ठान ।

✓परिस्थिति—दशा । अवस्था । अवसर । (मौका) । समय ।
हालत ।

अन्वेषण—जाँच । खोज । अनुसन्धान । गवेषण ।
अन्वेषण । परीष्टि । पर्य्येषण ।

[नोट—खोज करने वाले व्यक्ति को 'अन्वेष्टा' कहते हैं
जिसका पर्याय है—'आनुपद्य' ।]

—कुण्ठित—मन्द । हीन । संकुचित ।

व्यङ्ग्य—उलटा । टेढ़ा । ताना ।

) धूस—उत्कोच । प्राभृत । ढौकन । लम्बा । कोशलिक ।
उपाचार । प्रदा । आनन्दा । हार । ग्राह्य । अयन । उपदानक ।
अपप्रदान ।

विपरीत—उत्क्रम । व्यतिक्रम । अक्रम ।

समर्थन—मण्डन । अनुमोदन । पोषण । संप्रधारण ।

✓फुटकर—पृथक्-पृथक् । भिन्न-भिन्न । छिट-फुट ।

तन्मय—लीन । तल्लीन । दत्तचित्त । लवलीन ।

लक्ष्य—निशाना । उद्देश्य ।

शैली—ढंग । ढब । चाल । परिपाटी । प्रणाली । तरीका ।

क्षिष्ट—दुस्तर । कठिन । संकुल । पराहत । झिषित ।

उजाला—प्रकाश । दीप्ति । द्योत । आतप । प्रभा । विभा ।
आलोक । तेज । ओज । त्विषा ।

अन्धेरा—अन्धकार । अप्रकाश । ध्वान्त । तमिस्र ।
तम । तिमिर ।

[व्यापक अन्धेरा = सन्तमस । महान्धकार = अन्धतमस ।
अल्पान्धकार = अवतमस ।]

बदला (अपकार के बदले अपकार)—प्रतिशोध ।
वैरशुद्धि । वैरनिर्यातन । चिकित्सा । कसर । खार चुक्राना । वैर ।



५. रोगादि वर्ग

रोग—रुज । गद । उपताप । व्याधि । आमय । आम ।
अपाटव । आतङ्क । भय । उपघात । भङ्ग । अर्ति । तमोविकार ।
क्षय । अनार्जव । मृत्यु-भृत्य । मान्द्य । आकल्प ।

उचर—जूति । आतङ्क । महागद । रोगपृष्ठ । ताप ।
तापक । सन्ताप । जूड़ी । (बुखार) ।

दोष—पाप । अपराध । विकार ।

[नोट—वात-पित्त-कफ, ये ही प्रधान दोष माने गये हैं,
जिनके विकृत हो जाने पर अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होती
है । इन तीनों दोषों को 'त्रिदोष' कहते हैं ।]

दाह—जलन । तपन ।

शीत—ठण्ड । सरदी । जाड़ा ।

पीनस—नाकड़ा । प्रतिश्याय । (जुकाम) ।

[नोट—जुकाम के बिगड़ जाने से नाकड़ा हो जाता है ।
इसमें गाढ़ा जुकाम होकर दुर्गन्धि पैदा कर देता है । कुछ काल के
अनन्तर घ्राण-शक्ति भी नष्ट होने लगती है ।]

क्षय—छर्ई । यक्ष्मा । राजयक्ष्मा । दिक् । तपेदिक् । शोष ।
रोगराज । गदाग्रणी । उष्मा । अतिरोग । नृपामय ।

खाँसी—कास । क्षवथु ।

सूजन—शोथ । शोफ । श्वयथु । सूज ।

बेवाई—बेवाय । बिमाई । पादस्फोट । विपादिका । स्फुटी ।
स्फुटि । पादस्फोटी ।

सेहुआ—सिध्म । किलास ।

[नोट—सात प्रकार के महाकुष्ठ रोग के अन्तर्गत एक प्रकार का कुष्ठ रोग, जिसमें शरीर का ऊपरी चमड़ा निकल जाता है और चकत्ते पड़ जाते हैं ।]

शीतला—चेचक । माता । विस्फोट । मसूरिका ।
पापरोग । रक्तवटी । मसूरी । वसन्तरोग ।

दाद—दिनाय । पामा । दद्रू । विचर्चिका । पाम । खसरा ।

खाज—खुजली । कंझू । खजू ।

[नोट—दाद, खाज, खसरा, उकवत, अपरस, सेहुआ, अगियासन् आदि कुष्ठ के अन्तर्गत रोग हैं । इनके रोगी को सूर्य भगवान की उपासना पूजा आदि करनी चाहिये । रुक्ष और क्षारयुक्त (नमकीन) भोजन का त्याग तथा सादा, अलोना और स्निग्ध भोजन का ग्रहण श्रेयस्कर है ।]

फोड़ा (फुन्सी)—फोट । विस्फोट । फुड़िया । पिटक ।
पिटका । विटक । विटका । स्फोट । स्फोटक । ईर्म ।

घाव—व्रण । चीरा । ईर्म । अरुस ।

पीब—क्षतज । मलज । पूयन । प्रसित । पूय ।

कोढ़—कुष्ठ । फूल । कोठ । मण्डलक । व्याधि । वाप्य ।

पारिभव्य । पाकल । उत्पल ।

फलि-पाँव—श्लीपद । पादवल्मीक । हाथी पाँव ।

सोजाक—पूयमेह । मधुमेह ।

बवासीर—बयेसी । अर्श । दुर्नामक । दुर्नाम । गुदकील ।

गुदाङ्कुर । अनामक ।

पथरी—अश्मरी ।

मृगी—अपस्मार । अङ्गविकृति । लालाध । भूतविक्रिया ।

उपदंश (गर्मी)—अवदंश । गरमी । (आतशक) ।

फिरंग रोग ।

अतिसार—अन्नगन्धि । उदरामय । अतीसार । (पेचिश) ।

आँव—आम । मलवैषम्य रोग । आमातिसार ।

[नोट—शरीर में आम पक जाने पर जब सारे शरीर में शोथ हो जाता है, तब उसे 'आमवात' कहते हैं) ।

संग्रहणी—प्रवाहिका । ग्रहिणी । गुध्वाहि ।

वमन—कय । प्रच्छर्दिका । छर्दि । वमि । वमथु ।

ओकलाई ।

कब्ज—मलावरोध । मलबद्ध । कोष्ठबद्ध ।

प्रमेह—मूत्रदोष । बहुमूत्र ।

मन्दारि—अल्पाग्नि ।

अजीर्ण—अपच । अन्पच ।

हैजा—विसूची । विसूचिका । विशूचिका । महाजीर्ण ।

कामला—पाण्डु । कँवल । काँवला ।

[नोट—इस रोग में यकृत (पिलही) बढ़ जाती है । अग्नि मंद हो जाने से रस का शुद्ध पाक नहीं होता । शरीर पीला पड़ जाता है । आँख के कोये भी पीले हो जाते हैं । जब थूक, मूत्र तक पीले रंग के हो, तब इस रोग का उग्र रूप जानना चाहिये ।]

श्वास—साँस । (दमा) ।

क्षीणता—दुर्बलता । कृशता । सुखंडी ।

तृष्णा—(देखो 'प्यास' शब्द—'मनुष्यवर्ग' पृष्ठ १६१)

मूर्छा—(देखो 'मूर्छा' शब्द,—भावादि वर्ग पृष्ठ १९७)

मूत्रकृच्छ्र—कड़क ।

आमवात—आँव बात ।

हिस्टीरिया (अं०)—अपतंत्रक । मूर्च्छा ।

आक्षेपक—शून्य वायु ।

उदावर्त्त—गुदग्रह । [मल-मूत्र-वायुरोधक रोग]

आँतवृद्धि—अन्त्रवृद्धि । पानी उतरना । आँत उतरना ।

फोता बढ़ना ।

गण्डमाला—गलगण्ड । कंठमाला ।

अर्बुद—मांसकील । मांस पुरुष ।

[छोटे अर्बुद को 'इला' वा 'गोखरू' कहते हैं]

शूक्ररोग—लिङ्गवृद्धि रोग ।

अम्लपित्त—मचली । जी मचली । (मतली) ।

विसर्प—विसर्पि । सचिवामय ।

मुखपाक—पाका । मुँहपाका । निनावँ । छाला ।

गंज रोग—इन्द्रलुप्तक । इन्द्रलुप्त । केशघ्न । केशनाशक रोग ।

शिर-पीड़ा—सिर दर्द । आधीसीसी । अधकपारी ।

[नोट—आधे सिर की पीड़ा दो प्रकार की होती है एक तो जो प्रातः आरम्भ होकर सायंकाल को समाप्त होती है उसे 'सूर्यावर्त्त' और दूसरी जो सायंकाल को प्रारंभ होकर रातभर रहती हुई प्रातः जाती है, उसे 'चन्द्रावर्त्त' कहते हैं ।]

प्रदर—स्त्रीरोग । विदार । क्षीणता । धातुक्षय ।

[यह रोग 'श्वेत प्रदर' और 'रक्त प्रदर' नाम से दो प्रकार का होता है ।]

गुल्म—वायुगोला । रजोग्रन्थि । गोला ।

योनि कन्द—योनिस्त्राव । योनिभङ्ग । योनिघ्न ।

स्तनपाक—थनैल ।

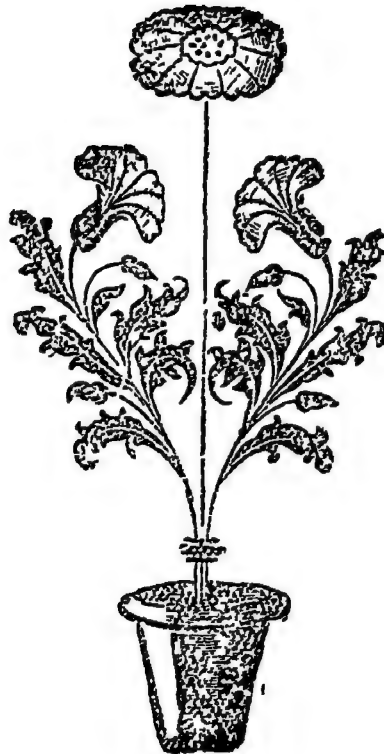
सूतिका रोग—प्रसूति ज्वर ।

पूतना—दुर्दर्शना । दुर्गन्धा । मेघकालिका । बालमातृका ।

[नोट—यह रोग छोटे बालको को तीसरे दिन, तीसरे महीने वा तीसरे वर्ष होता है । इसमें प्रायः बच्चे नहीं बचते ।]

पक्षाघात—पक्षघात । शून्यवात (सुन्नवाई) । लकवा ।
(फालिज) ।

[नोट—इस रोग में शरीर का एक अंग दहिना वा बायाँ शून्य हो जाता है । शिरा, स्नायु के रक्त का शोषण होकर सन्धियों में चर्बी का नाश हो जाता है । सन्धियों की संचालन-क्रिया बन्द हो जाती है । धीरे धीरे वह अंग शिथिल और अचेतन होने लगता है । इस रोग के विशेष प्रकोप से मृत्यु तक सम्भव है । कहा जाता है, यह रोग भयंकर पापों का फल है ।]



६. भोजनादि वर्ग

उपकरण—सामग्री । सामान । उपकारक द्रव्य । परिच्छद ।
तन्त्र । परिवर्ह ।

[नोट—किसी कार्य-विशेष के लिये उपयुक्त सामग्रियों को उपकरण कहते हैं । जैसे भोजन के लिये भोजन पदार्थ, भोजन पात्रादि; राजा के लिये छत्र-चामरादि; रोगी के लिये औषधि-अनुपानादि ।]

भोजन *—आहार । अशन । स्वदन । निगर । निघस ।
विघस । जेमन (जेवन) । भक्षण । खाना ।

* (क) रस-भेद से भोजन छः प्रकार का होता है—१. मधुर (मीठा), २. लवण (नमकीन); ३. तिक्त (तीता), ४. कषाय (कसैला जैसे आँवला आदि); ५. कटु (कडुवा जैसे नीम, कबूती लौकी आदि); ६. अम्ल (खट्टा) ।

(ख) पदार्थ-भेद से भोजन छः प्रकार का होता है । यथा १. मक्ष्य (जो निगल कर खाया जाय, जैसे हलुवा, खीर, मलाई आदि); २. भोज्य (जो दाँतों से कुचल कर खाया जाय, जैसे दाल-रोटी, पूरी आदि); ३. चर्व्य (जो चबा कर खाया जाय, अर्थात् खाने की सूखी वस्तु जैसे चबैना, दालमोठ, माठ, मठरी आदि); ४. चोष्य (जो चूस कर खाया

दाल—पहित । पहिती । सूप ।

भात—भक्त । अन्न । ओदन । चाँवल । भिष्मा । भिस्सा ।

माँड—मासर । आचम । निश्चाव । मण्ड ।

कढ़ी—तेमन । निष्ठान । कलायल (करायल) । कथित ।
परेह । परोह ।

रोटी—चपाती । बेली । फुलकी (फुलका) । पनेथी
(हाथ की बनी मोदी रोटी) । रोट (बड़ी रोटी) । करपट्टिका ।

लिट्टी वा बाटी—अंगार कर्कटी । टिकरी । टिक्कड़ ।

पूरी—पूड़ी । सोहारी । पूलिका । शष्कुली ।

कचौरी—माषगर्भा-शष्कुली । माषगर्भा ।

हलुआ—सीरा । मोहनभोग । लप्सिका । लपसी ।

मालपुआ—मलपूप । पूआ । पूप । पिष्टक । अपूप ।

पोलाव—पलान्न । पुलाक । पुलाव । मांसोदन ।

तरकारी—भाजी । शाक । सालन ।

खीर—क्षीर । पायस ।

मीठाभात—गुडान्न । बखीर ।

सिखरन—श्रीखण्ड । रसाला । मार्जिता । शिखरिणी ।

चबैना—चर्वण । चर्व्य । चबैनी । दाना (भुना हुआ) ।

जाय, जैसे आम, सँहिजन की फली, ईख आदि), ५. लेह्य (जो चाट कर खाया जाय, जैसे सिरका, चाशनी, शहद, चटनी, आदि); ६. पेय (जो पिया जाय, जैसे दूध, शर्बत आदि) ।

- लावा—लाजा । खील । धान-खील । अक्षत ।
 चिउड़ा—चिपिटक । पृथुक । चिउरा । चीड़ा । चिपिट ।
 चटनी—लेह्य । लेहन पदार्थ । खांडव (नौरतन-चटनी) ।
 रसाला । मार्जिता । चक्षुण ।
 रायता—रायतो । राजिकात्त । मार्जिता ।
 अचार—सन्धान । संधितद्रव्य । सन्धित ।
 मुरब्बा—राग खांडव । पाग ।
 पन्ना—पानक । पना ।
 फुलौरी (पकौड़ी)—बटिका । चाणकी ।
 [नोट—पत्तो की पकौड़ी = रिकवँच, रिकछ, रक्छ, पतौड़ ।]
 बरी—बटी । माषेडरी । बटिका ।
 मुंगौरी—मुद्गबटी । मुद्गबटिका । माषरंगी ।
 घुंघुरी—कुल्माष । छोला ।
 बड़ा—बटका । बरा । बारा । पिष्टक । पिष्टबटका । पूष ।
 इमली के पन्ना का बड़ा—पानक-बटका ।
 दही-बड़ा—तक्र-बटका ।
 [नोट—इसी प्रकार सूरन के बड़े को 'सूरण-बटक', कुम्हड़े
 के बड़े को 'कूष्माण्ड-बटका' कहते हैं ।]
 पापड़—पर्पट । चरक ।
 भरता—भरित्र । चोखा ।
 चिखना—[मद्यपानादि के बाद रोचक भक्ष्य पदार्थ]—
 मद्यपाशन । चक्षुण । चखना । चाट । चटपटा ।

पराठा—प्रामठे । पोलिका । परोठा । परावठा । चौपती ।

बेढई—बेढमिका ।

[नोट—उड़द या चने की पीठी भर कर जो रोटी तैयार की जाती है, उसे बेढई कहते हैं ।]

पूरन-पूड़ी (भीठी पूड़ी)—पूर्णपूलिका । पूरनपोली ।
पूर्णगर्भापूलिका ।

सेवई—सैमई । सैविका ।

अनरसा—इन्दुरसा । अँदरसा । शालि-पूप ।

गुफिया—संयाव । गूभा । पेड़किया ।

खाजा—खजला । खाझा ।

चूरमा—चूरमोदक ।

जलेबी—कुंडलिनी । गुडूची । जिलेबी ।

लड्डू—मोदक । बिन्दुमोदक ।

मोतीचूर के लड्डू—मुक्तामोदक ।

सूँग के लड्डू—मुद्गदल । मगदल । मगद । मुद्ग-मोदक ।

फेनी—फेनिका । सूतफेनी ।

घेवर—घृतपूर । घृतवर । घातिंक ।

गुलाबजामुन—दुग्धकूपिका ।

शकरपाला—खुरमा । सकरपाला । शंखपाल ।

खिचड़ी—कृशरान्न । कृशरा ।

सत्तू—सक्तू । सतुआ (सतुवा) ।

हाबुस—ओलंबी ।

[नोट—गेहूँ, जौ, चने, आदि की अधपकी फलियाँ भून कर फिर उसकी भूसी साफ करके तैयार करते हैं उसे 'हाबुस' कहते हैं ।]

बघार—छौंकन । वासित । छौंक ।

कौर—कवल । ग्रास ।

बटुआ—पिठर । बटलोही । स्थाली । उखा । उषा ।
कुण्ड । हण्डीष ।

तवा—पिष्टपचन । ऋजीष । ऋचीष । तव । पृष्टिपच ।

कड़ाही—कढ़ाही । टोकनी ।

कलछी—करछुलि । दर्वी । कम्बी । खजाका । चमचा ।
कलछुल । करछुल । कर्छी ।

काठ की कलछी—तर्हू । दारुहस्तक ।

कटोरा, कटोरी—खोरा । पानपात्र ।

कंस (कंश) । कांस्य । खोरवा ।

करवा (लोटा)—गडुआ । कर्करी । आलु । आल ।
आरु । गलन्तिका । लोटा ।

गिलास—जलपात्र । लुटिया । (आबखोरा) । खोरिया ।

घड़ा (गगरी)—घट । कुम्भ । कुट । निप । घटी ।
कलश । कलशी । कलसा ।

घड़े का ढक्कन—शराव । सरवा । कसोरा । परई ।
मलैया ।

मटका—(कुंडा)—कमोरा । मटकी । मणिक । अलिजर ।
अलंजर ।

थाली—भोजनपात्र । टाठी । थाल । थारी ।

चकला—चौका । होरसा ।

पथरी—पथरौटा ।

सिल—सिलौटी ।

बट्टा—लोढ़ा । लोढ़िया । बटिया ।

भरना—पौना । झन्ना ।

कठवत—कठौती । कठौता ।

बरतन—पात्र । भाण्ड । अमन्न । भाजन । वासन ।

आवपन ।

तेल की कुप्पी—कुतू । कुतुप । स्नेहपात्र ।

चौकी—चतुष्की । तख्ता । तख्त ।

पीढ़ा—पिढ़ई । आसन । पीठ । पाटा ।

सूप—शूर्प । प्रस्फोटन । फटकन । बेरमा ।

चलनी—चालनी । तितऊ । अँगिया ।

ओखली—उलखल । उदूखल । ऊखल । ओखरी ।

मूसल—मुषल । मूसर ।

चूल्हा—चुल्ली । उष्मान । उद्धार । अश्मन्त । अन्तिका ।

अधिश्रयणी । अन्दिका ।

चक्की—जाँत । चकिया । चकरी । जाँता ।

दौरा-दौरी—पिटक । पेटक । पिट । काण्डोल । कुरई ।

डेलवा ।

झाँपी—कट । किलिञ्जक । करंडा । पेटारा । पेटारी ।
सोना । मोनियों ।

अँगोठी—अंगारधानिका । हसन्ती । हसनी । अंगारधानी ।
अंगारशकटी ।

लुआठ (जलती हुई लकड़ी)—लुकाष्ठ (लुकाठ) ।
अलात । उलमुक ।

खपड़ी (चबैना भूनने का पात्र)—अम्बरीष ।
भ्राष्ट्र । खपरा । कड़ाह ।

भट्टी (भाड़)—कन्दू । स्वेदनी (शराब चुआने की
भट्टी) । भाड़ ।

उपला (कंडा)—गोहरा । गोहरी । कंडा । उपरी ।
चिपरी । करीष ।

राख—क्षार । छार । (खाक) ।

जूठा भोजन—उच्छिष्टान्न । उच्छिष्ट । फेला । फेली ।
जूठन ।



७. वस्त्राभरण वर्ग

- उबटन—उद्वर्तन । चिक्स (चीक्स) । उच्छादन ।
उत्सादन । बुकवा ।
तैलमर्दन—अभ्यङ्ग । स्नेहन ।
स्नान—आप्लाव । आप्लव । नहाना (हनाना) ।
चन्दनादिलेपन—वर्चा । चार्चिक्य । विलेपन ।
महावर—लाक्षा । आलक्तक (आलता) । जतु । याव ।
जावक । जतुरस । राग । जननी । सम्पद्या । अलक्तक ।
चक्रवर्त्तिनी ।
पुष्पमाला—माला । मालिका । स्रक् ।
[नोट—चोटी से लपेटी माला = आपीड़ । शेखर ।]
वस्त्र—कपड़ा । आच्छादन । वास । चैल । चेल । वसन ।
अंशुक । पट । परिधान । अंबर । दुकूल । चीर । निचोल ।
कर्पट ।
रेशमी-वस्त्र—पाटपट । पाटम्बर । कौशेय दुकूल ।
कृमिकोशोत्थ । कोसा ।

ऊनी-वस्त्र—रोम-पट । राङ्गव ।

नया-वस्त्र—नवाम्बर । कोरा कपड़ा । मड़िहारा कपड़ा ।
नूतन पट । तन्त्रक । निष्प्रवाणि ।

छालटी—वल्कल-वस्त्र । क्षौमी । शाण (सन के बने हुये
कपड़े) । दुकूल ।

धोया-वस्त्र—स्वच्छ वस्त्र । धौत वस्त्र । उद्गमनीय ।

पुराना-वस्त्र—जीर्ण वस्त्र । पटच्चर ।

मोटा-कपड़ा—स्थूल शटक । गज्जी । मोटरू ।

फटा-कपड़ा—चिथड़ा । कर्पट । नक्तक । गूढ़ड़ ।

पगड़ी—पाग । पगिया । मुरैठा । सेला । साफा । समला ।

दुपट्टा (चादर)—दुकूल । चादर । प्रावर । प्रावार ।
उत्तरासंग । वृहतिका । संख्यान । उत्तरीय । उपवस्त्र । वृहती ।

जामा—अँगरखा । कुरता ।

धोती—अधोशुक । परिधान । अन्तरीय । उपसंव्यान ।

[जनानी धोती = साड़ी ।]

फतुही—बनियान । गंजी । वंडी । सदरी । कुरती ।

चोली—अँगिया । चोलिया । छोटा कपड़ा । खण्ड ।
चोल । कूर्पासक ।

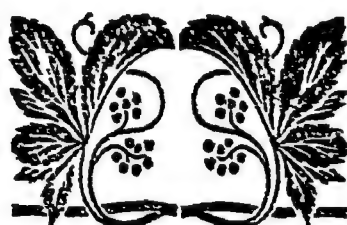
कमरबन्द—कटि-फेट । फेटा । पटुका । इजारबन्द ।

लहँगा—आप्रपदीना । आप्रपदीन । चण्डातक । पटवास ।

रजाई—नीशार । ओढ़ना । (लिहाफ़ ।)

[नोट—ऊनी कम्बल को 'रल्लक' कहते हैं ।

मोती का हार—मुक्ताहार । उरसूत्रिका । हार मुक्तावली ।
 नत्थ—नक्वेसर । बेसर । नथिया । नथुनी (छोटी नथ) ।
 नाक की कील—फूल । लौग । कील ।
 बिजायठ—बाजूबन्द । केयूर । अंगद । भुजबन्द ।
 पहुँची—बलय । कटका । पारिहार्य । आपावक । प्रकोष्ठाभरण ।
 कड़ा वा कंकण—कंकण । करभूषण । कंगन (कँगना) ।
 अँगूठी—अंगुलि-मुद्रा । अंगुलीयक । ऊर्मिका । मुद्रा ।
 मुँदरी । गोल । छल्ला ।
 करधनी—मेखला । कांची । सप्तकी । रसना । शृङ्खला ।
 किङ्किणी । क्षुद्रघण्टिका ।
 घुँघुर्—किङ्किणी । क्षुद्रघण्टिका ।
 पायजेब—पादकण्टक । हंसक । मंजीर । मंजील ।
 नूपुर—बिछिया । गुँगिया । छल्ला । गूँगी । पादांगुद ।
 हंसक । पादकण्टक । मंजीर । तुलाकोटि ।



८. ब्रह्मचारी वर्ग

पुस्तक—पोथी । किताब । ग्रन्थ । पुस्तिका ।

पत्रा—पन्ना । पत्र । (वर्क) । कागज । कागद ।

कलम—लेखनी ।

स्याही—काली । मसि । रोशनाई । मेला । अञ्जन ।
पत्राञ्जन । रञ्जनी । मलिनाम्बु । मशी ।

दावात—मसिपात्र । मसिदानी । मसिधानी । मसिमणि ।
मस्याधार । मेलान्धु । वर्णकूपिका । मेलानन्दा । मसिधान ।
मसिकूपिका । बोरकना ।

पटिया—तखती । पट्टी । पाटी । पट्ट ।

काला तखता—श्याम-पट्ट । श्याम-पट । असित-पट्ट ।

नकशा—मान चित्र । देश चित्र । राष्ट्र चित्र ।

अध्ययन—पठन । पढ़ना । अभ्यसन । स्वाध्याय ।

अध्यापन—पाठन । पढ़ाना । निपाठ । शिक्षण ।

मनन करना—गुनना । बोध करना (होना) ।
अवधारण करना । अभ्यास करना । हृदयङ्गम करना ।
चिन्तन करना ।

हवन—(देखो स्वर्गादिवर्ग 'यज्ञ' शब्द पृष्ठ १९)

शाकल्य—शाकला । हवि । सान्नाय ।

आचमन—उपस्पर्श । आचम । शुचिप्रणी ।

प्रणाम—नमस्कार । अभिवादन । पादग्रहण । चरणस्पर्शन ।
पायलागन । दण्डवत् ।

भूमिपर सोनेवाले—भूमिशायी । स्थण्डिल ।

ब्रह्मचारी का दण्ड—(पलास का दण्ड) = आषाढ ।
(बाँस का दण्ड) = राम्भ । वैणय । वेणुदण्ड ।

ब्रह्मचारी का पात्र—कमण्डलु । कमण्डल । कुण्डी ।
पञ्चपात्र ।

मृगचर्म—अजिन । चर्म । कृत्ति ।

नित्य-कर्म—यम ।

[नोट—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, और ब्रह्मचर्य—इनको
यम कहते हैं ।]

संस्कार-भ्रष्ट—ब्रात्य । संस्कारहीन ।

जनेऊ—उपवीत । यज्ञोपवीत । -यज्ञसूत्र । ब्रह्मसूत्र ।

कौपीन (लंगोटी)—कछनी । कच्छा । धटी । कक्षा ।
लँगोट । लँगोटी । -काछा । भगई । भगवा । (फा० कफनी) ।

आसन—(देखो भोजनादि वर्ग 'पीढ़ा' शब्द पृष्ठ २२२) ।

मुण्डन कर्म—क्षौर । भद्राकरण । वपन ।

होम का ईंधन—समिधा ।

पवित्री—पैती । कुशमुद्रिका । कुसपैती ।

[नोट—कुश के दलों की बनी हुई मुद्रिका जो श्राद्ध तर्पणादि में अनामिका में धारण की जाती है ।]

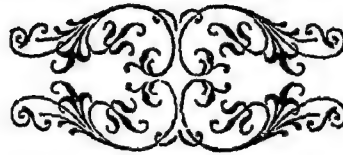
विवाह *—परिणय । उद्वाह । उपयाम । पाणिपीडन । पाणिग्रहण । दारकर्म । उपयम । करग्रह । निवेश । व्याह । शादी । मँगनी । सगाई । कुड़माई । परिभवन ।

वर (वर)—दुलहा (दूल्हा) । (नौशा) । वर ।

[नोट—सम्बन्धी वर्ग पृष्ठ १७५ 'पति' शब्द के पर्याय वाले सभी शब्द इसके पर्याय हो सकते हैं ।]

वरात (बारात)—वरयात्रा । जनेत ।

वराती—वरयात्री । जनेती ।



* मनु के अनुसार विवाह आठ प्रकार के माने गये हैं । 'यथा—
१. ब्राह्म । २. दैव । ३. आर्ष । ४. प्राजापत्य । ५. आसुर । ६. गान्धर्व ।
७. राक्षस । ८. पैशाच ।

—मनुस्मृति अ० ३-२१.

प्रत्येक विवाह का विस्तृत रूप मनुस्मृति अध्याय ३ श्लोक २३ से ३४ तक में वर्णित है ।

९. राज वर्ग

राजधानी—कोट । राजधानिका । रियासत । स्कन्धावार ।

राज्य *—मण्डल । जनपद । देश । प्रदेश । राष्ट्र ।
विषय । उपवर्त्तन । (मुल्क) । (बादशाहत) ।

राज्य-व्यवस्था—राजनियम । नीति । (कानून) ।

राज्याभिषेक—राजगद्दी । राज्यारोहण ।

दुन्दुभी—नौबत । नगाड़ा । भेरी । आनक । ढक्क ।
पटह । पटहा । डंका । दमामा ।

छत्र—ककुद । राजलक्ष्म । आतपत्र ।

चँवर—चामर । प्रकीर्णक । चौरी । चामरा । चामरी ।
रोमगुच्छक । बालन्यजन ।

पूर्णकलश—घटपूर्ण । भद्रकुम्भ । पूर्णकुम्भ ।

* राज्य के आठ अंग माने हैं गये हैं, जिन्हें राज्याङ्ग वा प्रकृति कहते हैं ।
यथा—१. राजा, २. अमात्य (मंत्री) । ३. सुहृद । ४. कोष (खज़ाना) ।
५. राष्ट्र (प्रजा) । ६. दुर्ग (किला) । ७. बल (शक्ति, सेनादि) ।
८. पौरश्रेणी (पुरवासियों का समूह) ।

खेमा (पड़ाव)—शिविर । डेरा । निवेश । पटवास ।
सेना-निवास ।

पहरा (गश्त)—सज्जन । उपरक्षण । चौकी । फेरी ।
गारद ।

—कैद—कारावास-दण्ड । कारागृह-दण्ड । दण्ड । सजा ।
बन्धन । जेल की सजा । बन्ध ।

कोड़ा—चाबुक । बेंत । दुर्गा । साँटा । कवर ।

देश निकाला की सजा—निर्वासन । कालापानी ।
डामन (डामल) ।

फाँसी की सजा—प्राणदण्ड । मृत्युदण्ड ।

महसूल—शुल्क । लगान । (टैक्स) ।

राजगद्दी—नृपासन । भद्रासन । सिंहासन ।

—हाथी—गज । हस्ती । करी । वारण । भातङ्ग । गजेन्द्र
(गयन्द्र) । कुंजर । सिंधुर । इभ । शुंडाल । कुंभी । नाग ।
पुष्करी । पद्मी । व्याल । दंती । द्विरद (दुरद) । द्वीप ।
वितुण्ड । (हाथी का बच्चा = कलभ) ।

हाथिनी—बसा । वरेणुका । करिणी । धेनुका । वासिता ।

मदवाले हाथी—मदोत्कट । मदकल । मत्त । प्रभिन्न ।

हाथी की सूड़—शुंड । तुण्ड । कर । शुंडादण्ड ।

हाथी का सिक्कड़—शृंखल । निगड़ । सांकल । अलान ।
अन्दुक ।

हाथी का मद—मद । दान ।

हाथी का अंकुश—आँकुस । शृणी । अंकुश ।

हाथी की बोली—चिन्वाड़ । गर्जन ।

घोड़ा—घोटक । अश्व । घोट । पीती । वीति । तुरंग
(तुरग) । गजी । बाह । हय । सैन्धव । गन्धर्व । अर्वा । हरी ।
धारट । जवन । जवी । श्रीभ्राता । अमृतसोदर । वातायन ।
शालिहोत्री । नरद्वय । चामरी । एकशफ । बाहु । सुपर्णा ।
विमानक । अरुष ।

घोड़ी—वानी । अश्वा । बड़वा ' घोटकी ।

घोड़े की गर्दन के बाल—अयाल । आल ।

घोड़े की खुर—खुर । झुर । शफा सुन ।

घोड़े की बोली—हिनहिनाना ।

घोड़े की लगाम—गग । गगडोर । लगाम ।

घोड़े की चाबुक—कषा । सुड्डनी । कोड़ा । चनोदी ।
चाबुक ।

रथ (लड़ाई के लिये)—स्यन्दन । शताङ्ग ।

रुवाई-जहाज—पुष्प रथ । पुष्पक विमान । विमान ।
व्योमयान ।

जनाना-रथ—कर्णारथ । प्रवहण । हयन । डयन ।

गाड़ी—शक्र । गान्त्री । गन्त्रीक ।

पालकी—शिविका । चान्ययान ।

डोली—दोला । भेंला । हिंडोल ।

बरतार—कवच । तनत्राण । वर्त । वंशत । कंकटक ।
जगर । कटक । योग । सनाह (सनाह) । कंचुक । उरश्चद्र ।

टोप—शिरस्त्रान । कुंडी । शीर्षण्य । शीर्षक ।

✓ गेंद—कन्दुक । गेण्डुक । गेंदा ।

धनुर्धर—धन्वी । निषंगी । धनुष्मान् । धानुष्क ।
धनुर्भृत् । तीरन्दाज ।

बछ्छीबाज—शाक्तिक ।

लट्ठबाज—याष्टिक । लट्ठैत । लाठीबाज ।

✓ धनुष—चाप । शरासन । कोदण्ड । कार्मुक । गुणी ।
तारक । धनु ।

धनुष की डोर—गुण (गुन) । मुर्वी । शिंजिनी ।
प्रत्यञ्चा । मौर्वी । चिल्ला ।

✓ बाण—विशिख । शर । नाराच । खग । आशुग ।
कलम्ब । पत्री । इषु । शायक । अजिह्वग । मार्गण । असुप ।
काण्ड । प्रषत्क । शिलीमुख । पुंख । क्षुर । इक्षुप्र । सायक ।

✓ तरकश—तूण । तूणीर । निषङ्ग । इषुधि । तूणी ।

✓ तलवार—खड्ग । चन्द्रहास । करपाल । कृपाण । असि ।
रिष्टि । करवाल । मण्डलाग्र । कौक्षेयक । सायक । शायक ।

✓ ढाल—चर्म । फलक । फल । फर ।

गुप्ती—ईली । करपालिका । खौड़ा ।

छुरी—छुरिका । असिपुत्री । असिधेनुका । कत्ती ।

युद्ध—लड़ाई । आयोधन । विदारण । आस्कंदन । समर-
अनीक । रण । विग्रह । कलह । संप्रहार । अभिसम्पात । संयुग ।

अभ्यामर्द । समाघात । आहव । आनाह । विदार । दारण ।
आनर्त्त । मार काट । मार । दंगा । जूझ ।

तोप—तुपक । गोला । शतघ्नी ।

बन्दूक—गोली । अग्न्यास्त्र ।

भाला—शेल । शल्य । शङ्खु । दीर्घायुध । शल । कुन्त ।
विषाङ्कुर ।

वध—घात । हिंसा । प्रमापण । निर्वहण । निकारण ।
निशारण । प्रवासन । परासन । निसूदन । निहिंसन । निवासन ।
निर्ग्रन्थन । अपासन । निहनन । क्षणन । मारण । हनन ।
प्रतिघातन । उद्धासन । प्रमथन । क्रथन । आलम्ब । पिञ्ज ।
विशर । विशरण । पात । परिघ । परिघातन । कदन । निवारण ।
समाघात । उत्पात । मार । संघात । निधन ।

चिता—चित्या । काष्ठ मठी । चैत्य । चिताचूड़क ।
चित्य । चिति ।



१०. व्यवसाय वर्ग

जीविका—आजीव । वृत्ति । वर्त्तन । जीवन । वार्त्ता ।
जीव । जीवनोपाय । जीवन-मार्ग । रोजी । व्यापार । रोजगार ।
काम । व्यवसाय । धंधा । पेशा । पर्युद्घ्वन ।

ऋण—उद्धार (उधार) । कर्जा ।

सूद—ब्याज । कुसीद । कुषीद । अर्थवृद्धि । अर्थप्रयोग ।
वृद्धिजीविका । वृद्ध्याजीवन ।

सूद-खोर—कुसीदक । वृद्ध्याजीवी ।

खेती—कृषि । कृषिकर्म । अनृतकर्म । किसानी ।

खलियान—खल-स्थान । खलाधान । खरिहान ।

कुदार—कुदाल । खनित्र । अवदारण ।

हँसुआ—दात्र । लवित्र । दातरी । हँसिया ।

हर—हल । हाल । लांगल । सीर । गोदारण ।

हरिस—ईषा । लांगल । दण्ड ।

हर का-फाल—निरीष । कूटक । फाल । कृषिक । कृषिका ।

बैल—वृषभ । बलीवर्द । उक्षा । भद्र । वृष । वरधा ।

साँड़—षण्ड । गोपति । विट्चर ।

कोठार—कुठला । कोठिला । भंडार । कोठा । बखार ।

रस्सी—दाम । दामा । रज्जु (लेजुर) । पशुरज्जु । दामनी ।
रसरी ।

मथानी—रई । छोड़ी । वैशाख । मन्थ । मन्थान ।
मन्थदण्डक ।

मूलधन—नीवी । परिपण । पूँजी ।

नफा—मुनाफा । लाभ । फल ।

लेन-देन—विनिमय । निमय । विमय । परिवर्त ।
प्रतिदान । अदल बदल । एराफेरी ।

धरोहर—उपनिधि । गिरों । गिरवी । न्यास । थाती ।

विक्री की वस्तु—विक्रेय । पणितव्य । पण्य । क्रय्य ।

बेंचना—विक्रय । विपण ।

तौल वा मान—परिमाण । मान । यौतव । यौवत ।
पाय्य । मान ।

तराजू—तुला । तौली । काँटा ।

तराजू का पलड़ा—पल्ला । तुलापट । डाल । डल्ला ।
डलिया ।

डाँड़ी—डॉड़ । बेंट । डंडा । काँटा ।

बाट—बटखरा । बटक ।

नकद—नगद । तत्काल-धन ।

उधार—(देखो “ऋण” शब्द पृष्ठ २३७)

सस्ता—स्वस्थ । किफायत ।

महँगा—महर्घ । कीमती । महँग । मंदा ।

दुकान—पण्यशाला । पण्य ।

✓धन—सम्पत्ति । वित्त । द्रव्य । ऋक्थक (रिक्थ) ।
अर्थ । विभव । भोग्य । लक्ष्मी । वसु । हिरण्य । काञ्चन ।
भोग । वृद्धि ।

जुआ—द्युत । कैतव । पण । अक्षवती ।

वेतन—मजूरी । दक्षिणा । विधा । कर्मण्या । भरण्य ।
भरण । मूल्य । पुरस्कार । भर्म्म । पण । आजोव । जीवन ।
वृत्ति । (तनख्वाह) । मेहनताना । कमाई ।

सलाई—शलाका । सिक्चा । साँक । सीका । तोली ।

दिया-सलाई—दीपशलाका ।

भाथी—भस्त्रा । चर्मप्रसेविका । धौकनी ।

कूँची (ब्रश)—तूलिका । इशिका । ईषिका ।

घरिया (धातु गलाने का घटिका)—मूषा । कुल्हिया ।
घरिया । घड़िया ।

कसौटी—कष । निकष । क्षाण । कस् ।

रेती—पत्रपरशु । ब्रश्चन ।

बरमा (छेदनेवाला)—बेधनी । बेधनिका । आविध ।
आस्फोटनी ।

कतरनी—कृपाणी । कर्तरी । कूँची ।

टाँकी—पाषाणदारण । टङ्क ।

आरा—क्रकच । करपत्र ।

खूँटी—भारयष्टी । मेख । काँटा । टँगती ।

बहँगी—विहङ्गिका । विहङ्गिमा ।

सिकहर—छीका । शीका । शीक्य । काच ।

जाल—बागुर । बन्धनी । मृगबन्धनी ।

फन्दा—कूटयन्त्र । उन्माथ ।

गुड़िया—पुत्रिका । पुत्तलिका । पाञ्चालिका । पुतली ।
गुडुआ । गुडुई ।

बाँक (टँगारी)—टँगारा । वृक्षभेदी । वृक्षादन । गैटा ।
कुल्हाड़ी ।

चौपड़—शारि फल । अष्टापद ।

[नोट—शतरंज की गोटियों के भी ये ही नाम हैं ।]

पासा—पाशन । अक्ष । देवन ।

अस्तूरा—क्षुरा । क्षुरिका । उस्तरा । छूरा ॥

जामिन—प्रतिभू । लग्नक ।

खन्ती—स्तम्बघ्नी । स्तम्बहननी ।

सूई—शूचि ।

तागा—धागा । सूत । डोरा । डोर ।

सिकड़ी—साँकल । जंजीर ।

ताला—तलक । कुल्फ ।

ताली—कुंजी । चाबी ।

कुंडी—कुंडा । कोंदा । कड़ी ।



११. स्वर-तालदि वर्ग

स्वर *—सुर । आवाज । बोल । ध्वनि । शब्द ।

ताल †—ठेका । करतलध्वनि ।

* संगीत शास्त्रानुसार स्वर के सात भेद हैं, यथा—१. षड्ज । २. ऋषभ । ३. गान्धार । ४. मध्यम । ५. पञ्चम । ६. धैवत । ७. सप्तम । इन्हीं सातों स्वरों को 'सरगम' कहते हैं ।

† ताल के मुख्य प्रकार अष्ट, रुद्र, ब्रह्म, ईन्द्र और चतुर्दश ये पाँच हैं ।

(१) अष्टताल के भेद—१. आढ़ । २. दोज । ३. ज्योति ।

४. चन्द्रशेखर । ५. गज्जन । ६. पञ्चताल । ७. रूपक । ८. समताल ।

(२) रुद्रताल के भेद—१. वीर विक्रम । २. विषम समुद्र ।

३. धरण । ४. वीर दशक । ५. मण्डूक । ६. कन्दर्प । ७. डाँशपाहिड़ ।

८. ध्रुव चरण । ९. दशकोषी । १०. गजेन्द्रगुरु । ११. छटका ।

(३) ब्रह्मताल के भेद—१. ब्रह्म । २. विराम ब्रह्म । ३. षटकला । ४. सप्तमात्रा ।

(४) इन्द्रताल के भेद—१. देवसार । २. देव चाली । ३. मदनदोला ।

४. गुरु गन्धर्व । ५. पञ्चाली । ६. इन्द्रभाष ।

(५) चतुर्दश ताल के भेद—१. चिन्हताल । २. चन्द्रमात्रा ।

३. देवमात्रा । ४. अर्द्ध ज्योतिका । ५. स्वर्गसार । ६. क्षमाष्ट ।

मधुर-स्वर—कल । काकली । मंद स्वर । सूक्ष्म स्वर ।

धीर-स्वर—गम्भीर स्वर । मन्द्र । मद्र ।

उच्च-स्वर—तार स्वर । तीव्र स्वर ।

चढ़ाव—आरोहण । आरोहन । प्ररोहण ।

उतार—अवरोहण । अवरोहन । अवतरण । अधोगमन ।

बाजा *—वाद्य । वादित्र । आतोद्य ।

वीणा—वीन । वल्लकी । विपञ्जी । परिवादिनी ।

मृदङ्ग—मुरज । पखावज ।

ढोल—पणव । पटह । ढक्का । ढोलक ।

डमरू—डिंडिम ।

१७. धराधरा । ८. वसन्त वाक् । ९. काक कला । १०. वीर शब्दा ।

११. ताण्डवी । १२. हर्ष धारिका । १३. भाषा । १४. अर्द्धमात्रा ।

—“सङ्गीत दामोदर” ॥

* बाजों के दो भेद हैं—१. जो स्वर निकालते हैं और २. जो ताल देते हैं । पुनः बाजों के चार भेद माने गये हैं—१. तत, २. आनद्ध ३. सुषिर, और ४. घन ।

(१) तत—वीणा, सितार, आदि तार वाले बाजे । (२) आनद्ध—मृदङ्ग, ढोल, तबला आदि ताल देने वाले बाजे । (३) सुषिर वा शुषिर—वंशी, तुरही, शंख आदि मुँह से बजाने वाले बाजे । (४) घन—घंटा, मजीरा, झाँझ, भेरी आदि धातु के बने हुये घनघनाने वाले बाजे ।

तबला—ठेका । डुमो । दुक्कड़ ।

सारंगी—चिकारा । सरंगो ।

वंशी—बंसी । बाँसुली । मुरली । वेणु । मुरलिका ।

तुरही—शृङ्गो । सिंघा । मुरचंग (मुँहचंग) । विषाण ।

मजीरा—मञ्जीर । जोड़ी ।

शहनाई—पिपिहरी । नफीरी । रौशन चौकी ।

झाँझ—झाल । झलरी ।

डफला—डफ । चंग ।



चतुर्थ खण्ड

१. पशु वर्ग

पशु *—जानवर । चतुष्पद । चौपाया । मृग ।

सिंह—हरि । केसरी । केशरी । हर्यक्ष । मृगेन्द्र ।
मृगराज । पञ्चास्य । पारीन्द्र । श्वेत पिङ्गल । कण्ठीरव ।
पञ्चशिख । शैलट । भीमविक्रम । सटांक । केशी । महावीर ।
इभारि । मृगारि । क्रव्याद । नखी । मानी । विक्रान्त । बहुबल ।
दीप्तपिङ्गल । नखरायुध । पुण्डरीक । पञ्चानन । शेर । बबर ।

बाघ—व्याघ्र । द्वीपी । शार्दूल । पृदाकु । वनश्व ।
चित्रक । पुण्डरीक । हिस्त्रक । श्वापद । पञ्चनख । व्याल ।
गुहाशय । तीक्ष्णदंष्ट्र । भीरु । नखायुध ।

व्याघ्र-नख—व्याडायुध । करज । नख । नखी ।
बघनखा । नखाङ्क ।

* चार पैरों से चलने वाले, सींग-पूँछ वाले जीव को पशु कहते हैं ।
इनमें सभी पशुओं की सींग नहीं होती, परन्तु पूँछ सभी के होती है ।

नोट—‘हाथी’ और ‘घोड़ा’ के पर्याय इस वर्ग में नहीं दिये गये हैं ।
इनके लिये पृष्ठ २३३, २३४ देखिये ।

चीता—तरक्ष । मृगादन । तरक्षु । तर्क्षु । तरक्षुक ।
चित्रक । चित्रकाय । उपव्याघ्र । मृगान्तक । शूर । चित्र व्याघ्र ।
क्षुद्र शार्दूल ।

सूअर—शूकर । वराह । घृष्टी । कोल । किरी । किटि ।
दंष्ट्री । घोणी । स्तब्धरोमा । क्रोड़ । भूदार । पोत्री । दन्तायुध ।
पृथुस्कन्ध । पोत्रायुध । वह्नपत्य । वन्यस्य । रोमश ।

भेड़िया—वृक । ईहामृग । कोक । वात्सादन । विरुक ।
छाग भोजी । जनाशन । हुँडार । बीघ । बग्घा । लकड़बग्घा ।

गैडा *—गण्डक । खड्गी । खड्ग । गण्डा ।

भालू—रीछ । ऋक्ष । भल्ल । भल्लूक । अच्छ भल्ल ।
अच्छ ।

भैंसा—महिष । लुलाय । लुलाप । कासर । सैरिभ ।
वाहद्विष । यमवाहन । विषज्वर । वंशभीरु । रजस्वल । आनूप ।
रक्ताक्ष । अश्वारि । कलुष । मत्त । विषाणी । गवली । बली ।

ऊँट—क्रमेलक । महाङ्ग । मय । दीर्घगति । बली । करभ ।

* गैडा—भैंसे के आकार का एक बड़ा पशु होता है, जो जंगलों में नदी के किनारे के दलदलों में पड़ा रहता है । जंगली झाड़ियों की जड़ों और कोपलों को खाता है । इसके पैरों में तीन तीन अंगुलियाँ होती हैं । इसका चमड़ा बिना बाल का अत्यन्त मोटा और कड़ा होता है, जिससे ढाल बनाई जाती है । इसकी नाक पर पैनी सींग होती है, जिससे यह चोट करता है । गंगासागर के पास सुन्दर वन में गैडे बहुत मिलते हैं ।

—“हिन्दी शब्द सागर” ।

धूसर । लम्बोष्ठ । रवण । महाजंघ । जवी । जांधिक । दीर्घ ।
 शृंखलक । महाग्रीव । महानाद । महाध्वग । महापृष्ठ । बलिष्ठ ।
 दीर्घ जंघ । ग्रीवी । धूम्रक । शरभ । कण्टकाशन । बहुकर ।
 भीली । अध्वग । मरुद्विप । वक्रग्रीव । वासन्त । कुलनाश ।
 मरुप्रिय । दुर्ग लंघन । भूतघ्न । दासेर । दीर्घ ग्रीव । उष्ट्र ।
 केलि कीर्ण ।

॥ गदहा—रासभ । गर्दभ । खर । वैशाख-नन्दन । चक्रीवान् ।
 शीतलावाहन । वालेय । राशभ । शङ्खकर्ण । भूरिगम्भ । धूसराह्वय ।
 वेशव । धूसर । चिरमेही । चारपुंख । चारट । ग्राम्याश्व ।

[नोट—गदहे और घोड़ी के संयोग से 'खच्चर' जाति की उत्पत्ति होती है । यह बहुत दीर्घायु और परिश्रमी होता है ।]

॥ सियार (गीदड़)—शृगाल । शिवा । गीदड़ । फेरु ।
 मृगधूर्तक । वञ्चक । जम्बुक । जम्बूक । भूरिमाय । गोमायु । फेरव ।
 मूत्रमत्त । कुरव । श्वधूर्त । वनश्वा । घोर बासन । शालावृक ।
 गोमी । कटस्वादक । शिवालु । फेरण्ड । व्याघ्रनायक । निष्ठुर ।
 खल । भीरु ।

॥ हरिण *—मृग । कुरङ्ग । अजिनयोनि । सारङ्ग ।
 भीरुहृदय । वातायु । ऋश्य । कुरङ्गम । चारुलोचन । सुरभी ।

* मृग के भेद—१. कृष्णसार । २. रुह । ३. न्यकु । ४. रंकु ।
 ५. शंवर । ६. रौहिष । ७. गोकर्ण । ८. पृषत । ९. ऐण । १०. ऋश्य ।
 ११. रोहित । १२. चमर ।

तथा हरिण के भेद—१. गन्धर्व । २. शरभ । ३. राम । ४. सुमर ।

मृग-चर्म—अजिन । ऐण ।

✓बन्दर—वानर । शास्त्रामृग । मर्कट । कपि । प्लवङ्ग ।
प्लवग । क्रीश । वलीमुख । वनौका । मर्क । प्लव । प्रवङ्ग । प्रवग ।
प्लवङ्गम् । गोलाङ्गूल । कपित्थास्य । हरि । नगाढन । मम्पी ।
केलिप्रिय । शालावृक । क्रिषि ।

✓गाय—माहेयी । सुरभी । गोरु । शृंगिणी । अवन्या ।
अर्जुनी । रोहिणी । गौ । उत्ता । धेनु ।

गाय का बछ्वा वा बछिया—वत्स । सकृत्करी ।
बछ्वा (बछिया) ।

गायों का समूह—गोधन । गोकुल ।

भेंड़ा—मेष । वृष्णि । एङ्क । मेढू । उरभ्र । उरण ।
ऊर्णायु । भेंड । हुड । शृंगिण । अवि । लोमश । बली । रोमश ।
भेंडक । नेंटक ।

बकरा—अज । छाग । छागलक । वत्स । लुभ । छागल ।
तभ । त्तभ । शुभ । बर्कर । क्रयत्तद । पर्णभोजी । लम्बकर्ण ।
मेनाद । अल्पायु । पयस्वल । छागड़ी । अद्रुक । मेध्य । पशु ।

साही—श्रावित् । शल्य ।

५. गवद । ६. शश । 'बारहसिंगा' नामक हरिण भी हरिण की एक जाति विशेष है, इसकी सींग के बीच से शास्त्रा रूप में कई सींगें निकलती हैं ।

छनर = सौंभर, चीतल । गवय = नीलगाय । शश = खरहा । ये सब मृग के ही भेद हैं ।

साही के रोम (काँटे)—श्याविध । शलल । शल ।
शलली ।

बिलार—बिड़ाल । बिल्ली । बिलैया । मार्जार । मार्जारी
(स्त्री०) । वृषदंशक । आखुमुक् । विराल । विलाल । दीप्ताक्ष ।
जाहक । विडारक । त्रिशङ्कु । जिह्वाप । मेनाद । सूचक । मायावी ।
शालावृक । दीप्तलोचन ।

✓ कुत्ता *—कुकुर । श्वान । श्वा । शुनक । शुनि । भाषक ।
कौलेयक । सारमेय । मृगदंशक । भषण । भल्लूक । वक्रलाङ्गूल ।
वृकारि । रात्रिजागर । कालेपक । ग्राम्यमृग । मृगारि । शूर ।
शयालु ।

[नोट—कुतिया = सरमा, शुनी, कुक्कुरी, भषी आदि ।]

✓ खरहा—खरगोश । शश । शशक । शसा ।

✓ चूहा—मूषक । उन्दरु । मूषीक । बभ्रु । पिग । आखनिक ।
वृष । वृश । नखी । खनक । बिलकारी । धान्यारि । आखु ।
बहुप्रज । मूसा ।

[नोट—छोटी चूहियों को बालमूषिका, गिरिका, चुहिया, मुष्टी-
वा मुसटी कहते हैं ।]

* कुत्ते के ६ गुण—ब्रह्मशी स्वल्पसन्तुष्टः सुनिद्रः शीघ्रचेतनः ।

प्रभुभक्तश्च शूरश्च पडते च शुनो गुणाः ॥

—‘चाणक्यनीति’ ।

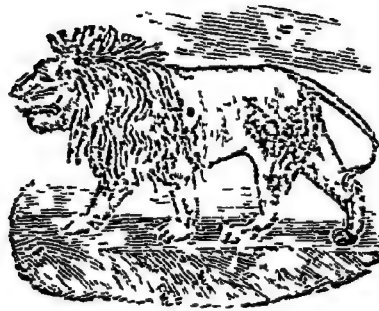
बहु भोजी, स्वल्प सन्तोषी, खूब सोनेवाला, शीघ्र चैतन्य होजाने वाला,
प्रभु भक्त और शूर ये छः गुण कुत्ते में होते हैं ।

छछून्दर—दीर्घतुण्डिका । गंधमुखी । गंधमूषिका ।

नेवला—नकुल । पिङ्गल । सर्पहा । वभ्रु । सूचीवदन ।
सर्पारि । लोहितानन ।

गिलहरी—गिलाई । चेखुर । गिल्ली । गिरि ।

[नोट—यह रोयेंदार पूँछवाला जानवर चूहे की एक विशेष जाति है, जो वृक्षों पर विशेषतः रहती है ।]



२. सरीसृप वर्ग

शेषनाग—अहिराज । सहसानन । फणीश । धरणीधर ।
अहीश । नागराज । पन्नगेश । शेष । अनन्त । सर्पपति ।
महाअहि । सहसमुख । महिधर ।

सर्पराज—वासुकी । वासुकेय ।

सर्प—भुजग । भुजंग । नाग । फणी । द्विरसन । व्याल ।
अहि । उरग । पन्नग । साँप । दर्पी । चक्षुश्रा । भोगी । पवनाशन ।
हरि । सारंग । आशीविष । गूढपद । विषधर । करदर्प ।
लेलिहान । जिह्मण । मणिधर । फणधर । चक्री । काल । बिलेशय ।
कुण्डली । दीर्घपृष्ठ । काकोदर । दन्तशूक । दर्वीकर । तक्षक ।
गोकर्ण । कुम्भीनस । कञ्चुकी । पृथाकु ।

गोनस-सर्प—गोनस । तिलित्स ।

अजगर-सर्प—शयु । वाहस ।

डेड़हा-सर्प—जलव्याल । अलगर्द । आनगर्द । अलिगर्द ।

दोमुँहा-साँप—राजिल । डुण्ड ।

करैत-साँप—मालुधान । मातुलाहि । करइत ।

साँप का शरीर—भोग ।

साँप का फन—फण । फटा । फणा । फट । स्फट ।
दर्वी । फटी । स्फुट ।

साँप का केंचुल—कञ्चुक । निर्मोक । केंचुली ।

साँप का दाँत—अहिदंष्ट्र । आशी ।

साँप का विष—क्ष्वेड । गरल । विष । गर ।
(जहर) ।

विष—गरल । कालकूट । माहुर । जहर । हलाहल ।
मार । संगर । गर । वत्सनाभ । सौराष्ट्री । काकोल । प्रदीपन ।
ब्रह्मसू । शौलिकेय ।

साँप पकड़नेवाला—सँपेरा । मदारी । व्यालग्राह ।
गारुडी । अहितुंडिक ।

विच्छू—बीछी । अलि । द्रोण । वृश्चन । अरुण । आली ।
कान खजूरा—कर्णसूचिका । शतपदी । गोजर ।
-कर्णजलौका ।

विल—कुहर । सुपिर । विल । छिन्न । सुषि । निर्व्यथन ।
रोक । श्वभ्र । दर । विवर । छेद । बया । सूराख ।

गोह—निहाका । गोधिका ।

केचुआ—गण्डूपद । किञ्चुलुक । शिली । गण्डूपदी ।
शूककीट ।

गिरगिट—सरट । कृकलास । गिरगिटान ।

छिपकिली—गृहगोलिका । गृहगोधी । गृहगोधिका ।
-सुषली । गृहालिका । विषतुड्या । पल्ली ।

३. पक्षी वर्ग

पक्षी—खग । विहङ्ग । विहग । विहङ्गम । विहाया ।
शकुनि । शकुन्ति । शकुन्त । शकुन । द्विज । पत्री । पतत्री ।
पतग । पत्ररथ । अण्डज । नगौका । वाजी । विकिर । नीढोद्भव ।
गरुत्मान् । नभसङ्गम । नभचर । नाडीचरण । पतङ्ग । चंचुभृत् ।
छुरण्ड । सरण्ड । द्युग । चिड़िया । चिरई । चिरैया । पंछी ।

मोर—मयूर । वर्ही । वर्हिण । नीलकण्ठ । भुजङ्गभुक् ।
शिखावल । शिखी । चन्द्रकी । सितापाङ्ग । ध्वजी । मेघानन्दी ।
केकी । कलापी । शिखण्डी । चित्रपिच्छिक । मेघनादानुशासक ।
भुजगभोगी ।

मोर-शिखा—वर्हिचूड़ा । शिखिनी । शिखालु । शिखा ।
सुशिखा । शिखाबला । केकीशिखा ।

मोर-चन्द्रिका—मेचक । चन्द्रक । चन्द्रिका ।

पपीहा—चातक । स्तोकक । सारङ्ग । मेघजीवन । हरि ।
स्तोकक । पपीहरा । पपैया ।

हंस—राजहंस । कलकण्ठ । सितच्छद । सितपक्ष ।
सरःकाक । पुरुदंशक । धवलपक्ष । मानसालय । श्वेतगरुत् ।
मानसौक ।

✓ बगुला—बलाका । विसकंठिका ।

✓ बत्तख—कादम्ब । कलहंस । प्लव । कारण्डव ।

✓ सारस—लक्ष्मण । लक्षण । सरसीक । पुष्कराह । गोनर्द ।
नाङ्कुर । सरसीक । सरोत्सव । रसिक । कामी ।

[नोट—मादा सारस = सारसी, लक्ष्मणा ।]

कुररी—कुरर । उक्कोश । कुरल । खरशब्द । क्रौञ्च ।
पंक्तिचर । टिट्ठिभ । टिट्ठिह । टिट्ठिहरी । टिट्ठी ।

✓ चकवा—कोक । चक्र । रथाङ्ग । भूरिप्रेमा । द्वन्द्वचारि ।
सहाय । कान्त । कामी । कामुक । रात्रिविश्लेषगामी ।

गरुड—गरुत्मान् । ताक्षर्य । वैनतेय । खगेश्वर । विष्णुरथ ।
नागान्तक । सुपर्ण । पन्नगाशन । महावीर । पक्षिसिंह । शात्मली ।
हरिवाहन । अमृताहरण । खगेन्द्र । भुजगान्तक । तरस्वी । ताक्षर्यनायक ।

✓ खंजन—खिड़रिच । खञ्जरीट । कणाटीन । काकच्छर्दि ।
खञ्जखेल । तातन । मुनिपुत्रक । भद्रनामा । रत्ननिधि । खञ्जखेट ।
गूढ़नीड । तण्डक । चर । काकच्छद । नीलकण्ठ । कणाटीर ।
कणाटारक ।

✓ कोयल—कोकिल । परभृत । पिक । वनप्रिय । परपुष्ट ।
काल । वसन्तदूत । ताम्राक्ष । गन्धर्व । मधुगायन । वासन्त ।
कलकण्ठ । कामन्ध । काकलीरव । कुहूरव । मत्त । मदनपाठक ।

आड़ी—शराली । आटी । आठी । शराडी । शराटी ।
शराती ।

गिद्ध—गृध्र । दूरदर्शन । दाक्षाय्य । वज्रतुण्ड ।

चील—चिल । आतायी । आतापी । पिल ।

कौआ—काक । काग । करट । अरिष्ट । बलिपुष्ट । ध्माक्ष ।
आत्मघोष । बलिभुक् । वायस । दीर्घायु । कृष्ण । पिशुन । ग्रामीण ।
कटखादक । सूचक । काण । धूलिजंघ । कौशिकारि । मुखर ।
खर । महालोल । चिरंजीवी । चलाचल । करटक । नागवीरक ।
सकृत्प्रज । गाढमैथुन । श्रावक । रतज्वर ।

डोमकौआ—द्रोण काक । काकोल । द्रोण । कालकंटक ।

चमगादर—जतुका । जतूका । चमगुदरो । परोष्णी ।
तैलपायिका । अजिन पत्रा । चर्मचटिका । चमगीदर ।

हारिल—हरीत । हारिल सुग्गा ।

सुग्गा वा तोता—शुक । कीर । वक्रतुण्ड । मेधावी ।
रक्ततुण्ड । दाडिमप्रिय । वक्रचञ्चु । चिमि । चिमिक । शूक ।
प्रियदर्शन । मञ्जुपाठक ।

मैना—सारिका । सारी । पीतपादा । गोराटी । शारिका ।
गोकिराटिका । चित्रलोचना । मधुरालापा । पूती । मेधाविनी ।
गोराण्टिका । गोकिराटी । गोरिका । कलह प्रिया । धड़वा ।

तीतिर—तित्तिरी । तैतिर । तीतुर । तीतल । कुक्कुभ ।
याजुषोदर ।

बटेर—वर्त्तका । वर्त्तिका । वर्त्तिक ।

नीलकंठ—चाष । चास । किकीदिवी । किकीदिव ।

भुजंगा—कलिंग । भृंग । धूम्याट । नौवा ।

कठफोरा—शतपत्रक । दारवाघाट ।

उल्लू—घुग्घू । उल्लूक । कौशिक । तामस । घूक । कुशि ।
दिवान्ध । नक्तञ्चर । निशार । काकारि । घोरदर्शन । लक्ष्मी-वाहन ।

✧ बाज—श्येन । शशादन । पत्री । कपोतारि । पतङ्गीरु ।
घाति पक्षी । ग्राहक । पक्षी । शशाद । क्रव्याद । क्रूर । बेगी ।
खगान्तक । करग । नीलपिच्छ । लम्ब कर्ण । रणप्रिय । रणपत्री ।
पिच्छवाण । स्थूल नील । भयंकर । शशघातक । कुही ।

✧ लवा—भरदूल । भरद्वाज । भरुई । व्याघ्राट । लाव ।
भरद्वाजक । कोरक ।

✧ कबूतर—कपोत । पारावत । गृहकपोत । कलरव । छेद्य ।
पारापत । गृहकुक्कुट । रक्तलोचन ।

रुखा *—कर्करेडु । करेदू । -ररुई । कौड़िला ।

टिटिहरी—टिटिभी । कोयष्टी । टिटिही ।

मुर्गा—ताम्रचूड़ । अरुणशिखा । कुक्कुट । चरणायुध ।
कृकवाकु । कालज्ञ । नियोद्धा । विष्किर । नखरायुध । रात्रिवेद ।
उषाकर । वृताक्ष । काहल । दक्ष । यामनादी । शिखण्डिक ।
कुक्कुड़ ।

गौरैया—चटक । कलविंग । चित्रपृष्ठ । गृहनीड़ ।

* कहते हैं कि रुखा पक्षी जिस किसी का नाम सुन पाता है, वह उसी नाम की रट लगाने लगता है । जिससे उस मनुष्य की मृत्यु हो जाती है । यह निचाट रात में बोलना है । इसकी बोली कर्कश होती है और अशुभ मानी जाती है ।

चृषायण । कामुक । नीलकण्ठक । कालकण्ठक । काम चारी ।
कला विकल ।

—चकोर—चन्द्रिकापायी । कौमुदीजीवन । चकोरक ।
कोरक ।

काका कौआ—काकातूआ । तूआ ।

चाँच—चञ्चु । ठोर । टोंट । त्रोटि । चंचू । चंचुका ।
सृपाटिका । तुंड ।

—अंडा—पेशी । कोष । पेशीकोष । डिम्ब ।

घोंसला—नोड़ । कुलाय । खोता ।

पंख—पखना । पर । डैना । पक्ष । पत्र । छद् । पतत्र ।
गरुत् ।

चिड़ियों के बच्चे—पोत । पोतक । शावक । अर्भक ।
पाक । डिम्ब । पृथुक । शिशु । पोआ । गेदा ।



४. कीट-पतङ्गादि वर्ग

मक्खी—मक्षिका । माखी । माछी । मच्छी । भम्भ ।
माचिका । पतंगिका । पत्तिका । अमृतोत्पन्ना । वमनीया । नीला ।
पलङ्कषा । वर्वणा ।

मच्छर—मच्छड़ । डोंस । दंश । सूक्ष्ममक्षिक ।
वज्रतुण्ड । सूच्यास्य । मसा । (मासा) । वनमक्षिका ।

भौरा—भ्रमर । अलि । मधुकर । मधुव्रत । मधुलिट् ।
मधुप । द्विरेफ । पुष्पलिट् । भृंग । षट्पद । अली । कालालाप ।
शिलीमुख । मधुकृत् । द्विप । भसर । चञ्चरीक । सुकाण्डी ।
मधुलोलुप । इन्दिन्दिर । मधुपर । लम्ब । पुष्पकीट । भृंगराज ।
मधुमारक । मधुसूदन । मधुलेही । रेणुवास ।

मधुमक्खी—मधुमक्षिका । सरधा । शहद की माखी ।
मछोह । भौर ।

[नोट—शहद की मक्खी चार प्रकार की होती है—
पुत्तिका, भ्रमर, क्षुद्रा, मक्षिका ।]

बरै—भिड़ । ततैया । वरट । वरटा । गन्ध मक्खी ।
गन्धोली । भिरै ।

[नोट—लाल बरें को 'हड्डा' वा 'हाड़ा' कहते हैं, इनके डंक मारने पर डँसा हुआ स्थान प्रायः पक जाता है और जब तक उसके अन्दर से दूटे हुये डंक के आर नहीं निकल जाते तब तक घाव अच्छा नहीं होता ।]

भौंगुर—भिल्ली । भिल्ली । भृंगारी । भीरुका । चीरी ।
झीरिका । भिल्लिका । चिल्लिका । चीलिका ।

फर्तिंगा—दीपपतङ्ग । शलभ । पतङ्ग । फनगा ।

टिड्डा-टिड्डा—शलभ । पत्रांग । पत्राङ्क । पतंग । फनगा ।

[नोट—चपड़ा, फनगा आदि अनेक प्रकार के फर्तिंगों के भी ये ही पर्याय होंगे ।]

जुगुनू—खद्योत । ज्योतिरिङ्गण । प्रभाकीट । उपसूर्य्यक ।
तमोमणि । दृष्टिबन्धु । तमोज्योति । ज्योतिरिग । निमेषक ।
खज्योति । सोनकिरवा । पटवीजना ।

मकड़ी—लूता । तन्तुवाय कीट । मर्कटक । ऊर्णनाभ ।
मर्कट । लूतिका । शनक । मकरी ।

खटमल—खटकीरा । खट्मल । उदंश । उडुँस । मत्कुण ।
कोणकुण । उत्कुण । किटिभि । रक्तपायी । मञ्चकाश्रय ।

चीलर—चिहड़ । चैलकीट । चैलारि ।

जूँ—जूँआ । ढील । लीख (लीक) । लिक्षा । लिक्का ।
लिक्षिका । यूका । केशकीट । पाली । बालकृमि । स्वेदज । षट्पद ।

घुन—घुण । काष्ठभेदक । काष्ठकृमि । काष्ठवेधक ।

चींटी—च्युंटी । पिपीलिका । पिपील । पीलक । पिपीली ।

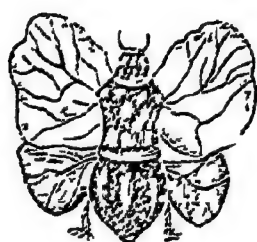
चींटा—च्यूंटा । चिमटा ।

लाल चींटा—वेमटा । माटा ।

[नोट—यह लालरंग का चींटा होता है जो कि आम, इमली, अमरुद, आदि मीठे फलवाले वृक्षों पर अधिक रहता है । यह बहुत तेज काटता है ।]

वीरवहूटी—वीरवधूटी । इन्द्रवधूटी । मखमली कीड़ा । बैराट । इन्द्रगोप । अग्निरज । तितिभ । अग्निक । वर्षाभू । रक्तवर्ण ।

[नोट—यह छोटी मकड़ी के आकार का लाल मखमल जैसे मुलायम चमड़ेवाला कीड़ा वरसात के आरम्भ में खेतों और बगीचों में बहुधा पाया जाता है । यह एक प्रकार का उष्मज कीड़ा है, जो वनस्पतियों और भूमि की उष्मा से उत्पन्न होता है ।]



५. क्रियादि वर्ग

अकुलाना—व्याकुल होना । घबड़ाना । अधीर होना ।
आकुल होना । उक्ताना । ऊबना । अफरना । खिझाना ।

अगोरना—रखाना । रखवाली करना । सुरक्षित रखना ।
यत्न से रखना । चौकी देना ।

अघाना—वृप्त होना । पेट भरना । सन्तुष्ट हो जाना ।
छकना । पूर्ण हो जाना । अफरा उठना । अफराना । हिया भरना ।
जी भर जाना ।

अँगेजना—बरदाश्त करना । सहना । ओज लेना । ओजना ।

अचवना—मुँह धोना । कुल्ली करना । आचमन करना ।
अचवन करना ।

अटना—समाना । भरजाना । भरना । पर्याप्त होना ।

अटकना—रुकना । ठहरना । टिकना । अड़ना । फँसना ।
बम्कना । उलम्कना । अरुम्कना ।

अटकाना—रोकना । ठहराना । टिकाना । अड़ाना । छेकना ।
वारण करना । रुकावट डालना । फँसाना । उलम्काना । बम्काना ।

अठिलाना—इतराना । ऐँठना । चोंचलाना (चोंचला

करना) । नखरा करना । ठसक दिखाना । मन्दान्ध होना ।
 रेंठ दिखाना । इठलाना । मटकाना । चमकाना ।

अपनाना—अङ्गीकार करना । स्वीकार करना । अँगोजना ।
 आश्रय देना ।

अराधना—सेवना । पूजना । जपना । सुमिरना
 (स्मरण करना) ।

अलसाना—सुस्ती करना । ऊँघना । तन्द्रित होना ।
 मंद होना । ठंडे पड़ना । सुस्ताना । झपकना । प्रमत्त होना ।

अवगाहना—थहाना । मथना । घंघोरना । निमज्जना ।
 खँगारना । हिलोरना ।

अवमानना—अनादर करना । अपमान करना ।
 निरादर करना । तिरस्कार करना । अवहेलना करना ।

अवराधना—[देखो 'अराधना' शब्द]

अलापना—गाना । राग काढ़ना । राग अलापना ।

आँकना—अन्दाजना । अनुमान करना । निरखना ।
 समझना ।

आना—आगमन होना । उपविष्ट होना । उपस्थित होना ।
 हाजिर होना ।

उटकना—(बात) ओटना । बारबार कहना । नंगई करना ।
 बात खोलना । (सं० उक्तथन) ।

उकताना—चिढ़ना । चिढ़ाना । ऊबना । उबाना ।
 खीभना । खिझाना । घबड़ाना ।

उकसना—चढ़ना । उठना । उभड़ना । उमड़ना । तनना ।
 ऊपर आना । उचकना । उझकना । उछलना । कूदना ।
 उकेलना—उधेड़ना । खोलना । उकिलना । उसिलना ।
 उलटना । उतिनना ।

उखड़ना—निकलना । उकसना । उभड़ना । उमड़ना ।
 उगना—उरोहना । उत्पन्न होना । निकलना । अंकुराना ।
 उभड़ना । बढ़ना । अँखुआना ।

उगलना—निकालना । थूकना । कै करना । उलटना ।
 उलटी करना । वमन करना । बाहर करना । ओकाना । प्रकट
 करना । आगे रखना । ओकलाना । छाँट करना ।

उगाहना—वसूल करना । उतारना । तहसीलना ।
 इकट्ठा करना । एकत्र करना ।

उधारना—खोलना । नंगा करना । परदा खोलना ।
 व्यक्त करना । प्रकट करना । उद्घाटित करना । जाहिर करना ।

उचटना—उखड़ना । टूटना । बिछलना । बिचलना ।
 बिखरना । खिन्न होना । उच्चाट होना । विचलित होना ।

उचाड़ना—नोंचना । खसोटना । नकोटना । निकोटना ।
 उधेड़ना । निकालना । अलगियाना ।

उछलना—कुदकना । कूदना । उछाल मारना ।

उजड़ना—उखड़ना । विनाश होना । बिलटना । नष्ट होना ।

उभिलना—उँडेलना । उलटना । ढालना । उलिचना ।
 चढ़ना । उछिलना । निकालना ।

उतरना—धँसना । नीचे आना । अवतरित होना ।
घटना । आजाना ।

उतराना—ऊपर आना । तैरना । पैरना । थिराना ।
पौड़ना ।

उतारना—नीचे लाना ।

[नोट—दूसरे अर्थ में देखो “उकेलना” पृष्ठ २६५]

उथलना—उलटना । औंधाना । नीचे ऊपर करना ।

उद्धारना—मुक्त करना । छुटकारा देना । स्वतन्त्र करना ।
वचाना । तारना । पार लगाना ।

उपटना—दाग पड़ना । निशान पड़ना । उभर आना ।
उपट आना ।

उफनना—उबलना । खौलना । गरमा जाना । गरम होना ।
उथलना । जोश में आना ।

उधालना—गरमाना । पकाना । औटाना । खौलाना ।
जोश लाना । औटना ।

ऊँघना—झपकी लेना । तन्द्रित होना । अलसाना ।
सुस्त पड़ना । पलक मारना । झेंपना ।

ऐँठना—उमेठना । मरोरना । मरोड़ना । मुर्री देना । अकड़ना ।

ओढ़ना—पहनना । धारण करना । लपेटना ।

ककोरना—खुरचना । छीलना । खोदना । उखाड़ना ।
खुरेदना । कुरेदना । करोना । खीचना ।

कचरना—रूँधना । गूँथना । रौँदना । कूँचना । माड़ना ।
सानना । मसलना । कूटना । मलना । दबाना ।

कतरना—काटना । छाँटना । काट-छाँट करना ।

करकना—खटकना । गड़ना । चुभना । पीड़ा देना ।
दुखना । कसकना ।

कहना—कथना । वर्णन करना । निवेदन करना । बोलना ।
कथन करना । बयान करना । उच्चारण करना । भाषण करना ।
वतराना । बताना । बतलाना । उचारना । संलाप करना ।

काटना—कतरना । मारना । तोड़ना । अलग करना ।
टुकड़े करना ।

कौंचना—चुभाना । धँसाना । गड़ाना । गोदना । गुफाना ।
बीधना । भोकना । गुभाना । खोंसना । घुसेड़ना ।

कोसना—अपवाद करना । बुराभला कहना । सरापना ।
गाली देना । बदकारना । निन्दा करना । शाप देना । जी दुखाना ।
जलाना । कुढ़ाना । दुःखी करना ।

खाना *—भोजन करना । जेवना । भोग लगाना ।
भोजन पाना । प्रसाद पाना ।

खिसकना—टसकना । टलना । हटना । आगे बढ़ना ।
धिसकना । चम्पत होना । भाग जाना । रफूचकर होना ।

* छ' प्रकार के भोजन पदार्थों के अनुसार क्रमशः खाने के लिये-
पदार्थाय शब्द—भक्ष्य, भोज्य = खाना, भोजन करना । चर्व्य = चवाना ।
चोष्य = चूसना । लेह्य = चाटना । पेय = पीना ।

खेलना—क्रीड़ा करना । मौज करना । आनन्द करना ।
खेल करना । मन लुभाना । वहलना । खेल-कूद करना ।

गढ़ना—निर्माण करना । बनाना । रचना । ठोकना ।
सुधारना । सँवारना ।

गन्धाना—बसाना । महकना । सड़ना । बदबू करना ।
दुर्गन्ध करना ।

गर्जना—गाजना । चिग्घाड़ना । गुर्राँना । घड़घड़ाना ।
गर्जन करना ।

गलना—पिघलना । द्रवीभूत होना । द्रवित होना । घुलना ।
आर्द्र करना । नरमाना ।

गिरना—पतित होना । पात होना । लुढ़कना । पड़ना ।
नीचे आ जाना । पतन होना ।

गूथना—सीना । टाँकना । पोहना । गुथी करना । लगाना ।
परोहना ।

गूँधना—[देखो पृष्ठ २६७ 'कचरना' शब्द]

घिनाना—घृणा करना । नफरत करना । मुँह फेरना ।
निन्दा करना । जुगुप्सा करना ।

घिरना—आवृत होना । छेका जाना । घेर जाना । बझना ।
बँध जाना । फँस जाना । फँसना ।

घिसना—रगड़ना । रगड़ जाना । संघर्षण होना । मलना ।
खियाना ।

घुसना—पैठना । प्रविष्ट होना । चुभना । भीतर जाना ।
धँसना । गड़ना ।

घोंटना—चिकनाना । साफ करना । चमकाना ।

[नोट—‘रगड़ना’ के अर्थ में भी ‘घोंटना’ शब्द का प्रयोग होता है ।]

चपाना—दाबना । थोपना । लजाना । दबाव डालना ।
विवश करना ।

चभोरना—डुबकी देना । डुबाना । बुढ़ाना । बोरना ।
भिगोना । तर करना । सराबोर करना ।

चमकना—दमकना । प्रकाश होना । चमचमाना । बलना ।
झलकना । लौकना । लहकना ।

चलना—गमन करना । आगे बढ़ना । पधारना । पदार्पण
करना । विचलित होना । चलायमान होना । बढ़ना । प्रस्थान
करना । स्थगित होना । कढ़ना । निकलना । जाना ।

चसना—मरना । नष्ट होना । मसकना । फटना । गड़ना ।
बिगड़ना । टूट-फूट जाना । कसकना ।

चहकना—खुश होना । चहचहाना । शोभित होना ।
प्रसन्न होना । किलकिलाना । खिल उठना ।

चहलना—कचरना । माड़ना । काँड़ना । कुचलना ।
कूचना । गीजना ।

चालना—छानना । पछोरना । झारना । फटकना ।

चिढ़ना—कुढ़ना । खीझना । चिड़चिड़ाता । झल्लना ।
अप्रसन्न होना ।

चिताना—बतलाना । बताना । जताना । जतलाना ।
सूचित करना । सावधान करना । चौकस करना । याद दिलाना ।
चेत धराना । चैतन्य करना ।

चिल्लाना—चीत्कार करना । शोर करना । हल्ला मचाना ।

चिलकना—चमकना । टीसना । टीस मारना । दर्द
होना । टपकना ।

चुभना—धँसना । गड़ना । घुसना । गुदना । कोचाना ।
पैठना । छिड़ना । बिधना ।

चुराना—हरना । अपहरण करना । चोरी करना । ठगना ।
लूटना । मूसना । तस्करी । बटमारी करना । गिरहकट्टी करना ।
छलना । डाका मारना वा पड़ना । डकैती करना । झटकना ।

चूकना—भूलना । गलती करना । भ्रम करना ।

छजना—शोभना (सोहना) । शोभा देना । सजना ।
जँचना ।

छिड़कना—सीचना । तर करना । छींटना । भिगोना ।
आर्द्र करना । छिड़काव करना ।

छिपना—लुकना । हटना । गुप्त होना । दबक रहना ।
गुप्त रहना वा होना । लुका जाना । अप्रकट होना । आड़ करना ।
अप्रकाशित होना । ओट में होना ।

छूना—स्पर्श करना । हाथ लगाना । परसना ।

छेदना—वेधना । पार करना । छिद्र करना । गोदना ।
गड़ाना । चुभाना । धँसाना । बिल करना ।

जनना—जनाना । उत्पन्न करना । प्रसव करना ।
जन्म देना ।

जमाना—(१)—बोना । वपन करना । उत्पन्न करना ।
(२)—गाढ़ा करना । तह लगाना । थोक करना ।
जागना—उठना । चैतन्य होना । सजग होना । जगना ।
सावधान होना ।

जगाना—उद्बोधित करना । चैतन्य करना । उठाना ।
सजग होना । सावधान करना ।

जलना—भस्म होना । खाक होना । स्वाहा होना ।
नष्ट होना । बरबाद होना । आग लग जाना । दहना । दग्ध होना ।
बरना (बलना) सुलगना ।

जाना—[देखो पृष्ठ २६९ 'चलना' शब्द]

जानना—समझना । पहचानना । परिचय करना ।
चीन्हना ।

जुटाना—जोड़ना । भिड़ा देना । मिलाना । एकत्र करना ।
इकट्ठा करना । जमाना । सँजोवना ।

जोहना—आशा देखना । राह ताकना । आशावान् होना ।
राह देखना । समझना । प्रतीक्षा करना । ताकना । ताक लगाना ।
जोवना । चितवना । घाट देखना ।

भकोरना—हिलाना । हिलोड़ना । कँपाना । भोरना ।
झकझोरना ।

भखना—पछताना । पश्चात्ताप करना । अनुताप करना ।
रोना । झींखना ।

भगड़ना—बकभक करना । विवाद करना । लड़ना ।
कलह करना । भगड़ा करना । लड़ाई करना । वाद-विवाद करना ।
सरबर करना । भिड़ना । मुहों मुहीं करना । मुहँजोरी करना ।

भभकारना—फटकारना । दुत्कारना । तिरस्कार करना ।
उपटना । डाँटना । हटाना । अवहेलना करना । अनादर करना ।
अश्रद्धा करना । अवज्ञा करना । भिड़कना । भटकना ।

भझकना—(१) छीनना । मार लेना । लूट लेना ।
(२) दूसरे अर्थ में “झझकारना” के पर्याय के अनुसार ।
उचक लेना ।

भझना—झरना । टूटकर गिरना । गिरना । पतन होना ।
स्खलित होना । विचलित होना । टपकना । चूना (चूपड़ना) ।
विचलना ।

भझाना—चिड़चिड़ाना । खीझना । चिढ़ना । कुढ़ना ।
किटकिटाना ।

भाँसना—भुलावा देना । भटक लेना । झाँसा पट्टी देना ।
फुसलाना । बहकाना । ठगना । धोखा देना ।

भाड़ना—(१) साफ़ करना । बुहारना । बटोरना ।
झारना । झाड़ू देना । (२) गिराना । टपकाना । चुआना ।

निचोलना । (३) फूक डालना । मन्त्र फूँकना । (भूतादि बाधा)
उतारना । झाड़फूक करना । टोना-टोटका करना ।

भुराना—सूखना । सुखाना । मुरझाना । शुष्क होना ।
मुलसना ।

भूमना—कौपना । हिलना । डोलना । लहराना ।
भोका खाना ।

भोंकना—फेंकना । ढकेलना । धुसेड़ना । डालना ।

ढकराना—ढक्कर खाना । ढक्कर मारना । धक्का खाना ॥
चोट खाना ।

ढघलना—ढघरना । पिघलना । गलना । द्रवीभूत होना ।

ढिकना—बसना । ठहरना । रहना । रुकना । अड़ना ॥
अड़कना । थँभना ।

ढेकना—आश्रय लेना । थँभना । आड़ना । सहारा लेना ।
आड़ लगाना । ओट लगाना । टेक लगाना ।

ढेवना—तेज करना । सान चढ़ाना । पैना करना ।
तीखा करना । धार देना ।

ढोहना—ढोह लेना । पता लगाना वा लेना । खोजना ॥
अनुसन्धान करना । ढूँढ़ना । अन्वेषण करना ।

ढगना—भुलावा देना । लूटना । लूट लेना । भुलाना ॥
प्रतारण करना ।

ढठना—सजना । रचना । सवँरना । सजधज करना ।

ठिठुरना—सर्दियाना । काँपना (सर्दी से) । थरथराना ।
अकड़ना । जड़ाना । शीत लगाना । जमना वा जमजाना ।

डगमगाना—लड़खड़ाना । चंचल होना । डोलना ।
ढावौँडोल होना । काँपना । हिलना । इधर-उधर होना । विचलित होना ।

ढकेलना—ठेलना । आगे बढ़ाना । रेलना । धक्का देना ।

ढाकना—तोपना । झाँपना । मूँदना । वन्द करना ।
अव्यक्त करना ।

तरसना—लालायित होना । ललकना । ललचना ।
लोभ करना । उत्कण्ठित होना ।

तरसाना—प्रलोभन देना । ललचाना । ललकाना ।
व्यर्थ लालच देना । लोभाना (लुभाना) ।

तरेरना—तीक्ष्ण दृष्टि से देखना । लाल आँखें करना ।
घूरना । आँखें दिखाना । त्योरी चढ़ाना । त्योरी बदलना । आँख-भौ
चढ़ाना ।

त्यागना—छोड़ना । तजना । त्याग देना । अलग करना ।

दहलना—शंकित होना । आतंकित होना । काँपना ।
शंकाक्रान्त होना । डरना । भयभीत होना । थराना ।

देखना—ताकना । अवलोकन करना । दृष्टिगोचर करना ।
निहारना । दर्शन करना । अवलोकना । -निरखना । लखना ।
निरीक्षण करना । घूरना । दृष्टिगत होना । नजर आना ।
साक्षात् होना । प्रत्यक्ष होना । पेखना (प्रेक्षण) ।

देना—प्रदान करना । दान करना । सौंपना । उत्सर्ग करना ।

निर्वपण करना । वितरण करना । (बाँटना) । समर्पण करना ।
उत्सर्जन करना ।

दौड़ना—(सं० धोरण) । भागना । पराना (पलायन) ।
प्रधावित होना । गतिमान होना । सवेग चलना । धावना ।
भजना । वेगवान् होना । भाजना ।

धडकना—हिलना । दहलना । डरना । कँपना । थराना ।
थरथराना । धुकधुकाना । धड़धड़ाना । फड़कना ।

धधकना—भभकना । जल उठना । प्रज्वलित होना ।

धमकाना—डराना । धमकी देना । भय दिखाना । डाँटना ।
झिड़कना । घुड़कना ।

धिक्कारना—फटकारना । तिरस्कार करना । निन्दा करना ।
अपवाद करना ।

धोना—साफ करना । पखारना । शुद्ध करना । संघालना ।
अक्षालन करना ।

नकारना—अस्वीकार करना । न मानना । मुकरना ।
इन्कार करना ।

नाघना—लौंघना । उलंघन करना । छलौंग मारना ।
डाकना । फलौंग मारना ।

निकालना—बाहर करना । खदेड़ना । भगाना । काढ़ना ।
वहिष्कृत करना । दुरदुराना ।

निखारना—उजारना । साफ करना । स्वच्छ करना ।
धोना । खँगारना । थिराना ।

निगलना—लील जाना । घोंट जाना । गटक जाना ।
गटकना । गपक जाना । (गले के नीचे) उतार जाना । घूटना ।

निथारना—पसाना । निचोड़ना । गारना । फरियाना ।
साफ़ करना ।

निवाहना—निर्वाह करना । पूरा करना । सिद्ध करना ।
समाप्त करना ।

नियराना—नगिचाना । निकट आना । समीप आना ।
पास आना ।

✓ **निहुरना**—भुकना । नवना । नमित होना । नत होना ।
मुड़ना । दबना । प्रणत होना ।

निवारण करना—मना करना । रोकना । दूर करना ।
वर्जना । वचाना । हटाना । वारण करना ।

निस्तारना—उद्धार करना । बचाना । छुटकारा देना ।
उवारना । मुक्त करना । त्राण करना ।

पकना—सीकना । रँधना । पक होना । सिद्ध होना । चुरना ।

पकाना—रँधना । सिद्ध करना । चुराना । सिझाना ।
उवालना । जोश देना ।

पगना—भिनना । डूबना । निमज्जित होना । मग्न होना ।
रस में डूबना ।

पगुराना—जुगाली करना । जुगलाना । चवाना ।
रोमन्थ करना ।

पढ़ना—अध्ययन करना । स्मरण करना । याद करना ।
रटना । अभ्यास करना ।

पढ़ाना—अध्यापन करना । रटाना । अभ्यास कराना ।

पालना—पोस पाना । पालित होना । पोषित होना । बढ़ना ।
प्रतिपालित होना । पनपना ।

पलोटना—दबाना । कुचलना । मीजना । सेवना ।

पहनना—परिधान करना । धारण करना । लपेटना ।

पहचानना—परिचय पाना । जानना । चीन्हना ।

पाना—प्राप्त करना । उपलब्ध करना । लहना ।

पालना—रक्षा करना । पोसना । रखना । पालन करना ।
पोषण करना । भरण करना । प्रतिपालन करना ।

पिचकना—सिमिटना । सिकुड़ना । पचकना । दबना ।
धँसना । चुचुकना । बिचिकना ।

पिछलना—बिछलना । फिसलना । गिर पड़ना । पड़ना ।
गिरना । सकिलना । सरकना । (सं० पिच्छिल) ।

पीना—पान करना । आचमन करना । अँचवना ।

पुकारना—गोहराना । बुलाना । हाँक लगाना । हाँक
मारना । डाँकना । आह्वान करना ।

पैरना—[देखो पृष्ठ २६६ “उतराना” शब्द]

पोसना—[देखो “पालना” शब्द]

प्रकट होना—प्रकाशित होना । प्रत्यक्ष होना । अवतरित होना । आना । आ जाना । व्यक्त होना । प्रसिद्ध होना । जाहिर होना । विदित होना । स्पष्ट होना । साक्षात्कार होना वा करना । साक्ष होना ।

फँदना—फँसना । अटकना । उलभना । बझना । रुकना ।

फरकना—चमकना । फड़कना । दमकना । छटकना । धिरकना । फुदकना । उल्ल-कूद करना । इधर उधर होना ।

फूलना—(१) खिलना । हुलसना । प्रफुल्लित होना । आनन्दित होना । प्रसन्न होना । प्रस्फुटित होना । विकसित होना । कुसुमित होना । पुष्पित होना । (२) सूजना ।

फेंकना—दूर करना । प्रक्षेपण करना । निकाल देना । त्यागना ।

फैलना—पसरना । बिथरना । बिखरना । छिटाना । इधर-उधर होना ।

फैलाना—पसारना । छीटना । बिथारना । बिखेरना । प्रचार करना । प्रकाश करना ।

बकना—भकभक करना । जल्पना । बकझक करना । बकवाद करना ।

बटोरना—संग्रह करना । संकलन करना । एकत्र करना । जुटाना । इकट्ठा करना ।

बनाना—प्रस्तुत करना । रचना । तैयार करना । ठीक करना । निर्माण करना ।

वरजना—मना करना । वारण करना । निषेध करना ।
वर्जन करना ।

वरना—(१) वरण करना । स्वीकार करना । व्याह
करना । चुनना । निमंत्रण करना । (२) बलना । सुलगाना ।

बहाना—प्रवाह करना । भसाना । फेंकना । चलाना ।
बहा देना ।

बहाना करना—बातें बनाना । भुलाना । भुलावा देना ।
बात बदलना । छिपाव करना । छिपाना । दुराव करना ।

बहलाना—फुसलाना । बहलाव करना । प्रसन्न करना ।
मनोरञ्जन करना ।

बाँटना—(१) भाग करना । हिस्सा लगाना । बखरा
लगाना । बाँट करना । विभाजित करना । विभक्त करना ।
(२) पीसना । रगड़ना । घिसना ।

बासना—सुवासित करना । बसाना । सुगंधित करना ।
महकाना । गमकाना । गंधाना ।

विचकना—भड़कना । सतर्क होना । सावधान होना ।

विचलना—विचलित होना । फिसलना । बिछलना ।
खसकना । खलित होना । टरकना । टलना । हटना ।

बिछुड़ना—जुदा होना । अलग होना । वियोग होना ।
पृथक् होना ।

विदारना—विदीर्ण करना । फाड़ना । चीरना । करना ।

बीधना—डसना । डंक मारना । डौंस मारना । आर धँसाना ।

बिलसना—(१) भोगना । उपभोग करना । चमकना । आनन्द करना । मौज उड़ाना । (२) शोभा देना । प्रकाशित होना ।

बीतना—समाप्त होना । पूरा होना । व्यतीत होना । गुजरना । अवसान होना ।

बूकना—पीसना । कूटना । चूर्ण करना । सफूफ करना ।

बेधना—गड़ाना । चुभाना । गोदना । कोचना । धसाना ।

बैठना—उपविष्ट होना । उपवेशन करना । विराजना । आसन लगाना वा जमाना । विराजमान होना । स्थिर होना । आसन ग्रहण करना । स्थापित होना । बैसना ।

बोलना—[देखो पृष्ठ २६७ “कहना” शब्द]

भकुआना—अकचकाना । भुलाना । चकित होना । कर्तव्य विमूढ़ होना । स्थकित होना । सन्न होना ।

भगाना—हटाना । दूर करना । हँकाना । खदेड़ना । खेदना । दुरदुराना ।

भजना—(१) भजन करना । स्तुति करना । रटना । वितन्य करना । आराधना करना । स्मरण करना । उपासना करना । पूजना । अर्चना । ध्याना । गुणानुवाद करना । कीर्तन करना । जपना । लव लगाना । (२) भागना । दूर हटना । बिलग होना ।

भटकाना—भुलावा देना । धोका देना । बहकाना । भुलाना । भ्रमित करना । भ्रम में डालना । -

भड़काना—चमकाना । चौंकाना । झिझकाना । उचाटना ।
जी हटाना ।

भरमाना—ठगना । वञ्चन करना । छलना । धोखा देना ।
भुलावा देना ।

भसाना—[देखो पृष्ठ २७९ “बहाना” शब्द]

भागना—[देखो पृष्ठ २७५ “दौड़ना” शब्द]

भाना—अच्छा लगना । सुहावना लगना । सोहाना ।
प्रिय लगना । जँचना ।

भासना—विदित होना । प्रकाशित होना । ज्ञात होना ।
शोभित होना । [भास् = शोभा, प्रकाश]

भुनना—भुँजाना । सेंकना । भर्जन करना ।

भुलाना—प्रतारण करना । फुसलाना । धोखा देना ।
छलना । भुलवाना ।

भूलना—चूकना । विस्मरण होना । विसरना ।
विस्मृत होना ।

भेजना—पठाना । पहुँचाना । प्रस्थापित करना ।

भेंटना—मिलना । भेट होना वा करना । मुलाकात करना ।

भोंकना—गोदना । चुभाना । घुसाना । घुसेड़ना । ढूसना ।

मचलना—हठ करना । घमंड करना । दुराग्रह करना ।
जिद करना । रुठना । चिढ़ना । मटकना । नंगई करना ।

मटकाना—कटाक्ष करना । आँख चमकाना । विराना
(बिड़ाना) ।

मथना—महना । विलोना । विलोड़ना ।

मनाना—प्रसन्न करना । मित्रत करना । मनौती करना ।
प्रसादन करना । राजी करना ।

मरना—निधन होना । प्राणान्त होना । समाप्त होना ।
अवसान होना । मृत्यु होना । निपात होना । देहान्त होना ।

मलना—रगड़ना । मीजना । मसलना । साफ करना ।
बँसना । मर्दन करना ।

मानना—स्वीकार करना । मान जाना । राजी होना ।

माजना—स्वच्छ करना । उजराना । निर्मल करना । धोना ।
(सं० मार्जन) ।

मारना—(१) प्राणान्त करने के अर्थ में पृष्ठ २३६
“वध” शब्द के पर्याय के साथ ‘करना’ जोड़ देने से बोध हो जायगा ।

(२) पीटना । ताड़ना । ठोंकना । ठठाना । पीठपूजा करना ।

मिटाना—विगाड़ना । नष्ट करना । मेट देना । मेटना ।

मिलना—प्राप्त होना । उपलब्ध होना । लाभ होना ।
पाना । जुड़ना (जुटना) । हाथ लगना ।

मीचना—ढाकना । ढाँपना । मूँदना । वन्द करना । तोपना ।

मुड़ना—घूमना । फिरना । मुकना । टेढ़ा होना । ऐँठना ।
वल खाना । मुरी पड़ना ।

मुरझाना—सूखना । शुष्क होना । कान्तिहीन होना ।
मलीन होना । उदास होना । निष्प्रभ होना ।

मूड़ना—(१) ठगना । ऐंठना । छलना । धोखा देना ।
फुसला कर ले लेना । (२) सिर घोंटना । बाल मूँड़ना । बाल काटना ।

मूसना—चोरी करना । लूटना । सर्वस्व चोरी जाना ।
खसोटना ।

रचना—निर्माण करना । बनाना । सजाना । तैयार करना ।
प्रस्तुत करना । विधान करना ।

रमना—(१) रमण करना । क्रीड़ा करना । आनन्द करना ।
जी लगना । मौज उड़ाना । खेलना-कूदना । (२) घूमना । पर्यटन :
करना । स्वेच्छया यात्रा करना । भ्रमण करना ।

रहना—बसना । टिकना । ठहरना । होना । स्थिर होना ।
स्थान ग्रहण करना । स्थापित होना ।

रिसाना—क्रोध करना । रोष करना । रूसना । कोपना ।

रीझना—प्रसन्न होना । प्रेम करना । मोहित होना ।
मुग्ध होना ।

रूठना—अप्रसन्न होना । रूसना । कोहाना । भगाड़ना ।
बिगाड़ करना । अनवन होना ।

रोकना—कीलन करना । रोक करना । प्रतिषेध करना ।
थाम्हना । ठहराना । कीलना । प्रतिरोध करना । अटकाना ।
हटकना । बरजना (वर्जन) ।

रोना—रुदन करना । विलाप करना । विलपना । कलपना ।
राग काढ़ना । आँसू वहाना । प्रलाप करना । दाढ़ें मारना ।

रोपना—(१) (पेड़) लगाना । बोना । वपन करना ।
(२) ठान ठानना । आरम्भ करना ।

लखना—पहचानना । ताड़ना (ताड़ जाना) । चीन्हना ।
देखभाल लेना । जानना ।

लजाना—लज करना । हया करना । ब्रीड़ा करना ।
शर्माना । सकुचाना । संकोच करना ।

लटपटाना—लड़खड़ाना । विचलित होना । डिगना ।
हिलना ।

लपेटना—ओढ़ना । बाँधना । वेठन लगाना ।

ललचाना—तरसाना । लुभाना । लालच दिखाना । लहकाना ।

लहना—लगना । ठहरना । जँचना ।

लहकना—[देखो पृष्ठ २७९ “चकमना” शब्द]

लहकाना—(१) उभाड़ना । चिढ़ा देना । ताल देना ।
शह देना । वहकाना । (२) वालना । सुलगाना । जलाना । धधकाना ।

लहतहाना—खिलना । फूलना । विकसना । उमगना ।
विकसित होना । हराभरा होना ।

लादना—बोझना । भरना ।

लिपटना—चिपकना । सटना । गले लगना । गले पड़ना ।
चिमटना । अँगोजना । भिड़ना । चिपटना । जुटना ।

लिपटाना—सटाना । भिड़ाना । युक्त करना । गले लगाना ।
चिपकाना । चिमटाना । अङ्ग लगाना । आलिङ्गन करना ।

लुटाना—उड़ाना । दे देना । गँवाना । बाँट देना । खोना ।
चरवाह कर डालना ।

लुकना—छिपना । गुप्त रहना । ओट देना । आड़ में आना । हट जाना ।

लुटना—हर जाना । छिन जाना । अपहृत होना । नष्ट हो जाना । बरबाद हो जाना ।

लेना—ग्रहण करना । स्वीकार करना । अङ्गीकार करना । प्राप्त करना ।

लेटना—सोना । शयन करना । ढरकना । पोठ लगाना । पौढ़ना । विश्राम करना ।

लौटना—फिरना । पलटना । घूम पड़ना वा जाना । घूमना । वापस आना । मुड़ना ।

संचना—जुटाना । जुगाना । बटोरना । संग्रह करना । एकत्रित करना । संचय करना ।

सँचारना—सजाना । सिगारना (शृंगार करना) । बनाना । ठठाना । चमकाना ।

सकाना—शंकित होना । भयभीत होना । डरना । त्रास पाना ।

सकारना—स्वीकार करना । मान लेना । मंजूर करना । हामी भरना ।

सड़ना—बसियाना । उबसना । गलना । बजबजाना ।

सधना—सिद्ध होना । सिम्कना । बनना । होना । ठीक होना ।

समाना—अँटना । घुसना । पैठना । प्रविष्ट होना । भरना ।

समेटना—सिकोड़ना । बटोरना । संकोच करना ।

सँभालना—सुधारना । सँवारना । बनाना । प्रबंध करना ।
थाँभना ।

सराहना—प्रशंसा करना । सराहना करना । बखानना ।
बड़ाई करना ।

सहमना—डरना । भय खाना । संकुचित होना ।

सहलाना—खुजलाना । सहराना । हाथ फेरना ।

सहेजना—सौंपना । सुपुर्द करना । सँभाल करा देना ।
देख-भाल करना । देखना-भालना । समझ-बूझ लेना । जाँच
कर लेना ।

सालना—भिदना । चुभना । गड़ना । टीस नारना ।
टीसना ।

सिझाना—[देखो पृष्ठ २७६ “पकाना” शब्द]

सिधारना—जाना । चले जाना । प्रयाण करना । हट
जाना । दूर होना ।

सिमिटना—सिकुड़ना । बटुरना । जुटना ।

सिराना—(१) बत पड़ना । हो सकना । होना ।
(२) जुड़ना । ठंडा होना वा पड़ना ।

सिहरना—कँपना । थरना । डर जाना । घबड़ा जाना ।

सींचना—तर करना । सिंचन करना । पानी देना ।
छिड़कना । छिड़काव करना । भिगाना ।

सीना—सिलाई करना । तुरपना । टाँकना । तागना ।
गाँथना । गूँथना ।

सुनना—कर्णगोचर करना । श्रवण करना ।

सूँघना—बास लेना । घ्राण लेना । महक लेना ।
 सूँध लेना ।

सोना—शयन करना । निद्रित होना । खुराटे लेना ।
 नींद लेना ।

सौंपना—समर्पण करना । सुपुर्द करना । रखना । दे देना ।

हँकाना—आगे बढ़ाना । चलाना । बढ़ाना । रेंगाना ।

[नोट—“हँकाना” का प्रयोग पशुवर्ग के लिये ही होता है।]

हँसना—स्मित होना । प्रसन्न होना । बत्तीसी दिखाना ।
 खिलखिलाना । हास्य करना । हास करना ।

हकबकाना—घबड़ाना । व्याकुल होना । उद्विग्न होना ।
 भौचका होना । सन्न होना ।

हकलाना—तुतलाना । हकारना ।

हटकना—मना करना । निषेध करना । प्रतिषेध करना ।
 रोकना । थाम्हना । अटकाना । बाधा डालना ।

हटना—(१) अलग होना । पृथक् होना । विलग होना ।
 विलगाना । किनारे होना वा रहना । किनारा कसना । दूर रहना ।
 दूर भागना । पीछे होना । पीछा दिखाना । मुँह मोड़ना ।
 मुँह चुराना वा लुकाना । जी चुराना । सरक जाना । टलजाना ।
 खसक जाना । (२) बात से हटना = मुकरना । नकारना ।
 बात बदलना ।

हटाना—दूर करना । अलगियाना । अलग करना ।
 डाल देना ।

हराना—थकाना । जीतना । पराजित करना । हार देना ।

हड़पना—हड़म कर लेना । मार लेना । खा डालना ।
ले लेना ।

हारना—(१) पराजित होना । विजित होना ।
अजयी वा अजित होना । पराभूत होना । अवनत होना ।
नत होना । (२) बात हारना = वचन देना । बात देना ।
वचन-बद्ध होना ।

हिचकना—आगा पीछा करना । अटकना । रुकना ।
सन्देह में पड़ना । संशयित होना । हिचकिचाना ।

हिलोरना—धँघोरना । खँगारना । हिलाना । छानना ।
हलकोरना । लड़ाना ।

हुलसना—प्रसन्न होना । आनन्दित होना । हर्षित होना ।
आनन्द विभोर होना ।

होना—विद्यमान होना वा रहना । उपस्थित रहना ।
वर्तमान रहना वा होना । रहना ।

समाप्त



अकारादि क्रम-सूची

—०—

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
अ		अभिक्रण	१६
अकरकरा	१२८	अग्निज्वाला	"
अकस्मात्	१९६	अग्निसंताप	"
अकाल	"	अधाना	२६३
अकुलाना	२६३	अँचवना	"
अखरोट	१०१	अँचार	२१९
अगर	१३७	अजमोदा	१२७
अगस्त्य (ऋषि)	२४	अजगर सर्प	२५३
अगस्त्य (पुष्प)	१०८	अजवायन	१२७
अगुभा	१७२	अजीर्ण	२१४
अँगुली के पोर	१५४	अटना	२६३
अँगूठी	२२८	अटकना	"
अँगेठी	२२३	अटकाना	"
अँगेजना	२६३	अँटारी	४९
अगोरना	"	अठिलाना	२६३
अग्नि	१५	अंतदी	१५७

શબ્દ	પૃષ્ઠાંક	શબ્દ	પૃષ્ઠાંક
અતિથિ	૧૭૧	અપકાર	૨૦૦
અતિરિક્ત	૨૦૮	અપયશ	”
અતિસાર	૨૧૩	અપવિત્ર	૧૭૧
અતીસ	૧૩૩	અપકારી	૧૭૩
અદરશ	૧૨૫	અપમાન	૧૯૮
અધમ	૧૬૭	અપરાધ	૧૯૯
અધિક્રમાસ	૪૦	અપઞ્ચશ	૨૦૫
અધીન	૧૭૩	અપ્સરા	૫
અધેદ્ર	૨૦૨	અફીમ	૧૩૪
અંધેરી રાત	૩૯	અશ્રક	૬૯
અંધેરા	૨૧૦	અભાગ્ય	૧૬૩
અધ્યયન	૨૨૯	અભાવ	૧૯૫
અધ્યાપન	”	અભિપ્રાય (વિચાર)	૧૯૮
અધ્યાપિકા	૧૮૮	અભિમન્યુ	૨૫
અનરસા	૨૨૦	અભિજિત	૩૬
અન્ન	૮૧	અમલતાસ	૧૨૯
અનન્નાસ	૯૯	અમરુદ	૯૬
અનાર	૯૪	અમૃત	૨૧
અનિરુદ્ધ	૨૩	અમાવાસ્યા	૩૯
અનુપસ્થિત	૪૧	અમ્લપિત્ત	૨૧૫
અનુરાધા	૩૬	અયોધ્યા	૨૬
અનુચિત	૧૭૩	અરવી (ઘુઘ્યા)	૯૩
અન્વેષણ	૨૦૯	અર્બુદ	૨૧૪
અઙુત	૧૭૨	અર્જુન (પાણ્ડુપુત્ર)	૨૫
અપનાના	૨૬૩	અર્જુન (વૃક્ષ)	૧૧૦

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
अराधना	२६४	आँकना	२६४
अरुसा	११७	आख्यान (कथा)	२०५
अलसी (तीसी)	८५	आख्यायिका	२०६
अलसाना	२६४	आँख	१५०
अवकाश	१९७	आँख की पुतली	"
अवगाहना	२६४	आँख का गोला	"
अवमानना	"	आँख का कोना	"
अवराधना	"	आँख का कीचड़	१५७
अवशिष्ट	४१	आक्षेपक	२९
अशकुन	१७३	आगे	४१
अइलेषा	३६	आगामी	४८
अश्विनी	३५	आँगन	१९९
अश्विनीकुमार	१८	आचार	२३०
अशोक	११२	आचमन	१९८
असहनशीलता	१९४	आज्ञा	२५६
असगंध	१२१	आड़ी	१६३
असुर	४	आत्मा	२१४
अस्तूरा	२४०	आँत वृद्धि	३०
अहीर	१८३	आदि	१७०
अहीर की स्त्री	"	आधा	१८
अहीरों का गाँव	४८	आँधी	२६४
अहंकार	१६३	आना	२२७
आ		आभूषण	९४
आकाश	३१	आम	"
आकाश बौर	१२३	आमड़ा	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
आमाहलदी	१३२	इन्द्र का हाथी	५
आमबात	२१४	इन्द्र का वज्र	६
आरा	२३९	इन्द्र का विमान	"
आरोग्य	१६८	इन्द्र-धनुष	३२
आर्द्रा	३६	इन्द्र जौ	१३०
आर्यावर्त देश	४६	इन्द्राणी	५
आलस्य	१९४	इन्द्रायन (इनारु फल)	१२५
आलसी	१६७	इन्द्रिय	१५४
आलापना	२६४	इमली	९७
आलिंगन	१६२	इमली के पत्ता का बड़ा	२१९
आलू	९३	इलायची-बड़ी	१३८
आलूबोखारा	१०१	इलायची-छोटी	"
आँव	२१३	इसरगोल	१२४
आँवला	९९, १२५	ईख	१४४
आवेग	१९५	ईश्वर	३
आश्विन	४०	उ-ऊ	
आशीर्वाद	२०१		
आषाढ़	४०	उकटना	२६४
आसन	२३०	उकताना	"
आँसू	१५५	उकसाना	२६५
इ-ई	२०५	उकेलना	"
		उखड़ना	"
इतिहास	५	उगना	"
इन्द्र	"	उगलना	"
इन्द्रपुरी	"	उग्रता	१९५
इन्द्र का पुत्र	"	उगाहना	२६५

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
उँगुली	१५४	उतारना	२६६-
उधारना	२६५	उथलना	"
उच्चटना	"	उदार	१६५-
उच्चस्वर	२४२	उदावर्त	२१४
उच्चाड़ना	२६५	उधार	२३८
उचित	१७३	उद्धारना	२६६
उछलना	२६५	उन्माद	१९६
उजड़ना	"	उपकरण	२१७-
उजाला	२१०	उपकार	२००
उँजाली रात	३९	उपजाऊ भूमि	४६
उक्षिलना	२६५	उपटन	२२४
उड़द	८१	उपदंश	२१३
उत्तम	१६७	उपपत्ति	१७९-
उतरना	२६६	उपपत्ति से उत्पन्न पुत्र	"
उतराना	"	उपला	२२३
उत्तर	२८	उपवास	१९८
उत्तरा फाल्गुनी	३६	उपवन	७८
उत्तराषाढ़	"	उपटना	२६६-
उत्तराभाद्रपदा	३७	उपस्थित	४१
उत्कण्ठित	१६५	उपहार	२०८
उत्साह	१९२	उपासना	१९
उत्कण्ठा	१९४	उफनना	२६६
उत्सव	१९५	उबालना	"
उत्पात	२०२	उल्लू	२५८
उतार	२४२	उल्लंघन	२०८

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कँष	१६२	अंग्रेज	१८२
कँषना	२६६	अंजीर	१०२
कँट	२४८	अंडकोष	१५२
कनी वस्त्र	२२५	अंडा	२५९
ऊपर	२९	अंत	३०
ऊसर देश	४६	अंतःपुर	५०
		अंधा	१६८
ऊ		अंधाहुली	१२३
फ़ण	२३७		
ए-ऐ-ओ-औ		क-क्ष	
एकान्त	२९	ककड़ी	८९
एड़ी	१५३	ककुनी	८४
एँठना	२६६	ककोरना	२६६
ओंकार	२०५	कचनार	९१
ओखली	२२२	कँचिया नोन	७६
ओट	२९	कचूर	१४२
ओंठ	१५०	कचौरी	२१८
ओड़हुल	१०८	कचरना	२६७
ओढ़ना	२६६	कछुआ	५७
ओसारा	४८	कटहल	९७
ओहार	२२६	कटसरैया-पीली	१०७
औषधालय	५०	” -नीली	”
		” -लाल	”
अं		” -सफेद	”
अंकुर	७९	कटोरा-कटोरी	२२१
अंग	१४९	कठवत्त	२२२
अंगूर	१०२		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कठफोरा	२५७	कमल-दण्ड	५९
कठोर	१६९	कमल की जड़	"
कडुभा	१६४	कमल-केशर	"
कड़ाही	२२१	कमल-रस	"
कंठा वा कंकण	२२८	कमल-धूलि	"
कढ़ी	२१८	कमल-बीज	६०
कतरनी	२३९	कमरख	९८
कतरना	२६७	कमर	१५१
कदम्ब	१०६	कमला	२१४
कनपटी	१५०	कमर बन्द	२२५
कन्या	३७	कर्ण	२५
कनेर (पुष्प)	१०८	कर्ण फूल	२२७
कनेर (पौधा)	११७	कर्क	३७
कपट	२०१	करकना	२६७
कपड़े का बाजार	४७	करौंदा	९८
कपास	११९	करील	११२
कपूर	१३६	करियारी	११६
कपूर कचरी	१४२	करञ्ज	११८
कफ	१५६	करवा	२२१
कबीला	१२९	करधनी	२२८
कवज	२१३	करेला	९०
कवन्ध	१६३	करैत-साँप	२५३
कवूतर	२५८	कलवार	१८४
कमल	५८	कल्याण	१९९
कमल-दल	५९	कलंक	२०१

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
-कलमी आम	९४	काठ	८०
-कला	२०३	कान	१५०
कलियुग	४१	कानखजूरा	२५४
-कलछी	२२१	कानकटा	१६८
कली	७९	कान का मैल	१५७
कलम	२२९	काना	१६८
कलेजा	१५६	कामदेव	१८
कवि	१८७	कामधेनु	२१
कसाई	१८५	कामी	१६६
कसौटी	२३९	काम (कामना)	१९८
कसेरु	९३	कायफर	१३१
कस्तूरी	१३६	कारागार	५१
कसैला	१६५	कारीगर	१८५
कहार की स्त्री	१८३	कार्तिक	४०
कहना	२६७	कार्तिकेय	१४
कहार	१८३	कालानोंन	७६
काका कौआ	२५९	काला तखता	२२९
काकोली	१२९	कालीजीरी	१२८
काँख	१५१	काशी	२६
काँच	६४	काँसा	६६
काजू	१०२	कास	१२०
काँजी	१४३	किन्नर	४
-काँटा	७९	किवाड़	४९
काटना	२६७	किला	५०
-काठ की कलछी	२२१	किशमिश	१०२

(६)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
किसान	१८५	कुरमी	१८३
क्लिष्ट	२१०	कुरूपता	२०२
कीच	५५	कुण्ठित	२०९
कीर्ति	२००	कुण्डल	२२७
कुकरौदा	१२४	कुरसी	२२६
कुटकी	१३०	कुदार	२३७
कुदनी	१६०	कुंडी	२४०
कुटुम्ब वाली स्त्री	१५९	कुररी	२५६
कुत्ता	२५१	कुट्ट	८४
कुवेर	६	कुल्हा	१५२
कुवेर का पवत	६	क्रूर	१६६
कुवेर का ऐश्वर्य	७	क्रूरता	१९९
कुवेर का खजाना	७	कुँची	२३९
कुम्भ	३७	कृत्तिका	३५
कुँआ	५५	कृष्णपक्ष	३९
कुमुद	५९	कृष्ण	२२
कुम्हड़ा	८८	कृपा	२०१
कुन्द	१०६	केतु	३५
कुँदुरु	९०	केकड़ा	५७
कुलीजन	१२८	केवट	५६
कुलीन	१७४	केशर (कुंकुम)	६०
कुशा	१२०	केसारी	८४
कुवड़ा	१६८	केला	९५
कुरूप	१६९	केवड़ा-सफेद	१०६
कुम्हार	१८३	केवड़ा-पीला	११

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
कैवाच	११८	कौर	२२१
कैकदासिगी	१३१	कौसीस	७०
कैहुनी	१५३	कंघी	२२६
कैघट	५६	कंजूसी	२०१
कैचुआ	२५४	कंठ	५१
कैथा	९७	कंठा	२२७
कैदी	१८७	कंदरा	५२
कैद	२३३	कंधा	१५१
कोचवान (सारथी)	१९१	क्षण	१९७
कोट (महल)	५०	क्षत्री	१८१
कोटर	८०	क्षत्री-पत्नी	”
कोदव (कोदो)	८३	क्षमाशील	१७३
क्रोध	१९२	क्षमा-रहित	”
कोमल	१६९	क्षय	२१२
कोल किरात	१८२	क्षीणता	२१४
कोहरी	१८३	क्षीरकाकोली	१२९
कोढ़	२१३		
कोड़ा	२३३		
कोठार	२३८	खजूर	९५
कोयल	२५६	खटमल	२६१
कौचना	२६७	खट्टा	१६४
कोसना	”	खडिया	७१
कौभा	२५७	खपरिया	७०
कौपीन (लँगोटी)	२३०	खपड़ी	२२३
कौड़ी	५८	खरबूजा	८९

ख

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
खरहा	२५१	खैर	१११
खलिहान	२३७	खोआ	१४३
खली	८६	खंभा	४९
खस	१४०	खंती	२४०
खसखस	१३४	खंजन	२५६
खाई	५६	ग	
खान	६२	गंगा	२६
खाँड	१४४	गंजरोग	२१५
खाज	२१२	गंदमाला	२१४
खाँसी	"	गड्डा	५२
खाजा	२२०	गढ़ेरिया	१८३
खाना	२६७	गढ़ना	२६८
खारी नौन	७७	गणेश	१४
खिड़की	४९	गत	४१
खिरनी	९८	गदहा	२४९
खिचड़ी	२२०	गदहपूरना	१२३
खिसकना	२६७	गन्ध	१६१
खीरा	८९	गन्धक	६८
खीर	२१८	गन्धाना	२६८
खूँटी	२३९	गन्धर्व	४
खेत	४६	गन्धाविरोजा	१३७
खेखसा	९०	गरम	१६५
खेती	२३७	गरदन	१५१
खेमा	२३३	गर्जना	२६८
खेलना	२६८	गर्भ	१५७

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
गर्भवती स्त्री	१६०	गुगुल	१३७
गर्भाशय	१५७	गुक्षिया	२२०
गरुड	२५६	गुञ्जा (घुमची)	११८
गलना	२६८	गुञ्जा-सफेद	११९
गल्प	२०६	गुड़	१४४
गवैया	१८५	गुड़िया	२४०
गानर	९२	गुप्ती	२५१
गाजुवाँ	१२४	गुचँ	१३५
गाँजा	१३४	गुल्म	२१५
गाड़ी	२३४	गुल दुपहरिया	१०७
गाय	२५०	गुलबुरी	"
गाय का बलवा वा बलिया	"	गुलपरी	"
गायों का समूह	"	गुलदौना	"
गायत्री	२३	गुलाब	१०५
गाल	१५०	गुलाब जामुन	२२०
गावा	१५४	गूँगा	१६८
गाँव	४८	गूलर	९९
ग्रामवासी	१७१	गेंद	२३५
त्वानि	१९३	गेरू (साधारण)	७१
त्वालिन	९१	गेहूँ	८१
गिद्ध	२५६	गैंडा	२४८
गिरगिट	२५४	गोखुरु (बड़ा)	११५
गिलहरी	२५२	गोखुरु (छोटा)	"
गिलास	२२१	गोद	१५४
ग्रीष्म	४१	गोंद	८०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
गोद बैठाया हुआ पुत्र	१७९	घुँघुरू	२२८
गोनस सर्प	२५३	घुटना	१५३
गोपीचंदन	७४	घुड़साल	५०
गोमेद	६३	घुन	२६१
गोरखमुण्डी	१२२	घुसना	२६९
गोरोचन	१४०	घूस	२०९
गोरा	१६९	घूँसा	१५४
गोशाला	५०	घृणा	१९२
गोह	२५४	घृणित	१७२
गौतम बुद्ध	२३	घेवर	२२०
गृहस्थ	१९१	घोंघा	५८
गृहद्वार	४८	घोंटना	२६९
घ		घोड़सवार	१९०
		घोड़ा	२३४
घड़ा	२२१	घोड़ी	"
घड़ेका ढक्कन	"	घोड़े के गर्दन के बाल	"
घर	४८	घोड़े का खुर	"
घर की दीवाल	"	घोड़े की बोली	"
घरिया	२३९	घोड़े की लगाम	"
घाव	२१२	घोड़े की चाबुक	"
विनाना	२६८	घोंसला	२५९
घिरना	"	घंटी (घाँटी)	१५१
घिसना	"	घ	
घी	१४३		
घीकार	१२२	चकला	२२२
घुँघुरी	२९१	चकवड़	१३३

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
चक्रवा	२५६	चमार	१८२
चक्री	२२२	चमार की स्त्री	,,
चक्रवर्ती राजा	१८९	चमारों का गाँव	४८
चकोर	२५८	चमेली पीली	१०३
चटनी	२१९	चमेली सफेद	,,
चढ़ाव	२४२	चरबी	१५५
चतुर	१६४	चलना	२६९
चढ़वा	२२६	चलनी	२२२
चन्दन	१३६	चँवर	२३२
चन्दनादि लेपन	२२४	चसना	२६९
चन्द्रमा	३३	चहकना	,,
चन्द्र-मण्डल	३४	चहलना	,,
चन्द्र-चिन्ह	,,	चाचा	१७७
चन्द्रमा की स्त्री	,,	चाची	,,
चन्द्रकान्त मणि	६४	चाटुमार	२०६
चना	८१	चाण्डाल	१८१
चन्द्रिका (चाँदनी)	३४	चाँदी	६५
चपलता	१९६	चाय	१२४
चपाना	२६९	चालना	२६९
चबैना	२१८	चिकना	१७१
चभोरना	२६९	चिखना	२१९
चमकना	,,	चिचिंड़ा	९०
चमगादर	२५७	चिड़ियों के बच्चे	२५९
चम्पा	१०५	चिढ़ना	२७०
चमड़ा	१५५	चितकबरा	१६९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
चिता	२३६	चूल्हा	२२२
चिताना	२७०	चूहा	२५१
चित्रकार	१८५	चैत्र	३९
चित्रा	३६	चोंच	२५९
चिन्ता	१९४	चोटी	१४९
चिरायता	१३०	चोपचीनी	१२८
चिरौंजी	१०१	चोर	१८७
चिलकना	२७०	चोली	२२५
चिल्लाना	,,	चौकी	२२२
चिवड़ा	२१९	चौथाई	१७०
चींटा	२६२	चौपड़	२४०
चींटी	,,	चौराई	८७
चीता (भौषधि)	१२६	चौराहा	४७
चीता (जानवर)	२४८		
चीनी	१४४	छछूंदर	२५१
चील	२५७	छजना	२७०
चीलर	२६१	छही	२२६
चुगुलखोर	१६६	छत्र	२३२
चुडिहारा	१८४	छरीला	१४१
चुभना	२७०	छाजन	४९
चुम्बक	७४	छाता	२२६
चुम्बन	१६२	छाती	१५१
चुरमा	२२०	छाल	७९
चुराना	२७०	छालटी	२२५
चूकना	,,	छिड़कना	२७०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
छिपकडी	२५४	जमाना	२७१
छिपना	२७०	जमालगोटा	१२१
छोंक	१६२	जय	२०१
छीपी	१८४	जल	५३
छुरी	२३५	जलना	२७१
छूना	२७०	जल की गहराई	५४
छेदना	२७१	जलप्रचुर देश	४६
छेना	१४५	जलाशय	५३
छेना-पानी	,,	जल-विन्दु	५४
छोटा	१६९	जलाशय का किनारा	,,
छोटी भुजावाला	१६८	जलाशय के बीच का स्थलभाग	,,
छोहारा	१०१	जल कुम्भी	६०
		जलाने की लड़की	८०
ज		जलेबी	२२०
जगन्नाथ पुरी	२६	जव	८१
जगाना	२७१	जवाखार	७५
जटा	१५०	जवानी	२०१
जड़	७९	ज्वर	२११
जड़ता	१९६	जस्ता	६७
जनक	२५	जहाज	५६
जनना	२७१	जागना	२७१
जनाना-रथ	२३४	जाँघ	१५३
जनेऊ	२३०	जाति	१८०
जप	१९	जानना	२७१
जबड़ा	१५१	जाना	,,
जँभाई	१६२		

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
जानकी	२२	जू (लीक)	२६१
जामवन्त	२५	जूठा भोजन	२२३
जामा	२२५	जूता	२२६
जामिन	२४०	जूही-सफेद	१०४
जामुन (छोटी जामुन)	१००	जूही-पीली	"
जामुन (बड़ी जामुन)	"	जेठ	१७९
जायफल	१३८	ज्येष्ठ	४०
जाल	२४०	ज्येष्ठा	३६
ज्वार	८४	जोंक	५७
जावित्री	१३८	ज्योतिषी	१८८
जासूस	१८९	जोहना	२७१
ज्ञान	१९४	झ	
जीभ	१५१	झकोरना	२७२
जीरा सफेद	१२७	झखना	"
जीरा-स्याह	"	झगड़ना	"
जीव	१६३	झझकारना	"
जीवन्ती	११५	झटकना	"
जीवन	१९९	झड़ना	"
जीविका	२३७	झरना (झझा)	२२२
जुभा	२३९	झरना (निर्झर)	५२
जुभाखाना	५१	झलाना	२७२
जुभारी	१८७	झाँझ	२४३
जुगुनू	२६१	झाड़ना	२७२
जुटाना	२७१	झाँपी	२२३
जुलाहा	१८२	झाँसना	२७२

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
झींगुर	२६१	ठठना	२७३
झींसी	३२	ठठेरा	१८३
झुराना	२७३	ठंडा	१६५
झूठ	१९९	ठिठुरना	२७४
झूमना	,,	ठुड्डी	१५०
झोंकना	,,		
झोपड़ी	५०	डगमगाना	२७४
		डफला	२४३
टकराना	२७३	डब्बा	२१७
टघलना	,,	डमरू	२४२
टहनी	७९	डाह	१९३
टाँको	२३९	डेढ़हा-सप	२५३
टिकना	२७३	डोम कौआ	२५७
टिटिहरी	२५८	डोली	२३४
टिड्डा-टिड्डी	२६१		
टेकना	२७३	ढक्कलना	२७४
टेढ़ा	१७१	ढाँकना	,,
टेवना	२७३	ढाल	२३५
टैंटी	११४	ढेड़सा	९०
टोप	२३५	ढोल	२४२
टोला	४७		
टोहना	२७३	तकिया	२२६
		तगर	१३७
ठग	१८७	तत्पर	१६५
ठगना	२७३	तन्मय	२०९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
तप	१९	ताल	२४१
तपस्वी	२०	ताल मखाना	१२२
तबला	२४३	ताला	२४०
तमाखू	१२४	तालाब	५५
तमाल	१११	ताली	२४०
तमोली	१८५	तालु	१५१
तरकश	२३५	तितलौकी	८९
तरकारी	२१८	तिल	८५
तरङ्ग	५४	त्रिबली	१५७
तरबूज	८९	तीखुर (तवाखीर)	१२९
तरसना	२७४	तीता	१६४
तरसाना	,,	तीतिर	२५७
तराजू	२३८	तीनी (तिन्नी)	८४
तराजू का पलड़ा	,,	तुरही	२४३
तराजू की डाँड़ी	,,	तुलसी	११६
तरेरना	२४७	तुला (राशि)	३७
तलवार	२३५	तूतिया	७०
तवा	२२१	तृष्णा	२१४
तागा	२४०	तेजपात	१३९
त्याग	१९३	तेल	८६
त्यागना	२७४	तेल का बाजार	४७
त्यागी	१६७	तेलकी कुप्पी	२२२
ताड़ी-फल	९६	तेली	१८४
ताँवा	६५	तैयार	१६५
तारतम्य	१९६	तैल मदन	२२४

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
तोप	२३६	दाँत	१५१
तोरोई	९०	दाद	२१२
तोशक	२२६	दादा	१७७
तौल या मान	२३८	दादी	"
थ		दान	१९
थका	१७१	दान-पात्र	१७२
थ	१५४	दानव	८
थल	८०	दानी	१७२
थाली	२२२	दामाद	१७८
थोड़ा	१७०	दारुहलदी	१३२
द		दाल	२१८
दक्षिण	२८	दालचीनी	१३९
दण्ड (घटी)	३८	द्वारकापुरी	२६
दण्ड (सज़ा)	२००	दावात	२२९
दयावान	१७३	दास	१८६
दरजी	१८४	दासी	१८७
दर्पण	२२६	दाह	२११
दर्शन	२०	दिग्पाल	२८
दर्शन योग्य	"	दिग्गज	२९
दरिद्र	१६४	दिगन्तर	२८
दशरथ	२५	दिन	३८
दहलना	२७४	दियासलाई	२३९
दहिना	२९	द्वितीया का चन्द्रमा	३४
दही	१४५	दिशा	२८
दही-बड़ा	२१९	दीनता	१९५

(२१)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
दीपक	२२७	देशनिकाला की सजा	२३३
दुकान	२३९	देहली	४८
दुःख (विषाद)	१९४	दो मुहाँ साँप	२५३
दुर्गन्धि	२०५	दोष	२११
दुर्गा	१३	दौड़ना	२७५
दुर्गम मार्ग	४७	दौरा-दौरी	२२२
दुर्जन	१६६	द्रौपदी	२५
दुन्दुभी	२३२	ध	२७५
दुपट्टा	२२५	धड़कना	११७
दुर्वचन	२०१	धतूरा	२७५
दूत	१८६	धधकना	२३९
दूध	१४५	धन	१२७
दूब	११६	धनियाँ	३६
दूर	३०	धनिष्ठा	१६४
दृष्टि	१६१	धनी	३७
देखना	२७४	धनु (राशि)	२३५
देना	"	धनुर्धर	"
देवता	३	धनुष	"
देवदारु	१३७	धनुष की ढोर	२७५
देव-नदी	२१	धमकना	२०
देव-मंदिर	५०	धर्म	५१
देवर	१७८	धर्मशाला	१८८
देव-वृक्ष	२१	धर्माध्यक्ष	२३८
देव-सभा	४	धरोहर	११२
द्वेष	१९३	धव	

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
धान	८१	नस्थ	२२८
धिकारना	२७५	नतिनी	१७६
धीरज	१९३	नदी	५५
धीरस्वर	२४२	नदी-संगम	”
धीरे	१९७	नदी का फेन	”
धुनियाँ	१८२	ननद	१७९
धू	३५	नफा	२३८
धूलि	१७१	नमकीन	१६४
धोती	४६	नया	१७०
धोना	२२५	नया वस्त्र	२२५
धोबी	२७५	नरक	८
धोबी की स्त्री	१८२	नरक भोगी	”
धोया वस्त्र	”	नरक-जीव	”
न	२२५	नरक-पीड़ा	”
नकद	”	नरकट	१२०
नकशा	२३८	नर्मदा	२७
नकारना	२२९	नष्ट	१६५
नक्षत्र	२७५	नस	१५६
नक्षत्रों का समूह	३५	नाई	१८३
नख	”	नाक	१५०
नखी	१०४	नाक का मैल	१५७
नगर	”	नाक कटा	१६८
नंगा	४७	नाक की कील	२२८
नट	१७३	नाखून	१५४
	१८४	नागकेशर	१३९

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
नागरमोथा	१४१	निगलना	२७६
नाधना	२७५	नितम्ब	१५२
नाच	२०६	नित्य	४१
नाचनेवाले पुरुष	१८६	नित्यकर्म	२३०
नाचनेवाली स्त्री	"	निधारना	२७६
नाटक	२०७	निद्रा	१६२
नाट्यशाला	५१	निवाहना	२७६
नाटा	१६७	नियराना	"
नाड़ी	१५६	निर्मली	१०२
नाती	१७६	निर्लज्जता	१९७
नाना	१७७	निवारण करना	२७६
नानी	"	निश्चय	२०५
नाभि	१५२	निस्तारना	२७६
न्याय	१९६	निहुरना	"
न्यायाधीश	१८८	नीचे	२९
न्यायशाला	५१	नीति	२०१
नारद	२४	नीबू	९६
नारंगी	९६	नीबू बिजौरा	"
नारियल	९५	नीबू जम्भीरी वा कमला	"
नाव की ढाँड़ी	५६	नीम	११२
नाव की उतराई	"	नील	"
नाव खींचनेवाली रस्सी	"	नील कमल	५९
नाशपाती	९६	नीलबंठ	२५७
निकालना	२७५	नीलम	६३
निखारना	"	नूपुर	२२८

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
नृसिंह	२३	पढ़ना	२७७
नेता	१७४	पढ़ाना	"
नेनुआ	९०	पतला	१६८
नेवारी	१०४	पत्थर	५२
नेवला	२५२	पतवार	५६
नैयायिक	१८८	पति	१७५
नोनियाँ	८७	पति-पत्नी	१७९
न्योछावर	१९४	पत्नी	१७६
नौकर	१८८	पतिव्रता स्त्री	१५९
नौका	५६	पति-पुत्र-हीना स्त्री	"
नौसादर	७७	पतोहू	१७८
		पत्र	७९
पकना	२७६	पन्ना	२२९
पकाना	"	पथरी (रोग)	२१३
पगना	"	पथरी (पत्थरका पान्न)	२२२
पगड़ी	२२५	पञ्चकाठ	१४१
पगुराना	२७६	पन्ना (पानक)	२१९
पक्ष	३९	पन्ना (रत्न)	६२
पक्षाघात	२१६	पपड़िया खैर	१११
पक्षी	२५५	पपीता	१०१
पंख	२५९	पपीहा	२५५
पंखा	२२६	पर्याय	२०५
पटरानी	१८९	परदा	२२६
पटिया	२२९	परवल	९०
पठानी लोध	१३३	पर्वत	५१

(२५)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पर्वत-शिखर	५२	पहुँची	२२८
परशुराम	२२	पहेली	२०६
पराठा	२२०	पाकर	१०९
पराधीन	१७३	पाखण्ड	१९८
परिक्रमा	१९५	पागल	१७२
परिस्थिति	२०९	पाठशाला	५०
परीक्षक	१६५	पाताल	५२
पल	३८	पान	१३५
पलक	१५०	पानी का चक्र	५४
पलंग	२२६	पाबी फेकने की कड़ाही	५६
पलना	२७७	पाप	१९९
पलास	११२	पापड़	२१९
पलोटना	२७७	पायजेब	२२८
पवित्र	१७१	पार्वती	१२
पवित्रता	२०५	पारा	६७
पवित्री	२२९	पारिषद	१९०
पश्चात्	४१	पालक	८८
पश्चिम	२८	पालकी	२३४
पशु	२४७	पालना	२७७
पँसली	१५२	पाला	३२
पसीना	१५५	पासा	२४०
पहचानना	२७७	पिचकना	२७७
पहनना	"	पिछलना	"
पहरा	२३३	पित्त	१५६
पहरेदार	१८६	पित्तपापड़ा	११८

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पिता	१७५	पुरोहित	१८६
पिपरामूल	१२६	पुल	५६
पिलही	१५७	पुष्कर मूल	१३१
पिस्ता	१०२	पुष्ट	१६५
पीकदान	२१७	पुष्प रज	७९
पीठ	१५२	पुष्प-रस	"
पीढ़ा	२२२	पुष्प-माला	२२४
पीतल	६५	पुष्प	३६
पीनस	२११	पुस्तक	२२९
पीना	२७७	पूज्य	१६५
पीपर (वृक्ष)	१०९	पूजा	१९
पीपल (औषधि)	१२६	पूतना (रोग)	२१५
पीला	१६९	पूर्ण	१७०
पीला-कमल	५९	पूर्णकलश	२३२
पीव	२१३	पूर्णमासी	३९
पुकारना	२७७	पूर्णमासी का चन्द्रमा	३४
पुण्य	१९९	पूर्व	२८
पुत्र	१७६	पूर्वा फाल्गुनी	३६
पुत्री	"	पूर्वा भाद्रपदा	३७
पुदीना	१४२	पूर्वाषाढ़	३६
पुनर्वसु	३६	पूरनपूड़ी	२२०
पुरवासी	१७१	पूरी	२१८
पुराना	१७०	पृथ्वी	४५
पुराना वस्त्र	२२५	पेट	१५२
पुरुष	१५८	पेट की भूमि	१६

(२७)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
पेट	१६६	प्रतिज्ञा	२०७
पेठा	८८	प्रतिध्वनि	२०६
पैर	१५३	प्रतीक्षा	२०९
पैर का तलवा	"	प्रदर	२१५
पैर की उँगुली	"	प्रबन्ध	२०५
पैरना	२७७	प्रभाव	२०९
पोखराज	६३	प्रमाद	१९८
पोय	८८	प्रमेह	२१३
पोलाव	२१८	प्रयागराज	२६
पोसना	२७७	प्रलय काल	४१
पोस्त	१३४	प्रलाप	२०२
पौत्र	१७६	प्रसव	१५७
पौत्री	"	प्रसव गृह	४९
पौधा	७८	प्रसन्नचित्त	१६५
पौष	४०	प्रसूता स्त्री	१६०
पौसरा	५१	प्रस्ताव	२०९
प्याज	९२	प्रहर	३८
प्यादा (सैनिक)	१९०	प्रातःकाल	"
प्यार	२०८	प्रार्थना	२०२
प्यारी स्त्री	१६०	प्रिय	१७१
प्यास	१६१	प्रेम	१९२
प्रकट होना	२७८	प्रौढ़	१६१
प्रकार	२०७	प्रौढ़ा	"
प्रजा	१६४	फ	२२५
प्रणाम	२२९	फटा कपड़ा	

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
फर्तिगा	२६१	फैलना	२७८
फतुही	२२५	फैलाना	"
फँदना	२७८	फोड़ा-फुन्सी	२१२
फन्दा	२४०	ब	
फरकना	२७८	बकना	२७८
फलयुक्त वृक्ष	८०	बकरा	२५०
फलहीन वृक्ष	"	बकुची	१३२
फाल्गुन	४०	बख्तर	२३४
फालसा	९९	बगुला	२५६
फाँसी की सज़ा	२३३	बगली द्वार	४८
फिटकिरी	७४	बघार	२२१
फिरोजा	६४	बच	१२८
फीलपाँव	२१३	बचपन	२०१
फुटकर	२०९	बच्छनाग	७३
फुफेरा भाई	१७७	बजानेवाले	१८५
फुफेरी बहिन	"	बड़ा	२२२
फुलौरी	२१९	बहुभा	२२१
फूट-ककड़ी	८९	बटेर	२५७
फूल	७९	बटोरना	२७८
फूल का गुच्छा	"	बटोही	१७१
फूलना	२७८	बढ़	१०९
फूला हुआ दृक्ष	८०	बढ़वानल	१६
फँकना	२७८	बढ़हल	९७
फेनी	२२०	बड़ा	१६९
फेफड़ा	१५७	बड़ा (बरा)	२१९

(२६)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
बडीमूली	९२	बल्मीक	४६
बड़े कानवाला	१६८	बलात्कार	२०८
बढ़ई	१८३	बवासीर	२१३
बत्तख	२५६	बंशलोचन	१२८
बधुआ	८७	बंशी	२४३
बदला	२१०	बंशी बजाने वाले	१८५
बन्दर	२५०	बंसी (कँटिया)	५६
बन्दूक	२३६	बहँगी	२४०
बन की अग्नि	१६	बहनोई	१७८
बनाना	२७८	बहलाना	२७९
बबूल	१११	बहाना (मिस)	२०३
बालीबाज	२३५	बहाना (क्रि०)	२७९
बरतन	२२२	बहाना करना	"
बरजना	२७९	बहिरा	१६८
बरतनों का बाजार	४८	बहिन	१७७
बरना (वरण करना)	२७५	बहुत	१७०
बरमा	२३९	बहेड़ा	१२५
बरात	२३१	बहेलिया	१८४
बराती	"	बाँक	२४०
बरी	२१९	बाघ	२४७
बरें (तेलहन)	८६	बाज	२५८
बरें (हाड़ा)	२६०	बाजरा	८४
बरोह	८०	बाजा	२४२
बरौनी	१५०	बाजार	४७
बलराम	२३	बाजीगर	१८७

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
बाट	२३८	बिजायठ	२२८
बाँटना	२७९	बिजुली	३१
बाण	२३५	बिदारना	२७९
बात	१५६	बिदारी कंद	१२०
बादाम	१०१	बिधारा	१२४
बाँव	५५	बिना उपजाऊ भूमि	४६
बान्धव	१७८	बिल	२५४
बाबरींग	१२८	बिलमना	२८०
बायाँ	२९	बिलार	२५१
बारी	१८३	बीज	७८
बालक	१६०	बीजबन्द	११९
बालछद्	१४०	बीणा	२४२
बाल्मीकि	२४	बीतना	२८०
बालिका	१६१	बीधना	११
बालुका प्रचुरदेश	४६	बीरबहूटी	२६२
बालू	५५	बुभा	१७७
बावली	५५	बुढ़ापा	२०२
बाँस	११९	बुध	३४
बासना	२७९	बुद्धि	१६३
बाँह	१५३	बूकना	२८०
बिक्री की वस्तु	२३८	बेंचना	२३८
बिचकना	२७९	बेढ़ई	२२०
बिचलना	११	बेंत	६१
बिछुडना	११	बेंदी (टीका)	२२८
बिच्छू	२५४	बेधना	२८०

(३१)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
बेल	१००	भगाना	२८०
बेला	१०३	भंगी	१८२
बेवाई	२१२	भजना	२८०
बैगन (भाँटा)	९१	भटकटैया	११४
बैठक	४९	भटकाना	२८०
बैठना	२८०	भट्टी	२२३
बैर	९८	भट्टकाना	२८१
बैल	२३७	भतीजा	१७८
बोल (बोर)	७५	भतीजी	"
बोलना	२८०	भय	१९२
बृहस्पति	३५	भयभीत	१६६
ब्रह्मचारी	१९१	भयंकर	१६७
ब्रह्मचारी का दण्ड	२३०	भरता	२१९
ब्रह्मचारी का पात्र	"	भरणी	३५
ब्रह्मत्वभाव	२०	भरमाना	२८१
ब्रह्मज्ञानी	"	भसाना	"
ब्रह्मा	९	भाई-सगा	१७७
ब्रह्मा का बाहन	"	भाई-ज्येष्ठ	"
ब्राह्मण	१८०	भाई छोटा	"
ब्राह्मण-पत्नी	"	भागना	२८१
ब्राह्मणी	१२३	भाग्य	१६३
भ	२८०	भाग्यमान	१६५
भकुभाना	१९३	भाँग	१३४
भक्ति	१२३	भांजा	१७८
भँगरैया		भांजी	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
भाट	१८५	भोंकना	२८१
भात	२१८	भोजन	२१७
भाथी	२३९	भोजपत्र	१११
भाद्रपद	४०	भौजाई	१७८
भाना	२८१	भौरा	२६०
भाला	२३६	भौह	१५०
भालू	२४८	भ्रम	१९५
भासना	२८१	म	
भिक्षुक	१९१	मकड़ी	२६१
भिंडी	९१	मकर	३७
भिलौवा	१३३	मक्का	८३
भीलों का गाँव	४८	मकोथ	९९
भीष्मपितामह	२५	मक्खी	२६०
भुजंगा	२५७	मक्खन	१४५
भुनना	२८१	मखमली	१०७
भुलाना	॥	मखाना	६०
भूख	१६१	मगर	५७
भूमि पर सोनेवाले	२३०	मगरैला	१२७
भूलना	२८१	मंगल	३४
भेजना	॥	मवा	३६
भेंटना	॥	मचलना	२८१
भेंड़ा	२५०	मच्छर	२६०
भेड़िया	२४८	मछली	५७
भैरव	१५	मछली का बाजार	४७
भैंसा	२४८	मछली पकड़ने का जाल	५६

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
मछली रखने का पात्र	५७	मधुरवचन (अर्थ प्रयोग में)	२००
मंजरी	७९	मधुरशब्द (शब्द प्रयोग में)	२०५
मज्जा	६५५	मधुर स्वर	२४२
मजीठ	१३१	मन	१६३
मजीरा	२४३	मनन करना	२२९
मटकना	२८१	मनाना	२८२
मटका	२२१	मरना	"
मटर	८१	मरसा	८७
मट्टा	१४५	मलद्वार	१५२
मण्डल	२९	मलना	२८२
मतवाला	१७२	मलाई	१४५
मंत्री	१९०	मलाशय	१५३
मथना	२८२	मसूर	८३
मथानी	२३८	मस्तिष्क	१६१
मथुरा	२६	महंगा	२३८
मद	१९३	महन्त	१८६
मदवाले हाथी	२३३	महसूल	२३३
मदार	११५	महादेव	१०
मदिरा	१४३	महाजन	१८९
मद्यगृह	५१	महाराजाधिराज	"
मन्दासि	२१३	महावत	१९०
मध्य	३०	महावन	७८
मध्यान्ह काल	३९	महावर	२२४
मधु	१४३	महुआ	९७
मधुमक्खी	२६०	माघ	४०

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
माजना	२८२	मिथुन	३७
माजूफल	१२४	मिर्च-काली	१२६
मौड़	२१८	मिर्च-सफेद	"
माणिक	६३	मिलना	"
माता	१७५	मीचना	"
माधव्री	१०४	मीठा	१६४
मान (आदर)	१९७	मीठा भात	२१८
मान (हठ)	"	मीन	३७
मानता	१९८	मीमांसज्ञ	१८८
मानना	२८२	मुकुट	२२७
मामा	१७८	मुक्ति	२०
मामी	"	मुखपाक	२१५
मारना	२८२	मुख्य	१७२
मालपुआ	२१८	मुँगौरी	२१९
मालकङ्गुनी	१३०	मुचुकुन्द	१०६
मालती	१०४	मुड़ना	२८२
माली	१८४	मुण्डन कर्म	२३०
माली की स्त्री	"	मुनका	१०२
मार्ग	४७	मुनि	२०
मार्गशीर्ष	४०	मुरझाना	२८२
मास	३९	मुरब्बा	२१९
मांस	१५५	मुर्गा	२५८
मिटाना	२८२	मुर्दा	१६३
मिट्टी	४६	मुर्दासंग	६९
मित्र	१७४	मुलेठी	१२९

(३५)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
मुसलमान	१८२	मेधी	८८, १२६
मुँह	१५१	मेढक	५८
मुँग	८३	मेघ	३७
मुँग के लड्डू	२२०	मेहँदी	१२४
मुँगफली	१०२	मैथुन	१६३
मुँगा	६१	मैनफर	१३०
मुँछ-दाढ़ी	१५१	मैनसिल	७१
मुँज	१२०	मैना	२५७
मुड़ना	२८३	मोटा	१६८
मुत्र	१५८	मोटा कपड़ा	२२५
मुम्र कच्छ	२१४	मोठ (मोथी)	८३
मुम्राशय	१५३	मोती	६१
मुखं	१६४	मोती का हार	२२८
मूर्च्छा (भाव)	१९७	मोतीचूर के लड्डू	२२०
मूर्च्छा (रोग)	२१४	मोम	१४३
मूल	३६	मोर	२५५
मूलधन	२३८	मोर-चन्द्रिका	"
मूली	९२	मोर-शिखा	"
मूसना	२८३	मोह	१९४
मूसल	२२२	मौनी	१७२
मूसली	१२०	मौलसिरी	१०६
मेघ	३१	मौसी	१७७
मेघ-गर्जन	"	मौसेरा भाई	"
मेघनाद	२५	मौसेरी बहिन	"
मेघ-पंक्ति	३१	मृगशिरा	३६

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
मृगचर्म	२३०, २५०	रज	१५६
मृगतृष्णा	३२	रजस्वला स्त्री	१५९
मृगी	२१३	रजाई	२२५
मृग्यु	१९९	रँडुआ	१५९
मृदंग	२४२	रणभूमि	५१
मृदंग बजानेवाला	१८५	रतिगृह	४९
म्लेच्छ देश	४६	रथ	२३४
य		रथी (सैनिक)	१९०
यकृत	१५७	रमना	२८३
यम	७	रसवत	१३२
यमुना	२७	रस्सो	२३८
यज्ञ	१९	रसोई गृह	४९
यज्ञकर्त्ता	१८८	रहना	२८३
यज्ञशाला	५०	रहर	८३
यशोदा	२३	राई	८५
यात्रा	२००	राक्षस	७
युद्ध	२३५	राक्षसी	८
युधिष्ठिर	२४	राख	२२३
युवती	१६१	राग	२०६
युवा	”	राँगा	६७
योनि	१५२	राजगद्दी	२३३
योनिकंद	२१५	राजगीह	१८५
र		राजधानी	२३२
रक्त कमल	५९	राजमहल	४९
रचना	२८३	राजमार्ग	४७

(३७)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
राज्य	२३२	रेवती	३७
राज्याभिषेक	"	रेशमी वस्त्र	२२४
राज्य-व्यवस्था	"	रोकना	२८३
राजा	१८९	रोग	२११
रात्रि	३९	रोगी	१६८
राधा	२३	रोटी	२१८
रामचन्द्र	२२	रोना	१६२, २८३
रामबाँस	१२३	रोपना	२८३
रायता	२१९	रोम	१५४
राल	१३७	रोमाञ्च	१५५
रावण	२५	रोहिणी	३६
राशि	३७	ल	२५
राष्ट्र	४६	लक्ष्मण	१२
राहु	३५	लक्ष्मी	२०९
रिक्त	१६५	लक्ष्य	२८४
रिसाना	२८३	लखना	१६८
रीक्षणा	"	लगाडा	२८४
रीठा	१११	लजाना	२९५
रुक्मा (पक्षी)	२५८	लजा	१२३
रुद्राक्ष	११२	लज्जावन्ती	१०७
रुखा	१७१	लटकन	१२२
रुठना	२८३	लटजीरा (भोंगा)	२८४
रूपामाखी	६९	लटपटाना	२३५
रेढी	८६	लट्टबाज	२२०
रेती	२३९	लट्ट	

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
लता-बौर	७८	लिपटना	२८४
लपेटना	२८४	लिपटाना	॥
लम्बा	१६७	लिसोड़ा	१००
लम्बी भुजावाला	१६८	लुभाठ	२२३
ललचाना	२८४	लुकना	२८५
ललाट	१४९	लुटना	॥
लवा	२५८	लुटाना	२८४
लहकना	२८४	लेखक	१८७
लहकाना	॥	लेटना	२८५
लहंगा	२२५	लेनदेन	२३८
लहना	२८४	लेना	२८५
लहलहाना	१	लोध	१३३
लहसुन	९२	लोबिया	८१
लहसुनियाँ (वैदूर्य मणि)	६३	लोभ	१९८
लादना	२८४	लोहा	६४
लार थूक	१५७	लोहार	१८३
लाल	१६९	लोहू	१५५
लालकन्द	९३	लौकी	८८
लालचन्दन	१३७	लौंग	१३८
लालचोंटा	२६२	लौटना	२८५
लालमिर्च (मिरचा)	१२४		व
लावा	२१९	वध	२३६
लाही	१३१	वन	७८
लिङ्ग (पुरुषेन्द्रिय)	१५२	वन्ध्या स्त्री	१६०
लिट्टी वा बाटी	२१८	वमन	२१३

(३६)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
वर	२३१	विवेक	२०
वर्ष	३९	विश्वकर्मा	२४
वर्षा	४१	विश्वामित्र	"
वरुण	६	विशाखा	३६
वशिष्ठ	२४	विष	२५४
वस्त्र	२२४	विषमता	२०८
वसन्त (ऋतु)	४१	विषवैद्य	१८९
वात्सल्य	१९३	विष्टा	१५७
वानप्रस्थी	१९१	विष्णु	९
वायु	१६	विष्णु का घोड़ा	१०
वायुवेग	१८	विष्णु का वाहन	"
विगततरजा स्त्री	१५९	विस्मय	२०८
विघ्न	२०७	विसर्प	२१५
विजयसार	१११	वीर्य	१५६
वितर्क	१९७	वीर	१७२
विद्या	२०३	वेतन	२३९
विदित	२०६	वेद	२१
विधवा स्त्री	१५९	वेदान्ती	१८८
विनीत	१६६	वेदपाठी	"
विपरीत	२०९	वेदश्या	१८६
विपर्यय	२०५	वेदश्याओं के गुरु	"
विमुख	२९	वैद्य	१८९
वियोग	२०७	वैशाख	४०
विवाह	२३१	वैश्य	१८१
विवाहिता स्त्री	१६०	वैश्य-परती	"

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
वृद्ध	१६१	शतभिषा	३७
वृक्ष	७८	शत्रु	१७३
वृश्चिक	३७	शत्रुघ्न	२५
वृष	३७	शनि	३५
वृष्टि	३२	शपथ (कसम)	२०१
व्यतीत	१९७	शब्द	१६१
व्यङ्ग्य	२०९	शयनगृह	४९
व्यर्थ	२०७	शरत्	४१
व्यवहार	२००	शरीफा	९९
व्यसन	२०३	शरीर	१४९
व्यभिचारी	१६७	शस्त्रालय	५१
व्यभिचारिणी	१६०	शहतूत	१००
व्याकुल चित्त	१६५	शहनाई	२४३
व्याघ्र नख	२४७	शाकल्य	२३०
व्याधि	१९५	शाखा	७९
व्यायामशाला	५१	शान्त	१७२
व्यास (मुनि)	२४	शान्ति	१९३
व्यास (कथा वाचक)	१८८	शाप (गाली)	१९८
व्रत	१९	शाल	११०
श		शास्त्र	२१
		शास्त्री	१८८
शकरपाला	२२०	शिक्षक	"
शकरकन्द	९३	शिखा	१४९
शंका	१९३	शिरपीड़ा	२१५
शंख	५८	शिरफूल	२२७
शंखाहुली	१३०		

(४१)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
शिल्पशाला	५१	श्रीहत	२०८
शिलाजीत	७३	इवास	२१४
शिशिर	४१	इवेतकमल	५८
शिव्य	१८८	इमशान	५१
शीघ्र	१९७	शृङ्गीकृषि	३४
शीत	२११	शृङ्गार	२२७
शीतला	२१२	स	२८५
शीतल चीनी	१३९	सकाना	"
शीशम	११०	सकारना	४७
शीशा	६७	संकीर्णमार्ग	२०८
शुक	३५	संकेत	१७४
शुक-पक्ष	३९	सखी	७४
शूकरोग	२१५	संख्या	२०६
शूद्र	१८१	संगीत	२१३
शूद्र-पत्नी	"	संग्रहणी	२८५
शेषनाग	२५३	संचना	७६
शैली	२१०	संचरनोंन	१६५
शोक	१९२	सजग	१६६
शोभा	२०८	सजन	७५
शोरा	७७	सज्जीखार	२८५
दयामातुलसी	११७	सङ्गना	४१
श्रद्धा	१९३	सतयुग	१९९
श्रम	"	सत्य	१२०
श्रवण	३६	सतावर	१६०
श्रावण	४०	सती स्त्री	

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सत्तू	२२०	समुद्रफेन (औषधि)	१२९
सधना	२८५	समुद्री नौन	७६
सधवा स्त्री	१५९	सम्मुख	२९
सन	१२३	समूह	१९६
सनाथ	१२१	संयोग	२०७
सन्तान	१७९	सर्प	२५३
सन्तोष	१९८	सर्पराज	,,
सन्यास	१९९	सरफोंका	१२२
सन्यासी	२०, १९१	सरसों	८५
ससाह	३९	सरथू	२७
सफेद	१६९	सरस्वती	१२
सँभालना	२८६	सरलचित्त	१६५
सभा-भवन	५०	सराहना	२८६
समय	३८	सलई	११०
समता	२०८	सलजम	९२
समर्थन	२०९	सलाई	२३९
समान अवस्था के	१७९	सँवारना	२८५
समाना	२८५	संस्कार	२०२
समाप्ति	१९६	संस्कार-भ्रष्ट	२३०
समेटना	२८५	संसार	४५
सभी	११२	सहदेई	११९
समीप	२९	सहनशीलता	१९४
समुद्र	५३	सहमना	२८६
समुद्र-मर्याद	५४	सहलाना	२८६
समुद्र-फेन	,,	सहिजन	९१

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सहेजना	२८६	सिकहर (छीका)	२४०
सत्ता	२३८	सिखरन	२१८
सागौन	११२	सिँवाड़ा	६०
साँड	२३७	सिझाना	२८६
साँप का शरीर	२५३	सिंदूर	७२
साँप का फन	२५४	सिधारना	२८६
साँप का केतुल	"	सिद्धान्त	२०५
साँप का दाँत	"	सिपाही (घोड़ा)	१९०
साँप का विष	"	सिमिटना	२८६
साँप पकड़नेवाला	"	सियार (गीदड़)	२४९
साबूदाना	८४	सिर	१४९
साँभर नौन	७६	सिर के बाल	"
सायंकाल	३९	सिरस	११०
सारंगी	२४३	सिराना	२८६
सारस	२५६	सिल	२२२
सालम मिश्री	१२४	सिंह (राशि)	३७
सालना	२८६	सिंह (जन्तु)	२४७
साला	१७८	सिहरना	२८६
साली	"	सींचना	"
साँवला	१६९	सीढ़ी	४९
साँवाँ	८३	सीधा	१७२
सास	१७८	सीना	२८६
साही	२५०	सीपी (साधारण)	५७
साही के रोम	२५१	सीपी (मोती वाली)	"
सिकड़ी	२४०	सुगन्ध बाला	१४१

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सुगन्धि	२०४	सूम	१७२
सुगा वा तोता	२५७	सूरन	९३
सुथनी	९३	सूर्य	३२
सुदर्शन	१२४	सूर्य के पारिपाश्वक	३३
सुन्दर	१६९	सूर्य का सारथी	"
सुन्दरता	२०२	सूर्य का मण्डल	"
सुन्दर मार्ग	४७	सूर्य किरण	"
सुन्दरी स्त्री	१५८	सूर्य-प्रकाश	"
सुनना	१६२, २८७	सूर्य के घोड़े	"
सुनारों का बाजार	४७	सूर्यकान्त-मणि	६३
सुपारी	१०१	सेँधा नौन	७६
सुरमा-स्रोतोजन	७१	सेना	१९०
सुरमा-सौवीराञ्जन	७२	सेनापति	"
सुरमा-पुष्पाञ्जन	"	सेम	९१
सुहागा	७५	सेमल	११२
सूभर	२४८	सेव	९६
सूई	२४०	सेँवई	२२०
सूक्ष्म	१७०	सेवा	२०७
सूँघना	२८७	सेवार	६०
सूचना	२०२	सेहुँभा	२१२
सूजन	२१२	सेहुँड़	११६
सूतिका रोग	२१५	सोजाक	२१३
सूद	२३७	सोंठ	१२५
सूद खोर	"	सोना (धातु)	६६
सूप	२२२	सोना (शयन करना)	२८७

(४५)

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
सोना पाढ़ा	११४	स्वर्णाचल	२१
सोना माखी	७०	स्वाती	३६
सोनार	१८४	स्वाद	१६२
सोमलता	१२३	स्वामी	१६६
सोया	८७	स्वीकार	२०५
सौत	१७९	ह	२८७
सौपना	२८७	हकबकाना	"
सौफ	१२६	हकलाना	"
स्तन	१५१	हँकाना	"
स्तन का अग्रभाग	"	हटना	"
स्तनपाक	२१५	हटकना	"
स्तुति	२०१	हटाना	२८८
स्त्री	१५८	हड़पना	१५६
ज्ञान	२२४	हड्डी	२३३
स्नेह	१९८	हथिनी	१५४
स्फटिक मणि	६४	हथेली	"
स्मृति	१९४	हथेली के पीछे	१९५
स्याही	२२९	हट्ट	२४
स्वतन्त्र	१६६	हनुमान	२३७
स्वप्न	१९४	हर	"
स्वभाव	१९८	हरका फाल	६८
स्वयंवरा स्त्री	१५९	हरताल	१२५
स्वर	२४१	हर्र	९८
स्वर्ग	३	हरफा रेवड़ी	१६९
स्वर्ण गैरिक	७१	हरा	

शब्द	पृष्ठाङ्क	शब्द	पृष्ठाङ्क
हराना	२८८	हाथी की सूँड	२३३
हरिण	२४९	हाथी खाना	५०
हर्ष (सुख)	१९५	हाबुस	२२०
हरिस	२३७	हार (पराजय)	२०१
हलदी	१३२	हारना	२८८
हलवाई	१८५	हार सिंगार (फूल)	१०८
हलुआ	२१८	हारिल	२५७
हवन	२३०	हाव	२००
हवाई जहाज़	२३४	हिंगुल	७१
हंस	२५५	हिचकना	२८८
हँसना	२८७	हिचकी	१६२
हँसी	१६२	हिजड़ा	१७३
हँसीठट्टा	२०२	हिरौजी	७१
हँसुआ	२३७	हिलोरना	२८८
हस्त (नक्षत्र)	३६	हिस्टीरिया	२१४
हाकिम	१८९	हींग	१२८
हाथ	१५४	हीरा	६२
हाथकटा	१६८	हुलसना	२८८
हाथी	२३३	हेमन्त	४१
हाथी का सिक्कड़	„	हैजा	२१४
हाथी का मद	„	होना	२८८
हाथी का अंकुश	„	होम का ईंधन	२३०
हाथी की बोली	२३४		

सस्ती बाल-साहित्य की पुस्तकें

कहने को तो यह बालकोपयोगी हैं, पर इनसे आबाल, युवा और वृद्ध सबको लाभ पहुँचेगा। मनोरंजकता और ऐतिहासिक सरलता से पुस्तकों की प्रत्येक लाइन सराबोर है। नाम और दाम देखिये—

सचित्र महाभारत भाषा	३१	महारानी सीतादेवी	॥१॥
बाल महाभारत	११	देवी पार्वती	॥१॥
बाल रामायण	११	गल्पाञ्जली	॥१॥
भारत के ब्रह्मर्षि	॥१॥	श्रवणकुमार नाटक	॥१॥
वीर लवकुश	॥१॥	वीर अभिमन्यु	॥१॥
महाराणा प्रताप नाटक	॥१॥	नानखताई	॥२॥
परशुराम	॥१॥	नमकीन	॥२॥
नलदमयन्ती	॥१॥	मिठाई	॥२॥
		छात्र-विनोद	॥२॥

मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय, गायघाट,
बनारस सिटी।

श्रीगोस्वामि तुलसीदास कृत रामचरितमानस-सातो काण्ड

नवाह, मास पारायण पाठ-विधि सहित

जिसको श्री १०८ माधोदासजी रामायणी तथा १०८ बा० रामदासजी की सम्मति से श्री बाबा रामबालक दासजी महाराज जिनकी कृपा इस दास के ऊपर है उन्हीं से पठन-पाठन कराकर काशीनिवासी दास पूरणभक्त रामायणी ने संशोधन किया ।

❀ उसीको ❀

भार्गव पुस्तकालय काशी ने

निज भार्गवभूषण प्रेस में बढ़िया कागज और खूब मोटे मोटे अक्षरों में मुद्रित कर प्रकाशित किया । आशा करते हैं कि प्रत्येक रामायण भक्त इस शुद्ध संस्करण की एक एक प्रति अपने पास रखकर लाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रम को सफल करेंगे । पुस्तक बहुत मोटे अक्षरों में चिकने कागज पर छापी गई है । जिल्द कपड़े की होते हुए भी मूल्य रफ कागज का ३॥) तथा ग्लेज का ४) बिना कमीशन लागत मात्र रक्खा गया है ।

पुस्तक मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय, गायघाट,
बनारस सिटा ।



दूसरा
संस्करण

जिस विचारधारा को लेकर मनुष्य संसार में बड़े से बड़े सिद्धान्तवादका प्रचार कर सकता है। गुणज्ञ और परिणत हो सकता है। पृथ्वी का आधिपत्य प्राप्त कर सकता है। रङ्ग से राजा बन सकता है। विद्या लाभ कर सकता है; अच्छे से अच्छा वीर बन सकता है, सदाचार सीख सकता है और महा धुरन्धर राजनोति का पुजारी बन सकता है। ऐसी वस्तु को प्राप्त करनेको किसे उत्कट अभिलाषा न होगी ? भारत-वर्षके पाश्चात्यदेश के सभी महान् पुरुषों, वेदों और शास्त्रों एवं राम, कृष्ण, ईसा, महम्मद, शंकराचार्य और महात्मा गांधी आदि ऐसे आदरणीय पथ-प्रदर्शकों के पूरे १००० एक हजार सदुपदेशों से पुस्तक भरी पड़ी है। “वीरभोग्या वसुन्धरा” के महान्पुरुषों के विचारों से भरी हुई पुस्तक प्रत्येक आवाल वृद्ध नर-नारी के पढ़ने योग्य है। पाठक इसके नाम हो से इसका गुण जानें। लगभग २०० पृष्ठों के एन्टिक कागज़ पर प्रकाशित पुस्तक का मूल्य केवल ॥) मात्र है।

पुस्तक मिलने का पता—

भारत-पुस्तकालय बनारस



दूसरा
संस्करण

यह पुस्तक क्या है। दुनियाँके दुरंगेपनका मार्मिक चित्र है। इस पुस्तक में लेखक ने चालवाजो, विश्वप्रेम, शासनप्रणाली, विश्वासघात, दरिद्रता, पतिभक्ति, वात्सल्यप्रेम और सौख्य आदिका सच्चा नमूना खोंच दिया है। राखाल का मातृ-पितृ हीन होने के कारण ननिहाल में पलना, समय आने पर राज-कन्या से विवाह होना, राजाका राखाल का घरजमाई बनाकर रखना, राखाल को खो मणिमाला की पति भक्ति, राखाल का दीन प्रजा और राजसेवकों पर प्रेम और उनका पक्ष करना, राजाकी प्रजा पर क्रूरता, राखाल और राजा में द्वेष, राखाल का राज्य छोड़कर भागना, राखाल की खो मणिमाला का पति प्रेम में राजत्याग करना, राखाल का राज-कन्या के साथ अपने ननिहालमें दुःखमय जीवन व्यतीत करना, राजाके मर जाने पर रानो के भाई भतोजीका राज्य, घर, दखल कर रानो का कष्ट देना, राखालका रानो की सहायताकरना, दुष्टों पर विजय, अन्त में अगाध कष्टों को भेल कर राखाल के पुत्र भूपाल का पहाड़पुर के राज्यका अधिकारी होना आदि इसमें इस प्रकारसे लिखा गया है कि एक बार पढ़ने से पुस्तक बिना समाप्त किये छोड़ने को जो नहीं चाहता, अवश्य मँगाकर देखये। पृष्ठसंख्या ३०४ मूल्य केवल १॥)

पता-भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस सिटी।

‘प्रणय’

(दूसरा संस्करण छप गया)

लेखक-देवनारायण द्विवेदी ।

यह मौलिक उपन्यास एक सत्य घटनाके आधार पर लिखा गया है । इस पुस्तककी कापी पढ़कर द्विवेदीजीके कई साहित्यिक विद्वान मित्रों ने तो यहाँ तक कह डाला कि “यद्यपि कर्त्तव्याघात हिंदीके उपन्यासोंमें बहुत ऊँचा स्थान पा चुका है, तथापि प्रणयकी भाषा, भाव और चरित्र-चित्रण चातुरी इतनी उत्तम है कि यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि ये दोनों पुस्तकें एक ही लेखकको लिखी हुई हैं ।” प्रेममें कैसी आकर्षण शक्ति है, मनुष्य में किस प्रकार भ्रांत धारणा उत्पन्न हो जाती है और कोमल हृदय भी कभी कभी कितना कठोर बन जाता है, इसका बड़ा सुन्दर और उपदेश प्रद चित्र खींचा गया है । अल्पावस्था होते हुए भी पंडिता रमाका गाम्भीर्य, उत्साह तथा कष्ट सहिष्णुता एवं निर्लोभके साथ अद्भुत ढंग से देश-सुधार करना और रूठे हुए पतिको बिना मनाये ही हिंदी संसार में बिलकुल नयी वस्तु है । अहा ! रमाके चरित्र-बल के सामने उसके पतिको भी लज्जित होकर उससे क्षमा माँगनेका वर्णन कितना हृदय ग्राही और मर्मस्पर्शी है । स्त्री पुरुष दोनों ही के पढ़ने योग्य है । मृ० १॥)

पाठकगण इसकी प्रशंसा ‘मांडर्नरिव्यू’ आदि प्रतिष्ठित और संसार प्रसिद्ध पत्रिकाओंमें पढ़ चुके होंगे ।

पुस्तक मिलने का पता—

श्रीगुरु पुस्तकालय बनारस सिटी

छप गया ।

छप गया !!

छप गया !!!

हिन्दी संसार में अपने ढंग का अद्वितीय ग्रन्थ

हिन्दी पर्यायवाची कोश ।

लेखक—पं० श्रीकृष्ण शुक्ल-विशारद ।

अब तक हिन्दी संसार में एक भी ऐसा कोश-ग्रन्थ नहीं छपा जिससे उक्त ग्रन्थ की तुलना किञ्चित् भी की जा सके । ग्रन्थ के लेखक ने आज कई वर्षों के सतत परिश्रम के पश्चात् यह ग्रन्थ-रत्न लिख कर तैयार किया है जो बड़े सजधज के साथ, सुन्दर नये टाइप में छपकर तैयार है । यह ग्रन्थ चार खण्ड और ३७ वर्गों में विभक्त है । प्रथम खण्ड के ६ वर्गों में स्वर्ग के देवता, अवतार, तीर्थ, दिशा, ग्रहोपग्रह, नक्षत्र, समय आदि, द्वितीय खण्ड में स्थल-जल-भूगर्भ (खान), वन उपवनादि तथा समस्त धान्य, शाक, भाजी, वनस्पति मूल, कन्द, फल, फूलादि, तृतीय खण्ड में मनुष्य के अङ्ग-प्रत्यङ्ग सस्वन्धादि, जाति, व्यवसाय, मनोविकारादि, शारीरिक रोग, भोजन के विविध व्यञ्जन, वस्त्र, आभूषणादि और चतुर्थ खण्ड में पशु, पक्षी, सरीसृप (रेंगनेवाले जीव)के, कीट पतङ्गादि के नामों तथा क्रिया पदों के पर्याय दिये गये हैं । इस प्रकार यह ग्रन्थ एक साधारण विद्यार्थी से लेकर शिक्षक, लेखक एवं सम्पादकों के बड़े काम का है । सवा दो हजार शब्दों के यथेष्ट पर्यायों के अतिरिक्त प्रायः डेढ़ सौ पाद टिप्पणियाँ भी दी गई हैं, जो एक अलग ग्रन्थ का काम देती है । इस प्रकार यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य प्रेमियों का परम मित्र, और अनेक कोशों का महाकोश है । सुन्दर नये टाइप में ग्लेज़ पेपर पर छपा हुआ उत्तम कपड़े की जिल्द और पृष्ठसंख्या ४०० होनेपर भी मूल्य केवल २॥) है ।

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस ।

(सांगीत प्रकाश—प्रथम खण्ड)

अर्थात्

हारमोनियम मास्टर

(तृतीय-संस्करण)

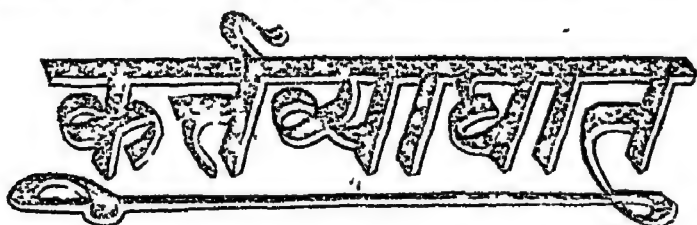
वर्तमान समय में सभी सज्जनगण जितना हारमोनियम वाद्य को पसन्द करते हैं उतना अन्य किसी वाद्य को नहीं। यहाँ कारण है कि इतने अल्प समय में हमारे हारमोनियम मास्टर ने संगीत प्रेमियों के दिलों में अपना ऊँचा स्थान बना लिया। यद्यपि अन्य स्थानों से भी इसके एकाध संस्करण प्रकाशित हुए हैं तथापि हमारे संस्करण की समता वे नहीं कर सकते। इसमें लेखक ने हारमोनियम के अलावा तबला और मृदंग का भी विषय देकर पुस्तक को सर्वश्रेष्ठ बना दिया है। इस पुस्तक को पढ़ कर आप हारमोनियम बजाना व मरम्मत करना तथा तबला आदि बाजों के पूर्ण अनुभवों और ज्ञाता हो सकते हैं। पुस्तक की छपाई बड़ी सावधानी से हुई है। ऐन्टिक कागज़ पृष्ठ संख्या ४१६ सुन्दर जिल्द बँधी पुस्तक का मूल्य फिर भी कम केवल १॥) मात्र रक्खा गया है।

पुस्तक मिलने का पता—

भारगव पुस्तकालय बनारस सिटी

राजनका बेरा

यह उपन्यास सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक या जासूसी नहीं है। यह ऐसा अजीब उपन्यास है कि पाठक एक नयी वस्तुका अनुभव करेंगे। इससे पाठकोंको जंगली जीवनको जानकारी प्राप्त होगी, जंगली जानवरोंकी आहट पानेका उपाय मालूम होगा। जंगलमें रहकर मनुष्य किस प्रकार जंगली बन जाता है, जंगलके जीवोंमें कैसा प्रेमभाव और द्वेषभाव रहता है—आदि बातोंका बड़ा ही सुन्दर चित्र इस उपन्यासमें पाठकोंको दिखायी पड़ेगा। मूल्य भी खूब सस्ता केवल १॥) मात्र है।



श्रीयुत प्रेमचन्दजी बी० ए० की सम्मति

“हिन्दीमें इतना अच्छा उपन्यास अबतक हमारा नज़रोंसे नहीं गुज़रा था। कहानी इतनी सुन्दर है, लेखककी शैली इतनी प्यारी है, चरित्रोंका प्रदर्शन इतना मनोहर है कि पाठक मानो भावोंके उद्यानमें विचर रहा है। कहाँ मानमय पितृ-भक्ति है, तो कहाँ दीप-शिखाकी भाँति हृदयमें जलनेवाला पुत्र प्रेम! चन्द्रकलाका चित्र तो हिन्दी-संसारमें एक अनूठी वस्तु है।..... हम पाठकोंसे अनुरोध करते हैं कि इस कदण-कथाका अवश्य पढ़ें। ऐसे उपन्यास उन्होंने कम पढ़ें होंगे।.....”

फरवरी सन् १९२६ “माधुरी”

यह पुस्तक तीसरी बार छपकर तैयार हुई है। ४०० पृष्ठ मूल्य १॥)

पता—श्री १०८ पुस्तकालय बनारस सिटी

शीघ्रता कीजिये । हाथों हाथ बिक रही है ॥
होमियोपैथिक जगत् में अयुर्व क्रान्ति करनेवाली-

होमियोपैथिक चिकित्सा

लेखक-डा०-एस० एस० मिश्र एच० एम० बी०

वर्तमान युगमें होमियोपैथिक चिकित्साका जितना प्रभाव पड़ रहा है और इसका जितना शीघ्र प्रचार हो रहा है कहनेकी आवश्यकता नहीं है । कारण कि बिना कष्ट और बिना किसी चीड़ फाड़के भयङ्कर से भयङ्कर रोग अन्धे होते पाये जा रहे हैं । इस अवसरसे लाभ उठानेके लिये हमने सुविज्ञ पाठकों और प्रेमी होमियोपैथ डाक्टरोंके लिये बहुत शीघ्रतासे इस पुस्तक को निकाला है । इसमें चिकित्सा सम्बन्धी प्रत्येक विषयोंकी ऐसी उत्तम व्याख्या की गई है कि आप बड़ी आसानीसे सब रोगोंकी पहिचान और उन सबकी दवा सरलता पूर्वक खोज निकालेंगे । इस पुस्तकके अनुसार यदि आप रोग लक्षणों और औषधियोंका चुनाव कर जितनी मात्रा इसमें चतलाई गई है कर सकेंगे तो निस्सन्देह बड़ेसे बड़े रोगोंका समूल नाश कर देंगे । भाषा और संग्रह बड़ा ही सरल तथा सुबोध है । छपाई बहुत साफ और कागज़ पेन्टिक मोटा पृष्ठ संख्या १२६४ मू३)

पुस्तक मिलने का पता-

आर्यव पुस्तकालय बनारस सिटी

दूसरा संस्करण —

नारी धर्म-शास्त्र

दीनहीजनारीजाति का उद्धार करनेवाला बहुरानीके सच्चे गहनोंकी पिढारी

ले०-पं० रामतेज पारडेय-साहित्य शास्त्री । विषय सूची-

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| (१) दाम्पत्य प्रणय | (१०) गाम्भीर्य |
| (२) चरित्र | (११) सद्भाव |
| (३) सतीत्व स्वर्गीय रत्न | (१२) सन्तोष |
| (४) स्वामीके साथ बातचीत | (१३) अवसर शिक्षा |
| (५) चालचलन लज्जाशीलता | (१४) आत्म-रक्षा |
| (६) विनय एवं शिष्टाचार | (१५) गर्भिणी के कर्तव्य |
| (७) नारी हृदय | (१६) जननी-जीवन |
| (८) पड़ोसियोंके साथ व्यवहार | (१७) शिशु-पालन |
| (९) सांसारिक आय-व्यय | (१८) शिशु-शिक्षा |

आदि-आदि नारी जाति से सम्बन्ध रखने वाले अनेकों विषयों का समावेश किया गया है । नारीजाति के सम्बन्ध में कोई भी विषय ऐसा नहीं छूटा है जिसके लिये आपको निराश होना पड़े । इसलिये प्रार्थना है कि यदि आप अपनी गृहिणी को उत्तम गृहलक्ष्मी बनाना चाहते हों तो इधर-उधर न भटक कर शीघ्र ही यह ग्रन्थ अपनी बहू रानी को पढ़ा दीजिये । बढ़िया ऐन्टिक कागज़ पर छपी हुई ४५० पेज की मोटी जिल्ददार पुस्तक का दाम भी केवल १॥) मात्र रक्खा गया है ।

पता-भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस सिटी ।

महाभारत भाषा

गुटका-दूसरा संस्करण

ले०-पं० रामलाल पाण्डेय "विशारद"

भारतः पञ्चमो वेदः के अनुसार महाभारत पाँचवाँ वेद है। संस्कृतमें होने के कारण अब तक इसका प्रचार बहुत कम था। पर हर्ष है कि वर्तमान युगमें इसके छोटे-बड़े सभी प्रकारके संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं। कारण कि देश और समाजको जागृत करनेके लिये देशका इतिहास ही पथ-प्रदर्शक होता है। अतः देश और समाजकी आवश्यकताओंका ध्यान रखकर ही हमारे कार्यालय ने महाभारतका यह संस्करण गुटकाके रूपमें प्रकाशित किया है। छपाई पर ध्यान रखते हुये ऐन्टिक कागज़ पर अठारहों पर्वका सम्पूर्ण वर्णन किया गया है। भाषा सरल और सुबोध है। दोरंगे तिनरंगे और पकरङ्गे ३७ चित्र लगे रहने पर भी मूल्य केवल ३) मात्र है।

पुस्तक मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय बूनासु

नकालों से सावधान !!

लेखक-बाबू अयोध्याप्रसाद भार्गव, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट व
ज़मोदार, नवावगंज, गोंडा ।

देखकर लीजियेगा

अन्यथा धोखे में पड़कर पछताइयेगा ।

सन्तान शास्त्र दृठवाँ
संस्करण

अर्थात् उच्च सन्तान उत्पन्न करने के नियमों का संग्रह ।

हिन्दी-साहित्य-संसार में यह एक ही ग्रन्थ है जिसकी विषय-सूची पढ़ने से ही मालूम होगा कि पुस्तक कितनी उपयोगी है । इसकी उपयोगिता के विषय में अधिक लिखना दीपक से सूर्य ढूँढ़ने को भाँति है । इसलिये प्रत्येक मनुष्यको एक २ प्रति रखना अति आवश्यक है । इस ग्रन्थ में वैद्यक और डाक्टरों के मतानुसार सुन्दर तथा बलिष्ठ संतान उत्पन्न करने और स्त्रियों के नाना प्रकार के गुप्त रोगों के विषय में पाण्डित्य पूर्ण विशद विवेचन किया गया है । पुस्तक की पृष्ठ संख्या ४४८ पेन्टिक कागज़ व सुन्दर कपड़े की । जल्द से आभाषत है ।

मूल्य १॥

पुस्तक मिलान का पता—

भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी

शीघ्र खरीदें—

हिन्दी अंग्रेजी मास्टर

इस अमूल्य पुस्तकको पढ़कर अपना

ज्ञान बढ़ाइये, व्यापार में उन्नति कीजिये, स्वतन्त्र बनिये।

एक अनुभवी सुयोग्य ग्राजुएट से तयार कराके मैंने इस अपूर्व पुस्तकको प्रकाशित किया है, हिन्दी भाषा जाननेवालों के लिये ऐसी पुस्तक अबतक नहीं लुपी थी। इस पुस्तक में अंग्रेजी भाषाका सम्पूर्ण व्याकरण सरल हिन्दीमें लिखा गया है, शब्दोंका शुद्ध उच्चारण पुस्तक भरमें आद्योपान्त लिखा गया है। प्रतिदिनके काममें आनेवाले अंग्रेजोंके सभी शब्द लिखे गये हैं, इनका शुद्ध उच्चारण, अर्थ तथा वाक्यों में इनका प्रयोग भी दिखलाया गया है। अंग्रेजोंमें चिट्ठी लिखने, तार लिखने हुएडो, हैन्डनोट इत्यादि लिखनेको विधि, वैज्ञानिक, भौगोलिक, रेल, तार, डाँक, व्यवसाय तथा अदालतों और फौजी शब्दोंकी बड़ी बड़ी सूचियाँ दी गई हैं। अन्तमें अंग्रेजी भाषाको कहावतें भी दी गई हैं।

हिन्दी जाननेवाले इस पुस्तकको सहायतासे ही अंग्रेजी भाषाका पूरा ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, उनको किसी अन्य मास्टरकी आवश्यकता न होगी। इस पुस्तकके अध्ययन करनेसे एंग्लो-हिन्दी विद्यार्थीसे कहीं अधिक अंग्रेजीका यथार्थ बोध हो जायगा। मोटे मज़बूत कागज़ पर छपी हुई जुज़बन्दी सिलाईकी पुष्ट जिल्ददार प्रायः ४८० पेजका पुस्तकका दाम सर्वसाधारणके लाभके लिये केवल १॥) रक्खा गया है।

पता—भारत पुस्तकालय बनारस सिटी

दर्शनीय सचित्र जन्मपत्र ।

संसार में बेजोड़ हजारों की लागत से तैयार, अभूतपूर्व शास्त्रोक्त विधि से उचित २ स्थानों में सैकड़ों चक्रों से सुसज्जित एवं राशियों के चित्र तथा अनेकों तिरंगे पँचरंगे नवग्रहों से सम्भव नौ अवतारों के चित्र, फल लिखने को कलदार बेलबूटे-दार कागज आदि लगाकर इस तरह से छापे गये हैं कि एक जन्मपत्र जिस गाँव या शहर के मुहल्ले में पहुँच जायगा, वहाँ उसके दर्शन करने को सैकड़ों लोग आवेंगे, ये जन्मपत्र नीचे लिखे माफिक पाँच तरह के छापे गये हैं ।

- | | | |
|-------|---|------|
| (१) | जिसे पण्डित लोग पाँच रुपये में बनावेंगे । | १।) |
| (२) | ” दस ” ” ” | १॥) |
| (३) | ” पन्द्रह ” ” ” | १२।) |
| (४) | ” बीस ” ” ” | ४॥) |
| (५) | ” पचोस ” ” ” | ५॥) |

हम इस जन्मपत्र के प्रकाशन से आशा करते हैं कि इस कार्य से सभी वर्ग के लोग प्रसन्न होकर इसे अपनावेंगे ।

पुस्तके मिलने का पता—

भारगवपुस्तकालय बनारस सिटी

